THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL LIBRARY
OU_178150
UNIVERSAL LIBRARY

गांधी-साहित्य—२

प्रार्थना-प्रवचन

दूसरा खंड

●

दिल्लीकी प्रार्थना-सभाओंमें दिये गए
२७ अक्तूबर १९४७ से २९ जनवरी १९४८ तकके
महात्मा गांधीके प्रवचन

●

१९६१

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद की सहमति से

तीसरी बार : १९६१
मूल्य
साढ़े तीन रुपये

मुद्रक
सत्यपाल धवन
दी सैण्ट्रल इलैक्ट्रिक प्रेस
दिल्ली-६

प्रकाशकीय

पूज्य गांधीजी आगा खां-महलके कारावाससे मुक्त होनेके बाद से सध्याकी प्रार्थना-सभामें नियमित रूपसे प्रवचन किया करते थे। यह परंपरा उनके महानिर्वाणके एक दिन पहले यानी २९ जनवरी, १९४८ तक बराबर चलती रही।

दिल्लीकी सभामें दिये गए १ अप्रैल, १९४७ से २६ अक्तूबर, १९४७ तकके प्रवचन पहले खडमें प्रकाशित हो चुके हैं। २७ अक्तूबर, १९४७ से २९ जनवरी, १९४८ तकके प्रवचन इस सग्रहमें दिये जा रहे हैं।

ये गांधीजीके अंतिम उद्गार हैं और जिन समस्याओंपर व्यक्त किये गए हैं, उनमेंसे बहुत-सी आज भी मौजूद हैं। इन प्रवचनोंमें गांधीजीने, संक्षेपमें, सर्वसाधारणके समझने योग्य भाषामें बहुत कामकी बातें कही है और बहुत जगह तो अपनी हार्दिक वेदना जनताके सामने रखी है। इन प्रवचनोंकी सबसे बडी विशेषता यह है कि इनमेसे अधिकांश गांधीजीकी भाषामें दिये गए हैं। इनके संग्रहमें जिन आधारोंसे सहायता ली गई है, उनके हम विशेष कृतज्ञ हैं।

तीसरा संस्करण

प्रस्तुत पुस्तकका यह नया संस्करण पाठकोंकी सेवामें उपस्थित करते हुए हमें बड़ा हर्ष हो रहा है। इन प्रवचनोंकी उपयोगिता आज भी बहुत कुछ उसी रूपमें बनी हुई है। आशा है, पाठक इनसे पूरा लाभ उठावेंगे।

—मंत्री

प्रार्थना-प्रवचन

दूसरा खंड

: १३० :

मौनवार, २७ अक्तूबर, १९४७

(लिखित सदेश)

मेरे पास बराबर इस बातकी शिकायतें आ रही है कि यूनियनके मुसलमानोंको अपने बाप-दादाओंके घरोंको छोड़नेपर और पाकिस्तान जानेके लिए मजबूर किया जा रहा है। यह कहा जाता है कि उनको तरह-तरहकी तरकीबोंसे अपने घरोंको छुडवाकर कैपोंमे रहनेपर मजबूर किया जा रहा है, जहांसे उन्हे रेलद्वारा अथवा पैदल भेज दिया जाय। मुझे विश्वास है कि मन्त्रिमंडलकी यह नीति नही है। जब मै शिकायत करनेवालोंको यह बात सुनाता हूं तो वह हँसते हैं और जवाबमे कहते हैं कि या तो मेरी जानकारी गलत है या कर्मचारी उस नीतिके अनुसार चलते नहीं हैं। मै जानता हूं कि मेरी जानकारी बिल्कुल सही है। तब क्या कर्मचारी बेवफा हैं? मुझे उम्मीद है कि ऐसा नही है। फिर भी यह शिकायत आम है। कही जानेवाली बेवफाईके मुख्तलिफ कारण दिये जाते है। जो कारण सबसे संभव हो सकता है वह यह है कि फौज और पुलिसका अधिकांश रूपमें फिर्केवाराना बटवारा किया गया है और वह मौजूदा द्वेषभावमे बह जाते हैं। मैंने अपनी राय दे दी है कि अगर ये कर्मचारी, जिनपर शांति और कानूनको कायम रखनेका भार निर्भर है, फिर्केवाराना प्रभावमें पड जाय तो सुसंगठित हकूमतकी जगह बदअमनी आ जाना लाजमी है और यदि यह चलती रहे तो समाज

नष्टप्राय हो जायगा। यह उच्च कर्मचारियोका कर्तव्य है कि वह फिर्केवाराना जहनियतसे ऊपर उठें और फिर अपनेसे नीचे तबकेके कर्मचारियोंको भी उसी सद्भावनासे प्रभावित करे।

यह जोरके साथ कहा जाता है कि देशमे जनताद्वारा सरकारे कायम की गई है, उनको वह वकार (प्रभाव) हासिल नही हुआ है जो विदेशी हकूमतको अपनी तलवारके जरिये हिदुस्तानी कर्मचारियोको डराकर अपने काबूमें रखनेके लिए हासिल था। यह कुछ हद तक ही ठीक है। क्योंकि अवाम (जनता) की हकूमतके हाथमे एक नैतिक शक्ति है जो विदेशी हकूमतके शक्ति-बलसे, जिसे वह अपनी मददके लिए बरत सकती थी, निस्सदेह ऊचे दर्जेकी है। इस नैतिक शक्तिके लिए यह पहलेसे माना जाता है कि अवामकी राय हकूमतके साथ है।

आज इसकी कमी हो सकती है। हमारे पास इसकी परीक्षाका और कोई साधन नही है सिवा इसके कि केंद्रीय सरकार इस्तीफा दे दे। इस जगह हम खास तौर पर यह जाच रहे है कि केंद्रीय शासनकी क्या हालत है। इसे किसी हालतमें भी कमजोर न बनना चाहिए और न कभी कमजोर लगना चाहिए। उसे तो अपनी शक्तिका अहसास (अनुभव) होना चाहिए। इसलिए यदि इसमे कुछ भी सचाई है कि कर्मचारी पूरी तरह आज्ञाका पालन नही करते है तो ऐसे नाफरमाबरदारोंको तुरत निकल जाना चाहिए या मिनिस्ट्री अथवा सबधित मंत्रीको त्यागपत्र देकर ऐसी शक्तिको स्थान देना चाहिए जो सफलताके साथ कर्मचारियोकी नाफरमाबरदारीको दूर कर सके। जब कि मै उन शिकायतोको, जो मेरे पास आती रहती है, संकोचके साथ आपको सुनाता हूं, मुझे यह आशा रखनी चाहिए कि इसकी तहमे कुछ नही है और यदि कुछ है भी तो उच्च अधिकारी यथाशक्ति कामयाबीके साथ उनको ठीक कर लेगे।

यूनियनके उन नागरिकोका, जो इसके प्रभावमे आते है, क्या फर्ज है ? यह साफ बात है कि ऐसा कोई कानून नही है जो किसी नागरिकको अपना मकान छोडनेपर मजबूर करे।

अधिकारीवर्गको खास अधिकार अपने हाथमें लेने पड़ेगे ताकि वह ऐसे हुक्म निकाल सकें, जैसा कि कहा जाता है, वे निकालते है। जहां-

तक मुझे पता है, किसीको कोई लिखित हुक्म नही दिया गया है। कहा जाता है कि मौजूदा मामलेमे हजारोंको जबानी हुक्म दिया गया है। ऐसे लोगोंकी मदद करनेका कोई साधन नही है जो डरके मारे किसी भी बावर्दी व्यक्तिके हुक्मके सामने अपना सर झुका दे। ऐसे सब लोगोंका मेरी जोरके साथ यह सलाह है कि वह लिखित हुक्म मांगें और यदि सबसे उच्च अमलदार भी उसको संतोष न दे सके तो शककी हालतमे वह अदालतमे उस हुक्मकी सचाई मालूम करे। आम जनताको, जो इस मामलेमे बहुसंख्यावाली है, अपनेको सख्तीके साथ कानूनको हाथमें लेनेसे रोकना चाहिए। अगर वह ऐसा नहीं करेगे तो वह अपने पैरोंपर खुद कुल्हाड़ी मारेंगे। यह ऐसी गिरावट होगी जिससे उठना कठिन हो जायगा। ईश्वर करे जल्द-से-जल्द उनको समझ आ जाय। उनको बुरी घटनाओंकी खबरसे, चाहे वह सच ही हो, प्रभावित न होना चाहिए। उनको अपने चुने हुए मंत्रियोंपर भरोसा रखना चाहिए कि वह इन्साफके लिए, जो जरूरी होगा वह सब करेंगे।

: १३१ :

२८ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

दिल्लीके एक भाई खतमे लिखते है, "मैने शरणार्थियोंके लिए थोड़े खेमे और कनात वगैरह एक मुसलमान भाईसे लिये थे। वह तो यहासे चले गये। अब उनको कहा रखना चाहिए ?" ये कोई शरीफ आदमी है, इसीलिए पूछते है कि उनका क्या करना है। और बात भी ठीक है कि वह अगर यहासे चले गए, तो क्या हम इनको हज्म करके बैठ जाए ? लेकिन मेरे पास तो कोई इंतजाम है नही कि जो मैं रख सकूँ। यह तो होम डिपार्टमेंटकी बात है। सरदारजीसे पूछ लेना चाहिए या और कोई जो इस कामको करता है, उससे या नियागी साहब जो नियुक्त हो गये है, उनसे पूछ लेना चाहिए। अगर उनको उस

मुसलमान भाईका पता लग जायगा तो यह या इसकी कीमत उसको पहुंचा देनी होगी ।

अलीगढमें जो यूनिवर्सिटी है उसका एक लडका मेरे पास आया था। वहां पश्चिमी पजाब और सरहदी सूबेके भी कुछ विद्यार्थी पढ़ते है। वे वहांसे वापस नहीं पहुच पाए और जो यहा है वे जा नही सकते। वे क्यों न वहां जाएं और आएं ? आखिर जो पाकिस्तान होना था वह तो हो गया। फिर आपस-आपसमे झगडा कैसा ? क्यो यहाके इतने मुसलमान पाकिस्तानमे जाए और वहाके हिंदू और सिख यहा आएं ? लेकिन उनका यह इरादा है कि हम मुसलमानोंके पाससे कम्बल वगैरा लेकर उन हिंदू और सिख शरणार्थियोको दें जो परेशान होकर कैंपोंमे रह रहे है। अच्छा है, उनको इनकी दरकार भी है और अगर उनको मिल जाय तो इससे उनकी मोहब्बत तो प्रकट होगी। लेकिन सच्चा काम तो यह है कि वे पाकिस्तानमे मुसलमानोसे जाकर कहे कि हिंदू और सिखोंको वहांसे आना ही क्यों पडता है ? मेरे पास तो ढेर पडा है कागजोंका, जिनमें शिकायतें ही भरी है, वे झूठी तो है नही। हां, उनमें कुछ अतिशयोक्ति हो सकती है, ऐसा मुझको लगता है। लेकिन अतिशयोक्ति होनेपर भी, उसमें जो मूल है, वह तो ठीक है। वे क्यों वहांसे भागें, उनको वापस बुलाओ, वे क्यों न अपने घरोंमें आकर रहें ? ऐसा वे कर सके तो हम सारी दुनियाको यह बता सकेंगे कि हम आपस-आपसमें कभी लड़े ही नहीं। पीछे जो आज हमारी नाक कट गई है, वह कल फिर साबुत हो जायगी। ऐसा मैने उन लडकोंको कहा है। उन्होंने इसको मान भी लिया और पीछे कैसा वे करते हैं, यह तो ईश्वर ही जानता है।

लेकिन आज जो बात मैं कहना चाहता हूं, वह तो एक बड़ी बात है। मेरा मतलब है कि मैं जब बिहारमें बैठा था तब वहां ऐसा चलता था कि लोगोंने यह सोच लिया कि चलो, स्वराज्य तो अब मिल ही गया, तो फिर रेलमें बैठकर जानेमें टिकटकी क्या दरकार है ? यही नहीं, वे कभी-कभी तो बड़ी ज्यादती और जबर्दस्ती भी करते हैं। उस जमानेमें हम आपस-आपसमें तो नहीं लड़ते थे, लेकिन ऐसा मान

लिया कि जब स्वराज्य मिल गया तो पीछे और क्या चाहिए ? उसपर मैंने काफी लिखा, उसका असर हुआ और बादमे वहां वह बंद भी हो गया। लेकिन अभी कुछ दिनोसे तो ऐसा हो गया है कि सारे हिन्दुस्तानमें या कहो कि सारी यूनियनमे काफी लोग रेलोंमे वगैर टिकट चलते है। बड़े-बड़े लोग भी यह सोचते है कि चलो, अब तो रेलें हमारी हो गई हैं। रेलें तो हमारी हो गई है, इसमे तो कोई शक नहीं, लेकिन इस तरहसे करनेका नतीजा यह हुआ है कि हमारा ८ करोड रुपया बर्बाद हो गया है। ८ करोड़ रुपया किसको कहते हैं ? एक करोड़ भी किसको कहते है ? जब कांग्रेसमे हमे एक करोड रुपया इकट्ठा करना था तो कितनी परेशानी हम लोगोंको हुई थी और कितने लोगोको निकलना पडा था। मैं भी घर-घर घूमकर इकट्ठा करता था, और लोगोको भी अपने साथ ले जाता था। तब जाकर बड़ी मुश्किलसे वह हुआ था। ऐसे हम गरीब लोग इस देशमे है। आज तो हम एक करोड रुपया खर्च कर लेते है और मिल गया है तो कुछ पता भी नही चलता। किस तरहसे हम उसको खर्च करें, यह तो हम अभी जानते ही नही। लेकिन चूंकि काम ऊपर आ पडा है इसलिए कर रहे है। लोग अगर यह सोच लें कि चलो, रेलोंमे मुफ्त सैर करें या कही काममे भी जाय तो उसमे किराया क्या देना, तो यह बडी ज्यादती है। मेरे हिसाब से तो यह बिलकुल लूट है। इस तरहसे तो हिंदुस्तान कगाल हो जायगा और न हमारे पास रेलगाडिया रहेगी और न कुछ और होगा। पीछे हम लोग रोएगे कि अब कैसे कही जायं। आठ करोड रुपया कोई कम थोडे ही होता है। पहले जो हमे रेलोसे मिलता था उससे तो रेलवे कपनीको अपने रुपयेका ब्याज भी मिल जाता था। करोडों लोग रेलोंमें सफर करते हैं। अगर सब पैसा दें तो खासी कमाई हो सकती है। बिना टिकट तो लोग उस जमानेमें भी जाते थे, लेकिन आजकी तरह कोई हजारोंकी तादादमे नही जाते थे। गाडियोंमे इंस्पेक्टर रहते थे और बाकायदा सारा हिसाब चलता था। आज तो ऐसा हो गया है कि गार्ड है तो उसको मारो और ड्राइवर आता है तो उसको मारो। रोज-बरोज पैसेका खर्च बढता ही जाता है। कोई रेलगाडियां तो मुफ्त चल नही सकती। उनमे जो नौकर

लोग काम करते है वे ऐसा थोडे ही मान लेंगे कि मुसाफिर बिना पैसा दिये सफर करते है तो वे भी अपने वेतन न लें; अगर वे ऐसा सोचें तो खाएंगे क्या ? इसलिए रेलोंमे करोडों रुपयेका खर्च है और करोडोंकी कमाई है। पहले तो इसमें नुकसान होता नहीं था। तीसरे दर्जे के मुसाफिरोंसे काफी पैसे मिल जाते थे, क्योंकिउन पर खर्च तो कम होता था और आमदनी अधिक थी। इसलिए कुछ पैसे नफेमे बच जाते थे। लेकिन कल जो मैंने ८ करोड रुपये का घाटा सुना तो मुझको बडा दर्द हुआ। इस तरहसे अगर हर तरफसे लूट-ही-लूट रही तो हमारा भला नही हो सकता। इसपर भी हम आपस-आपसमे लडें, एक-दूसरेको कत्ल करे और लूटें, क्योंकि इसमे भी तो हमें कोई फायदा तो होता नही, करोडों का खर्च ही होता है। जब लोगोंको उनके घर छुटवाकर पाकिस्तान भेजनेके लिए कहा जाता है तो वे कोई मुफ्त थोडे ही चले जाते है। उनको खाना खिलाना और पहननेके लिए कपडा देना पडता है। यह सब खर्च मुफ्तमे हमे करना पडता है। हिंदुस्तान कोई धनिकों का मुल्क तो है नही कि जो यह सब करता ही चला जाय। वह तो हो नही सकता। इसलिए अगर एक आदमी रेलमे मुसाफिरी करता है तो बिना पैसा दिये न करे। उसको पैसे देने ही चाहिए। जब अंग्रेजी हकूमत चलती थी तब पुलिस के सिपाही या दूसरे अमलदार भी काफी पैसे खा जाते थे। मै चूंकि तीसरे दर्जेमे मुसाफिरी करता हूं इसलिए मुझको इसका पता तो चल जाता था। हरिद्वार कुम्भ-मेलेके समय जब मैं गया था तो उस जमानेमें वहांके स्टेशनमास्टरको, पीछे तो बदलते रहते है, ऊपरके पैसे दिये बिना कोई जा नही सकता था। इस तरहसे हजारो रुपये रिश्वतमे उठ जाते थे। अब तो मेरे दिलमे ऐसा है कि हम सब शरीफ बन गए है। जो स्टेशनमास्टर, सिगनलर, इंस्पेक्टर या गार्ड लोग है, उन सबको अपने हक और सचाईसे जो पैसा मिलता है, वही खाकर अपना जीवन बसर करना चाहिए। उन्हें लोगोंके पाससे पैसे नही छीनने चाहिए। जो मुसाफिर हैं, उन्हे रेलोंको अपनी चीज समझकर इस्तेमाल करना चाहिए। वे रेलोंको साफ-सुथरा रखें, उनमें थूकें नहीं, बीड़ी न फूकें, बिना जरूरत जजीर न खीचें और

पैसे दिये बिना एक भी मुसाफिर न चले। तब तो मैं कह सकता हूं कि हमें सच्ची आजादी मिली है। मेरी बात को सुननेवाले कोई हजारों लोग तो यहां हैं नहीं और फिर रेलोंमें तो लाखों लोग सफर करते हैं, तो उनको कौन सुनाएगा? अगर मैं रेलवे मैनेजर या रेलवे मिनिस्टर होता तो मेरे मातहत जितने लोग काम करते, उनको यह हुक्म देता कि जितने लोग रेलोंमें तुम्हारे सामने चलते हैं उनको यह कह दो कि हम मारपीट तो करेंगे नहीं, रेल आपकी है, हम आपके नौकर हैं, लेकिन बिना पैसा दिये हम आपको ले जा नहीं सकते। अगर रेल जंगलमें भी जा रही है तो उसे रोककर वहीं खड़ी कर दे। अगर फिर भी वे न मानें तो एंजिन ड्राइवरको यह हुक्म देना चाहिए कि वह एंजिनको गाड़ी से अलग करके ले जाय। तब न किसीको गाली देना है और न किसीको मजबूर करना है, सिर्फ गाड़ी को वहीं खड़ी रहने दें। जबतक लोग मुफ्तमें सफर करें तबतक यही करना चाहिए। आखिर यह कोई शराफत नहीं है कि आप मुफ्त गाड़ीमें बैठ जाएं, मारपीट करें और जहां चाहा वहीं उसको रोक लें। यह तो मैंने आपको यहां की बात सुनाई। लेकिन मैंने सुना है कि पाकिस्तानमें भी लोग ऐसे ही मुफ्त रेलों में घूमते हैं। वहां भी क्यों न लोग मुफ्त चलें? आखिर हम एक ही हवामें पैदा हुए हैं, एक ही जैसा नमक खाते हैं, तो पीछे वहां भी क्यों न वही हो जो यहां होता है। अगर यही हाल जारी रहा तो दोनों दिवालिया हो जायंगे। इस तरहसे किराया न देकर रेलों में सफर करें, जहां रिश्वत खाना है वहां रिश्वत खाएं और जिसको मारना है उसको मारें, तो पीछे हम बिलकुल लुटेरे लोग बन जायंगे। आजादीके आनेसे हमारी जो कीमत बढ़ गई थी, वह कीमत बिलकुल चली जायगी। इसलिए जितने लोग सुन सकते हैं, वे सुनें और मिनिस्टर भी सुन लें, क्योंकि एक जानकार आदमीकी हैसियतसे मैं कह रहा हूं कि अगर यह सिलसिला न रुका तो आपको गाड़ियां बंद करनी होंगी। गाड़ियां चलेंगी नहीं और जो चलेंगी उसमें कोई आदमी मुफ्त नहीं जा सकता।

: १३२ :

२६ अक्तूबर, १६४७

भाइयो और बहनो,

आपने आज का बहुत मीठा भजन तो सुना। जिन्होंने हमको यह मीठा भजन सुनाया उन्हे आप लोग सब जानते तो होंगे नही। उनका नाम दिलीपकुमार राय है। उन्होने हर जगह का भ्रमण किया है। उनके कठका माधुर्य जैसा है वैसा हिदुस्तानमे तो कम लोगोके पास है। मैं तो कहता हूं कि शायद सारी दुनियामें भी बहुत कम लोगोके पास है। मेरे पास यह दोपहरको आ गए थे। तब कोई अधिक समय तो मेरे पास था नही, सिर्फ १० मिनट थे। उस वक्त उन्होंने 'वन्देमातरम' सुनाया, जिसको उन्होंने अपने मधुर स्वरमे बिठाया। क्योकि वे बंगाली हैं इसलिए तो उन्हे जानना ही चाहिए। चूंकि वे मुझको सुनाना चाहते थे, इसलिए सुन लिया। लेकिन मै कोई संगीत-शास्त्री तो हूं नही। उनको मुझसे मुहब्बत है, जो एक दूसरेके साथ बन जाती है। पीछे उन्होंने इकबालका 'सारे जहासे अच्छा' भजन सुनाया। उसको भी उन्होंने एक नये स्वर मे बिठाया है। मुझको यह बडा अच्छा लगा। वे ऋषि अरविदके आश्रममें, जो पाण्डुचेरीमे है, कई वर्षोसे रहते है। वहां कोई तालीम तो उन्होने ली नहीं। जब वहां गए तब भी वे सगीत-शास्त्री थे। पीछेसे अपनी कला को बढाते रहते हैं।

इस भजनका रहस्य तो यही है न, कि कबीर कहते है कि तुम्हारे पास तो यह हाथी, घोडे तथा करोड़ोकी दौलत पड़ी है, लेकिन मेरे पास तो केवल मुरारीका ही नाम है। मैं तो उसीसे धनपति हूं और तुम्हारे पास जो इतना धन पड़ा है वह निकम्मा है। वह आज है कल चला जायगा, लेकिन मेरे पास जो धन है, वह कभी जा नही सकता। राम-नामकी महिमा कितनी वडी है, यही इसमे बताया गया है। और जो चीजें भजनमें है वे तो आपने सुन ही लीं। लेकिन अरविंदका आश्रम क्या चीज है, यह भी तो आपको जानना चाहिए। यों तो वहां

लोगोंकी एक धारा चल रही है। वहा हमेशा काफी लोग जाते है। उनके काफी भक्त हैं, हिंदू क्या, मुसलमान क्या, किसीके लिए वहां घृणा तो है ही नही। सर अकबर हैदरी, अब तो वह मर गए, प्रतिवर्ष वहां जाते थे, उसका तो मै गवाह हूं। श्रीअरविंद तो दीनभक्त है, किसीसे मिलते नही है। ऊपरसे उनका दर्शन हुआ तो हुआ, नही हुआ तो नही, लेकिन लोग जाते थे। उनके पास यह रहते है। इनके दिलमें भी ऐसी कोई घृणा नही है। तो इतना तो हम सीख लें कि हमारे दिलमें क्यों घृणा होनी चाहिए।

लेकिन मैं तो आज काश्मीरमे जो हो रहा है उसके बारेमें कहना चाहता हूं। और कहना भी चाहिए। अखबारोंमें तो आप देख ही रहे हैं। वह तो एक अजीब बात है। तीन दिनकी बात है। किसीको पता नही था। मुझको भी पता नही था कि क्या होनेवाला था। लेकिन वह एक युगकी बात हो गई, ऐसा हम कह सकते हैं। अभी कहते तो ऐसा है कि वहा अफ्रीदी और दूसरे लोग बंदूकोंके साथ घुस गए है। और कोई तो यह भी कहते है कि यह तो पाकिस्तानकी कारस्तानी है। वह हो, उससे तो मुझे कोई वास्ता नही है। मैं तो जो वहां हो रहा है उसको देख रहा हूं। एक तरफ तो वे पुंछ तक चले गए और वहांसे भी आगे, श्रीनगरसे २२ मीलतकके फासलेतक पहुच गए। वहांसे तो सीधी सडक पड़ी है। कोई रुकावट हो नही सकती है।

जब काश्मीरके महाराजाने यह देखा तो उन्होंने कहा कि मैं भारतीय संघमें आ जाता हूं। महाराजाने लार्ड माउटबैटनको खत लिखा, जिसका उन्होंने जवाब दिया कि आप आ सकते है। पीछे जब आ गए तो शरणागत बने और उनकी रक्षा होनी चाहिए। लेकिन रक्षा करें कहांसे? रास्तेसे तो जा नही सकत, हवाई जहाजसे ही जा सकते हैं। लेकिन हवाई जहाजसे कितना लश्कर जा सकता है, चद आदमी आ-जा सकते है। उनको अपने हथियार ले जाने है, खुराक ले जानी है, कपड़े भी ले जाने हैं और मोटे कपड़े भी होने चाहिए। एक रतल वजन हो गया तो वजन बढ़ गया। ऊपर पक्षीके माफिक चलना है तो कितने लोग

जा सकते हैं। शायद आज भी कुछ गये है। कुल १००० गये होंगे, ज्यादा-से-ज्यादा १५०० गये होंगे। एक ओर तो ये १५०० आदमी और दूसरी तरफ कबाइली इलाकेसे बहुतसे लोग आ गये हैं। वे भी तो लडनेवाले है, वे लडते है। उसमें आप क्या सोचें और मैं क्या सोचूं। आखिर मेरा जीवन तो ऐसे ही काममें चला गया है। मैं तो शस्त्र-युद्धको माननेवाला नहीं हूं, लेकिन मुझको समझना तो चाहिए कि वह क्या बात है। एक ओर तो वे १५०० आदमी और दूसरी तरफ इतने अफ्रीदी और दूसरे लोग। फिर वहां शेख अब्दुल्ला साहब हैं। शेरे-काश्मीर उसको कहते है। याने बाघ है, सिह है। वह बडा तगडा है। आपने उसका चित्र तो देखा ही होगा। मै तो उसको पहचानता भी हूं। उसकी बेगमको भी पहचानता हूं। बेगम तो आज यहां पडी है। तो एक आदमीसे जितना हो सकता है वह कर रहे है। वे कोई लड़नेवाले तो है नही। यों तो काश्मीरमें तगड़े मुसलमान पडे हैं, तगड़े हिंदू भी पड़े हैं, राजपूत और सिख भी पड़े है। तो उसने तय कर लिया है कि जितना हो सकता है वह करूंगा। वह तो मुसलमान है। काश्मीरमें मुसलमानोंकी बडी आबादी है। यहांसे तो ये लोग बंदूक लेकर जाते है, लेकिन वहांके मुसलमान क्या करें और क्या न करें। माना कि हम तो यहां जाहिल बन गए है, गहां कहो या पाकिस्तानमें कहो, कोई पागलपन बाकी नही रखा है। क्या वहां वे लोग भी जाहिल बन जायं और जिनको काटना है उनको काटें, औरतोंको काटें, बच्चोंको काटें, इस बुरे हालसे मरें, यह हाल काश्मीरका हो। तो पं० जवाहरलाल नेहरू और मंत्रिमडलके सभी सदस्योंने सोचा कि कुछ-न-कुछ तो किया जाय, तो इतने आदमी भेज दिये। वे क्या करें? इतना ही करें कि आखिरी दमतक लडते रहें और लडते-लड़ते मर जायं। जो लडनेवाले या शस्त्रधारी होते है उनका यही काम होता है कि वे आगे बढ़ते है और हमला करनेवालोंको रोक लेते हैं। वे मर जाते हैं, लेकिन पीछे तो कभी हटते नही हैं। इसका क्या परिणाम होगा, वह तो ईश्वर ही जानता है। जैसा भजनमें बताया गया है। हमारा धन तो मुरारी ही है। करोड़ोंकी दौलत हमारा धन नहो है। शस्त्र हैं, वह भी हमारी दौलत नहीं है।

जो कुछ करना है वह मुरारी ही करता है, लेकिन पुरुषार्थ करना तो हमारा काम है। वह हम करें।• तो इन १५०० आदमियोंने पुरुषार्थ किया। लेकिन कब, जब वे श्रीनगरके बचानेमें सारे-के-सारे कट जाते हैं। पीछे श्रीनगरके साथ काश्मीर भी बच जायगा। इसके बाद क्या होगा?

यही होगा न, कि काश्मीर काश्मीरियोंका होगा। शेख अब्दुल्ला जो कहते हैं वह तो मैं संपूर्णतया मानता हूं कि काश्मीर काश्मीरियोंका है, महाराजाका नहीं। लेकिन महाराजाने इतना तो कर लिया है कि उन्होंने शेख अब्दुल्लाको सब कुछ दे दिया और कह दिया है कि तुमको जो कुछ करना है सो करो। काश्मीरको बचाना है तो बचाओ। आखिर महाराजा तो काश्मीरको बचा नहीं सकते। अगर काश्मीरको कोई बचा सकता है, तो वहां जो मुसलमान हैं, काश्मीरी पंडित हैं, राजपूत है और सिख हैं, वे ही बचा सकते है। उन सबके साथ शेख अब्दुल्लाकी मोहब्बत है, दोस्ती है। हो सकता है कि शेख अब्दुल्ला काश्मीरका बचाव करते-करते मर जाते है, उनकी जो बेगम है वह मर जाती है, उनकी लड़की भी मर जाती है और आखिरमें काश्मीरमें जितनी औरतें पडी है वे सब मर जाती हैं, तो एक भी बूंद पानी मेरी आंखोंमेसे आनेवाला नहीं है। अगर लड़ाई होना ही हमारे नसीबमें है तो लड़ाई होगी। दोनोंको ही लडना है या किस-किसके• बीच होगी, यह तो भगवान् ही जानता है, हमलावरोंकी पीठपर अगर पाकिस्तानका बल नहीं है या पाकिस्तानका उसमें कोई उत्तेजन नहीं है, तो वे वहां कैसे टिक सकते हैं, यह मै नहीं जानता। लेकिन माना कि पाकिस्तानकी उत्तेजना नहीं है, तो नही होगी। जब काश्मीरके लोग लड़ते-लड़ते सब मर जायंगे तो काश्मीरमे कौन रह जायगा? शेख अब्दुल्ला भी चले गए, क्योंकि उनका सिंहपन, बाघपन तो इसीमें है कि वे लड़ते-लड़ते मर जाते है और मरते दमतक उन्होंने काश्मीरको बचाया, वहांके मुसलमानों-को तो बचाया ही, उसके साथ वहांके सिख और हिंदुओंको भी। वे ठेठ मुसलमान है। उनकी बीबी भी नमाज पढ़ती है। उन्होंने मधुर कंठसे मुझे 'ओज अबिल्ला' सुनाया था। मैं तो उनके घरपर भी गया हूँ। वे मानते हैं कि जो हिंदू और सिख यहां हैं वे पहले मरें और

मुसलमान पीछे, यह हो नही सकता। वहां हिंदू और सिखकी तादाद कम है, तो भी क्या हुआ। अगर शेख अब्दुल्ला ऐसे है और उनका असर मुसलमानोंपर है तो हमारा सबका क्षेम है। आज जो जहर हममे फैल गया हे वह होना नही चाहिए और काश्मीरके मारफत हमारा यह जहर भी चला जायगा। अगर उस जहरको मिटानेके खातिर काश्मीरमे इतनी कुरबानी हो जाती है तो उससे पीछे उनकी आंखे भी खुल जायगी। जो कबाइली लोग है उनका काम तो मारना ही है। वे चले तो गए, वहा अपनी शक्ति भी बता दी। वहां उनके साथ कौन-कौन है, उसका तो मुझे पता है, लेकिन उसका नतीजा तो यह आता है कि काश्मीरमें जितने हिंदू-मुसलमान पडे है अगर वे सब-के-सब शहीद हो जाते है तो हमारी भी आखे खुल जाती है। हम समझेगे कि सब मुसलमान पाखंडी और पाजी नही है, उनमे भले भी रहते है। इसी प्रकार हिंदू और सिखोंमें भी सब अच्छे या फरिश्ते है, यह भी झूठ है, या सब निकम्मे है या काफिर है, वह भी गलत बात है। इसीपर मेरा तो खयाल है कि जो लोग भले है वे हिंदू-मुसलमान-सिख सभीमे है और इन्ही भले आदमियोंपर दुनिया चलती है, न कि हथियार रखनेवालोंपर।

यह जो मधुर कठमे हमने भजन सुना है उसका भी निचोड यही है। काश्मीरमे अगर सारे लोग भी रक्षा करते-करते मर जायं तो मै नाचनेवाला हूं। मेरे दिलमे तो कोई रज नही होनेवाला हे। दुनियाका काम चलता ही रहता है। यह तो सब ईश्वरका खेल है। लेकिन पुरुषार्थ तो है और वह यही कि हम सच्चा काम करते हुए मर जायं।

: १३३ :

३० अक्तूबर, १९४७

(आज सायंकाल प्रार्थना-सभाके समय कुरान-शरीफकी आयत पढे जानेपर एक व्यक्तिद्वारा आपत्ति की गई जिसके कारण प्रार्थना न हो सकी। लोगोंने आपत्ति करनेवालेको अपना विरोध वापस ले लेनेको

समझाया, लेकिन बाहर जाकर वह फिर भीतर आ जाया करता था। इसलिए गांधीजीको प्रार्थना-सभाके लिए आते समय तीन बार लौटना पड़ा। अंतमें जब वह आदमी चला गया तब लोगोंके अनुरोध करनेपर गांधीजीने थोड़े समयके लिए भाषण करते हुए कहा--)

भाइयो और बहनो,

यहां क्या हो रहा था यह मुझे पता चलता रहता था। इससे मुझे दुःख हुआ। मै आज तो यह बता देना चाहता हूं कि यह एक निजी आदमीका घर (बिड़लाभवन) है। यहा गोलमाल नही होना चाहिए। जो लोग बाहरसे यहां आ जाते है वे आए; लेकिन आनेके बाद शिकायत करना यह सभ्यता नही है। आज एक भाई कहते है कि आज प्रार्थना नही होने दूगा। तब मुझे विचार करना पडा कि इस हालतमे मुझे प्रार्थना करनी चाहिए या नही। शिकायत करनेवालेको आपने कहा तो वे चले गए, फिर आए, फिर चले गए, फिर आए। यह मेरे लिए अच्छा नही है। इसका मतलब यह है कि उसका दिल दुःखित होता है। यों तो मै समझता हूं कि आप लोगोंमेंसे काफी लोग दुःखित होगे कि प्रार्थनामे कुरानका एक टुकड़ा होता है। लेकिन मैं लाचार हूं, क्योंकि वह मेरी प्रार्थनाका एक अविभाज्य अंग है। यहां प्रार्थना नही होगी, तो क्या मैं प्रार्थना नहीं करूंगा? एक तरफ धर्म बताता है कि मै प्रार्थना करूं। मैं यहा प्रार्थना नही करूगा, इसलिए घरमे प्रार्थना न करू ऐसी बात नही है। दुनियामें मेरे साथ कोई भी न रहे तो भी प्रार्थना करूंगा। दिलमे ही प्रार्थना हो सकती है। मुझको यहा अहिंसाकी दृष्टिसे सोचना पड़ता है। उसी निगाहसे देखना चाहिए कि मेरा धर्म क्या है? यदि वह भाई चला जाता है तो मैं प्रार्थना करूं, यह मुझे अच्छा नही लगता। मै आज प्रार्थना तो करना नही चाहता हूं, बहस भी नहीं करना चाहता हूं, तो भी करूंगा, क्योकि समय भी नाजुक पडा है। इसलिए लोग सुनना चाहते है कि गांधी क्या कहता है। मै भी कहना चाहता हूं कि लोग मुझे समझ तो लें कि मैं क्या कहना चाहता हूं। लेकिन मै लाचार बन गया, इसलिए बहस नहीं करूंगा।

मुझे सोचना है कि मै जो प्रार्थना करता हूं उसे बद कर दू और क्या बहसमे ही रहूं ? यह बडा प्रश्न है । इन प्रश्नपर मुझे सोचना पडेगा। आज मैं कहना नही चाहता और बहस भी नही करना चाहता । बहस ही करूं तो प्रार्थना छोड़ दू । मै इसके बारेमे एक प्रेम-वक्तव्य निकाल दूगा ।

जब देखा कि आप लोग है तो मै आ गया । मेरी सभ्यता और अहिसा बताती है कि मैं अपना दिल खोलकर आपके सामने रख दू और बता दू कि मै कौन हूं । मेरे पास इस जगतमे सत्य और अहिसाके सिवा कोई दूसरी चीज नही है । आप सत्य और अहिसाको पहचान लें तो दुनियामे बडे-बडे काम हो सकते है । मै कोई लम्बी-चौड़ी बात नही करना चाहता । दुनियामे बडी-बड़ी बाते होती है, लेकिन ईश्वरका जो नियम है उसे कौन फेर सकता है और दुनियामे जो बडे-वड़े नियम है उन्हे ईश्वर फेर नही सकता । मै समझता हूं कि हम अभिमानमे पड़े है, अज्ञानमे पड़े है, इसलिए यह मान लेते है कि सत्य तो इतनी बडी चीज है कि वह व्यापारमें कैसे चल सकती है ? व्यवहारमें कैसे चल सकती है ? अहिसा चलेगी कैसे ? मुझे लोग गाली देते है तो लोग कहते है कि जब कोई मुझे दो गाली देता है तो मैं एक गाली तो दू । गालीके सामने थप्पड़ क्यों न लगा दू । इसके पीछे क्या होता है कि हम आगे नही बढ़ते है । लेकिन हमको तो आगे बढ़ना ही है, यही मै समझता हूं कि जन्म लेनेके मानी है । मै स्थिर रह नही सकता हूं । स्थिर तो एक ईश्वर है; लेकिन स्थिर होते हुए उपनिषदमे बताया गया है कि वह स्थिर भी है और गतिमान भी है । हमेशा गति करता है—ऐसा जो गति करता है वह स्थिर है, ऐसा लगता है । हम कहां जानते थे कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी अस्थिर है; लेकिन अब हम सीख गए कि गति-सी जो लगती है वह स्थिर है । ईश्वरकी ऐसी माया बन गई है । जो स्थिर और अस्थिर है, वह ईश्वर ही है । इसमे स्थिरता-जैसी कोई चीज नही है, गति है, गति है तो हमको बढ़ना है । हम मांके पेटसे निकले और बढ़े । आगे जाते-जाते वृद्ध होते है । ऐसा काम दुनियामे चलता है । जो जन्मते हैं, उसको आगे बढ़ना है, वह बढ़ता ही है । कुछ

लोग वृद्धावस्थाको गिरना मानते है। लेकिन मैं वैसा नही मानता। वृद्धावस्था पका हुआ फल है। तो शरीर छूटता है, आत्मा थोडे छूटता है। वह न मरता है और न गिरता है। आत्माकी गति बढती ही रहती है लेकिन दुनियामे सत्य और अहिंसाके बिना काम नही चलता। मै अब भी दावेके साथ कहता हूं कि सत्य और अहिंसा ऐसी चीज है जिसे बच्चेको भी सीखना चाहिए। इसे अगर माता सीख लेती है तो अपने बच्चेको सिखा सकती है। माता आज-के-आज तो सीख नही सकती है, लेकिन कहते हैं कि हम तो आदिकालसे, करोडों सालसे है तो उस विकासको देखना है। इसके लिए हममे धैर्य तो होना ही चाहिए। मै इसके बारेमे अधिक तो कहना नही चाहता; लेकिन सिवा सत्य और अहिंसाके कुछ नही हो सकता। हम विकास नहीं कर सकते।

मै आज बहस तो करना नही चाहता। आप कल भी आएगे। यदि कल भी किसीको कुरानकी आयत पढे जानेपर आपत्ति होगी तो उसपर मै सोचूगा कि मुझको बहस करना है या नही। यदि किसीको शिकायत होगी तो बोलेगा कि शिकायत है, नही तो बोलेगे कि हम प्रार्थना सुनना चाहते है और बहस भी। लोगोंको समझ लेना चाहिए कि हम गुस्सेमे नही आयंगे। हा, पीछे कोई ठान ले कि हम किसीको सुनने न देगे और चीखें तो मै कहूंगा कि आपकी हिंसाकी कसौटी हो जाएगी और मेरी अहिंसाकी परीक्षा हो जायगी? यह भी मालूम हो जायगा कि आप कहांतक जाते है? यदि आप मेरे साथ रहेंगे और अहिंसाका साथ देगे तो अहिंसाके सामने हिंसा रह नही सकती, ऐसा मैं दावेके साथ कह सकता हूं। लेकिन शर्त यह है कि मै जैसा कहूं वैसा आप करें। आप कहें कि हम अंकुशमें रहनेवाले है, निग्रहमे रहेगे और दिलमे गुस्सा न करेंगे। वह भाई अज्ञानी है जो कुरानकी आयतपर आपत्ति करता है। कुरानशरीफने क्या गुनाह किया है? यहांके मुसलमान बिगडे, इसलिए कुरान बिगड़े यह बात नही है। वह तो बुलंद है, सनातन है, अरबीमें है। जो उससे घृणा करता है उससे अधिक अज्ञानी मै औरकिसीको नही समझता। इसी तरहसे शिकायत करनेवालेको आप समझा दे। हा, अगर कोई कहे कि वह प्रार्थना सुनना ही नही चाहता तो मै प्रार्थना

करूंगा और बहस भी। लेकिन मै प्रार्थना बंद करता हूं, इसके लिए किसीको आप मारें यह मैं बर्दाश्त नही कर सकता। यदि मै अकेला रहूं और पांच आदमी आवें और कहे कि हम आपको मार डालेंगे तो मैं कहूंगा कि मेरा सिर आपके सामने है। मै कहूंगा कि पांच क्यों मारें, एक ही आदमी गला काट सकता है। लेकिन तो भी मै प्रार्थना करूंगा। जब अब आपका दिल ऐसा हो जायगा तब आप न किसीको मारेंगे और न किसीपर गुस्सा करेंगे। शिकायत करनेवाला, जिसे हम असभ्य कह सकते हैं, अगर चीख-चीखकर भी शिकायत करेगा तो भी हम प्रार्थना करेंगे। कल प्रार्थना होगी और बहस भी। यदि कल कोई शिकायत करे तो वह शिकायत करके चला जाय। उसके पीछे मै ख्वार नही होना चाहता। मै गुस्सेको काबूमे रखू, धीरज रखू तब मेरी गाडी आगे चल सकती है। मै आज इतना ही सुनाना चाहता हूं। अब आप शांतिसे घर जाइए और बहस न करें। घर जाकर इसपर विचार कीजिए।

: १३४ :

३१ अक्तूबर, १९४७

(आज सायकाल भी गाधीजीकी प्रार्थना-सभामे कुरानकी आयत पढ़ी जानेपर दो आदमियोंने आपत्ति की। फलस्वरूप प्रार्थना आरम्भ करनेसे पहले गांधीजीने इस बारेमे कहा—)

भाइयो और बहनो,

मेरे विचारसे दो या तीन आदमियोंकी खातिर बाकी करीब ३०० आदमियोंको निराश करना भी एक तरहकी हिसा है। इन आदमियोंको विरोध करनेका तो हक है, लेकिन सभ्यता और शिष्टाचार कहता है कि उन्हें अपने इस हकको इस जगहपर, जो कि बिडलाजीकी निजी मिल्कियत है, इस्तेमाल नही करना चाहिए। लेकिन अगर वे करते है तो कौन रोक सकता है? तो फिर सभाके शेष लोगोंको चाहिए कि वे

बर्दाश्त करें, अपने दिलोमे गुस्सा न करे और जो लोग विरोध करते हैं, उनको यहां और बाहर भी कुछ न कहे। अगर आप लोग ऐसा करेंगे तो मै अपनी प्रार्थना करूंगा और उसमे कुरानशरीफकी आयत भी रहेगी। आप लोग, जो बहुमतमे है, ऐसा न सोचे कि चूकि हम इतनी बडी तादादमे है, इसलिए विरोध करनेवालोंकी दरकार ही नही है। यदि आप ऐसा सोचे तो वह हिंसा हो जाती है। जो अल्पमतमें है उनकी हमे ज्यादा दरकार होनी चाहिए, यही तालीम मै अबतक देता आया हूं। आगे भी मै ज्यादा-से-ज्यादा यही तालीम दूंगा कि अहिंसा किस तरहसे काम करती है।

सत्य और हिंसाके जो मौलिक सिद्धांत है उनमे कोई खास गुत्थी नही रहती। उनको सीखनेके लिए कोई खास डिग्री लेनेकी जरूरत नही होगी। अंग्रेजी तो क्या उसके लिए मादरी जबान भी सीखनेकी जरूरत नहीं होगी। उनको जानने लायक चीज तो हम बचपनमे अपने मा-बापसे सीख लेते है। उसपर अमल करना तो इसमे भी आसान है। इसलिए अगर आप लोगोमे उनका विरोध बर्दाश्त करनेकी शक्ति है तो मै उनका विरोध होते हुए भी प्रार्थना करूगा। सभ्यताका नियम तो यह है कि जिन लोगोंको कुरानशरीफकी आयतपर आपत्ति है वे अपना विरोध प्रकट करके चले जाएं और बादमें मुझको समझाएं कि मै इससे किस प्रकारसे हिंदू-धर्म को नुकसान पहुंचाता हूं। मै समझदार आदमी हूं। इसलिए अगर वे मुझे समझा सकेंगे तो मैं उनकी बात मान लूगा। मै तो समझता हूं कि मैंने इससे हिंदू-धर्मको फायदा ही पहुंचाया है। यह मै आजसे थोडे ही करता हूं—एक अर्सेसे मै ऐसा कर रहा हूं और मैं समझता हूँ कि उससे हिदू-धर्म को कोई धब्बा नहीं लगा। उसके द्वारा जो मुसलमान मेरे दोस्त हैं उनको मै और अधिक अपना सका हूं। यह तो मैंने कोई बुरा नही किया। इसी तरहसे मै अगर सारी दुनियाको अपना सकूं और कोई मेरा दुश्मन या विरोधी न हो तो कितना अच्छा हो। लेकिन ऐसा तो कहांसे मै परिपूर्ण आदमी हूं कि जिससे मेरा कोई विरोध न कर सके; लेकिन जो विरोध करते है उनको मै बर्दाश्त करना तो सीख लूं। आप लोग भी उनका विरोध

बर्दाश्त कर ले तो वे लोग भी सोचेंगे कि ये तो सब शरीफ आदमी है—हमको कोई कुछ कहता ही नही, सब सद्भावनासे हमको अपनाते है। अगर हम सब ऐसा कर सके तो हिदुस्तानकी शक्ल बदलनेवाली है, इसमे कुछ शक नही है। इसलिए मै पूछता हूं कि क्या आप इसे बर्दाश्त कर लेगे ? पुलिस भी उनको कुछ न कहे।

(गांधीजीके यह पूछनेपर सब लोगो ने रजामंदी प्रकट की। तब प्रार्थना हुई। प्रार्थना के बाद गाधीजीने भाषण करते हुए सबसे पहले शांति रखनेके लिए हार्दिक धन्यवाद दिया और उन्होने सभाके बाकी लोगोको भी उन दो व्यक्तियोंके विरोधको बर्दाश्त करनेपर बधाई दी।)

अगर ऐसा ही चलता रहा तो इसका परिणाम हमको अच्छा ही मिलनेवाला है। 'मन मन्दिरमें प्रीति बसा ले'—श्रीदिलीपकुमार राय, जिन्होंने इस भजनको आजकी प्रार्थना-सभामे गाया है, कंठमे जो माधुर्य है और उनके गानेमे जो कला है, वह मुझको मीठे लगे। वैसे तो यह मामूली चीज है, लेकिन उसे जिस ढगसे सुदर बनाया गया उसीका नाम कला है। इस भजनमे यह चीज है कि अपने मनको मंदिर बनाओ और उस मंदिरमे प्रीति बसाओ। तो इसमें भी अहिसाका शिक्षण है। इस भजन का कवि आदमी को कहता है कि तू मूर्ख और भोलाभाला क्यों बनता है ! अगर तू केवल अपने मन-मंदिरमें ज्योति जगा लेगा तो तेरा सारा काम बन जायगा। उसके बाद तो सारी दुनियामे ज्योति या प्रकाश ही दीखेगा। अंधेरा कही रहेगा ही नही। इसी तरहका चमत्कार सत्य और अहिसामे भरा है। यह बडी सीधी-सादी चीज है; लेकिन अगर हम इतनी चीज भी सीख लें तो दुनियामे हमारा सारा व्यवहार सरल हो जाता है।

नवाखालीमें मैंने देखा कि वहाके अमीर लोग गरीबोंको वही छोडकर भाग गए। वहांके देहातोंमे वे लोग, जिनको कि हम मूर्खता-वश अछूत कहते हैं, भरे पडे है। क्योंकि मै उधर घूमा हूं, इसलिए मैंने देखा कि वे लोग बडे परेशान थे। वहां की स्त्रिया चूडियां पहनना तथा माथेपर सिंदूर लगानातक भूल गई थीं। पंजाब या दूसरे स्थानोंसे जो लोग यहां आ रहे है उनमें भी देखता हूं कि धनी लोग तो कुछ-न-कुछ

अपना धंधा कर ही लेते है। उनके पास पैसे होते है और दोस्त भी मिल जाते है। लेकिन गरीब क्या करे ? वे कहा जायं ? नवाखालीमे तो हिंदू ही थे, लेकिन बिहारमे मैंने देखा कि मुसलमान परेशान पडे थे। मैंने उनको कहा कि आपमेसे जो मर गए, वे मर गए और बाकी जो धनी है और वे जो बाहर जाना चाहते है वे चले जाय ; लेकिन गरीबो-का बेली परमेश्वर ही है। परंतु ईश्वरको अपने हाथ या मुहसे तो काम करना नही है, वह तो दूसरोको प्रेरणा देता है और उनकी मारफत अपना काम करा लेता है। लेकिन क्या धनिक लोग इतने कठोर और नास्तिक बन जाय कि ईश्वरको भी भूल जायं और अपने धनको ही परमेश्वर मानकर बैठ जायं ? लेकिन धनिक लोग तो वहांसे भाग गए और वहाँ जो गरीब लोग रह गए वे मुझको लिखते है कि हमारा कुछ तो करो। चूँकि मै कई वर्षोंसे गरीबोंका काम करता आया हूं, इसलिए वे मेरी ओर देखते है। लेकिन मै क्या कर सकता हूं ? मेरे पास न तो कोई ताकत है और न सत्ता है। चूंकि वे मुझे लिखते है; इसलिए मुझे उनका ज्ञान तो हो जाता है।

अभी हमारे यहा दिल्लीमे जो शिविर चलते है उनमें भी काफी गरीब लोग पड़े है। धनी भी है और उन धनी व्यक्तियोमे कुछ अच्छे भी है जो गरीबोको खाना खिलाकर खाना खाते हैं। इसलिए मै कहता हूं कि जो लोग यहा आ गए है वे अपने अंदर धनी और गरीबका भेद नहीं करें। अगर अमीर गरीबोंको घृणासे देखेगे तो वह धर्म नही अधर्म हो जायगा। इसलिए मै साफ कहूंगा कि जो धनी लोग है वे गरीबोको अपने साथ लेकर चले। तभी हम संगठित रूपमे रह सकते हैं।

अभी हालमे दो यूरोपियनोने, जो पति-पत्नी थे, हमारे कुछ शिविरों-को देखा। वे उनको देखकर खुश हुए। उन्होंने कहा कि गरीब और अमीरके विभाग तो हैं, लेकिन फिर भी सब लोग अच्छी तरहसे रहते है। वे वहा सेवा करनेके ही उद्देश्यसे आये है। अगर हम सब लोग ईश्वरका नाम लेकर काम करें तो जैसे दूधमे शक्कर मिल जाती है वैसे ही पंजाबके शरणार्थी भी दिल्लीके लोगोंमें मिल जायंगे।

दिल्लीमे अभी काफी मुसलमान पड़े है। मैने आज एक फेहरिस्त देखी है, जिसमें अगर अतिशयोक्ति नही है तो मालूम होता है कि यहां सैकडों मुसलमानोको जबरन हिंदू या सिख बनाया गया है। जिन लोगोंका इस तरहसे धर्म-परिवर्तन किया गया है, उनको मै कहना चाहता हूं कि अगरचे आपकी मुसलमानी शक्ल वदल दी है, लेकिन अगर खुदा मचमुच आपके दिलमे बैठा है तो आपको न दाढी मुडानेकी जरूरत है न चोटी रखनेकी। जो लोग स्वेच्छासे गीताजीको पढना चाहे खुशीसे पढ सकते है, जैसे मै कुरानशरीफको पढता हूं और मेरी आत्मा खुश होती है। लेकिन अगर कोई मुझको हुक्म करे कि तुम्हे कुरानशरीफ पढनी ही होगी, नही तो हम मार डालेंगे तो मैं कहूंगा कि मुझे आपकी कुरानशरीफ नही चाहिए, भले ही उसमे रत्न भरे हो। इसलिए जो मुसलमान हिदू या मिख बन गए है उनसे कहूंगा कि उन्हे अपने धर्मपर कायम रहना है। अगर हम उनके साथ जबरदस्ती करते है तो हम हिदू-धर्मका नाश करते है। हिदुस्तानमे ऐसा हमेशा हो नही मकता और अगर होता है तो हम गिर जायंगे और जो आजादी हमने ली है उसको हम खो देंगे। वह स्वप्नकी तरह हो जायगी, इसमे मुझे कोई शक नही है। इसलिए जितने मुसलमान यहां हैं उनको निडर होकर रहना चाहिए। जिन्होंने धर्म-परिवर्तन कर लिया है वे कहे कि तब तो हम डर गये थे लेकिन अब हम ममझ गये है कि जो खुदापरस्त या ईश्वर-भक्त होते हैं वे किसीसे नही डरते, अगर किमीसे डरते है तो केवल ईश्वरसे। ईश्वरसे डरना तो अच्छी बात है, क्योंकि वह प्रेमका धाम है, दयाका सागर है। उससे डरनेसे तो हम कृतार्थ हो जाते हैं। लेकिन इन्सानसे कभी नहीं डरना है। इसलिए वे कह देंगे कि हम धर्म-परिवर्तन करनेसे तो मरना अच्छा समझेंगे। चाहे तो आप हमें पाकिस्तान भेज दें, लेकिन पाकिस्तानके जानेके लिए भी कोई मजबूर नही कर सकता।

लियाकतअली साहब और हमारे प्रधान मंत्रीमे भी यही समझौता हुआ है न, कि जो पाकिस्तान जाना चाहें वे पाकिस्तान चले जायं; लेकिन लियाकतअली साहब, मरदार और जवाहरलाल भी किमीको

मजबूर नहीं कर सकते। कोई कानून नही है। इसलिए जो मुसलमान यहां रहते हैं उनको हमे प्रेमसे रखना चाहिए। अगर मै जिदा रहूं तो इसके सिवा कोई दूसरा दृश्य देखना नही चाहता। पहले मैं १२५ वर्ष जिदा रहनेकी बात सोचता था, लेकिन अब वह भूल गया हूं। अगर हिंदुस्तानके नसीब खराब है तो मुझको तो ईश्वर उठा ले। और अगर उसका नसीब बुलद है और पल्टा होनेवाला है और होना तो चाहिए तो तू मुसलमानके दिलको बदल दे और उनका दिल तेरेसे ही भर दे। खुदाका नाम तो वे लेते है लेकिन खुदाका काम नही करते। इसी तरहसे हिदू अगर कृष्ण या रामका नाम तो लें, लेकिन पीछे कत्ल करें और एक दूसरेको काटे तो वह रामका काम नही कहा जा सकता।

कुछ लोग कहते है कि लडाई तो छिड गई है, काश्मीरमे क्या होगा ? मै कहता हूं कि कुछ नही होगा। काश्मीरमे जो लोग है वे बहादुर है। वहां हिदू, मुसलमान और सिख सब एक-सा रहते है। जो हमला करने गये है उनको वे कह दें कि अपने घर वापस जाओ, अगर हमला करोगे तो हमारी लाशपर खडा होना है, श्रीनगर आपको वैसे नही मिल सकता। पीछे हमारा जो लश्कर वहां गया है उसको कोई छूएगा नहीं। अगर वे मर जाते है तो वे अमर हो जायंगे, तब हम नाचकर गा सकते है और अगर किसी वक्त यहां भी ऐसा मौका आगया तो श्रीदिलीपकुमार रायसे कहूंगा कि ऐसा भजन सुनाओ कि जिससे लोग नाचने लगे; क्योकि जो लोग मर गये वे तो अमर हो गये और जो बचे है वे तो मृतप्राय है। मुझको तो इसका कोई दर्द नहीं होगा। हां, दर्द तब होगा जब लोग पागल बनें और पाकिस्तान भी पागल बने। जो अफ्रीदी लोग हैं वे भी हमारे भाई है और जो कबायली इलाका है वह भी हमारा ही है, तो वे क्यों ऐसा काम करें ? उनको इमदाद कौन देता है यह समझनेकी बात है। मैं तो कहूंगा कि उन सबमें ईश्वरका वास हो और मन-मंदिरमें प्रीतिकी ज्योति हो। तो हमारा अंधेरा मिट जाता है और सब जगह प्रकाश-ही-प्रकाश दिखता है। यही मेरी प्रार्थना है और आप लोग भी मेरी प्रार्थनामें शामिल हों कि सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तान

मे ऐसा प्रकाश पैदा हो जाय जिससे आपस-आपसमे मोहब्बतसे रहे। पीछे हम खुराक और कपडा पैदा करनेमे लग जायं, जिसकी आज देशमे कमी है। और हम भूल जाय कि हममे दुश्मनी थी, और दोस्त बन जाय। बस यही मै चाहता हू कि हम सब इस काममे लग जाय।

: १३५ :

१ नवबर, १९४७

(आज भी गाधीजीकी प्रार्थना-सभामे उसी व्यक्तिने कुरानशरीफकी आयत पढनेपर आपत्ति की जिसने कल और परसोंकी थी। इसलिए प्रार्थना आरंभ करनेसे पहले गांधीजीने कहा—)

भाइयो और बहनो,

मुझको ब्रजकिशनजी कहते है कि जिस भाईने कल विरोध किया था उसीका आज भी विरोध है। उनका विरोध तो मुझे अच्छा लगता है और बुरा भी। अच्छा तो इसलिए कि कल जिस शांति और सभ्यतासे उन्होंने विरोध किया वैसा विरोध तो बराबर रह सकता है। जब उनके दिलमे विरोध है तब उसे बाहर क्यों न प्रकट करदे। आप लोग भी यहां और बाहर, दोनो जगह शात रहे और उनको कुछ नही कहा। इस लिहाजसे तो मुझे अच्छा लगा, लेकिन दुःख इसलिए होता है कि जिस विनय और दृढतासे मैंने कल समझाया था उसको उन्होंने नही समझा। वह कोई गंभीर बात तो थी नहीं, एक साधारण बुद्धि भी उसे ग्रहण कर सकती थी। मगर जब आदमीके दिलमे रोष हो जाता है तो मुझे प्रिय लगता है कि वे उस रोषको शातिसे जाहिर करते है। इसलिए मुझे दुःख होता है और सुख भी। मैं समझ लेता हूं कि जैसे आप लोगोंने कल उत्साह बताया था और दिलमें उनके प्रति कोई रोष न रखते हुए मोहब्बत ही बताई, वैसे ही

मुझको उम्मीद है कि आज भी आप वही करेंगे। तब तो मैं अपनी प्रार्थना शुरू करूंगा। अगर इस सभ्यतासे विरोध करें तब तो उसमे मैं कोई हानि नही समझता हूं। उसमे तो हमे शांतिका ही पाठ मिलेगा और बुलंद अहिंसा कैसे काम करती है उसे हम सीख लेंगे। अगर ऐसा ही करते रहे तो हम समझ जायंगे कि इसमें कितना चमत्कार भरा है।

(इसके बाद प्रार्थना शातिपूर्वक हुई और श्रीदिलीपकुमार रायने यह भजन गाया—'हम ऐसे देशके वासी है जहां शोक नही और आह नही।' बाद मे गाधीजीने कहा—)

आज भी आपने उसी मधुर कठमे मधुर भजन सुना। उसमे तो यही कहा गया है न कि 'हम ऐसे देशके वासी है, जहा शोक नही और आह नही।' पीछे उसमे और भी कहा है कि 'वहा मोह नही, लोभ नही' और भी हमारे जो इस प्रकारके रिपु है वे वहां नही है। लेकिन वैसा देश कहा हो सकता है? पहले जब सुचेतादेवी ने यह भजन सुनाया था तब मैंने उस प्रार्थना-सभामे उसके दो अर्थ समझाए थे। एक तो मैंने यह बताया कि वह देश कविने हिन्दुस्तानको कहा। उसकी एक इच्छा थी, स्वप्न था कि हमारा देश ऐसा हो, लेकिन आज तो वैसा है नही। वह भजन तो १५ अगस्तके पहलेका लिखा हुआ है, लेकिन उस वक्त भी देश तो ऐसा नही था। वहां शोक, लोभ, राग, मद, मोह, मत्सर, ये जो ६ हमारे दुश्मन माने गये है, सब वहा थे। इन छहोंमें और भी सब दुश्मन आ जाते है। तब तो उसमे भूख भी थी, भीखभी थी, कपडे भी नही थे—ये सब विपत्तियां उस समय भरी हुई थीं, लेकिन कविकी तो ऐसी आशा थी न, कि हमारा देश ऐसा बने। कैसे बने, इसमें दूसरा अर्थ आ जाता है। यह भी तो देश है न, कि भगवद्गीतामें जिसको कुरुक्षेत्र भी कहा गया है और धर्मक्षेत्र भी। अगर मनमें भगवानका मंदिर है तब तो वह धर्मक्षेत्र हुआ और अगर मन स्वेच्छाचारी हो जाता है तब वह कुरुका धाम बन जाता है। कौरवरूपी दुश्मन तो कितने ही हैं, जिनके पिता अंधे है, लेकिन धर्मक्षेत्र तो युधिष्ठिर के रूपमें ही है न, इसलिए युधिष्ठिरका नाम धर्मराज हुआ। ऐसा जो हमारा देश है

उसमें न आह है, न शोक है। वैसे हम सब हो सकते है, लेकिन शर्त थी बताई है न! तब हमारा देश कौन-सा है, जिसमे भगवान् भरा है। कविने उसे पीछे स्वदेश भी कहा और स्वराज भी कहा। ठीक कहा उसने। जब हम स्वराज पा लेते है तब पीछे हिन्दुस्तान ऐसा बन जायगा जिसमे न आह होगी, न शोक होगा। लेकिन देश आज जितना कंगाल है उतना तो मैने कभी नही पाया। मैने जो बचपनसे कुछ इतिहास पढा है उसमे भी उसको ऐसा नहीं बताया गया है जैसा आज है। उस चीजको मिटाने के लिए ही यह भजन है। उसमे बताया गया है कि अगर हम अपने मनको मन्दिर बना लें और उसमे भगवानकी प्रतिष्ठा कर ले तो सब खैर हो जाती है।

आज एक तरफ तो लोग भूखों मर रहे है और नंगे है। यहां तो हम सब कपड़े पहने हुए बैठे है। ठंड न लगे इसलिए मैने भी चादर ओढ लिया। आज मेरे पास बेचारी एक डाक्टरनी आ गई। वह आज कुरुक्षेत्रसे आई थी। वह पंजाबमे बडा काम कर रही थी। वहां वह हिन्दू, मुसलमान, सिख सबकी शुश्रूषा करती थी। वहांसे उसको भागना पडा। वहां से निराश्रित होकर आ गई थी। सुशीलाजीने उनको कहा कि जब और कोई काम नही तब कुरुक्षेत्रमे काम करो तो वह उनको वहा अपने साथ ले गई। आज थोडा वहाका हाल सुनानेके लिए यहां आगई थी। आज हमारे मुंशीजी यहां है। उनकी लडकी भी डाक्टर बन गई है। वह कहती है कि मै कुछ तो करूं, खामखा यहां खाली बैठे क्या करूंगी। वह भी वहां चली गई। उस डाक्टरनीने आज मुझे यह भी सुनाया कि वहा लोगोंकी शुश्रूपा तो होती है, लेकिन डाक्टर काफी नही है। वहा इतने लोग भरे है, इतनी आपत्ति और व्याधि भरी है कि जो दो-तीन महिला डाक्टर है वे काफी नही है। वहां काफी डाक्टरोकी जरूरत है। अगर डाक्टर जाते हैं तो वे सेवा कर सकते है—कोई मेरे-जैसे नीम-हकीम तो है नही, उनके पास तो विलायती दवा होनी चाहिए, क्योंकि वे विलायती डाक्टर होते है। उनके पास पूरी दवा नहीं है, लेकिन वह उन्हे मिल जानी चाहिए। औरतें पडी हैं, बच्चे पड़े हैं। वे हमेशा भिखारिन तो थी नही। ऐसी भी औरत

हैं कि उनका एक बच्चा भीतर है और एक गोदमें। ऐसे हमारे हाल है।

इसमें हम किसको क्या दोष दें? कोई ऐसा कहे कि हकूमत नालायक है, लेकिन हकूमत क्या जानती थी कि इतनी परेशानी होगी। हमने तो कभी हकूमत चलाई नहीं थी। अभी तो हकूमतको चलाते दो ही महीने हुए। जब ऐसी आपत्ति आ पडती है तो हम कैसे उसको पहुंच सकते थे। इसको तो हमें बर्दाश्त करना ही है, लेकिन इसे बर्दाश्त करते हुए हम पागल बन जायं, रोषको कम न करें और कहे कि वहां उन्होंने एक मुक्का मारा तो हम दो मारेंगे, दो मारे तो हम चार लगायगे, चार मारे तो आठ मारेंगे। तब तो यह सिलसिला कहीं मिटना ही नहीं है। पीछे हमको यह भजन गानेका अधिकार नहीं रहता है। अगर गाय तो सच्चे दिलसे गाना चाहिए। अगर हमारा मधुर कंठ है तो केवल मधुर गानोंके लिए नहीं होना चाहिए। उसको भगवानकी भक्तिके लिए इस्तेमाल किया जाय। अगर उस माधुर्यसे किसीके दिलमे भगवान बैठ जाय और वहा उसकी प्रतिष्ठा हो जाती है तो ठीक है।

एक तरफ तो हमारा यह हाल है और दूसरी तरफ काश्मीरका मामला है। यहांसे जितने हवाई जहाज जा रहे है, उनमें मुझको ऐसा लगता है कि फौजके आदमी ले जा रहे हैं। वहासे कुछ लोग जो डरपोक है, भाग-कर आ रहे है। उनको भागना क्या था! और भाग कर जायंगे कहा? वे क्यो न बहादुरीसे मर जायं? इस तरहसे सारा काश्मीर भी जमीदोज हो जाय तो मुझपर कुछ असर होनेवाला नहीं है। मै तो हॅसते-हॅसते आपको यही सुनानेवाला हूं कि उसपर आप सब नाचे। लेकिन शर्त यह है कि वहां सब लोग बहादुरीसे मर जाते है—बूढे और बच्चे भी। अगर कोई कहे कि बच्चे क्यों, तो मैं कहूंगा कि वे बच्चे कहां जायंगे? आखिर वे अपने मां-बापके साथ रहते है। तो वे सब वहां पड़े हैं, लेकिन उन सबको हथियार कहांसे दे? मेरे-जैसेको तो हथियारकी दरकार नहीं रहती। आखिर जान है तो सब चीज पर फिदा करना है। तब तो हम कह सकते है कि

हमारी जो आत्मा है वह अमर है। अगर हम ऐसा नहीं करते तो उसका मतलब यह है कि हम शरीरको ही आत्मा मान लेते है। और उसकी पूजा करते है; लेकिन शरीरको भी एक दिन तो मरना है ही। चूकि बच्चा माकी गोदमे रहता है, इसलिए अगर मां मर जाती है, तो बच्चेको भी मर जाना है। मरना ही है तब खुशीमे मरना चाहिए। वे कहे कि अगर अफ्रीदी लोग तबाह करने आए है तो हम खुद अपने आप तबाह हो जाते है। जितने लश्करके लोग वहाँ गए है वे भी नाचते-नाचते मरेंगे। मरनेके लिए तो वे वहां गये ही है। जिंदा कब रहेंगे? तब जब कि यह मालूम हो जाय कि अब यहा खैर है, काश्मीरपर कोई चढ़ाई नही करता है, पूर्ण शांति हो गई है। अब तो काश्मीर शेख अब्दुल्लाके हाथ में पडा है। वह हिंदू, मुसलमान, सिख, सबको भाई-जैसा समझता है। बाहर से भी जो लोग काश्मीरमे आकर रहते है, और अंग्रेज भी जो वहां जाते है, उन सबका वह दोस्त है। वह तो सबको बुलाता है कि आओ, और यहांकी खूबिया देखो, यहाके फल खाओ, वहांकी कारीगरी तो बहुतही सुंदर है। लोग हाथसे बहुत खूबसूरत कपडा बुनते है और पेट भरके उसका दाम लेते है। ले क्यों नही, क्योंकि काश्मीर तो आखिर इसीपर जिंदा है। तो अब शेख अब्दुल्ला काश्मीरका मालिक बन गया है। महाराजा तो है, लेकिन उनके नामपर ही वह मालिक बना है। महाराजाने भी उनको कहा है कि कुछ करना है तो करो, अगर काश्मीरको रहना है तो रहेगा, और जाता है तो जायगा।

एक तरफ तो कुरुक्षेत्रमे, दूसरी तरफ काश्मीर में क्या हो रहा है और तीसरी तरफ देखो तो हमको यहाँ इन चीजोंको भी बर्दाश्त करना पड़ रहा है। पाकिस्तानमें इतने मुसलमान भाग गए है; जो बिना सबब भागते है वे जायं, उनको कौन रोक सकता है। लेकिन कुछ हमारे डरसे भी जाते हैं। कुछ मुसलमान भाई मेरे पास आते है तो मुझे शर्म आती है। वे कहते हैं कि हम अब खड़े नही रह सकते, पता नही कब मार दिये जायंगे। डरने उनके हृदयमे इस तरहसे प्रवेश कर लिया है। मुझको यह बुरा लगता है। इसी तरह से एक औरत आती-

है और कहती है कि मुझे डर लगता है, वहां पठान मेरे पीछे पड़ा है। यह सुनकर मेरा हृदय रोता है। मै कहता हूं कि जिसके पीछे भगवान है तो पठान या कोई भी हो, उसको उसको परवाह क्या? लेकिन यह तभी हो सकता है जब उसको यह पता हो कि मेरे पास भगवान है। अगर कोई बदमाश आता है, चाहे वह पठान हो, हिंदू हो या सिख हो, क्योंकि बदमाशी पठानका ही क्षेत्र हो ऐसा थोडा ही है, बदमाश तो सब जगह पडे है, वे भी ऐसे बदमाश और व्यभिचारी हो सकते हैं तो पतिव्रता स्त्री उसे देखकर काप उठेगी। लेकिन वह क्यों कांप उठे? आप तो यह मानते ही है कि सीताजी कभी नहीं डरी। रावणके कंधेपर रहते हुए भी वह नही डरी। तब भी उसको सुनाती थी कि राम मेरा पति है, वह मेरे पास पडा है। तो राम तो भगवान ही था न, इसलिए वह सुनाती थी कि खबरदार, यदि तूने मुझे छुआ तो भस्म हो जायगा। वह छोटी-सी लड़की थी, लेकिन उसमें पवित्रता थी, जिसकी वजहसे वह डरी नही। पवित्रता सबमे बड़ा हथियार होता है। अगर हम इस बलासे मुक्ति पाना चाहते है तो जैसा कि अभी भजनमे कहा है वैसा हम सब बन जायं। हर एक स्त्री और पुरुष जो प्रार्थनामे आते है वे अगर सब ऐसे बन जाय तो वह गुलाबकी खुशबूकी मानिद सारे हिंदुस्तानमें फैल जायगा। तो आज जो हम पागल-से बन गये है और जो विपत्ति आ गई है, वह पवित्रताके आनेसे कचरेकी तरहसे साफ हो जायगी। मै तो ईश्वर से यही प्रार्थना करूंगा कि हम अच्छे बनें, काश्मीरमे जो हो रहा है उस भयसे मुक्त हो जायं और लोग जो निराधार होकर आ गये है, उनका भी भला हो।

कुरुक्षेत्रमे तो, जैसे डाक्टरनी मुझे बताती है, कुछ बदमाश आदि भी आगये है। जब एक दफा एक आदमीको कम्बल मिल गया तो वही आदमी दूसरी तरहसे कम्बल लेने आता है। वे इतना नही जानते कि सब लोगोंको ओढ़ने और पहननेको तो मिला ही नहीं। बहुत-सी औरतें ऐसी हैं जो वहासे जो कपड़े पहनकर आई है वही उनके शरीरपर अबतक हैं। मुझको तो सुनकर भी यह बर्दाश्त नहीं होता—देखनेके पीछे न जाने क्या होगा? तो वे डाक्टरनी कहती है, अतिशयोक्ति तो वे

कर नहीं सकती, कि मैंने अपनी आंखोंसे देखा है कि यह सब इसी तरहसे चलता है। इतनी बातें उसने मुझको सुनाई।

मै तो इतना ही कहता हूं कि हम समझ जायं कि हमारा अधर्म हमें कहां ले जा रहा है? हम कहींपर स्थिर होते है या नही और तब हम पीछे सोचें कि हम ऐसे देशके वासी है या नहीं कि जहां न आह है, न शोक है।

: १३६ :

२ नवंबर, १९४७

(प्रार्थनासभामें आज कई लोगोंने कुरानशरीफकी आयत पढ़े जानेपर आपत्ति की। फलस्वरूप गांधीजीने प्रार्थना आरंभ करनेसे पहले कहा—)

भाइयो और बहनो,

कुरानशरीफके कुछ टीकाकारोंने जो अर्थ लगाए है वे सही नही है। मैं तो उसे पढकर हिंदु-धर्मसे नीचे नही गिरता हूं, ऊंचा ही जाता हूं। मै दावा करता हूं कि हिंदुस्तानमे या उसमे बाहर भी सबसे आला दर्जेका जो हिंदू है उससे मै कम नही हूं; क्योंकि मै वेदको माननेवाला हूं, गीताको पढ़ता हूं और उसमे जो लिखा है उसपर अमल करता हूं। मुझको तो बचपनसे ही यह सिखाया गया है कि दुनियामें कोई ऐसी जगह नही है जहां ईश्वर न हो।

ब्रजकिशनजी सुनाते है कि विरोध करनेवालोंका संघ आज कुछ बड़ा है। वे कहते है कि हमको विरोध तो है, किंतु चूंकि मुझको सुनना चाहते है, इसलिए बर्दाश्त कर लेते है। मैं कहता हूं कि इसको बर्दाश्त क्या करना था। इससे न तो आपको फायदा होगा, न मुझको। अगर आपको मेरे साथ बैठकर प्रार्थना करना है तब तो उस विरोधको बर्दाश्त करना ठीक है। आप इसलिए बर्दाश्त न करें कि

मै महात्मा हू या मैने हिदुस्तान की सेवा की है। आप मेरा दर्शन करना चाहते है। इसलिए मै पूछता हूं कि क्या आप दिलसे प्रार्थना करना चाहते है।

(सब लोगोंद्वारा रजामदी प्रकट करनेपर प्रार्थना आरभ हुई और प्रार्थना शातिसे हुई। प्रार्थनाके बाद गाधीजीने भाषण करते हुए कहा)

आप लोगोने तो अखबारोमे देखा ही होगा, लेकिन मुझको भी कुछ पता चल जाता है कि काश्मीरमे क्या हो रहा है। अब तो वहा खैर है, यही कहना चाहिए। खैरके माने यह कि काश्मीरमें श्रीनगर अबतक साबित पड़ा है। लुटेरे लोग अबतक उसपर कब्जा नही ले पाए और पीछे तो दिन-प्रति-दिन कब्जा करना उनके लिए मुश्किल ही होना चाहिए। लुटेरे जो होते है वे लड़ाकू तो होते नही। क्योंकि वे कोई हकसे तो वहा गए नही। इसलिए जगतमे उनकी निदा ही होनेवाली है, ज्यों-ज्यो दिन जाते है त्यों-त्यों उनका दबदबा क्षीण होता जाता है। जो लश्कर जाता है उसको सुभीता रहता है, वक्त मिल जाता है। और वह वक्त मिल रहा है। हवाई जहाजसे अधिक लश्कर तो जा नही सकता, बहुत मुसीबत होती है, लेकिन हकूमतकी सब मदद कर रहे है ऐसा मै सुनता हूं। वे सब शौकसे मदद करते है, इसलिए आरामसे सब हवाई जहाज जाते है। हवाई जहाज हकूमतके तो है नही, वे सब अपनी-अपनी निजी कपनियोके है और अच्छा काम समझकर अपने हवाई जहाज हकूमतको दे देते है।

एक बात और है—वह यह है कि जो आजाद हिंद फौज सुभाष बाबूने बनाई थी और उसके लिए हम सब सुभाष बाबूकी होशियारी, बहादुरीकी तारीफ करते है और तारीफ करनेकी बात है; क्योंकि जब वह हिंदुस्तानके बाहर था तब उसने सोचा कि चलो थोड़ा फौजी काम भी कर लू। वह कोई लडवैया तो था नही। एक मामूली हिदुस्तानी था। जैसे दूसरे वकील, बैरिस्टर रहते है वैसे सुभाष बाबू थे। फौजकी कोई तालीम तो पाई नही थी, हा, सिविल सर्विसमे जैसा आम तौर होता है, थोडी घुडसवारी सीख ली होगी। लेकिन पीछे उन्होंने फौजी शास्त्र थोड़ा पढ़ लिया होगा। इस प्रकार उनके मातहत जो सेना

बनी थी, मै सुनता हूँ कि उसके दो बडे अफसर, जिनसे मै जेलमें तथा उसके बाहर भी मिला था, काश्मीरपर हमला करनेवालोंसे मिले हुए हैं ; यह मुझको बहुत चुभता है। ये सुभाष बाबूके मातहत खास काम करनेवाले थे और हमेशा उनके साथ रहा करते थे। सुभाष बाबू लश्करसे कोई बात छिपाकर रख तो सकते नही थे क्योंकि उन्हें उनके मारफत काम लेना पडता था। वे आज लुटेरोके सरदार होकर जाते हैं तो मुझको चुभता है। अगर उनको अखबार मिलते है या जो मै कहता हूं उसको वे सुन लें तो मैं अपनी यह नाकिस आवाज उनको पहुंचाता हू कि आप इसमे क्यों पडते है और सुभाष बाबूके नामको क्यों डुबाते है ? आप ऐसा क्यों करते है कि हिंदूका पक्ष लें या मुसलमानका पक्ष लें, आपको जातिभेद करना नही चाहिए। सुभाषबाबू तो ऐसे थे नही ; उनके साथ हिंदू, मुसलमान, सिख, पारसी, ईसाई, हरिजन आदि सब रहते थे। वहां न हरिजनका भेद था न इतर जनका। वहा तो हिंदुस्तानियोंमे जातपातका कोई भेदभाव था ही नही। यों तो सब अपने धर्मपर कायम थे, कोई धर्म तो छोड़ बैठे थे नहीं। लेकिन सुभाषबाबूने कब्जा कर लिया था, उनके चित्तका हरण कर लिया था, शरीरका हरण नही किया था। ऐसा तो चलता नही था कि अगर आजाद हिंद फौजमे शामिल नही होता है तो काटो। लोगोंको इस तरह काटकर वे हिंदुस्तानको रिहाई दिलानेवाले नही थे। इस तरहसे बडे हुए और बड़प्पन पाया। तब आप इतने छोटे क्यो बनते है, और इस छोटे काममें क्यों पडते हैं। अगर कुछ करना ही है तो सारे हिंदुस्तानके लिए करो। वहां जो मुसलमान है, अफ्रीदी है उनको कहें कि यह जाहिलपन क्यों करना ? लोगोंको लूटना और देहातोंको जलाना क्या ? चलो महाराजासे मिलें, शेख अब्दुल्लासे मिलें, उनको चिट्ठी लिखें कि हम आपसे मिलना चाहते है, हम यहां कोई लूट करने तो आए नहीं हैं। आप इस्लामको दबाते है, इसलिए आपको बताने आए है, यह तो मैं समझ सकता हूं। तब तो आप सुभाष बाबूका नाम उज्ज्वल करेंगे और उन अफ्रीदी लोगोंके सच्चे शिक्षक बनेंगे। अफ्रीदी लोग कैसे रहते हैं, उनमें भी लुटेरे हैं या नहीं है, यह मै नहीं जानता हूं। लेकिन

मेरी निगाहमें वे भी इन्सान है। उनके दिलमे भी वही ईश्वर या खुदा है, इसलिए वे सब मेरे भाई है। अगर मै उनमें रहूं तो उनसे कहूंगा कि लूट क्या करना, एक दूसरेपर गुस्सा क्या करना। मै यह तो कहता नही कि तुम्हारे पास जो बंदूकें या तलवारें है, उन्हे छोड़ दो। उनको रखो; लेकिन जो दूसरे लोग डरे हुए है, मुफलिस हैं औरतें है, बच्चे है उनको बचानेके लिए। उसमें क्या है, चाहे वे हिंदू हों या मुसलमान। तो मै कहूंगा कि ये जो दो अफसर है, जिनका नाम मैने सुन लिया है, वे सुभाष बाबूका नाम याद करे। वे तो मर गए, लेकिन उनका नाम नही मरा, काम तो नही मरा।

अब मेरा दिल आगे बढ़ता है कायदे आजम जिन्नाकी तरफ। उनको मै पहचानता हूं। मै तो उनके घर जाता था और एक दफा तो १८ बार गया था। मै उसको तपश्चर्या मानता हूं। बादमे भी उन्होंने और मैने एक चीजमें दस्तखत किये थे और उसमें भी हम दोनों हिस्सेदार बन गए थे। तब भी उनके साथ मीठी बातें होती थी। इसलिए मै तो उनसे, लियाकतअली साहबसे और उनके मंत्रिमंडलसे कहूंगा कि यह क्या बात है कि आप जवाहरलाल-जैसे आदमीको कहते है कि आप धोखेबाजी करते है। जवाहरलाल और उनकी सरकारको इसमे धोखे-बाजी क्या करनी थी! मै कहूंगा कि जवाहर तो किसीसे भी धोखा करने-वाला नही है, जैसा उसका नाम है वैसा उसका गुण है। उनकी सरकार मे जो सरदार या दूसरे आदमी है उनको भी मै पहचानता हूं। वे भी कोई धोखेबाज नही है। अगर वे काश्मीरसे मशविरा करना चाहते है तो उसका यह मतलब नही है कि वे फुसला रहे है। जवाहरलाल तो पहले भी उनसे बात करता था और अकेला शेख अब्दुल्लाके लिए उनसे लड़ता था। तो उसको इसमें धोखा क्या करना था? धोखेबाजी करनेसे हिंदुस्तान या कोई और मुल्क बच थोड़े सकता है। तब वे ऐसा क्यों कहते हैं? तो काश्मीरमें जो अफ्रीदी लोग चले गये हैं, उनको कुछ-न-कुछ उत्तेजना तो पाकिस्तानमे मिलती ही होगी तभी तो वे कोई काम कर सकते है, नही तो वे कैसे कर सकते थे? अगर मै पाकिस्तानमें होता तो मै उनको ऐसा काम करनेसे रोक देता।

पाकिस्तानके उदासीन रहनेपर तो वे ऐसा काम कर नही सकते थे, लेकिन यहां तो उदासीन ही नहीं उसमे ज्यादा है।

मेरे पास दो हिदू– एक कराचीमे और दूसरे लाहौरसे, आये है। मुझको सुनाते हे कि कराचीमे बुरा तो हुआ, लेकिन अब दिन-प्रतिदिन अच्छा होता जाता है। तब क्या तुम वहांके लोगोंमे कुछ कहोगे कि वे क्यो घबराते है? वहा जो सिधी मुसलमान है, वे हिदुओके साथ मिल-जुलकर रहे है, बाज दफा झगड़ा ता हुआ है; लेकिन उसके बाद फिर दोस्त बन गये है, उसका ता मै गवाह हूं। वहां सब कुछ ठीक हो गया है, ऐसी बात नही है। लेकिन मत्रिगण ऐसा चाहते है। दूसरे सज्जन बताते है कि लाहौरमे कितनी बडी-बडी हवेलिया थी। वे सब बेकार हो गई है। वहा हिदू तो कोई ज्यादा है नही—केवल मुट्ठीभर रहे है। लेकिन जो मंत्रिमडल है, वह चाहता है कि हिदू-सिख सब रहे। हा, सिखोंके रहनेपर तो कुछ एतराज है; लेकिन तो भी वे काफी वहां है। मैंने वहाँ खूबीकी बात यह सुनी कि लाहौरमे एक मुसलमान, जो शरीफ आदमी है, किसी सिखको अपने यहा रखा हुआ है। तो उन्होंने जो आखों देखा हे वह सुनाया कि उसी मुसलमानके घरमें एक कमरा है, जहां उन्होंने गुरुग्रथ साहब खोलकर रखा है और बडी अदबसे उसको रखता है। चूंकि वह मुसलमान उस सिखका दोस्त है, इसलिए उसको बचा लिया। यह मुझको अच्छा लगता है। पीछे एक सिख ही मुझको सुना गये है कि ऐसा बहुत जगह हुआ है, जहां मुसलमान दोस्तोंने हमे अपने घरोमे रखा। दोनों ही जगहोंसे मुझे ऐसी ही खबरें मिली है। तो पीछे क्या वजह है कि यहासे इतनी बडी सख्यामे मुसलमानोंको पाकिस्तान भगाया जाय? क्या वजह है कि हिदू और सिख वहासे भगाकर यहा आते है? इसका क्या नतीजा आना है? यही न कि हम सब बरबाद होते है। जब लोग अपना घर-बार छोडकर जाय तब ऐश-आरामसे तो वे रह नही सकते। ऐश-आराम तो अपने घरमें ही रहकर मिल सकता है। घर छोडनेके बाद न तो अच्छा खाना मिलता है और न पहननेको मिलता है। अभी शिविरोंमें ठंडमें पड़े रहकर लोग थरथर कापते हैं। तो वे,

कहते हैं कि हमारे साथ यह क्या हुआ? हमारी हकूमतने यह क्या किया? हमने क्या गुनाह किया कि जिस कारणसे हमें इस परेशानीमें पड़ना पड़ा है। उनको तो ऐसा लगता है कि वहां तो इर्दगिर्दमें मुसलमान पड़े है और यहां इर्दगिर्द हिंदू पड़े हैं। तब यह बर्बादी कहांतक चले और कबतक चले। इसका क्या नतीजा निकलेगा? नतीजा तो भगवान ही निकाल सकता है, लेकिन मुझको तो यह बुरा ही लगता है।

पाकिस्तानके कायदे आजम ऐसा क्यों कहते हैं कि हिंदू और सिख तो हमारे दुश्मन है। मैले आदमी तो हिंदू सिख मुसलमान सबमें ही पड़े है, लेकिन सारी जातिको दुश्मन कहना बहुत बुरी बात है। मैं तो बड़े अदबसे सारे मंत्रिमंडल और लोगोंको कहूंगा कि अगर आप चाहते है कि हिंदुस्तान बर्बाद न हो और वह दूसरोंके हाथों में न चला जाय तो पीछे आपको शरीफ बनना है।

जिन आदमियोंने आज कुरानशरीफकी आयत पढ़नेपर जिस शराफत-से विरोध किया उसके लिए मैं उनको जितना धन्यवाद दूं उतना कम है। इससे वे भी अहिंसासे काम लेना सीख लेंगे। उन्होंने ठीक ही कहा कि हमको कुरानशरीफकी आयत तो पसंद नहीं है, लेकिन प्रार्थना निर्विरोध चलने दी, यह मुझे अच्छा लगा। इस तरहसे हम हिंदुस्तानके वास्ते दैवी शक्ति पैदा कर रहे हैं, आहिस्ता-आहिस्ता हो रहा है, छूमंतर करनेसे तो पैदा हो नहीं जाती, लेकिन आखिरमें यह शक्ति पैदा हो जायगी। मैं ईश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि आजाद हिंद फौजके उन दो बड़े अफसरोंको सद्बुद्धि दे। और हिंदुस्तानका जहाज, जो आज डावां-डोल हो रहा है, वह सीधे-सादे शांत पानीमें चले।

: १३७ :

३ नवंबर, १९४७

(लिखित संदेश)

यदि एक जहर दूसरे जहरसे मिल जाय तो इस बातका निश्चय कौन करेगा कि उनमें पहले कौन-सा डाला गया था। और यदि इस बातका निश्चय हो भी जाय तो इससे फायदा क्या होगा ? लेकिन हम यह जानते है कि यह जहर तमाम पश्चिमी पाकिस्तानमे फैल गया है, लेकिन वहाकी हकूमतने शायद इसमें जहर नही माना है। ईश्वर करे कि यह जहर महदूद रहे और काबूमें रहे। तब हम इस बातकी आशा कर सकेंगे कि समय आनेपर यह जल्दी ही दोनों हिस्सोंसे निकाल दिया जायगा।

डा० राजेंद्रप्रसादजीने प्रातीय प्रधानों या उनके प्रतिनिधियों तथा और लोगोंकी जो मीटिंग उनको खुराक-कंट्रोलके मसलेपर मशवरा देनेके लिए बुलाई है, मै समझता हूं कि आज मुझे उसी बहुत जरूरी मामलेपर कुछ कहना चाहिए।

अबतक जो कुछ मैंने इन दिनोंमे सुना है उससे मै तिलभर भी अपनी इस रायसे नही हटा हूं कि कंट्रोल जल्द बिलकुल हट जाने चाहिए और यदि वह रहे भी तो छः माहसे अधिक तो हरगिज न रहे। एक दिन भी नहीं गुजरता जो मेरे पास तार या पत्र न आते हों और उनके बाज-बाजमे तो बहुत प्रतिष्ठित व्यक्तियोंके होते है, जो यह बडे जोरके साथ कहते हैं कि दोनों कंट्रोल हटा देने चाहिए। मै फिलहाल दूसरे कंट्रोल अर्थात् कपडेके कंट्रोलको छोड़ देना चाहता हूं। कंट्रोलसे धोखा वढता है, सत्यका दमन होता है, काला बाजार बढ़ता रहता है और बनावटी कमी बनी रहती है। सबसे ज्यादा तो यह लोगोंको कमजोर बना देता है, वह निरुत्साही हो जाते है, और उनमे अपने पैरोंपर खड़े रहनेकी शिक्षा जिसे एक पीढ़ीसे वह सीखते आये हैं भुला बैठते हैं। वह सदा दूसरोंके मुंहकी ओर ताकते रहते हैं। इस दुर्घटनासे बढ़कर, यदि कोई दूसरी हो सकती है तो 'वह है

मौजूदा भाई-भाईका कतल, जो एक बड़े पैमानेपर चल रहा है, और पागलपनसे तबादला-आबादी, जिसके कारण बिला जरूरत मौतें, भूखों मरना, रिहायश और कपड़ेका न मिलना—खासकर इस आनेवाले जाडेके मौसममे--हो रहा हे, शायद कट्रोलकी दुर्घटना इसके बराबर हो।

दूसरी दुर्घटना देखनेमे बढी-चढ़ी मालूम होती है, लेकिन हमें पहली-को भी भूलना नही चाहिए, जो इतनी दिखाई नहीं देती।

यह खुराकका कंट्रोल हमें पिछली बडी लडाईकी खतरनाक विरासतमें मिला है। उस वक्त कट्रोल शायद जरूरी था, क्योंकि अनाज और दूसरी खुराक बहुत बडी मिकदार मे बाहर-देशोंमे भेजी जाती थी। इस गैर-कुदरती निर्यातका परिणाम यह आना जरूरी था कि अनाजकी कमी हो जाय, और बहुत-सी बुराइयोंके होनेपर भी राशनिग जारी करना पड़ा। अब अगर हम चाहे तो निर्यातको बंद कर सकते हैं। दुनियाके उन भूखे प्रदेशोंकी हम मदद कर सकते है, यदि हम बाहरसे हिंदुस्तानके लिए अनाज आनेकी उम्मीद छोड दें; क्योंकि इतना अनाज उनके लिए बच जाता है। मैने अपने जीवनमे, जिसकी दो पीढी गुजर गई, कई कुदरती दुष्काल देखे है; लेकिन मुझे याद नही आता कि कभी राशनिंगका खयाल भी आया हो।

ईश्वरकी कृपा है कि इम वक्त बरसात ठीक-ठीक हुई है। इसलिए खुराककी सच्ची कमी नहीं है। हिंदुस्तानके देहातोंमें काफी अनाज, दालें और तेलके बीज मौजूद हैं। कीमतोपर जो बनावटी कंट्रोल होता है अनाज पैदा करनेवाले उसे समझ ही नही सकते, इसलिए वह खुशीसे अपना अनाज जिसकी कीमत खुले बाजारमे उनको अधिक मिल सकती है, देना पसंद नही करते। इस हकीकतको सब लोग जानते है। इसके लिए जरूरी नही है कि कोई ऐदाद-ओ-शुमार जमा किये जाएं या इसको साबित करनेके लिए कि अनाजकी कमी है लबे-लंबे लेख और मजमून लिखे जायं। इतनी उम्मीद रहती है कि हमे कोई आबादी बढ़ जानेका भूत दिखाकर नही डरायगा।

हमारे मंत्री जनताके है और जनतामेंसे हैं। उनको इस बातका

अभिमान नहीं करना चाहिए कि उनका ज्ञान उन अनुभवी लोगोंसे अधिक है जो हकूमतकी गद्दियोपर नही बैठे है, लेकिन जिनका दृढ विश्वास है कि कंट्रोल जितनी जल्दी हटे उतना अच्छा होगा। एक वैद्यका कहना है कि खूराकके कंट्रोलके कारण, वे लोग जो राशनपर रहते है उनके लिए यह नामुमकिन कर दिया है कि खाने लायक अनाज उनको मिल सके, और इसलिए ये लोग गैर ज़रूरी तौरपर ऐसी बीमारियोंके शिकार हो रहे है, जो सड़े अनाजके खानेसे पैदा होती है। बजाय कंट्रोलवाली खूराकके सरकार बड़ी आसानीसे उन्ही गोदामोमे अच्छा अनाज बेचनेके काममें ला सकती है जिसे वह खुले बाजारमे खरीद सकेगी। ऐसा करनेसे कीमतें अपने-आप ठीक हो जायंगी और जो अनाज, दालें तथा तेलके बीज छुपे पड़े हैं सब बाहर निकल आएगे। क्या सरकार अनाज बेचने और पैदा करनेवालों का विश्वास नही करेगी ?

जम्हूरियतमे अगर लोगोको मध्य हकूमतकी रस्सीमें बांधा जाय तो टूट पड़ेगे। वे एतबार करनेसे ही बढ सकते है।

अगर लोग इस कारणसे मरने लगेंगे कि वे मेहनत नही करना चाहते और एक दूसरेको धोखा देते है तो ऐसे लोगोंके मरनेका स्वागत किया जाय। फिर लोग काहिल और खुद-गर्ज रहनेके पापको नही दोहराएंगे।

: १३८ :

४ नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज तो सिर्फ हमारे पुराने सभ्य मित्रने ही कुरानकी आयत पढ़नेपर एतराज उठाया है। इसलिए मै एक पंजाबी हिंदू निराश्रितके दर्दभरे खतकी चर्चा करूंगा। उन्होंने पंजाबमें बहुत कुछ सहा है। कुरानकी आयत पढ़नेका उन्होंने विरोध किया है। मैं नही जानता

कि वे भाई यहां मौजूद है या नहीं। वे यहां हों या न हों, लेकिन मैं उस खतकी उपेक्षा नही कर सकता। वह गहरे दर्दमे लिखा गया है। उसमे काफी अच्छी दलीले दी गई है। लेकिन वह अज्ञानसे भरा हुआ है, जो गुस्सेकी उपज है। उसकी हर लाइनमें गुस्सा भरा हुआ है। आजकल करीब-करीब मेरा सारा समय, हिंदू या सिख निराश्रितों या दिल्लीके दु:खी मुसलमानोंकी दर्दभरी कहानिया सुननेमें ही जाता है। मेरी आत्माको भी उतना ही दु:ख और उतनी ही चोट पहुचती है। लेकिन अगर मै रोने लगू और उदास बन जाऊ, तो वह अहिसाका सच्चा रूप नही होगा। अगर मै अहिंसासे इतना कोमल बन जाऊ, तो दिन-रात रोता ही रहूं और मुझे ईश्वरकी उपासना करने, खाने-पीने या सोनेका भी समय न मिले। लेकिन मैंने तो बचपनसे ही अहिसक होनेके नाते दु:खोको देख-सुनकर, रोनेकी नही, बल्कि दिलको कठोर बना लेनेकी आदत डाल ली है, ताकि मै दु:खोंका मुकाबला कर सकू। क्या पुराने ऋषि-मुनियोंने हमे यह नही बताया है कि जो आदमी अहिसाका पुजारी है, उसका दिल फूलसे भी कोमल और पत्थरसे भी कठोर होना चाहिए? मैने इस उपदेशके मुताबिक जीनेकी कोशिश की है। इसलिए जब इस खतकी शिकायतों-जैसी शिकायतें मेरे पास आती है, या जब मै अपने मुलाकातियोंके मुहसे गुस्से और रजभरी कहानिया सुनता हूं, तो मै अपने दिलको कड़ा बना लेता हूं। सिर्फ इसी तरह मै मौजूदा सवालोंका सामना कर सकता हूं। वह खत उर्दू लिपि मे लिखा है। इसलिए मैंने श्रीब्रजकिशनजीसे कहा कि उस खतकी खास-खास बाते मुझे लिख दे।

खतमे पहला इलजाम मुझपर अपना वचन तोड़नेका लगाया गया है। उन्होंने लिखा है, 'क्या आपने यह नही कहा है कि आपकी प्रार्थना-सभामें अगर एक भी आदमी कुरानकी आयत पढ़नेपर एतराज उठा-एगा, तो आप उसका मान रखेंगे और उस शामको प्रार्थना नही करेंगे?' यह आधा सच है, और पूरे झूठसे ज्यादा खतरनाक है। जब मैंने पहले-पहल एतराज उठानेपर अपनी प्रार्थना बंद की थी, तब मैंने यह जाहिर किया था कि मै प्रार्थना इस डरसे बंद करता हूं कि सभाके इतनी बड़ी तादादवाले लोग विरोध करनेवालेपर गुस्सा होकर उसके साथ

मारपीट तक कर सकते है। यह कई महीने पहलेकी बात है। तबसे लोगोने अपनेपर काबू रखनेकी कला सीख ली है। और, जब लोगोंने मुझे इस बातका वचन दिया कि विरोध करनेवालेके खिलाफ न तो वे अपने मनमे गुस्सा रखेगे और न किसी तरहका वैर, तो मैने फिर आम प्रार्थना करनेकी बात मान ली। और जैसा कि मै जानता हूं, इसका नतीजा अच्छा ही हुआ है। विरोध करनेवालोंका बरताव बिलकुल सभ्यताका होता है और अपना विरोध दर्ज करानेके सिवा वे प्रार्थनामे किसी तरहकी रुकावट नही डालते। इसलिए मै आशा करता हूं कि खत लिखनेवाले भाई यह देखेगे कि मैने अपना वचन भग नही किया है, और विरोध करनेपर भी प्रार्थना चालू रखनेका नतीजा अभीतक बिलकुल अच्छा ही रहा है। मै आप लोगोको यकीन दिलाता हूं कि जहातक मै अपने बारे मे जानता हूं, मैने जन-सेवकके नाते अपनी इतनी लंबी जिंदगीमे दिया हुआ वचन तोडनेका कभी अपराध नही किया है।

खत लिखनेवाले भाईने मुझपर दूसरा यह इलजाम लगाया है कि 'जब आप कुरानकी आयतें पढते है और यह भी कहते है कि सब धर्म समान है, तब आप जपजी और बाइबिलमेंसे क्यों नही पढ़ते ?' इस बातसे भी लिखनेवाले भाईका अज्ञान जाहिर होता है। वे मेरे उस बयानको नही जानते, जिसमे मैने बताया था कि पूरी भजनावली किस तरह तैयार हुई। आश्रम-भजनावलीमें बाइबिल और ग्रंथसाहिबमेसे भी काफी भजन लिये गए है।

उन भाईकी तीसरी शिकायत यह है कि 'आपके बडे-बडे कांग्रेसी नेता पश्चिमी पजाब या पश्चिमी पाकिस्तानके दूसरे किसी हिस्सेको छोड़कर यहां आए हैं। लेकिन यूनियनमें वे निराश्रितोंकी तरह रहकर दूसरे निराश्रितोंकी कठिनाइयों और मुसीबतोंमे साथ नही देते। पाकिस्तानमें उनके पास जैसी हवेलिया थी, उनसे ज्यादा अच्छी हवेलियां उन्होंने यहां ले ली हैं और उनमें मौजसे रहते है। ये कांग्रेसी नेता उन निराश्रितोंसे बिलकुल अलग रहते हैं, जिनके पास न तो रहने के मकान हैं न सर्दीसे बचनेके लिए गरम कपड़े। गरम कपड़ोंकी कमी

तो दूर रही, बहुतसोंके पास बदलनेके दूसरे कपडे ही नही है; न उन्हें अच्छा खाना मयस्सर होता है।' अगर यह शिकायत सच है, तो यह हालत शर्मनाक है। मैने तो अपनी प्रार्थना-सभाओंमे साफ शब्दोंमें उन धनी निराश्रितोंकी निदा की है, जो गरीब निराश्रितोंके साथ मुसीबतें उठानेके बजाय उनका साथ छोडकर मौज मारते है। यह धर्म नही, अधर्म है। धनियोंको अपने गरीब भाइयोंके सुख-दुःखमे साथ देना चाहिए।

इसके बाद उन भाईने मुझे यह ताना मारा है कि आप पाकिस्तान जानेका इरादा रखते थे, लेकिन अभीतक गए नही। यहा दिल्लीमे आपका क्या काम है? आप दुःखी हिंदुओं और सिखोंकी मदद करनेके लिए पाकिस्तान जानेके बजाय अपने मुसलमान दोस्तोंकी मदद करना क्यों ज्यादा पसंद करते है? लेकिन शिकायत करनेवाले भाई यह नही जानते कि दिल्लीके अपने फर्जको भुलाकर मै पाकिस्तानके हिंदुओ और सिखोंके दुःखोको कम करनेकी आशासे पाकिस्तान नही जा सकता। मै कबूल करता हूं कि मै मुसलमानों और दूसरोंका दोस्त हूं, क्योंकि मै हिंदुओं और सिखोंका भी वैसा ही दोस्त हूं। अगर मैं किसी आदमीकी सेवा करता हूं, तो इसी भावनासे प्रेरित होकर करता करता हूं कि वह सिर्फ हिंदुस्तानका या किसी एक धर्मका ही नही, बल्कि सारी मनुष्य-जातिका अंग है। दिल्लीके हिंदू और सिख निराश्रितों और दूसरोको यहांके मुसलमानोके दोस्त बनकर यह साबित कर दिखाना है कि दिल्लीमें मेरे रहनेकी कोई जरूरत नही है। तब मै इस पूरे विश्वासके साथ पाकिस्तानकी तरफ दौड जाऊंगा कि मेरा वहांका दौरा बेकार नही जायगा।

शिकायत करनेवाले भाईने कस्तूरबा-फंडको भी नही छोडा। उन्होने पूछा है कि कस्तूरबा-फंडका कैसे इस्तेमाल किया जा रहा है और उसे निराश्रितोंको राहत पहुंचानेके काममें क्यों नही खर्च किया जा सकता? पहली बात तो यह है कि वह फंड एक खास मकसदसे, तब इकट्ठा किया गया था जब मैं जेलमें था। यानी वह हिंदुस्तानके गांवोंकी औरतों और बच्चोंकी सेवाके लिए जमा किया गया था। उसका

एक ट्रस्टी-मंडल है। हमेशा सावधान रहनेवाले ठक्कर बापा उसके सेक्रेटरी है। और उसका पाई-पाईका हिसाब रखा जाता है, जिसे जनता देख सकती है। इसलिए लिखनेवाले भाईके सुझावके मुताबिक वह फड निराश्रितोकी सेवामे नही खर्च किया जा सकता। और ऐसा करनेकी जरूरत भी नही है। निराश्रितोकी राहतके लिए उदारतासे पैसा दिया जा रहा है और सब जानते है कि मेरी कबलोंकी अपीलका जनताने कितनी उदारतासे स्वागत किया है। सरदार पटेल ने इस बारेमे एक खास अपील निकाली है। लोगोने उदारतासे उसका स्वागत किया और आज भी किया जा रहा है।

खत लिखनेवाले भाईकी आखिरी शिकायत है 'जब पाकिस्तानमे सूअरोंके कतलपर रोक लगा दी गई है, तब यूनियनमें गो-हत्या क्यो नही बद की जा सकती ?' मुझे इसकी जानकारी नही है कि पाकिस्तानमे सूअरके कतलपर कानूनी रोक लगाई गई है। अगर शिकायत करनेवाले भाईकी सूचना सच है, तो मुझे दुःख है। मै जानता हूं कि इस्लाममे सूअरका गोश्त खानेकी मनाही है। लेकिन ऐसा होनेपर भी मै इसे ठीक नही मानता कि गैर-मुस्लिमोंकोभी सूअरका गोश्त खानेसे रोका जाय।

क्या कायदे आजमने यह नही कहा है कि पाकिस्तान ईश्वरशाही राज नही है और उसमे धर्मको कानूनका रूप नही दिया जायगा ? लेकिन बदकिस्मतीसे यह बिलकुल सच है कि इस दावेको हमेशा अमलमे सच साबित नही किया जाता। क्या हिदुस्तानी सघ ईश्वरशाही राज बनेगा और क्या हिदू-धर्मके उसूल गैर-हिदुओंपर लादे जायगे ? मुझे यह आशा नही है। ऐसा हुआ तो हिदुस्तानी-संघ आशा और उजले भविष्य का देश नही रह जायगा। तब वह ऐसा देश नही रह जायगा जिसकी तरफ सारी एशियाई और अफ्रीकी जातियां ही नही, बल्कि सारी दुनिया आशाभरी नजरसे देखती है। दुनिया यूनियन या पाकिस्तानके रूपमें हिदुस्तानसे ओछेपन और धार्मिक पागलपनकी उम्मीद नहीं करती। वह हिदुस्तानसे बड़प्पन, भलाई और उदारताकी आशा करती है, जिससे सारी दुनिया सबक ले सके और आजके फैले हुए अधेरेमे प्रकाश पा सके।

मैं गायकी भक्ति और पूजामें किसीसे पीछे नहीं हूं, लेकिन वह भक्ति और श्रद्धा कानूनके जरिए किसीपर लादी नहीं जा सकती। वह मुसलमानों और दूसरे सारे गैर-हिंदुओंके साथ दोस्ती बढाने और सही बरताव करनेसे पैदा हो सकती है। गुजराती और मारवाडी लोग गायकी रक्षा करनेमे सबसे आगे माने जाते हैं। लेकिन वे हिंदू-धर्मके उसूलोंको इतने भूल गए है कि दूसरोंपर तो वे खुशीसे पाबंदिया लगाएंगे और खुद गाय और उसकी संतानके साथ बहुत बुरा बरताव करेंगे। आज दुनियामें हिंदुस्तानके मवेशी ही सबसे ज्यादा उपेक्षित क्यों है? जैसा कि माना जाता है, वे दुनियामे सबसे कम दूध देनेके कारण देशपर बोझ क्यों बन गए हैं? बोझ ढोनेवाले जानवरोंके नाते बैलोंके साथ इतना बुरा बर्ताव क्यों किया जाता है?

हिंदुस्तानके पिंजरापोल ऐसे नहीं हैं जिनपर गर्व किया जाय। उनमें बहुत पैसा लगाया जाता है, लेकिन वहां पशुओंका साइंसी और बुद्धिमानी-भरा पालन-पोषण शायद ही किया जाता हो। वे पिंजरापोल हिंदुस्तानके जानवरोंको नया जन्म कभी नहीं दे सकते। वे मवेशियोंके साथ हमदर्दी और दया का बर्ताव करके ही ऐसा कर सकते है। मेरा यह दावा है कि मुसलमानोंके साथ दोस्ती बढा सकनेके कारण मैंने, कानूनकी मदद लिये बिना, दूसरे किसी हिंदूके बनिस्बत ज्यादा गायोंको कसाईके छुरेसे बचाया है।

: १३९ :

५ नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज तो मुझे आप लोगोंसे कुरानशरीफकी आयतके विरोधके बारेमे कुछ कहना नहीं है। यह मैं हमारी धन्य घडी मानता हूं। एक

भाईको आपत्ति है ही, लेकिन वे तो हमारे मित्र बन गए है। वे विरोध तो करते हैं, लेकिन सभ्यतासे। उसके बाद वे बिलकुल खामोश रहते है, इसको मै विरोध मानता ही नही। ऐसा सब लोग भी विरोध करे तो हम कुछ खोते नही है। विरोध रहते हुए भी वे पीछे प्रार्थनामें मग्न रहते है ऐसा मैंने उनकी जबानसे सुना है। तो यह अच्छा ही है।

आज आपने जो भजन सुना है वह एक हरिजन बालकका है। उसका कंठ मधुर है यह तो आपने सुन ही लिया। रामधुन भी उसने अच्छी तरह चलाई। यह मेरा एक ही अनुभव नही है। मै तो हरिजनोंके बीचमे रहता हू और सारे हिंदुस्तानमे तो मैंने बहुत दफा यात्रा की है और सारे देशके हरिजनोंके संपर्कमे आया हू। अगर हम खुद नही जानते हों और हमको कोई परिचय न दे तब तो हम हरिजनोंको किसी तरह पहचान नही सकते। जो गुण दूसरे इन्सानमे है वे सब उनमे भी है। कुछ दुर्गुण भी हैं, लेकिन वे उन्हीमे हो ऐसा थोडा ही है। और लोगोंमें भी है। सदगुण और दुर्गुण आखिर सबमे भरे है। लेकिन हरिजनोंमें मुझको विशेषता तो लगती है, और वह यह है कि अगर किसी हरिजन बालकको थोडा संगीत-शिक्षण देते है तो वह आगे बढ जाता है। चूकि हमने उनको अबतक गिराकर रखा है, इसलिए अब अगर उनमे कोई मुहब्बतमे बात करता है और मोहब्बतसे काम सिखाता है तो पीछे वे ध्यान रखकर मेहनत करते हुए आगे बढ जाते है। धनी लड़के तो गुमानमे पड़े रहते है और यह सोचकर कि हमारे मा-बापके पास काफी पैसा है, अपने काममे ध्यान नही देते। लेकिन चूकि हरिजन लोग आमतौरपर गरीब है और उनको अछूत मानते है, कोई उनको अपने नजदीक नही बैठने देता तब अगर कोई उनको अपने पास बिठाते है, साथ ही खाते-पीते है और सब कुछ करते है तब उनका हृदय भर जाता है। सब तो ऐसे नही हैं—मैंने ऐसे लापरवाह हरिजनोंको भी पाया है कि उनके लिए चाहे जितना करो, उसकी कोई कीमत ही नही करते। ऐसे दूसरे भी पड़े है—सब कोई ऐसे हरिजन थोड़े हैं। उनको हिंदू-धर्मने सैकड़ों वर्षोंसे गिरानेकी कोशिश की है, लेकिन तो भी वे अपने

धर्मपर कायम रहते है और दूसरोकी निस्बत उनमें अधिक गुण पाये जाते है।

पंढरपुरका नाम तो आपने नही सुना होगा। महाराष्ट्रमे वह यात्राका एक स्थान है। वहां जो मूर्तियां है उनके लिए इतनी दत-कथा भरी है कि मै उन सबको सुनाना नही चाहता हूं। तो वहाका मंदिर हरिजनोंके लिए खुलता नही था। इसपर साने गुरुजी वहा जाकर बैठ गए और मंदिरके ट्रस्टियोंसे कहा कि जब सब जगहके मंदिर खुल गए है तो यह क्यों न खुले। जब नही खुला तब उन्होंने उपवास शुरू कर दिया। साने गुरुजी तो भक्त पुरुष था, तो वे उसको कैसे मरने देते? उनके दिलमें ज्ञान आया, रहम आया; लेकिन कहा कि हम क्या करें, कैसे खोले, उसमे काफी टेकनिकल रुकावटे है, जिन्हे दूर करना होगा। पीछे मावलंकरजी वहां पहुंचे और उनके कहने-सुनने-पर उन्होंने उपवास छोड दिया, लेकिन इस शर्तपर कि अगर वह नही खुला तो उनका फाका फिर चलेगा। अब मेरे पास तार आया कि जो बिल बननेवाला था वह बना लिया और वह मंदिर हरि-जनोंके लिए खुल गया। सबने राजी होकर खोला और हजारोंकी तादादमे लोग वहां गए—कोई विरोध नही हुआ—एक-दोका रहा होगा शायद हजारोमे। तो पढरपुरका इतना भारी मंदिर इतनी मेहनतके बाद आखिर खुलकर रहा। जितनी ज्यादतियां हमने हरि-जनोंपर की है अगर वे हट जाय तो सारा हिंदुस्तान बहुत ऊंचे चला जाता है। लेकिन आज तो हम गिरते जा रहे है, क्योंकि हममे वैमनस्य भर गया है। हिंदुस्तान कोई हमेशाके लिए तो दीवाना बना नही रहेगा, ऐसी उम्मीद करके मै बैठा हूं—आगे भगवान् जाने।

मेरे पास दो चार प्रश्न आ गए हैं—वैसे तो वे अलग-अलग खतोंमें हैं, लेकिन उनको इकट्ठा कर लिया गया है। पहले प्रश्नमें तो एक मुसलमान भाई पूछते हैं। जैसा कि कल बताया था कि हम गोमांस छुड़वानेके वास्ते किसीको मजबूर नही कर सकते, उनसे विनय कर सकते हैं और समझा सकते है। अगर उनकी समझमें आ जाय

और उसको छोड दें, फिर चाहे वे हमारे प्रति मोहब्बत दिखानेके लिए करते हो तो वह बड़ी अच्छी बात है। लेकिन ऐसे भी हिंदू बहुतसे है जो मांस खाते है चाहे वह मछली हो या और कोई दूसरा मांस हो। ऐसे तो बहुत थोडे हिंदू है जो धर्म समझकर मांस नही खाते। तो क्या आप उनको मजबूर करेंगे और कहेंगे कि अगर मांस खाना नही छोडते तो हिंदुस्तानको छोडो नही तो मार डाले जाओगे? अगर ऐसा नही हो सकता तो मुसलमानोंने क्या गुनाह किया? उनको क्यों मजबूर किया जाय? मैं जानता हू कि ऐसे पागल हिंदू भी पडे है जो मुसलमानोंको मजबूर करते है। मैं तो कहूंगा कि यह अत्याचार है जिससे हमे बचना चाहिए।

दूसरा प्रश्न एक और है जिसमें एक हिंदू लिखते है कि यह तो ठीक है कि सब हिंदू तो वैमनस्यमे नही भरे है लेकिन तुम बात तो करते हो कि मुसलमानोको अपने घर नही छोड़ने चाहिए, अगर मरना है तो मर जायं। ऐसी ज्ञान-वार्ता तो तुम सुनाते हो, लेकिन इससे सबको ज्ञान तो नही मिल जाता है। एक तरफ तो यह ज्ञान-वार्ता चलती रहे और दूसरी तरफ मुसलमानोंको यहातक परेशान किया जाय कि वे अपने घरोंसे बाहर कही जा नही सकते—उनको ये धमकिया दी जायं कि यहांसे भागते हो या नहीं, नही तो मार डाले जाओगे। मुसलमान जिस मुहल्लेमें रहते है वहांसे अगर बाहर जायं तो कट जायं, लेकिन अगर मुहल्लेमे ही रहे तो खाय कहासे? उनमें कारीगर या मजदूर लोग होते है। मान लीजिए कि एक जुलाहा है और वह कपड़ा बुनता है तो पीछे हिंदू कहे कि हम तो उसका कपड़ा नही लेंगे और अगर कोई लेनेकी जुर्रत करे तो उसको काट डालेंगे तो फिर आपने अगर उसे वहा रहने भी दिया तो उसका कोई अर्थ नही रह जाता। मजदूरी करनेवाला अपने मुहल्लेके अंदर ही कैसे सीमित रह सकता है? वह तो गुलामसे भी बदतर हो जाता है। छोटा-सा तो मुहल्ला है और उसमेंसे बाहर नही जा सकता तो गुजारा कैसे करे? कोई धनी मुसलमान तो ऐसे छोटे मुहल्लेमें रहता नहीं है और गरीब लोग अगर बाहर न जायं तो गुजारा कैसे करें? एक ओर

तो उनपर ऐसी ज्यादतियां करें और दूसरी ओर मेरे-जैसे आदमी कहें कि मर जाओ तो वह निकम्मी बात हो जाती है।

हम लोग गुमानसे ऐसा कहते हैं कि दिल्ली मे तो सब कुछ ठीक हो गया, कोई बडी घटनाएं तो होती नही; लेकिन मैं तो कहूंगा कि अगर थोडा-सा भी है तो वह हमें चुभना चाहिए। मुझे तो बार-बार यह कहना और सुनाना होगा कि जब हिंदुस्तानमें ऐसी बाते हो रही है तो हम किस मुहसे मुसलमानोको हिंदुस्तानमे रहनेको कहे। जितने मुसलमान हैं वे पाकिस्तान चले जाय और वहां जितने हिंदू और सिख है वे यहा आ जायं, तब तो हम हमेशाके लिए एक-दूसरेके दुश्मन बन गए। और पीछे पेट भरकर हमको लडना है। ऐसी वाहियात चीजसे तो हम बच जायं।

एक तीसरा प्रश्न है--वह थोडा पेचीदा है। है भी और नहीं भी है। मुझको एक मुसलमान भाई लिखते है कि बता दो तो मुझको और सब मुसलमानोंको अच्छा लगेगा। इसी बीचमे ब्रजकिशनजीने कहा कि यह तो हिंदूका प्रश्न है। किन्तु किसीने भी किया हो, प्रश्न तो वह है न। पूछने लायक है और नही भी। "तुमने तो अपनी यह अहिंसा अंग्रेजोको भी बताई थी जब वे हार रहे थे और उनको हथियारोंसे लड़ाई न लडकर अहिंसक होनेकी सलाह दी थी। वहा तो तुमने इतनी जुर्रत की, लेकिन यहाकी हकूमतको अहिंसाकी लडाई लडनेको क्यो नही कहते!" मैंने तो बता दिया कि मै हूं कहा, और कौन मेरी मानता है। कहते तो है कि सरदारजी तो तुम्हारे है, पंडितजी तुम्हारे नही है तो कौन है, मौलाना भी तुम्हारे है। मेरे है भी और नही भी है। मैने तो अपनी अहिंसा छोडी नही है। मै तो उसको सीखता ही आया हूं और वह तबतक चली जबतक आजादी नही मिली थी। अब वे कहते हैं कि अहिंसासे कारोबार कैसे चला सकते हैं, तो पीछे लश्कर तो है ही, और उस लश्करको लेकर बैठ गए है। अब मेरी कीमत नहीं रही है। जब मेरी कीमत ही नहीं है तब मै लोगोंमे क्यों पडा हूं। लेकिन इसी आशासे कि शायद लोग मेरी सुन लें। आखिर आप-जैसे थोड़ेसे लोग तो आते ही हैं और सभ्यतामे बैठकर मेरे

साथ प्रार्थना करते है। जैसे आप है ऐसे शायद दूसरे भी हो जायं और पीछे सबमे ज्ञान हो जाय। मेरी बातका कुछ असर हो जाय। इसी लालचके वशमे पडा हूं और इतना कर रहा हूं। मै नही जानता कि कहातक ईश्वर मुझसे काम कराना चाहता है। वह चाहे तो आज भी मुझका बंद कर सकता है। अब अगर यहा बैठे-बैठे सांस उडा दे तो मै खत्म हो जाता हूं। इसलिए जो चीज मैने हिटलर-मुसोलिनी, चर्चिल तथा जापानको कही थी उसी चीजपर मै आज भी कायम हूं और अपनी हकूमतको भी वही कहता हूं। लेकिन काश्मीरमे तो शेख अब्दुल्ला है जो बडी बहादुरीसे लड रहे है—बहादुरीकी मैने हमेशा तारीफ की है। यह ठीक है कि वे हिंसा करते है, लेकिन उसमें बहादुरी तो है, उसकी तारीफ तो मै करूंगा। मै तो सुभाष बाबू की भी तारीफ करता हूं, कोई इसलिए थोड़े करता हूं कि मुझे उनकी हिंसा पसद थी। जो आजाद हिंद फौज बनाई वह मेरेसे थोडे बन सकती थी। जब मै अच्छी चीज देखता हूं और अच्छीको अच्छी न बताऊ तो मै अहिंसक नही हो सकता। अगर शेख अब्दुल्ला वहा आखिर-तक लड़ता रहे और हिंदुओ और सिखोंको साथ रखे तो वह बुलद काम हो जायगा। जो लोग यहा पडे है उनपर भी इसका बडा असर होने वाला है इसमे मुझे जरा भी शक नही है। लेकिन अगर मेरी अहिंसा चले और सब मेरी बात माने तो जो लश्कर हम भेजते है वे भी न भेजे। अगर भेजे तो वे भी अहिंसक लश्कर भेजे। वे वहाँ जाते है, अगर अफरीदी लोग मार डालते है और वे खुशीमे मर जायं तो वह अहिंसक युद्ध हो जायगा; क्योंकि वे अहिंसक होकर मरते है। शेख अब्दुल्ला भी उन अफरीदियोसे कहेगा कि आप श्रीनगर ले सकते है, लेकिन तब, जब हम सब मर जायं। किंतु वे तो हथियारो से लड़नेवाले है और बहादुरीसे लडते है। तब वे भी अहिंसक बन सकते है, हालांकि वह अहिंसाका रूप नही होता। मान लीजिए कि एक लाख अफरीदियोंका दल यहां आ जाता है और उन सबके पास हथियार हैं और मुट्ठीभर लोग मासूम बच्चों और स्त्रियोंकी रक्षाके लिए हथियार लेकर उनसे लड़ते हैं और लड़ते-लड़ते मर जाते है तब

हथियारबंद होते हुए भी अहिंसक-जैसे बन जाते है। लेकिन मै किसको बताऊं ? आज तो आपस-आपसमें जहर फैल गया है और एक-दूसरेको बुरी तरहसे वहशियाना तौरसे काटते है। उसमे भी मै यह अहिंसाका सरल पाठ नही बता सकता हूं। उस वक्त चर्चिल साहब तो नही कह सकते थे लेकिन आज शेख अब्दुल्ला तो कह सकते हैं और जो लश्कर गया है वह भी कह सकता है कि अगर तुम्हारी अहिंसा दिल्लीमें काम नही कर सकती, वहा तो वहशियाना काम हो रहा है; लेकिन हम जो करते है वह वहशियाना भी नही है तब उनको यह कहनेका हक मिल जाता है और मै उसको कबूल करता हूं। अगर मै यहाके सब हिंदू, मुसलमान, सिखोंको अपनी अहिंसा समझा दूं तो पीछे वे मुझको कुछ नही कह सकते। तब तो मै खुद एक अहिंसक सेना लेकर काश्मीरमें या कहो पाकिस्तानमे या हर जगह जा सकता हूं और मेरा काम बहुत सरल हो जाता है और उस अहिंसाका प्रभाव इतना पड़े कि वह देखने लायक हो। लेकिन ऐसा अवसर कहासे आए ? मेरी अगर आप लोग सुने और जो कहता हूं उसपर अमल करें, मेरे शब्दोंमे ज्यादा शक्ति, हृदयमे ज्यादा बल हो, मेरी तपश्चर्या चाहे वह कितनी भी है और उससे भी आगे बढ जाय, और मेरे एक-एक शब्दोंमे इतनी शक्ति हो कि वह सारे हिंदुस्तानको पकड़ ले तो मेरा काम बन जाय। लेकिन आज तो मै लाचार-सा हूं। अगर आप लोग भी ईश्वरसे प्रार्थना करे कि वे मेरे शब्दोंमे प्रभाव डाले और जहां तक मुझे लाया है उससे भी आगे ले जाय और इस शरीरसे और भी ज्यादा काम करा ले तो हिंदुस्तानका प्रभाव सारे जगत पर पड सकता है।

इन दिनों जो एशियाई प्रादेशिक श्रम-सम्मेलन हो रहा है उसमे इंग्लैड, चीन, अमरीका तथा पाकिस्तानके प्रतिनिधि आए थे और कहते थे कि तुमने तो बडा काम किया है। उनकी यह तारीफ मुझे चुभती थी। आज तो मै दिवालिया बन गया हूं—आज तो मै कुछ सुना नही सकता और कल सुनाया था उसकी अब कोई कीमत नही। आज तो मै तारीफके लायक तभी बन सकता हूं जब लोगोंपर मेरा प्रभाव पडे,

लेकिन वह दिन तो आज है ही नही, मै तो आज लाचारीका प्रदर्शन आपके सामने कर रहा हू ।

: १४० :

६ नवंबर, १९४७

(प्रार्थनाके बाद गाधीजीने एक दोस्तद्वारा भेजी हुई अखबारोंकी दो कतरनोंका जिक्र करते हुए कहा—)

भाइयो और बहनो,

मै लेखकका नाम जानता हूं। लेकिन मैं न तो उनका नाम बताना चाहता हू और न उन लेखोका ब्योरा ही देना चाहता हूं। मै सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि वे लेख हिंदू-धर्मकी सेवा करनेके ख्यालमे लिखे गए है। लेकिन उनमे जान-बूझकर झूठी बाते कही गई है। जब नई बातें नही कही जाती, तो हकीकतोंको तोड़-मरोड़कर पेश किया जाता है। लेकिन मैं यह कहनेकी हिम्मत करता हूं कि ऐसा करनेमे कोई मकसद पूरा नही होता—धर्मका तो बिलकुल नही। जब इलजामोकी बुनियाद सचाई पर नही बल्कि झूठ पर होती है, तब जिनपर इलजाम लगाया जाता है उन्हे कोई चोट नही पहुचती। इसलिए मै जनताको चेतावनी देता हूं कि वह ऐसे अखबारोंका समर्थन न करे, भले उसके लेखक कितने ही मशहूर क्यों न हों।

खुराक-मंत्रीने गैर-सरकारी लोगोंकी जो कमेटी बनाई थी, उसने अपनी रिपोर्ट उनके सामने पेश कर दी है। उस कमेटीकी सिफारिशोपर कोई फैसला करनेके डा० राजेंद्रप्रसादको मदद देनेके लिए सूबोके जो मंत्री या उनके प्रतिनिधि दिल्ली आए थे, उनसे मैं मिला था। जब मैने इस मीटिंगके बारेमे सुना, तो मैंने डा० राजेंद्रप्रसादसे कहा कि वे मुझे उन लोगोंके सामने अपनी बात रखनेका मौका दें, ताकि मै उनके शकोंको दूर कर सकूं। क्योंकि मुझे इसका पूरा यकीन है कि

अनाजका कंट्रोल हटानेकी मेरी राय बिलकुल ठीक है। डा० राजेंद्र-प्रसादने तुरत मेरा प्रस्ताव मान लिया और मुझे मंत्रियों या उनके प्रतिनिधियोंके सामने अपने विचार रखनेका मौका मिला। मुझे अपने पुराने दोस्तोंसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। मैं यह कहता रहा हूं कि जहां-तक सांप्रदायिक झगड़ोंके बारेमें मेरी रायका संबंध है, आज उसे कोई नहीं मानता। लेकिन यह कह सकनेमें मुझे खुशी होती है कि खुराकके सवालपर मेरी रायके बारेमें ऐसी बात नहीं है। जब बंगालके गवर्नर मि० कैसीसे मेरी कई मुलाकातें हुई थीं, तभीसे मेरी यह राय रही है कि हिंदुस्तानमें अनाज या कपड़ेपर कंट्रोल रखनेकी बिलकुल जरूरत नहीं है। उस समय यह मालूम नहीं था कि मुझे लोगोंका समर्थन प्राप्त है या नहीं। लेकिन हालकी चर्चाओंमें यह जानकर अच-रज हुआ कि मुझे जनताके जाने और अनजाने सेवकोंका बहुत बड़ा समर्थन प्राप्त है। अनाजकी समस्याके बारेमें मेरे पास जो बेशुमार खत आते हैं, उनमें मुझे एक भी ऐसा याद नहीं आता जिसके लेखकने मेरी रायसे अलग राय जाहिर की हो। मैं श्री घनश्यामदास बिड़ला और लाला श्रीराम-जैसे बड़े-बड़े लोगोंकी राय नहीं जानता, न मैं यही जानता हूं कि इस बारेमें मुझे समाजवादी पार्टीका समर्थन मिलेगा या नहीं। हां, जब डा० राममनोहर लोहिया मुझसे मिले, तो उन्होंने अनाजका कंट्रोल हटा देनेकी मेरी रायका पूरा-पूरा समर्थन किया। मुझे यह कहनेमें कोई हिचकिचाहट नहीं होती कि आज देशको अनाजकी जिस तंगीका सामना करना पड़ रहा है, उसमें डा० राजेंद्रप्रसादकी रहनुमाई उनकी कमेटीके एक या ज्यादा मेंबर करें न कि उनका पूरा स्टाफ।

अब मैं कपड़ेके कंट्रोलकी चर्चा करूंगा। हालांकि अनाजके कंट्रोल-को हटानेके बनिस्बत कपड़ेके कंट्रोलको हटानेके बारेमें मेरा ज्यादा पक्का विश्वास है, फिर भी मुझे डर है कि कपड़ेके कंट्रोलके बारेमें मुझे उतना समर्थन प्राप्त नहीं है जितना कि अनाजके कंट्रोलके बारेमें। कांग्रेसने मेरी इस रायका खुशीसे समर्थन किया था कि खादी देशी या विदेशी मिलके कपड़ेकी पूरी जगह ले सकती है। उसने

स्व० जमनालालजीके मातहत एक खादी-बोर्ड कायम किया था, जिसे मेरे यरवदा जेलसे रिहा होनेके बाद अखिल भारत-चरखा-संघका विशाल रूप दे दिया गया था। हिंदुस्तानमे ४० करोड लोग रहते हैं। अगर पाकिस्तानका हिस्सा उससे अलग कर दिया जाय, तो भी उसमें ३० करोड़से ऊपर लोग बचेंगे। उनकी जरूरतकी सारी कपास देशमें पैदा होती है। उनको कपासको बुनने लायक सूतमें बदलनेके लिए देशमें काफी कातनेवाले मौजूद हैं। और उनके हाथकते सूतको बुननेके लिए हिंदुस्तानमें जरूरतसे ज्यादा जुलाहे भी हैं। बहुत बड़ी पूंजी लगाए बिना भी हम देशमें अपनी जरूरतके चरखे, करघे और दूसरा जरूरी सामान आसानीसे बना सकते हैं। इसलिए जरूरत सिर्फ इस बातकी है कि हम अपने-आपमें पक्का विश्वास रखें और खादीके सिवा दूसरा कोई कपड़ा न इस्तेमाल करनेका इरादा कर लें। आप जानते हैं कि देशमें महीन-से-महीन खादी तैयार की जा सकती है और मिलोंसे भी ज्यादा अच्छे डिजाइन बनाए जा सकते हैं। अब चूंकि हिंदुस्तान विदेशी जुएसे आजाद हो गया है, इसलिए खादीका ऐसा विरोध नहीं हो सकता, जैसा कि विदेशी शासकोंके नुमाइंदे किया करते थे। इसलिए मुझे यह देखकर सबसे ज्यादा ताज्जुब होता है कि जब हम अपनी मरजीका काम करनेके लिए पूरी तरह आजाद हैं, तब न तो कोई खादीके बारेमें चर्चा करते हैं न खादीकी संभावनाओंमें श्रद्धा रखते हैं। और हम हिंदुस्तानको कपड़ा पुरानेके लिए (पूरा करनेके लिए) मिलके कपड़ेके सिवा दूसरी बात ही नहीं सोच सकते। इसलिए मुझे रत्तीभर शक नहीं कि खादीका अर्थ-शास्त्र ही हिंदुस्तानका सच्चा और फायदेमंद अर्थशास्त्र हो सकता है।

: १४१ :

७ नवबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझे दुःख होता है कि तिहाड और उसके आसपासके मुसलमानोको बिना जरूरत मुसीबते झेलनी पडती है। उनमेसे बहुतसे जमीनोंके मालिक है, लेकिन सताए जानेके डरसे वे अपनी जमीने जात नही पाते। उन्होने अपने मवेशी, हल और दूसरा सामान बेच डाला है। फौज उनकी रक्षा कर रही है। दो हजारसे ऊपरकी तादादमे जो दुःखी लोग मेरे आसपास इकट्ठे हुए थे, उन्होंने अपने अगुआकी मारफत मुझसे कहा कि 'हम पाकिस्तान जाना चाहते है, क्योकि यहा जीना असंभव हो गया है। हमारे बहुतसे दोस्त और रिश्तेदार पाकिस्तान जा भी चुके है। इसलिए, अगर सरकार हमे जल्दी-से-जल्दी लाहौर भेज दे, तो बडी दया होगी। हमे फौजके लोगोके खिलाफ कोई शिकायत नही है।' लेकिन आजका समय मै तिहाडकी सभाका पूरा बयान करनेमे नहीं दूंगा। मैने उन लोगोंसे कहा कि मेरे हाथमे कोई सत्ता नही है, लेकिन मै आपका सदेश खुशीसे प्रधान मंत्री और उप-प्रधान मंत्री तक, जो गृहमंत्री भी है, पहुचा दूगा।

मुझसे कहा गया है कि निराश्रित लोग दिल्लीमे एक समस्या बन गए है। मुझे बताया गया है कि चूकि पाकिस्तानमे निराश्रितोंके साथ जुल्म किये गए है इसलिए वे यह मानते है कि उन्हें कुछ खास हक हासिल है। जब वे दुकानपर कोई सामान खरीदने जाते है तो यह आशा करते है कि दुकानदार कभी उन्हे जरूरतकी चीजें मुफ्त दे दिया करें और कभी काफी कम दामोमे बेचा करे। कभी-कभी तो एक-एक आदमी सैकडो रुपएका सौदा खरीद लेता है। कुछ निराश्रित तांगेवालोंसे यह उम्मीद करते है कि वे उनसे बिलकुल भाड़ा न लें या मामूलीसे कम भाड़ा लें। अगर यह रिपोर्ट सच है, तो यह कहना मेरा फर्ज है कि निराश्रित लोग वह सबक नही सीख रहे है, जो मुसीबतें

दुखियोंको आम तौरपर सिखाती है। ऐसा करके वे अपने-आपको और देशको नुकसान पहुंचाते हैं और काफी पेचीदा बने हुए सवालको और भी पेचीदा बना रहे है। अगर उनका ऐसा बरताव जारी रहा, तो वे दिल्लीके दुकानदारोंकी हमदर्दी जरूर खो देंगे।

साथ ही, मैं यह समझ नहीं पाता कि निराश्रित लोग, जिनके बारेमें यह कहा जाता है कि वे पाकिस्तानमें अपना सब कुछ खोकर यहा आए है, सैकड़ों रुपयोंका सामान कैसे खरीद सकते है। मै यह भी चाहूंगा कि कोई निराश्रित विरले और जरूरी मौकोंको छोडकर घूमनेके लिए भगवान्के दिए हुए पावोंके सिवा दूसरी किसी चीजका उपयोग न करें। इसके अलावा मुझे यह बताया गया है कि दिल्लीमे जबसे लाखों निराश्रित आए है, तबसे तेज शराबोंसे होनेवाली आमदनी बहुत ज्यादा बढ गई है। दरअसल उन्हे यह समझना चाहिए कि जब केंद्र और सूबोंकी सरकारें कांग्रेसकी मांगोंको पूरा करेगी, तो हिंदुस्तानी संघमें न तो तेज शराबें मिलेंगी और न अफीम-गांजे-जैसी दूसरी नशीली चीजें देखनेको मिलेंगी। यही हाल पाकिस्तानका भी हो सकता है। क्योंकि हमारे मुसलमान दोस्तोंको पूरी शराब-बंदीका ऐलान करनेके लिए कांग्रेसके ठहरावकी जरूरत नहीं पड़ेगी। क्या निराश्रित लोग, जिन्होंने बडी-बडी मुसीबतें सही है, शराब और दूसरी नशीली चीजोंके इस्तेमालमें या ऐश-आराममें डूबनेसे अपने-आपको रोक नही सकते? मुझे आशा है कि निराश्रित भाई और बहन मेरी उस सलाहको मानेंगे, जो मैंने अपने पिछले भाषणोंमें उन्हे दी है। वह सलाह यह है कि निराश्रित जहां कही जायं, वहांके लोगोंमें दूधमें शक्करकी तरह घुल-मिल जायं और उनपर बोझ न बननेका पक्का निश्चय कर लें। धनी और गरीब निराश्रित एक ही अहाते या कैंपमें साथ-साथ रहे और पूरे सहयोगसे काम करे, ताकि वे आदर्श और स्वावलंबी नागरिक बन सकें।

: १४२ :

८ नवंबर, १९४७

(आज हमेशाके विरोध करनेवाले सज्जनके सिवा दूसरे तीन भाइयोंने कुरानकी आयत पढ़नेका विरोध किया। इसलिए प्रार्थना शुरू करनेसे पहले गांधीजीने सभाके लोगोंसे पूछा —)

भाइयो और बहनो,

क्या आप लोग इस पहली शर्तको पूरा करेंगे कि आप अपने मनमें विरोध करनेवालोंके खिलाफ कोई गुस्सा या बैर नहीं रखेंगे और प्रार्थना खत्म होनेतक शांति और खामोशीके साथ एकाग्र मनसे बैठेंगे ?

(लोगोंने तुरत एक आवाजसे कहा कि हम उस शर्तको पूरा करेंगे। विरोध करनेवाले पूरी प्रार्थनामें चुप रहे। प्रार्थना बिना किसी रुकावटके हुई। इसपर गांधीजीने अंतमें सबको बधाई दी। गांधीजीने बादमें कहा—)

मुझे एक सिख दोस्तका खत मिला है। उन्होंने लिखा है कि वे हमेशा प्रार्थना-सभामें आते हैं और उसे पसंद करते हैं। वे प्रार्थनाके पीछे रही रवादारीकी भावनाकी तारीफ करते हैं। खास तौरपर उन्होंने मेरी ग्रंथ साहब, सुखमणि, जपजी वगैराके बारेमें कही गई बातोंकी तारीफ की है। उन्होंने लिखा है कि 'अगर आप भजनावलीमें इकट्ठे किये गये सिख-धर्मग्रंथके हिस्सोंमेंसे कुछ चुन ले और अपनी प्रार्थना-सभामें रोज पढ़े, तो इसका सिखोंपर बड़ा असर पड़ेगा। मुझे लगता है कि मैं यह बात सारी सिख-जातिकी तरफसे कह सकता हूं। वे चुने हुए हिस्से मैं आपके सामने पढ़कर सुना सकता हूं।' मुझे खत लिखनेवाले भाईकी वह बात मंजूर है। लेकिन इस बात पर मैं कोई फैसला तभी करूंगा, जब मैं खुद उन भाईके मुंहसे कुछ भजन सुन लूं। इसके लिए उन्हें श्री ब्रजकिशनजीसे समय ले लेना चाहिए।

मैंने एक बार यह बात कही थी कि निराश्रितोंको रूई, केन्द्रिको

(छपा हुआ कपड़ा) और सुइयां मिलनी चाहिएं, ताकि वे खुद अपने इस्तेमालके लिए रजाइयां बना सकें। इसमे लाखों रुपए बच सकते है और निराश्रितोंको आसानीसे ओढनेके कपडे मिल सकते हैं। मेरी इस अपीलके जवाबमे बंबईके रूईके व्यापारियोंने लिखा है कि वे ये चीजें देनेके लिए तैयार हैं। इस तरीकेसे निराश्रित खुद अपनी नजरमें ऊंचे उठेंगे और वे सुदर सहकारका पहला सबक सीखेगे। लेकिन दिल्लीमे ही कपडेकी मिलोंकी कमी नही है। शहरमे कई मिलें चलती है, फिर भी मै बबईकी भेंटका स्वागत करता हू, क्योंकि मै सरजीमें दान देनेवालोंपर गैर-जरूरी बोझ नहीं डालना चाहता। दान देनेवाले जितने ज्यादा होंगे, उतना ही निराश्रितों और देशको फायदा होगा। इसलिए मुझे आशा है कि बंबईके रूईके व्यापारी जितनी भी गाठें भेज सकेंगे जल्दी-से-जल्दी भेजेंगे। धनी लोगोंका ऐसा सहयोग सरकारके बोझको कम करेगा। जब हम आजाद हो गए है तब तो हर शख्स अपनी इच्छासे देशकी सरकारके काममें भागीदार बन सकता है, बशर्ते वह आजाद देशके नागरिककी पूरी-पूरी जिम्मेदारियोंको समझकर अपना फर्ज अदा करे।

मुझे इसमें कोई शक नही कि जब रूईकी गाठें आ जायगी, तो मै मिल-मालिकोंको रजाइयोंके लिए काफी छीट देनेके लिए राजी कर सकूगा। रूईकी गांठोंकी बातपरसे कपडेका कंट्रोल याद आ गया। मेरी रायमें हिंदुस्तानके सारे लोगोंके लिए हाथसे काफी खादी तैयार करना संभव है और आसान भी है। इसकी एक शर्त यही है कि देशमें काफी रूई मिल जाय। मैं नही जानता कि हिंदुस्तानमें कभी रूईका अकाल पड़ा हो। हमारे यहा रूईकी तंगी हो ही नही सकती, क्योंकि हम देशकी जरूरतसे हमेशा ज्यादा रूई पैदा करते हैं। देशके बाहर हजारों-लाखों गांठें भेजी जाती हैं, फिर भी हिंदुस्तानकी मिलोंके लिए कभी रूईकी कमी नही होती। मैं पहले ही इस सचाईकी तरफ आप लोगोंका ध्यान खींच चुका हूं कि हिंदुस्तानमें हाथसे धुनने, कातने और बुननेके सारे जरूरी औजार मिल सकते है। साथ ही, काम करनेवाले भी बड़ी भारी तादादमें मौजूद हैं। इसलिए, मैं तो यही कह सकता हूं

कि लोगोंके आलसके सिवा दूसरी ऐसी बात नही है जो उन्हे यह सोचनेपर मजबूर करती हो कि देशमें कपडोकी तगी है। आज देशमे कोई भी कपडेका कट्रोल नही चाहता। न मिले, न मिल-मजदूर और न खरीदार जनता। कट्रोल आलसी लोगोकी फौजको बढाकर देशको बरबाद कर रहे है। ऐसे लोग कोई काम न होनेसे हमेशा दगे-फसादकी जड बने रहते है।

अगर निराश्रितोंने अपने-आपको फायदेमंद कामोमे लगानेका इरादा कर लिया है, तो पहले वे अपने लिए रजाइया तैयार करेंगे, और बादमे सब औरत और मर्द अपना एक-एक पल कपाससे बिनौले निकालने, रूई धुनने, कातने-बुनने वगैरामे खर्च करेंगे। लाखों निराश्रितोद्वारा इस सहकारी काममे लगाई गई ताकत सारे देशमे बिजली-सी पैदा कर देगी। वे लोगोको अपने पीछे चलनेकी और फालतू वक्तको ज्यादा अनाज पैदा करने और अपने ही घरोंमे खादी बनानेमे खर्च करनेकी प्रेरणा देगे। यह याद रहे कि अगर गाठे बनानेके बजाय कपास सीधे खेतोंसे ही पड़ोसके कातनेवालोंके घर पहुचे तो एक काम कम हो जायगा रूई बिगडेगी नही, धुननेका काम आसान होगा और गावोंमें बिनौले भी बच रहेगे।

लेडी माउंटबैटेन मुझसे मिलने आई थी। वह यहाकी देवी बन गई है। वह हमेशा दोनों उपनिवेशोका दौरा किया करती है, अलग-अलग छावनियोंमें निराश्रितोंसे मिलती है, बीमारों और दुःखियोंको देखती है और इस तरह जितना भी ढाढ़स उन्हे बंधा सकती है बंधानेकी कोशिश करती है। जब वह कुरुक्षेत्र-छावनी देखने गई, तो उनसे लोगोंने पूछा कि गाधीजी कब आएंगे। लेडी माउंटबैटेनके सामने इतने लोगोंने मुझे देखनेकी इच्छा जाहिर की कि उन्हें पूरी उम्मीद हो गई कि मै कुरुक्षेत्र-छावनीका मुआइना करने जरूर जाऊंगा। मैंने उन्हें यकीन दिलाया कि आपका ऐसी उम्मीद रखना बिलकुल ठीक है। सच पूछा जाय तो मैने पानीपत जानेका बंदोबस्त कर लिया है, जहाके हिंदू और मुसलमान दोनों मुझसे मिलनेके लिए बड़े उत्सुक है। उसी दौरेमें मैंने कुरुक्षेत्रके दौरेको भी शामिल करनेकी बात सोची थी। लेकिन मुझे

पता चला है कि पानीपतके दौरेमें कुरुक्षेत्र-छावनीको शामिल नहीं किया जा सकता। इसलिए ए० आई० सी० सी० (अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटी) की अगली मीटिंगके खत्म होनेतक कुरुक्षेत्रका दौरा मुल्तवी रखना जरूरी हो गया है। फिर भी मुझे यह सुझाया गया है कि कुरुक्षेत्र-जैसे बड़े भारी कैंपमें लाउड स्पीकरका बंदोबस्त करना कठिन काम है, लेकिन कैंपके लोगों से रेडियोपर बोलनेमें कोई कठिनाई नहीं होगी, बशर्ते जरूरी संबंध जोड़नेवाली मशीन कैंपमें लगा दी जाय। ऐसा बंदोबस्त हो जानेपर मैं मंगल या बुधको कुरुक्षेत्र-छावनीके लोगोंको अपनी बात सुना सकूँगा और बाद में उनसे मिलने भी जा सकूंगा। इसी बीच उम्मीद है कि मैं अपना पानीपतका दौरा खत्म कर लूंगा।

: १४३ :

मौनवार, ६ नवंबर, १६४७

(लिखित संदेश)

"मुझे खेद है कि चूंकि मुझे कल पानीपत जाना है, इसलिए मुझे आज मौन जल्दी लेना पड़ा ताकि मैं वहां पहुंचकर हिंदू और मुसलमानोंसे बात कर सकूं। मेरी आशा है कि मैं कल शामकी प्रार्थनाके समय तक वापस लौट आऊंगा और आकर बोल सकूँगा। अखबारोंमें यह समाचार गलत छपा है कि मैं कल कुरुक्षेत्र जा रहा हूं। मैंने यह साफ-साफ बताया था कि मेरा इरादा कुरुक्षेत्र जानेका है लेकिन ए० आई० सी० सी० की मीटिंगके समाप्त होनेसे पहले नहीं। मेरी उम्मीद है कि मैं वहांके शरणार्थियोंसे बुधके दिन रेडियोपर बोलूंगा। समयकी सूचना दे दी जायगी।

कुछ दिनों पीछे दीवाली आ रही है। एक बहन, जो स्वयं शरणार्थिन है, लिखती है—

"सविनय निवेदन है कि इस वर्ष दीपावली मनाई जाय या नहीं? मैं इस विषयमें आपके समुख टूटे-फूटे शब्दोंमें अपना विचार प्रकट करना चाहती हूं। मैं भी पाकिस्तान (गुजरावाला) से आई हुई हूं। और हमारा भी सब कुछ वहांपर नष्ट हो चुका है, परन्तु फिर भी हमारे हृदयोंमें इस बातका महान् हर्ष है कि हम स्वतंत्र है और यह दीपावली स्वतंत्र हिंदुस्तानकी पहली दीपावली है। अतः इस वर्ष हमें सब कष्टोंको भूलकर उत्साह और समारोहके साथ अपनी स्वाधीन मातृ-भूमिको दीपमालासे अवश्य ही अलंकृत करना चाहिए। आपके हम शरणार्थियोंके प्रति जो उदार भाव है कि हम दुःखित है, इसलिए स्वतंत्र भारतकी सब खुशियां हमारे लिए पीछे रख दी जाएं, इसके लिए हम हृदयसे कोटि-कोटि धन्यवाद देते है। अब आप भी सब शरणार्थियोंको और यहाके निवासियोंको आज्ञा दें कि समस्त इंडियामें दीपमाला अवश्य मनाई जाय और जो लोग समर्थ है, वे शरणार्थियोंकी सहायता करें। ईश्वर हमें शक्ति दे कि स्वाधीनताका प्रत्येक त्यौहार हम उत्साहके साथ मनाकर अपनी स्वतंत्र माताकी शोभा बढ़ाएं।"

यद्यपि मैं इस बहन और उन-जैसे दूसरोंकी प्रशंसा करता हूं, लेकिन मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि वह बहन और दूसरे जो उनके-जैसा विचार रखते है, गलतीपर है। इस बातको हर एक जानता है कि जब किसी घरमें मातम हो जाता है तो जहांतक होता है वे लोग किसी मेले-तमाशेमें शरीक नहीं होते। यह इस बातका एक छोटा-सा नमूना है कि हम सब एक है। कूप-मंडूक बनना छोड़ो तो हिंदुस्तान एक कुटुंब बन जाता है; अगर सब बंधन गायब हो जाते हैं तो सारा संसार एक कुटुंब बन जाता है, जो वास्तवमें है। इन बंधनोंको पार न करनेका मतलब यह है कि हम उन सद्भावनाओंकी ओरसे, जो मनुष्यको मनुष्य बनाती हैं, कठोर बन जाते है। हमें अपना ही विचार नहीं करते रहना चाहिए, नहीं हमें भावुक बनकर असलियतको भूलना

चाहिए। मै जो खुशी न मनानेकी राय देता हूं, उसका मूल कई पक्के विचारोंपर निर्भर है। यहा शरणार्थियोंकी समस्या हमारे सामने है जिसका प्रभाव लाखो हिंदू, मुसलमान और सिखोंपर पड रहा है। इसके अलावा खुराक और कपडेकी कमी, अगर्चे यह मनुष्यकी बनाई हुई है, मूल कारण है। उन लोगोकी बेईमानी जो जनताकी रायको निर्माण कर सकते है, पीडितोंकी जिद कि अपने कष्टोंसे पाठ नही सीखने और इन्सानकी इन्सानके साथ बेरहमी—मैं इस मुसीबतमें खुशी मनानेका कोई कारण नही देखता। यदि हम दृढता और अक्लमंदीके साथ इस बातका निश्चय कर ले कि हम खुशी नही मनाएंगे तो इसमें हमे प्रेरणा मिलेगी कि हम अंतर्मुख और पवित्र बने। हमे कोई ऐसा काम नही करना चाहिए जिससे हम उस आशीर्वादको फेक दें, जिसे हमने इतनी मेहनत और मुसीबतके बाद प्राप्त किया है।

अब मै अपने उन चंद मित्रोंका जिक्र करना चाहता हू जो फ्रेंच भारतमे इस सप्ताह मुझसे मिलने आए थे। उनकी यह शिकायत थी कि मैंने चंद्रनगरके सत्याग्रहके संबंधमे जो कुछ कहा था उसका फ्रेंच भारतकी इन भावनाओंको कि वह हिंद यूनियनके नीचे रहते हुए और फ्रेंच संस्कृतिका प्रभाव रखते हुए अपनी स्वतत्रता प्राप्त कर सके, दबानेके लिए गलत इस्तेमाल किया गया है।

उन्होंने मुझे यह भी बताया कि अंग्रेजी राज्यकी तरह फ्रेंच भारतमे भी पंचम स्तभवाले मौजूद है, जो अपने स्वार्थ-साधनके लिए फ्रेंच हकूमतका साथ दे रहे है और वहाकी हकूमत लोगोंकी कुदरती भावनाओंको दबानेका प्रयत्न कर रही है। यदि फ्रेंच भारतसे आए हुए मित्रोंका कहना सही है तो मुझे बडा दुःख है। ताहम, मेरी राय साफ है। छोटे-छोटे विदेशी उपनिवेशोंके रहनेवालोंके लिए यह नामुमकिन है कि उनके करोड़ो देशवासी ब्रिटिश हकूमतसे आजाद हो जाए और वह गुलाम बने रहे। मुझे आश्चर्य है कि चंद्रनगरकी ओर मेरा जो मित्र-भाव है उसका यह गलत अर्थ किया जाय कि मै यह कभी बरदाश्त कर सकता हूं कि भारतके इन छोटेसे विदेशी उपनिवेशोंका नीचा दर्जा रहे। इसलिए मेरी यह उम्मीद है कि जो

खबर मुझे दी गई उसकी वास्तवमें कोई बुनियाद नही है। और महान् फ्रांसीसी जाति इस बातकी कभी हिमायत न करेगी कि लोगोंको चाहे वह काले हों या भूरे, हिंदमे हों या और कही, दबाकर रखा जाय।

: १४४ :

१० नवबर, १९४७

(आज शामकी प्रार्थनामे गाये गए भजनका जिक्र करते हुए गाधाजीने कहा—)

भाइयो और बहनो,

अगर मीराबाईकी तरह हम सिर्फ भगवान्के ही सेवक बन जाय, तो हमारी सारी तकलीफोका खात्मा हो जाय। इसके बाद जो कुछ मै कहनेवाला हूं उसे सुननेपर आप इस संकेतको समझेंगे। आपने अखबारोंमे जूनागढ़के बारेमे सारी बाते पढ़ी होगी। राजकोटमे मेरे पास आए हुए दो तारोंसे मुझे सतोष हो गया कि अखबारोंमे छपी हुई खबर बिलकुल ठीक है। जूनागढ़के प्रधान मत्री भूटो साहब और वहांके नवाब साहब कराचीमे है। उप-प्रधान मत्री मेजर हारवे जोन्स जूनागढ़मे है। जूनागढके हिंदुस्तानी सघमे शामिल होनेके काममे इन सबका हाथ है। इसपरसे आप लोगोंको यह नतीजा निकालनेका अधिकार है कि इस काममें कायदे आजम जिनाकी भी सम्मति है। अगर यह ठीक है तो आप इस नतीजेपर पहुच सकते है कि काश्मीर और हैदराबादकी मुश्किलें भी खत्म हो जायंगी। और अगर मै आगे बढ़ू, तो कहूंगा कि अब सारी बातें शांतिकी तरफ झुकेंगी; दोनों उपनिवेशन दोस्त बन जायं और सारे काम मिल-जुलकर करेंगे। मै कायदे आजमके बारेमें गवर्नर जनरलकी हैसियतसे नही सोच रहा

हूं। गवर्नर जनरलके नाते कायदे आजमको पाकिस्तानके कामोंमें दखल देनेका कानूनी हक नही है। इस नाते उनकी वही स्थिति है, जो लॉर्ड माउंटटबेटनकी है, सिर्फ एक वैधानिक गवर्नर जनरल है। लॉर्ड माउंबेटन उस व्यक्तिकी शादीमे शामिल होनेके लिए गए है, जो उनके लिए अपने लडकेसे बढकर है और जिसकी इग्लैंडकी भावी रानीसे शादी हो रही है। वे अपनी कैबिनेटकी इजाजत लेकर ही वहा जा सके है, और २४ नवंबर, १९४७ तक यहा वापस आ जाएंगे। इसलिए जिना साहबके बारेमें मेरा खयाल है कि वे मौजूदा मुस्लिम लीगके बनानेवाले है और उनकी जानकारी और इजाजतके बगैर पाकिस्तानके बारेमे कुछ नही किया सकता। इसलिए मै सोचता हूं कि अगर जूनागढके हिदुस्तानी सघमे शामिल होनेके पीछे जिना साहबका हाथ है, तो यह एक अच्छा शकुन है।

आप लोगोको मै पानीपतके अपने मुआइनेके बारेमें कुछ कहना चाहता हूं। इस मुआइनेमे मौलाना अबुल कलाम आजाद मेरे साथ थे। राजकुमारी भी मेरे साथ जानेवाली थी, मगर वह गवर्नमेंट हाऊसमे थी और मै अपनी घडीके मुताबिक साढे दस बजेके बाद नही ठहर सकता था। मुझे खुशी है कि मै पानीपत गया था। वहा मैने अस्पतालमें मुसलमान मरीजोको देखा। उनमेसे कुछको बहुत गहरे घाव लगे है, मगर उनपर जहांतक मुमकिन है, पूरा ध्यान दिया जाता है; क्योंकि राजकुमारीने चार डॉक्टर, नर्स और तबीबी (चिकित्सक) सहायक वहा भेजे है। इसके बाद हम मुसलमानो, मुकामी हिदुओं और निराश्रितोंके नुमाइंदोंसे मिले। वहां निराश्रितोंकी तादाद २० हजारसे ऊपर बताई जाती है। हमसे कहा गया कि वे रोजाना ज्यादा-ज्यादा तादादमें आते जा रहे है, जिससे वहांके डिप्टी कमिश्नर और पुलिस सुपरिटेंडेंटको भय मालूम होता है। मुझे यह बतलानेमें खुशी होती है कि इन अफसरोंकी हिंदू और मुसलमान दोनों बहुत तारीफ करते है, और निराश्रितोंका तो कुछ कहना ही नही। वे तो उनसे संतुष्ट है ही।

म्युनिसिपल भवनके पास जमा हुए निराश्रितोंसे भी हम लोग मिल सके। पाकिस्तानमें और पानीपतके अव्यस्थित जीवनमें निराश्रितोंको

भयानक मुसीबतें उठानी पड़ी और उठानी पड़ रही है—उनमेंसे कुछको रेलवे स्टेशनके प्लेटफार्मपर रहना पड़ता है और बहुतोंको आसमानके नीचे बिलकुल खुलेमें रहना पड़ रहा है—फिर भी उनके मनमें और चेहरों-पर जरा भी गुस्सा न देखकर मुझे बडी खुशी हुई। हमारे वहां जानेसे वे लोग बड़े प्रसन्न हुए। पानीपतके डिप्टी कमिश्नर या दूसरे लोगोंको पहलेसे सूचना किये बिना इतने निराश्रितोको पानीपतमें इकट्ठे कर देना मुझे अधिकारियोंकी बेरहमी मालूम हुई। पानीपतके अफसरोंको निरा-श्रितोंकी सच्ची तादाद तब मालूम हुई जब ट्रेनें स्टेशनके प्लेटफार्मपर आकर रुकी। यह मबसे बडी बदकिस्मतीकी बात है। पानीपतके निरा-श्रितोंमें औरतें, बच्चे और बूढे भी है। मुझे यह बताया गया है कि निराश्रितोंमें ऐसी औरतें भी है, जिन्हे स्टेशनके प्लेटफार्मोपर बच्चे पैदा हुए है।

यह सब पूरबी पंजाबमें हो रहा है, जिसके प्रधान मंत्री डॉ० गोपीचंद है। डॉ० गोपीचद मेरे साथी कार्यकर्त्ता है। मैं उन्हें बहुत मानता हूं। मै बरसोंसे उन्हे एक योग्य संयोजकके नाते जानता हूं, जिनका पंजाबियोपर बडा प्रभाव है। उन्होंने हरिजन-सेवक-संघ, अखिल भारत-चरखा-सघ और अखिल भारत-ग्रामोद्योग-सघके लिए काफी काम किया है। मुझे यह नही सोचना चाहिए कि पूरबी पंजाबका काम उनकी ताकतके बाहर है। लेकिन अगर पानीपत उनकी कार्य-कुश-लताका नमूना हो, तो यह उनकी सरकारके लिए बडी बदनामीकी बात है। पहलेसे बिना सूचना दिये इतने निराश्रित पानीपतमें क्यों उतारे गए? उन्हें ठहरानेके लिए वहां नाकाफी बदोबस्त क्यों है? अफ-सरोंको पहलेसे ही यह सूचना क्यों नही दी जानी चाहिए कि कौन और कितने निराश्रित पानीपत भेजे जा रहे हैं? उसके साथ ही कल मुझे यह भी सूचना मिली है कि गुडगांव जिलेमें तीन लाख ऐसे मुसल-मान हैं, जिन्होंने डरकर अपना घर-बार छोड़ दिया है। आम सड़कके दोनों तरफ खुलेमे इस आशासे पडे है कि उन्हे अपने औरत-बच्चों और मवेशियोंके साथ पंजाबकी कड़ी सर्दीमें ३०० मीलका रास्ता तय करना है। मैं इस बातमें विश्वास नही करता। मेरा खयाल है कि मुझे

दोस्तोंने जो बात सुनाई है उसमें कुछ गलती है। अभी भी मै आशा करता हूं कि यह बात गलत है या बढ़ा-चढ़ाकर कही गई है। लेकिन पानीपतमें मैंने जो कुछ देखा, उससे मेरा यह अविश्वास डिग गया है। फिर भी मुझे आशा है कि डॉ० गोपीचद और उनकी कैबिनेट समय रहते चेत जायंगे और तबतक चैन नही लेंगे, जबतक सारे निराश्रितोंकी अच्छी देखभालका पूरा इंतजाम नही हो जाता। यह बंदोबस्त दूरंदेशी और हद दरजेकी सावधानी से ही किया जा सकता है।

: १४५ :

११ नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

कल मैंने आपको यह खबर सुनाई थी कि जूनागढके प्रधान मंत्री और उप-प्रधान मंत्रीकी विनती पर वहांकी आरजी सरकारने जूनागढ़ रियासतमे प्रवेश किया है। यह खबर सुनाते हुए मुझे अचरज भी हुआ और खुशी भी हुई, क्योकि जूनागढ़के लोगोंकी और उनके तरफसे लडी जानेवाली लड़ाईके इतने सुख दिखाई देनवाले अतकी मैंने आशा नही की थी। मैंने यह डर भी जाहिर किया था कि अगर जूनागढ़के अधिकारियोंकी विनतीके पीछे कायदे आजम जिनाकी मंजूरी न हुई, तो अभीसे खुशी मनाना ठीक न होगा। इसलिए आपको यह जानकर दु:ख और अचरज हुए बिना न रहेगा कि पाकिस्तानके अधिकारियोंने जूनागढकी जनताकी तरफसे आरजो सरकारके जूनागढ़पर अधिकार करनेका विरोध किया है और यह मांग की है कि "हिदुस्तानी फौजें रियासतकी सीमासे हटा ली जायं, जूनागढ़का राजकाज वहांकी

अधिकारी सरकारको सौंप दिया जाय और हिंदुस्तानी संघकी जनता-द्वारा रियासतपर किये गए हमले और हिंसाको रोका जाय।" उनका यह भी कहना है कि जूनागढके नवाब या वहांके दीवानको हिंदुस्तानी संघके साथ किसी तरहका अस्थायी या स्थायी समझौता करनेका कानूनी हक नहीं है। पाकिस्तानकी नजरमें हिंद-सरकारने यह कार्रवाई करके "पाकिस्तानकी सीमाको साफ-साफ लांघा है और इस तरह अंतर्राष्ट्रीय कानूनका भंग किया है।"

कल अखबारोंमें जो बयान निकले है, उनको देखते हुए इस मामलेमें न तो मुझे अंतर्राष्ट्रीय कानूनका भंग मालूम होता और न यूनियन सरकार-की रियासत पर कब्जा करनेकी कार्रवाई दिखाई देती है। जहांतक मैं समझ सकता हूं, जूनागढ़की जनताकी तरफसे वहांकी आरजी हकूमतने जो आंदोलन किया, उसमें मुझे कोई गैर-कानूनी चीज नहीं दिखाई देती। यह जरूर है कि काठियावाडके राजाओंकी विनतीपर सारे काठियावाडकी सलामतीके लिए यूनियन सरकारने अपनी फौजकी मदद भेजी। इसलिए मुझे इस सारी कार्रवाईमें कोई गैर-कानूनीपन नहीं दिखाई देता। इसके खिलाफ जूनागढके दीवानने जाहिरा तौरपर अपनी राय बदलकर जो कुछ किया वह गैर-कानूनी था। इस सारे मामलेको मैं इस नजरसे देखता हूं—जूनागढ़के नवाब साहबको अपनी प्रजाकी मंजूरीके बिना, जिसमें मुझे बताया गया है कि ८५ फीसदी हिंदू हैं, पाकिस्तानमें शामिल होनेका कोई हक नहीं था। गिरनारका पवित्र पहाड और उसके सारे मंदिर जूनागढ़का एक हिस्सा है। उसपर हिंदुओंने बहुत पैसा खर्च किया है और सारे हिंदुस्तानसे हजारों यात्री गिरनारकी यात्राके लिए वहां जाते है। आजाद हिंदुस्तानमें सारे देश पर जनताका अधिकार है। उसका जरा-सा भी हिस्सा खानगी तौरपर राजाओंका नहीं है। जनताके ट्रस्टी बनकर ही वे अपना दावा कायम रख सकते है, और इसलिए उन्हें अपने हर एक कामके लिए जनताके समर्थनका सबूत पेश करना होगा। यह सच है कि अभी राजा-नवाबोंने यह महसूस नहीं किया है कि वे प्रजाके ट्रस्टी और प्रतिनिधि है और यह भी सच है कि कुछ रियासतोंकी जाग्रत

प्रजाको छोड़कर बाकी रियासती प्रजाने, कुल मिलाकर, अभीतक यह महसूस नही किया है कि अपने राजकी सच्ची मालिक वही है। लेकिन इससे मेरेद्वारा बताए गए उसूलकी कीमत कम नही होती।

इसलिए अगर दो उपनिवेशोमेसे किसी एकमे शामिल होनेका किसीको कानूनी हक है, तो वह किसी खास रियासतकी प्रजाको ही है और अगर आरजी सरकार किसी भी स्टेजपर जूनागढकी रैयतकी नुमाइंदगी नही करती, तो वह अन्यायसे रियासतपर कब्जाकरनेवालोकी टोलीमात्र है और उसे दोनो उपनिवेशोद्वारा निकाल दिया जाना चाहिए। अगर कोई राजा अपनी जाती हैसियतसे किसी उपनिवेशमे शामिल होता है, तो वह उपनिवेश दुनियाके सामने इस चीजको न्यायोचित साबित करनेके लिए खडा नही हो सकता। इस अर्थमे मेरा मत है कि जबतक यह साबित न हो जाय कि जूनागढकी प्रजाने नवाबके संघमे शामिल होनेके फैसलेपर अपनी स्वीकृतिकी मोहर लगा दी है, तबतक नवाब साहबका संघमें शामिल होना शुरूसे ही बेबुनियाद है। जूनागढ आखिर किस उपनिवेश में शामिल हो, इस मामलेमे झगडा खड़ा होनेपर उसे सिर्फ सारी प्रजाकी रायसे यानी रेफरेंडमके जरिए ही सुलझाया जा सकता है। यह काम ठीक तरहसे किया जाय और उसमें कही भी हिंसाका या हिंसाके दिखावेका उपयोग न किया जाय। पाकिस्तानकी सरकारने और अब जूनागढके प्रधान मत्रीने भी जो रुख अख्तियार किया है, उससे एक अजीब हालत पैदा हो गई है। पाकिस्तान और संघ-सरकारमेसे कौन सही और कौन गलत रास्तेपर है इसका फैसला कौन करेगा? तलवारके जोरसे कोई फैसला करनेकी बात सोची भी नही आ सकती। एकमात्र सम्मानपूर्ण तरीका तो पचोके जरिए फैसला करनेका है। देशमें बहुतसे गैर-तरफदार व्यक्ति मिल सकते है, और अगर संबंधित पार्टियां हिंदुस्तानियोंको पंच मुकर्रर करनेकी बात-पर राजी न हो सकें, तो कम-से-कम मुझे तो दुनियाके किसी भी हिस्सेके किसी गैर-तरफदार आदमीके चुनावपर कोई एतराज नही होगा।

जो कुछ मैने जूनागढके बारेमें कहा है, वह काश्मीर और हैदराबादपर भी उसी रूपमे लागू होता है। न तो काश्मीरके महाराजा साहब और न हैदराबादके निजामको अपनी प्रजाकी सम्मतिके बगैर किसी भी उपनिवेशमे शामिल होनेका अधिकार है। जहांतक मै जानता हूं, यह बात काश्मीरके मामलेमे साफ कर दी गई थी। अगर अकेले महाराजा संघमे शामिल होना चाहते, तो मै उनके ऐसे कामकी कभी ताईद नही कर सकता था। संघ सरकार काश्मीरको थोडे समयके लिए संघमें शामिल करनेपर सिर्फ इस वजहसे राजी हुई कि महाराजा, और काश्मीर व जम्मूकी जनताकी नुमाइंदगी करनेवाले शेख अब्दुल्ला—दोनो यह बात चाहते थे। शेख अब्दुल्ला इसलिए सामने आए कि वे काश्मीर और जम्मूके सिर्फ मुसलमानोंके ही नही बल्कि सारी जनताके नुमाइंदे होनेका दावा करते है।

मैने लोगोको यह कानाफूसी करते सुना है कि काश्मीरको दो हिस्सों-मे बांटा जा सकता है। इनमेसे जम्मू हिंदुओंके हिस्से आएगा और काश्मीर मुसलमानोंके हिस्से। मै ऐसी बंटी हुई वफादारी और हिंदुस्तानी रियासतोंके कई हिस्सोंमे बंटनेकी कल्पना नही कर सकता। इसलिए मुझे उम्मीद है कि सारा हिंदुस्तान समझदारीसे काम लेगा और कम-से-कम उन लाखों हिंदुस्तानियोंके लिए, जो लाचार निराश्रित बननेके लिए बाध्य हुए है, तुरंत ही इस गंदी हालतको टाला जायगा।

: १४६ :

१२ नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज दीवालीका दिन है, इसलिए मैं आप सबको बधाई देता हूं। हमारे हिंदू सालका यह बहुत बड़ा दिन है। विक्रम-संवत्के मुताबिक

नया साल कल गुरुवारसे शुरू होगा। आपको यह समझना चाहिए कि दीवालीका दिन हमेशा रोशनी करके क्यो मनाया जाता है। राम और रावणके बीचकी भारी लडाईमे राम भलाईकी ताकतोंके प्रतीक थे और रावण बुराईकी ताकतोंका। रामने रावणपर विजय पाई, और इस विजयसे हिंदुस्तानमे रामराज्य कायम हुआ।

लेकिन अफसोस है कि आज हिंदुस्तानमे रामराज्य नही है। इसलिए हम दीवाली कैसे मना सकते है? वही आदमी इस विजयकी खुशी मना सकता है, जिसके दिलमें राम है। क्योंकि भगवान् ही हमारी आत्माको रोशनी दे सकता है, और ऐसी ही रोशनी सच्ची रोशनी है। आज जो भजन गाया गया, उसमें कविकी भगवानको देखनेकी इच्छापर जोर दिया गया है। लोगोकी भीड दिखावटी रोशनी देखने जाती है, लेकिन आज हमे जिस रोशनीकी जरूरत है वह तो प्रेमकी रोशनी है। हमारे दिलोंमे प्रेमकी रोशनी पैदा होनी चाहिए। तभी सब लोग बधाइया पाने लायक बन सकते है। आज हजारों-लाखों लोग भयानक दुःख भोग रहे है। क्या आप लोगोमेसे हर एक अपने दिलपर हाथ रखकर यह कह सकता है कि हर दुःखी आदमी या औरत—फिर वह हिंदू, सिख या मुसलमान कोई भी हो—मेरा सगा भाई या बहन है? यही आपकी कसौटी है। राम और रावण भलाई और बुराईकी ताकतोंके बीच हमेशा चलनेवाली लडाईके प्रतीक है। सच्ची रोशनी भीतरसे पैदा होती है।

पंडित जवाहरलाल नेहरू जख्मी काश्मीरको देखकर कैसे दुःखी मनसे अभी-अभी लौटे है। वे कल और आज तीसरे पहरकी वर्किंग कमेटीकी बैठकोंमे शामिल नही हो सके। वे मेरे लिए बारामूलासे कुछ फूल लाए है। कुदरतकी यह भेंट मुझे हमेशा सुंदर मालूम होती है। लेकिन आज लूट-पाट और खूंरेजीने उस सुहावनी धरतीकी सारी सुंदरता बिगाड दी है। जवाहरलालजी जम्मू भी गए थे। वहांकी हालत भी बहुत अच्छी नहीं है।

सरदार पटेलको श्री शामलदास गांधी और ढेबरभाईकी विनतीपर जूनागढ़ जाना पडा, जो उनकी रहनुमाई चाहते थे। जिना साहब और

भूटो साहब दोनों नाराज हैं, क्योंकि उन्हे लगता है कि हिंद-सरकार ने उन्हे धोखा दिया है और वह जूनागढ़को यूनियनमें शामिल होनेके लिए दबा रही है।

सारे देशमे शांति और सद्भावना कायम करनेके लिए हर एकका यह फर्ज है कि वह अपने दिलसे नफरत और शंकको निकाल दे। अगर आप-अपनेमें भगवान्की हस्ती महसूस नही करेंगे और अपने सारे छोटे-छोटे आपसी झगड़ोंको नही भूलेंगे, तो काश्मीर या जूनागढ़की विजय बेकार साबित होगी। जबतक आप डरके मारे यहांसे भागे हुए सारे मुसलमानोंको वापस हिंदुस्तान नही लाते, तबतक सच्ची दिवाली नहीं मनाई जा सकती। अगर पाकिस्तानने वहांसे भागे हुए हिंदुओं और सिखोंके साथ ऐसा ही नही किया, तो वह भी जिंदा नहीं रह सकेगा।

कल मैं इनके बारेमें जो मुमकिन होगा, कहूंगा। मुझे उम्मीद है कि अगले साल, जो गुरुवारसे शुरू होनेवाला है, आप और हिंदुस्तान, सुखी रहेंगे और भगवान् आपके दिलोंको प्रकाशित करेगा; ताकि आप आपसमें एक दूसरेकी और हिंदुस्तानकी ही नही, बल्कि उसके जरिए सारी दुनियाकी सेवा कर सकें।

: १४७ :

१३ नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

कल दिवाली थी और आज नए वर्षका पहला दिन है। मैंने सुना है और कल रातको तो और भी ज्यादा सुना कि दिल्लीमें दिवालीके रोज बहुत रोशनी होती है, जैसी बंबईमे होती है और शायद उससे भी ज्यादा होती है। बंबईमे तो बहुत बड़ी रोशनी होती है। लेकिन

कल मै यह सुनकर खुश हुआ कि लोग समझ गए है कि आज दिवाली-का उत्सव मनानेका दिन है ही नही। मगर तो भी एक भ्रमणा पैदा हो गई है कि दिवालीपर कुछ-न-कुछ बत्तियां तो जलानी ही चाहिएं, इसलिए किसी-किसी जगहपर थोड़े तेलके दीपक जल रहे थे और बिजलीकी बत्तिया भी थी; लेकिन बहुत कम। मै घरसे बाहर तो कही जाता नही, मगर पता तो चल ही जाता है।

आजसे नया वर्ष आरंभ होता है। मैंने कल इशारा तो किया था, लेकिन अच्छा है कि मै आज फिर दुहरा दूँ। नए वर्षके दिनमें कोई शुभ-चितन या कोई शुभ इरादा कर लेते है और पीछे ईश्वरकी कृपा बनी रहे तो सारे वर्षभर उसपर चलनेकी कोशिश करते है। ऐसा अगर हम करें और आज जो फिजा है, वह बदल जाय और हिंदू-मुसलमान सब भाई-भाई बनकर रहते है, तब दूसरी जो दिवाली हमारे सामने आती है, उस वक्त हमें दिये बत्तियां जलानेका अधिकार हो जाता है। अगर हम एक-दूसरेको दुश्मन मानकर बैठ जाते है तो पीछे कोई काम बनता नही है। इसलिए मैंने कहा कि आज तो बाहरकी दिवाली मनानेका अवसर है ही नही। लेकिन दिलमे जो ज्योति होनी चाहिए उसको प्रकट करनेकी कोशिश हमें करनी है। हमारे दिलमें राम विराजमान है और वहां भी युद्ध चलता है राम और रावणके बीचमें। अगर हृदयमें, उसके बाहर नहीं, रामपर रावणकी जीत होती है तो उसका मतलब है कि हृदयमें ज्योति नही है, अंधेरा है। अगर रामकी रावणपर जय होती है और रावण बेकार हो जाता है या परास्त हो जाता है, तब हमारे भीतर तो ज्योति है ही, बाहर भी दिये-बत्ती जलानेका हमको हक हो जाता है। इसलिए अगर बाहरकी रोशनी भीतरकी ज्योतिका ही नमूना है तब तो खैर है और अगर भीतर अंधेरा है और बाहर हम दिये-बत्ती जलाते हैं और ऐसा मान लेते हैं कि यह तो सब चलता है, तब हम पाखंडी और झूठे बनते हैं। मेरी उम्मीद है कि हम झूठे तो कभी न बनें।

मैंने कल आपसे कहा था कि कांग्रेस-कार्य-समितिकी जो बैठकें हो

रही हैं, उस बारेमें कुछ तो मैं आपसे कह सकूंगा। कल तो समय नही रहा था. क्योंकि १५ मिनटसे ज्यादा तो मै लेना नही चाहता। आज कार्यसमितिकी बैठकका तीसरा दिन है और अभी भी वह बैठी हुई है। एक बात तो जो बहुत बडी मुझको आपसे कहनेका अधिकार है, वह यह कि आज तीन दिनसे काग्रेमके ये लोग, जो कि कार्यसमितिमे है और दूसरे भी जिनको कि आचार्य कृपलानीने विशेष रूपसे बुलाया है, सब बैठे है। यह अच्छी बात है कि सब ऐसा मानते है कि काग्रेसकी, जबसे वह बनी है तबसे, अर्थात् ६० वर्षसे, यही एक नीति रही है कि कांग्रेस कोई धर्मका प्रचार करनेवाली सस्था नही है। काग्रेसमे सब धर्मोंके माननेवाले है या ऐसा कहो कि सब धर्मियोकी है, इसलिए किसी एक धर्मकी नही है। वह आम लोगोकी सस्था है और जो राज्य-प्रकरण है उसको मद्दे-नजर रखकर ही काग्रेसको चलना है। ऐसे अगर वह चलती है तो पीछे वह धार्मिक सस्था नही रहती। मान लीजिए, राज्य-प्रकरणमें एक चीज यह है कि हमे सबको खाना देना है; तब अगर कांग्रेस सच्ची है तो उसे जितने इन्सान यहा रहते है उन सबको खाना देना चाहिए। अगर काग्रेस ऐसा करे कि जो लोग उसके साथ हैं या ऐसा कहो कि हिंदुओं और सिखोंको ही खाना दें, क्योंकि वे उसमें बडी तादादमें है और बाकी लोग भूखों मरें और ऐसा कहे कि हमको उनकी क्या पर्वाह पडी है, तब वह कहनेमे तो धार्मिक संस्था होगी, लेकिन असलमे अधर्मकी संस्था बन जायगी। अगर वह यह कहे कि जो लोग इसके पीछे है उनकी सेवा करो और दूसरों-को काटो, तो वह कोई धर्म नही, बल्कि धर्मके नामपर अधर्म करना हुआ।

लेकिन अगर मैं रामका नाम लेता हूं, और कोई दूसरा नाम नहीं लेता, तो मुझे कोई कानून उसके लिए मजबूर नहीं कर सकता। यह बात दूसरी है कि मैं खुद अपनेको मजबूर करूं या अपनेको ऐसा बुज-दिल मानूं कि अरे, फलां आदमी है, उसके हाथमें तलवार है, अगर मैंने ऐसा नहीं किया तो वह मेरा गला काट देगा। अगर मैं बुजदिल नहीं हूं, तो जो यह कहता है कि खबरदार, तू रामका नाम इस

जगहपर लेता है, तुझे अल्लाका ही नाम लेना होगा, तब मुझको यह हक होना चाहिए और हक है कि उसको यह कह दूं कि मैं अल्लाका नही, रामका ही नाम लूंगा। तब वह इतना ही कर सकता है न, कि मेरा गला काटे, तो काट डाले। वह धर्मकी बात हो गई, जिसे हम निजी धर्म या व्यक्तिगत धर्म कहते है। इस धर्मको मिटानेवाली कोई ताकत दुनियामें है ही नही। हा, आदमी अपने आप मिटाना चाहे तो मिट सकता है या तब मिटता है जब दिलमें ज्योति न होकर अंधेरा-ही-अंधेरा होता है। उस हालतमें उसे अपने दिलसे तो कुछ सूझता नही, किसी दूसरेका सहारा ले लेता है, या कोई दूसरा उसको कहता है कि ऐसे चल, इस वक्त चल, तो वैसे ही वह चलता है, क्योंकि वह अंधेरेमें पडा हुआ होता है। लेकिन जो आदमी धर्मको पकड़कर बैठा है, वह तो ईश्वरका ही आदेश मानेगा, किसी दूसरेका नही। ऐसी ही जब कोई संस्था चलती है और लोगोंकी भलाईके लिए चलती है तो वह चीज सबके लिए लागू हो सकती है जो धर्म-संगत होती है, कोई दूसरी चीज नही। इस तरहसे वह एक अधर्म की संस्था नही, धर्मकी संस्था बन जाती है। यही राज्य-प्रकरणका मेरी निगाहमें सच्चा अर्थ है और जबसे कांग्रेसका जन्म हुआ है तबसे ही वह ऐसे चली है। इसलिए आपको खुश होना चाहिए, चाहे आप कांग्रेसमें है या नही। मैं भी तो कांग्रेसमें नही हूं, उससे क्या हुआ? आखिर मैं कांग्रेसका खिदमतगार रहा हूं, उसकी सेवा की है। तब चवन्नी नहीं देता हूं तो क्या? मुझको अगर प्रेसिडेंट बनना है तो चवन्नी देनी चाहिए, लेकिन वह भी नहीं। ऐसे अगर आप सब मेरी तरहसे हैं तो बड़ी भारी बात है। अगर आपने कांग्रेसके दफ्तरमें रजिस्टर करा लिया है तो भी ठीक है, अगर बाहर है, और फिर भी कांग्रेसके भक्त हैं और उसकी सेवा करते है तो भी ठीक है। तीन दिनसे मैं कांग्रेस-कार्य-समितिमें बैठा हूं। उसमें इख्तलाफ राय है और काफी है। आखिर वे इन्सान हैं, कोई पत्थर तो है नही, एक एक बात कहता है तो दूसरा दूसरी। विचारका विरोध तो हो सकता है, लेकिन आचारमें विरोध नही होना चाहिए। इसलिए इस विचार-विरोधमें ही उन्होंने

तीन दिन काटे। लेकिन इतना तो सब चाहते हैं कि कांग्रेस जैसी आजतक रही है, ऐसी ही रहनी चाहिए। ऐसा करनेमें अगर वह मिट भी जाती है, तो मिट जाय। मिट तो नही सकती, हां, अल्पमत हो सकती है, और आज वह बहुमतमे है, इसमे मुझको तो शक है। क्योकि अगर वह बहुमतमे होती तो हिंदुस्तानमे जो पाकिस्तान-जैसी चीज बनी, बननी नही चाहिए थी। यहां हिंदुस्तानमें मुसलमानोंपर कितनी ज्यादतियां हुई है, उनके मैं तो आपको बहुतसे उदाहरण बता सकता हूं, लेकिन मै क्या बताऊं? मुझसे ज़्यादा आप खुद जानते हैं। पाकिस्तानमें हिंदू और सिखोंपर क्या कम ज्यादतियां हुई हैं, इस बातको छोड़ दो। यह देखना हमारा काम नही है। दुनियाके दूसरे लोग धर्मका पालन नही करते, इसलिए क्या मैं भी अपने धर्मका पालन न करूं? इसलिए कांग्रेसको जो उसका मौलिक धर्म है, उसपर कायम रहना है, चाहे वह बहुमत में रहे या अल्पमत में। उसी निगाहसे वह अपना प्रस्ताव बना रही है। वह सीधा और सच्ची तरह से बात करना चाहती है। तब सच्ची बात और क्या हो सकती है सिवा इसके, कि हम एक भी मुसलमानको मजबूर करके यहांसे बाहर नही भेजना चाहते। मुसलमान भले है या बुरे हैं, यह बात इसमें नही आती। क्या हम ऐसा कहते हैं कि हिंदुस्तानमें सब फरिश्ते ही रह सकते है, या फरिश्ते भी न सही, तो क्या जो अच्छे और भले लोग हैं, केवल वही रह सकते है, तब क्या हिंदुओं और सिखोंमें कोई बुरे या बदमाश आदमी है ही नही और अगर हैं तो उनको आप क्या कहेगे? क्या यह कहोगे कि यहांसे चले जाओ, नही तो तलवारसे गला कट जायगा। किसी आदमीको बदमाश मानने या उसका गला काटनेका आपको कोई हक नहीं है। हमने मुसलमानोंपर ज्यादतियां की। रोज-ब-रोज मेरे पास ऐसी चीजें आती रहती हैं, उनमें अतिशयोक्ति हो सकती है, लेकिन आखिर निचोड मै यही पाता हूं कि वे सब सच्ची बातें है। कांग्रेसकी तरफसे जब कोई चीज की जाती है तो फिर कांग्रेस महासमितिको बुलाना पडता है। कांग्रेसका आम अधिवेशन तो वर्षमें एक बार हुआ करता है। वह तो

एक तमाशा-सा होता है, क्योंकि वह इतना हजूम होता है कि कोई आदमी ठीक तरहसे सोच भी नहीं सकता। लेकिन वे लोग जानते हैं कि कांग्रेसकी जो महासमिति बनी है, वह सब सोच-विचारकर ठीक काम ही करती है, इसलिए वे सब उसपर दस्तखत दे देते हैं। सो कांग्रेस महासमिति हमेशा तैयार रहती है और वह परसों यहां मिलनेवाली है। उसके सामने जो कुछ सामान रखना है वह आपकी इस कार्यसमितिको ही रखना है। वह कांग्रेस महासमितिकी नौकर है। अगर वह कोई चीज बनाकर उनके सामने नहीं रखती है तो पीछे वह कह सकते हैं कि तुमने अच्छा काम नहीं किया है और तब उसको इस्तीफा देना पड़ता है। कांग्रेस महासमिति कार्य-समितिको बना सकती है और मिटा भी सकती है। अगर वह कार्य-समितिकी चीजको बहाल न करे या उसमें कोई बड़ी तब्दीली कर दे तब भी उसको इस्तीफा देना चाहिए। इसलिए कार्य-समिति कहती है कि हम जो कुछ करना चाहते है वह आपके नामसे ही करना है। अगर अपने नामसे ही वह कुछ कहती है तो उसका उतना असर नहीं होता। क्योंकि १५ आदमी जमा होकर यह कहते है कि किसी मुसलमानको कत्ल नहीं करना है तो १५ आदमियोंके माननेमें क्या हुआ? अगर महासमितिके नामसे कहते हैं तो उसका असर बहुत बढ़ता है। इसलिए तीन दिनसे मैं तो कांग्रेस-कार्यसमितिको यही सलाह दे रहा हूं कि वह बिलकुल साफ-साफ कह दे कि हमको यही करना है। लोग इसमें राजी रहते हैं या नाराज, इसकी हम कोई फिक्र न करें। अगर हम कांग्रेसके सच्चे सेवक हैं तो हमको यही करना चाहिए। अगर कांग्रेस महासमिति उसको फेंकना चाहे तो फेंक दे। आखिर हमको जगतके सामने खड़ा होना है और पाकिस्तानको भी। हम बहुत-सी बातें इसलिए करते है कि हमको जगत क्या कहेगा। मैं तो कहता हूं कि जिस बातको आप सच मानते हैं वही करें और पीछे जगत भी उसको सच ही कहेगा। जो पंच कहता है वह परमेश्वरकी आवाज होती है, ऐसा कहते हैं। जो जगत् है, वह पंचके समान है। इसलिए जो जगत कहता है, वही सही तरीकेसे ईश्वरका न्याय है।

आज कार्यसमिति बैठी हुई है और कल भी बैठनेवाली है। मेरी तो यही प्रार्थना है कि वह कांग्रेस • महासमितिके सामने ऐसा प्रस्ताव रखे जिससे हिंदुस्तानकी जय हो और सब लोग यहां आरामसे रह सकें। इसके यह मानी नहीं हैं कि जो देशद्रोही हों उनको भी हम कुछ न कहें। लेकिन हम किसीको देशद्रोही मानकर ही • न बैठ जायं। अगर कोई वास्तवमें देशद्रोही सिद्ध होता है तो उसको चाहे कत्ल कर दो, फांसीपर चढ़ा दो, गोली मार दो। पर मुसलमान वफादार हो नहीं सकता और केवल हिंदू व सिखोंने ही वफादारीका इजारा ले लिया है, तो मैं कहता हूं कि यह बडी गुनाहकी बात होगी। कांग्रेस तो ऐसा काम नही करेगी, मुझको ऐसा पूरा विश्वास है। आप भी यही प्रार्थना करें कि कांग्रेस जो हिदायत करे उससे हम भी ऊंचे जायं, सारा हिंदुस्तान ऊंचा जाए और उसके साथ दूसरे हिस्सों-को भी ऊंचा जाना है। कांग्रेस हिंदुस्तानको ऊंचा उठानेके लिए ही बनी है; लेकिन कांग्रेस किसीसे कुछ छीनकर या किसीका धन लूटकर ऊंचे नहीं जाना चाहती। सारे जगतके लिए कांग्रेस मरेगी, मगर वह किसीको मारेगी नहीं। मैं कांग्रेसमें आया तबसे ही नहीं, कई वर्षोंसे कांग्रेसका यह उद्देश्य रहा है। कांग्रेसने हमेशा इस बातकी कोशिश की है कि यूरोपसे जो लोग धन लूटनेके लिए इधर आते हैं, वह लूट बंद हो, ताकि एशिया और अफ्रीकाके लोग चैनसे रह सकें। यह काम करनेके लिए ही हिंदुस्तानको जिंदा रहना है और इसी कामके लिए हिंदुस्तानकी आजादी है, किसी दूसरे कामके लिए नहीं है।

: १४८ :

१४ नवंबर, १९४७

(आज शामके भजनको ही गांधीजीने अपनी चर्चाका विषय बनाते हुए कहा —)

भाइयो और बहनो,

जब मैं आगाखान महलमें, जिसे मुझे, देवी सरोजिनी नायडू, मीराबेन और महादेवभाईको बंद रखनेके लिए कैदखानेका रूप दे दिया गया था, उपवास कर रहा था, तब इस भजनने मुझपर अपना अधिकार कर लिया था। यहां मै उपवासके कारणोंमे नही जाना चाहता।

उसके बारेमें मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि उन २१ दिनोंतक मैं जो टिका रहा, उसकी वजह वह पानी नही था, जो मैं पीता था, न वह संतरेका रस ही था जो कुछ दिनोंतक मैने लिया था, जो मेरी गैरमामूली डाक्टरी देखरेख हो रही थी, वह भी उसका कारण नही थी, मगर मैंने अपने भगवान्को, जिसे मै राम कहता हूं, अपने दिलमें बसा रखा था, उसी वजहसे मै टिका रहा। मै इस भजनकी लकीरोंपर इतना मोहित था कि मैने संबंधित लोगोंसे कहा कि वे तारके जरिए इसके ठीक-ठीक शब्द भेजे, जिन्हे मै उस वक्त भूल गया था। मुझे जवाबी तारसे जब यह पूरा भजन मिला तो बड़ी खुशी हुई। भजनका भाव यह है कि रामनाम ही सब कुछ है और उसके सामने दूसरे देवताओंका कोई महत्त्व नही है। अपने जीवनकी यह उपदेश भरी कहानी मैं आप लोगोको इसलिए सुनाना चाहता हूं कि अगले दिन यानी शनिवारको नई दिल्लीमे ए० आई० सी० सी० का जो महत्त्वपूर्ण अधिवेशन होनेवाला है, उसमें उसके मेंबर अपने दिलोंमे भगवान्को रखकर सारे विचार और सारी चर्चाएं करें। वह उन्हे करना ही होगा, क्योंकि वे कांग्रेसियोंके नुमाइंदे हैं। और इसलिए अगर उनके मुखिया कांग्रेसी अपने दिलमे भगवान्के बजाय शैतानको रखते है, तो वे अपने नमकके प्रति इंसाफ नही करते।

ए० आई० सी० सी० के सामने रखे जानेवाले प्रस्तावोंपर वर्किंग कमेटीने पूरे तीन घंटोंतक चर्चा की। चर्चामें यह सवाल उठा कि किस तरह ऐसा वातावरण तैयार किया जाय जिससे सारे हिंदू और सिख निराश्रित इज्जत और हिफाजतके साथ पश्चिमी पंजावमें अपने-अपने घरोंको लौटाये जा सकें। वे इस नतीजेपर पहुंचे कि बुराई पाकिस्तानसे ही शुरू हुई, मगर उन्होंने यह भी महसूस किया कि जब बड़े पैमानेपर उस बुराईकी नकल की गई और हिंदुओं और सिखोंने पूरबी पंजाव और उसके नजदीकके यूनियनके हिस्सोंमें भयंकर बदले लिये, तो बुराई-की शुरूआत करनेका वह सवाल फीका पड़ रहा। अगर ए० आई० सी० सी० विश्वासके साथ यह कह सकती कि जहांतक यूनियनका ताल्लुक है, पागलपनके दिन बीत गए और यूनियनके एक सिरेसे दूसरे सिरेतक सब लोग समझदार बन गए हैं, कमेटी पूरे विश्वासके साथ यह भी कह सकती थी कि पाकिस्तान डोमिनियनको हिंदू और सिख निराश्रितोंको इज्जत और पूरी हिफाजतके साथ अपने यहां वापस बुलानेके लिए लाचार होना पड़ेगा। यह हालत सिर्फ तभी पैदा की जा सकती है जब आप लोग और दूसरे हिंदू और सिख रावण या शैतानके बदले राम यानी भगवानको अपने दिलोंमें स्थापित करें। क्योंकि जब आप शैतानको अपने दिलोंसे हटा देंगे और मौजूदा पागलपनको छोड़ देंगे, तब हर एक मुसलमान बच्चा भी यहां उतनी ही आजादीसे घूम-फिर सकेगा, जितनी आजादीसे एक हिंदू या सिखका बच्चा घूमता है। इसमें मुझे कोई शक नहीं है कि तब जो मुसलमान निराश्रित लाचार होकर अपने घर छोड़ गए हैं, वे खुशीसे लौटेंगे और तब हर एक हिंदू और सिख निराश्रितके हिफाजत और इज्जतके साथ पाकिस्तानमें अपने घर लौटनेका रास्ता साफ हो जायगा।

क्या मेरे शब्द आप लोगोंके दिलोंमें गूंज सकेंगे और ए० आई० सी० सी० समझदारी और इन्साफभरा फैसला कर सकेगी?

: १४६ :

१५ नवंबर, १६४७

भाइयो और बहनो,

मै महसूस करता हूं कि आप लोग स्वभावतः यह उम्मीद करेंगे कि दोपहरको ए० आई० सी० सी०की बैठकमे मैने जो कुछ कहा है वह आप लोगोंको बतलाऊगा। मगर मेरी उसे दोहरानेकी इच्छा नहीं होती। दरअसल मैने वहापर वही बात कही थी, जो मै आप लोगोंको इतने दिनोंसे कहता रहा हूं। अगर मुझे पूरी ईमानदारीसे राष्ट्रका पिता कहा जाता है, तो सिर्फ इसी अर्थमें सच है कि सन् १६१५ में मेरे दक्खिन अफ्रीकाके लौटनेके बाद कांग्रेसका जो स्वरूप बना, उसके बनानेमें मेरा बडा हाथ था। इसका मतलब यह है कि देशपर मेरा बड़ा असर था। अगर आज मैं ऐसे असरका दावा नही कर सकता। इससे मुझे चिंता नहीं है, कम-से-कम वह होनी नहीं चाहिए। सबको सिर्फ अपना फर्ज अदा करना चाहिए और नतीजेको भगवानके हाथोंमें छोड़ देना चाहिए। भगवान्की मर्जीके बगैर कुछ भी नही होता। हमारा फर्ज सिर्फ कोशिश करना है। इसलिए मैं तो ए० आई० सी० सी० की बैठकोंमें इस फर्जको ध्यानमे रखकर गया था कि अगर बैठककी कार्रवाई शुरू होनेसे पहले मेम्बरोंसे कुछ कहनेकी मुझे इजाजत मिल गई, तो मै उनके सामने वह बात रख दूं जिसे मैं सच मानता हूं।

आप लोगोसे मै कंट्रोलके बारेमें कुछ कहना चाहता हूं। ए० आई० सी० सी.० की बैठकमें चूंकि मैं मौजूदा अहमियत रखनेवाले दूसरे मामलोंपर ज्यादा देरतक बोला, इसलिए कंट्रोलके विषयका सिर्फ इशारा-भर कर सका।

मै महसूस करता हूं कि कंट्रोल रखना गुनाह है। कंट्रोलका तरीका लड़ाईके दिनोमें अच्छा रहा होगा। एक फौजी देशके लिए वह आज भी

अच्छा हो सकता है। मगर हिंदुस्तानके लिए वह नुकसानदेह है। मुझे विश्वास है कि देशमे अनाज या कपड़ेकी कोई कमी नहीं है। इस साल बरसातने हमें धोखा नही दिया है। हमारे देशमें काफी कपास है और चरखे और करघेपर काम करनेवाले काफी लोग है। इसके अलावा, देशमें मिले है। इसलिए मुझे लगता है कि ये दोनो कट्रोल बुरे हैं। हमारे यहा दूसरे कट्रोल भी है, जैसे पैट्रोल, शक्कर वगैराका कंट्रोल। इन चीजोपर कंट्रोल रखनेमे मै कोई मौजू कारण नही देखता। इससे लोग आलसी और पराधीन बनते है। आलस और पराधीनता देशके लिए किसी भी दिन बुरी चीजे है। इन कट्रोलोंके बारेमे मेरे पास रोजाना शिकायतें आती है। मुझे उम्मीद है कि देशके नुमाइदे समझदारीभरा फैसला करेंगे और सरकारको इन घूसखोरी, पाखंड और काले बाजारको बढावा देनेवाले कंट्रोलोंको हटानेकी सलाह देंगे।

: १५० :

१६ नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज शामको गाये गए भजनमें कहा गया है कि इन्सानका बड़े-से-बडा उद्योग भगवान्को पानेकी कोशिश करनेमें है। वह मंदिरों, मूर्तियों या इन्सानके हाथों बनाई हुई पूजाकी जगहोमें नहीं मिल सकता और न उसे व्रतों और उपवासोके जरिए ही पाया जा सकता है। ईश्वर सिर्फ प्यारके जरिए मिल सकता है, और वह प्यार लौकिक नहीं अलौकिक होना चाहिए। मीराबाई, जो हर चीजमे भगवान्को देखती थी, ऐसे प्यारकी जिंदगी बिताती थी। उनके लिए भगवान् ही सब कुछ था।

रामपुर स्टेटके शासक मुसलमान है, मगर इसका यह मतलब नहीं है कि वह एक मुस्लिम स्टेट है। कई साल पहले मरहूम अलीभाई मुझे वहां ले गए थे और मै वहां उनके घरमे ठहरा था। मुझे उस वक्तके

नवाब साहबसे भी मिलनेका मौका मिला था। क्योंकि वे उस जमानेके मशहूर राष्ट्रीय मुसलमान मरहूम हकीम साहब अजमलखान और मरहूम डॉक्टर असारीके दोस्त थे। तब वहां हिंदू और मुसलमान आजके बनिस्बत ज्यादा शाति और मेल-जोलसे रहते थे। मगर पिछले इतवार-को जो हिंदू दोस्त वहासे मुझे मिलनेके लिए आए थे, उन्होंने दूसरी ही कहानी सुनाई। उन्होंने कहा कि अगरचे वह स्टेट हिदुस्तानी सघमे शामिल हो गई है, फिर भी मुस्लिम लीगका छल-कपटभरा असर वहां है। अगर वही एक रुकावट होती, तो उसपर आसानीसे काबू पाया जा सकता था। मगर वहां हिंदू महासभा भी है, जिसे राष्ट्रीय स्वयसेवक-संघके आदमियोंसे मदद मिलती है, जिनकी इच्छा यह है कि सारे मुसल-मानोको हिदुस्तानी सघसे निकाल दिया जाय।

सवाल यह है कि जो कांग्रेस-जन अपने काग्रेसके मकसदके प्रति वफादार है, वे अपनी हालत कैसे अच्छी बनावे? क्या वे कामयाबीकी आशासे सत्याग्रह कर सकते है? यह जानकर उन लोगोको खुशी हुई कि कांग्रेस महासमिति कांग्रेसके मकसदपर मजबूतीसे जमी हुई है और एमे हिंदु-स्तानके बननेसे इन्कार करती है, जिसमे सिर्फ हिंदू ही मालिकों-जैसे रह सकें। काग्रेसके उसूल और मकसद इतने उदार है कि उसमे देशकी सारी जातिया शामिल हो जाती है। उसमे ओछी साप्रदायिकताके लिए कोई जगह नही है। वह सियासी संस्थाओंमे सबसे पुरानी है। लोगोंकी सेवा ही उसका एकमात्र आदर्श है। ए० आई० सी० सी० में जो कुछ हो रहा है, उससे उन्हे अपनी लड़ाईके लिए बल मिला है। फिर भी, इसके बारेमें वे मेरी राय चाहते थे। मैने कहा कि मै आपके वहांकी हालत नहीं जानता, इसलिए कोई नियम तो नही बना सकता। न मुझे उन सब बातोंका अध्ययन करनेका समय है। लेकिन इतना तो मैं विश्वासके साथ कह सकता हूं कि सत्याग्रह दुनियामें सबसे बडी ताकत है, जिसके सामने आपका बताया हुआ विरोधी संगठन लंबे समय-तक टिक नही सकता।

आजकल हथियारबंद या दूसरी तरहके किसी भी विरोधको सत्याग्रहका नाम देना एक फैशन-सा हो गया है। इससे समाजको नुक-

मान होता है। इसलिए अगर आप लोग सत्याग्रहके पूरे अर्थको समझ लें और जान ले कि सत्य और प्रेमके रूपमें जीता-जागता भगवान् सत्याग्रहके साथ रहता है, तो आपको यह माननेमें कोई हिचकिचाहट नहीं होगी कि सत्याग्रहपर कोई विजय नही पा सकता। हिंदू-महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघके बारेमें मुझे जो कहना पड़ा है उसका मुझे दुःख है। मुझे अपनी गलती जानकर खुशी होगी। मैं राष्ट्रीय स्वयसेवक-संघके मुखियासे मिला हूं। मै इस संघकी एक बैठक मे भी शामिल हुआ था। तबसे मुझे उनकी बैठकमें जानेकेलिए डांटा जाता रहा है और मेरे पास राष्ट्रीय स्वयसेवक-संघके बारेमें शिकायतोंके कई खत आए हैं।

हालाकि हम सब अपने देशमे साप्रदायिक झगड़ोंकी आग को बुझानेमें लगे है, तो भी हमे हिंदुस्तानके बाहर रहनेवाले अपने भाइयोंको नहीं भूलना चाहिए। आप जानते है कि संयुक्त-राष्ट्र-संघके सामने हमारा हिंदुस्तानी प्रतिनिधि-मडल दक्षिण अफ्रीकाके हिंदुस्तानियोंके अधिकारोके लिए कितनी बहादुरी और एकतासे लड़ रहा है। आप सब श्रीमती विजयलक्ष्मी पडितको जानते है। वह हिंदुस्तानी नुमाइदा-मडलकी मुखिया इसलिए नही है कि पडित जवाहरलालकी बहन हैं, बल्कि इसलिए है कि वह इसके लायक है और अपना काम होशियारीसे करती है। उनके साथ बड़े अच्छे-अच्छे लोग है और वे सब एक रायसे वहा बोलते है। मुझे सबसे बडी खुशी जफरुल्ला साहब और इस्पहानी साहबके भाषणोंसे हुई, जो आजके अखबारोंमें छपे है। उन्होंने सयुक्त राष्ट्र-सघके लोगोके सामने साफ-साफ शब्दोंमे यह कह दिया कि दक्षिण अफ्रीकामें हिंदुस्तानियोंके साथ वही बरताव नही किया जाता जो गोरोंके साथ किया जाता है। वहा उनकी बेइज्जती की जाती है और उनके साथ अछूतोंकी तरह बरताव करके उनका बहिष्कार किया जाता है। यह सच है कि दक्षिण अफ्रीकाके हिंदुस्तानी कगाल और भूखे नही है। लेकिन आदमी सिर्फ रोटीसे ही नही जी सकता। मानव-अधिकारोंके सामने पैसा कोई चीज नही है। और ये हक दक्षिण अफ्रीकाकी सरकार हिंदुस्तानियोंको नही देती। हिंदुस्तानके हिंदू और

मुसलमान विदेशोंमे रहनेवाले हिंदुस्तानियोके सवालोंपर दो-राय नही है, जो यह साबित करता है कि दो-राष्ट्रोका उसूल गलत है। इससे मैंने जो सबक सीखा है, और आप लोगोको मेरे कहनेसे जो सबक सीखना चाहिए, वह यह है कि दुनियामे प्रेम सबसे ऊंची चीज है। अगर हिंदुस्तानके बाहर हिंदू और मुसलमान एक आवाजसे बोल सकते है, तो यहा भी वे जरूर कर सकते है, बशर्ते उनके दिलोंमे प्रेम हो। गलती इन्सानसे होती ही है। लेकिन वह चाहे तो अपनी गलतियोंको सुधार भी सकता है। यह भी इन्सानके स्वभावमे है। माफ करना और भूल जाना हमेशा सभव है। अगर आज हम ऐसा कर सके और बाहरकी तरह हिंदुस्तानमे भी एक आवाजसे बोल सके, तो हम आजकी मुसी-बतोंसे पार हो जाएंगे। जहातक दक्षिण अफ्रीकाका सबंध है, मुझे आशा है कि वहाकी सरकार और वहाके गोरे उस बातसे फायदा उठाएंगे जो इस मामलेमे मशहूर हिंदू और मुसलमान एक रायसे साफ-साफ कह रहे है।

: १५१ :

सोमवार, १७ नवबर, १९४७

(लिखित संदेश)

कल मै रामपुर और अपने उन भाइयोंके बारेमे बोला था जो दक्षिणी अफ्रीकामे है। मुझे लगता है कि आज मुझे इस विषयपर ज्यादा खुलकर कहना चाहिए। मैं १८९३ से १९१३ तक, २० साल दक्षिण अफ्रीकामे रहा हूं। उस लबे अर्सेमे, जब कि मेरा जीवन खुल रहा था, शायद एक ही साल छूटा होगा, मै हिंदुस्तानियोंके साथ ही गहरे संबधमे नही आया, बल्कि उन सफेद लोगोंके साथ भी जो कि इस बडे देशमे आकर बस गए है। तबसे अबतक अगर दक्षिण

अफ्रीका आगे बढ़ा है तो हिंदुस्तानने दिन दुगुनी और रात चौगुनी तरक्की की है। जो कल नामुमकिन मालूम होता था। वह आज हो गया है। इसके कारणोंमें जानेकी आवश्यकता नही। हकीकत यह है कि हिंदुस्तान बर्तानवी कामनवेल्थ (राष्ट्रसमूह) मे आ गया है, याने इसका दर्जा वही है जो दक्षिणी अफ्रीकाका। क्या एक उपनिवेशके लोगोंको दूसरे उपनिवेशमे गुलाम माना जाना चाहिए? एक एशियाई कौम बर्तानवी राष्ट्रसमूहके इतिहासमे पहली दफा सब सदस्योंकी मर्जीसे शामिल होती है। अब देखिए कि आगेजियाकी हकूमत या वहांके डाक्टर एस० पी० वर्नाडिने हिंदुस्तानके बर्तानवी राष्ट्रसमूहमे दाखलेके पांच दिन बाद डरबनकी नेटाल इंडियन कांग्रेसको क्या संदेश भेजा। उन्होंने लिखा—"क्योंकि आप नए उपनिवेशकी नई आजादी मना रहे है जो आपके नजदीक हिंदुस्तानके इतिहासमे एक बड़ा दिन है, इसलिए मैं आशा करता हूं कि दक्षिणी अफ्रीकाके सब हिंदुस्तानी अपने आप नए उपनिवेशमे चले जायगे और वहां जाकर उस संदेशका प्रचार करेंगे जो उन्हे दक्षिणी अफ्रीकामें दिया गया है, याने शांति और अनुशासनसे रहना और उन मजहबी झगडोंसे बचना जिनकी वजहसे आज हिंदुस्तानमें हजारो मारे जा रहे है।" यह बात खास देखनेकी है। साफ जाहिर है कि डाक्टर वर्नाडिको इसमें शक है कि यह दाखिला एक बड़ा दिन था और फिर वह नेटाल कांग्रेसको बिन-मांगी सलाह देते है कि दक्षिणी अफ्रीकाके हिंदुस्तानियोंको हिंदुस्तान चला जाना चाहिए और उस संदेशका प्रचार करना चाहिए जो उन्होने दक्षिणी अफ्रीकामें सीखा है, याने शांति और जब्तसे रहना और मजहबी दंगोंमें न पड़ना। मुझे बहुत डर है कि दक्षिणी अफ्रीकाका आम सफेद आदमी इसी तरह सोचता है, इसलिए हमारे देशवालोंके रास्तेमें तरह-तरह के अड़ंगे लगाए जाते है। उनका दोष यही है कि वे एशियाके है और उनका रंग काला है।

दक्षिणी अफ्रीकाके सबसे आला पश्चिमी लोगोंसे मैं प्रार्थना करता हूं कि वे अपने इस तास्सुब (पक्षपात) पर फिरसे सोचें जो उन्हे एशिया और काले रंगके बरखिलाफ बनाता है। उनके बीचमें हब्शियोंकी बहुत

बड़ी आबादी पड़ी है। कुछ लिहाजमें उनके साथ बर्ताव एशियावालोंके साथके बर्तावसे भी बदतर है। मैं उन यूरोपियनों से, जो वहां जाकर बस गए है, जोरसे कहूंगा कि वे जमानेको पहचाने। या तो यह तास्सुब हर लिहाजसे गलत है या अंग्रेजोंने और बर्तानियाके बड़े राष्ट्रसमूहके दूसरे सदस्योंने एशियाई कौमोंको सदस्य बनाकर ऐसी गलती की है, जो माफ नहीं की जा सकती। बर्मा आजाद होनेको है और लंका भी राष्ट्रसमूहका जल्द सदस्य बन जायगा। इसका मतलब क्या है ?

मुझे सिखाया जाता है कि राष्ट्रसमूहका सदस्य होना अगर आजादीसे ज्यादा अच्छा नहीं तो कम-से-कम उसके बराबर है। इन आजाद हकूमतोंके जिम्मेदार मर्द और औरतोंको इस बातपर खूब सोचना होगा कि आजादी लेनेके बाद वे क्या करेंगे। आज बहुत-सी आजाद हकूमतें बनानेका आंदोलन चल रहा है। यह ठीक और अच्छी चीज है, लेकिन क्या इसका अन्त यह होगा कि एक और लड़ाई होगी जो पिछली दो लड़ाइयोंसे, अगर मुमकिन हुआ तो, ज्यादा खतरनाक होगी, या इसका नतीजा यह होगा, जैसा कि होना चाहिए, कि मनुष्य-जातिका भाई-चारा बढ़ेगा ? एक उपनिषदका श्लोक है—"मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है।" सयाने आदमियोंका तजर्बा इसकी सचाईकी गवाही देता है। इस तरह दुनिया वैसी ही बनेगी जैसी कि उसके सयाने आदमी सोचते है। एक फालतू विचार कोई विचार नहीं होता। अगर हम ऐसा कहे कि दुनिया मूढ जनताकी चाहके मुताबिक बनेगी तो बड़ी भूल होगी। वह कभी सोच नहीं सकती—वह तो भीड़की तरह पीछे ही चलती है। आजादीका मतलब होना चाहिए लोक-राज। लोक-राजका अर्थ है कि हर शख्सको वृद्धि पानेका मौका मिले। बुद्धिका अर्थ केवल जानकारीसे अलग है। दक्षिण अफ्रीकामें जैसे योग्य सिपाही है वैसे ही अच्छे किसान भी है। उसी तरह वहां बहुतसे बुद्धिमान स्त्री और पुरुष भी हैं। अगर वे लोग अपने खा जानेवाले वातावरणसे ऊंचे न उठें और अगर उन्होंने इस समस्यापर कि सफेद लोग सबसे ऊंचे है अपने देशको ठीक रास्ता

नही दिखाया तो दुनियाके लिए बड़े दु खकी बात होगी । क्या यह खेल खेलते-खेलते लोग थक नही गए ? ।

मै आपको थोड़ी देर और रोकूगा, ताकि कट्रोलके बारेमे आपसे कहूं जिसपर आज खूब बहस हो रही है। क्या उन पडितोंके शोरमें, जो दावा करते हैं कि कंट्रोलके फायदोके बारेमे वे सब कुछ जानते है, जनताकी आवाज़की कोई सुनवाई नही होनी चाहिए ? कितना अच्छा हो कि हमारे मत्री जो कि जनतामेसे चुने गए है और जनताके है, जनताकी आवाज सुने, बजाय उन दफ्तरी घिस-घिसके माहिरोंकी जिनके बारेमे वे खूब जानते है कि उन्होंने सिविल नाफरमानीके वक्त उन्हे खूब नुकसान पहुचाया था । तब इन पडितोने पूरी कड़ाईसे हकूमत की। क्या आज भी उन्हे ऐसा ही करना चाहिए ? क्या लोगोंको कोई मौका नही दिया जायगा कि वे अपनी गलतियोंसे सीखें ? क्या मंत्री यह नहीं जानते कि उन नमूनोमेसे जो मै नीचे दे रहा हूं (इतना ध्यान रहे कि उनमें सब कट्रोलमे आ जाते है) अगर किसी एक उदाहरणमें कंट्रोल हटानेसे जनताको नुकसान पहुचे तो वे इतनी ताकत रखते है कि उसपर फिरसे कंट्रोल लगा दें ?

कट्रोलोंकी जो फेहरिस्त मेरे सामने है उससे मेरे-जैसा सादा आदमी तो हैरान हो जाता है। मैं तो केवल इतना ही कहता हूं कि अगर कंट्रोलोंके साइन्स नामकी कोई चीज है तो उसको ठंडे दिलसे जांचना होगा। इसके बाद लोगोंको इस बातकी तालीम देनी होगी कि सब चीजोंपर कट्रोलका क्या मतलब है और खास-खास चीजोंपर कट्रोलका क्या अर्थ है। जो फेहरिस्त मुझे मिली है उनमेंसे ऐसे ही कुछ नमूने निकालकर नीचे देता हूं—एक्सचेंजपर, रुपया लगानेपर, केपिटल, इंश्योरेंस, बैंकोंकी शाखाएं खोलनेपर, इंश्योरेंसमें पैसा लगानेपर, मुल्कसे बाहर जाने और अदर आनेवाली हर किस्मकी चीजोंपर, अनाजपर, चीनीपर, गुड, गन्ने और शर्बतपर, वनस्पतिपर,. पेट्रोल और मिट्टीके तेलपर, सीमेंटपर, फौलादपर, अभ्रकपर, कोयलेपर, चीजोंके इधर-उधर ढोनेपर, मशीनरी लगाने और फैक्टरी खोलनेपर, कुछ सूबोंमें मोटरें बेचनेपर, चायकी खेतीपर,

कपड़ेपर, जिनमें गरम कपडे भी शामिल हैं, पावरपर, अल्कोहलपर, कागजपर।

: १५२ :

१८ नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोगोंने तो वे सब प्रस्ताव पढ़े ही होंगे जो अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटीमें पास हो गए हैं। उनमें काफी प्रस्ताव तो ऐसे है जो हमारे जीवनमें—और जीवनके बडे हिस्सेमे, ऐसा कहो—हर एक आदमीके कामके है। वे ऐसे नहीं है जिनपर सिर्फ हकूमतको अमल करना है। उनपर जवाहरलाल, राजेद्रप्रसाद—अब तो राजेंद्रबाबू निकल गए—और दूसरोंको भी अमल करना है; जैसे कि कंट्रोल। खानेपर, पहननेपर, हर चीजपर जिनपर कंट्रोल है उन्हे अमल करना है। ऐसे ही हमको भी करना है। अगर हम दगाबाजी करें और कानूनकी पाबंदी न करें तो इसका नतीजा खतरनाक होगा। जब हम एक गज कपड़ेसे काम चला सकते हैं तो क्यों दस गज जमा कर रखें और सोचें कि ले तो लें, घरमें पड़ा ही रहेगा? जब हम ऐसे बन जायगे कि हम अपना ही देखें और हिंदुस्तानके न हों तो हम बदमाश हो जायंगे।

अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटीके अभीके प्रस्ताव ऐसे है कि मैं चाहता था कि एक-एक प्रस्ताव सबको समझाऊं। अभी तो यहीं हूं, मौका मिल गया तो सुना दूगा। लेकिन उनका क्या मतलब है यह तो आज कह दूं। जो लोग डरके मारे घर छोड़कर दूसरी जगह चले गए हैं उनको फिर उनके घरोंमें बसानेका जो प्रस्ताव है वह हर एक आदमी पर लागू होता है। हम कन्याकुमारीसे लेकर काश्मीर तक जितने रहनेवाले हैं वे सब हिंदुस्तानके हैं। हिंदुस्तानके दो टुकड़े हो गए तो क्या, हम सब भाई-भाई हैं, इसलिए हम सबपर

जिम्मेदारी आ जाती है। अगर एक ही आदमी अपना पेट भरता जाता है और गरीबोंकी परवाह नहीं करता है, चाहे वह स्वादके लिए ही खाता हो, तो वह चोरी करता है और हिंदुस्तानका गुनहगार बन जाता है। हिंदुस्तानको जितना अनाज चाहिए उतना उसके पास नहीं है तो क्या हुआ? गरीबोंको भी तो अनाज मिलना ही चाहिए। धनी लोगोंको अगर एक, दो, चार व छः छटांक मिले और तो भी वे उसीसे ही गुजर करें तब तो मैं समझूंगा कि धनी और गरीब सब एक हो गए। दूसरोंको छोडकर मै जिस धनीके घर पड़ा हूं उसकी बात तो कहूं। आप मुझसे पूछें कि घनश्यामदासको उनका जितना हिस्सा मिलता है, क्या उतनेसे ही उनका गुजर हो जाता है तो मैं कहूंगा कि नही होता। आखिर मुझे सच्ची बात तो कहना ही है। वह धनवान है तो उन्हें हर तरहसे सब मिल जाता है। मुझको पता नही चलता कि जितने लोग यहा आते हैं उन्हे दूध मिलता है या नहीं। मुझको दूध मिल जाता है, वह कहासे आता है, कैसे आता है यह मैं थोड़े देखता हूं। एक बकरी रखो, दो बकरी रखो; वह महात्मा है न, तो उसे दूध दो, जितना गेहूं चाहिए उतना अच्छे से-अच्छा गेहूं दो; क्योंकि वह महात्मा है न! मै यह थोड़े पूछता हूं कि यह कहासे आता है—महात्माको भाजी चाहिए तो भाजी दो, फल चाहिए तो फल दो। कार्य-समितिके जितने सदस्य आते हैं उनको कुछ ता देना ही है तो फलका रस दो। करोड़ों की जायदाद लेकर बैठे हैं। ये तो धनी लोगोंके हाल है। यह सब करोडपतियोंको मिल सकता है। लेकिन तब भी वे भूखे रहे तभी तो कुछ हो सकता है, नही तो गरीब कहांसे लाएं? धनी लोग तथा जो तिजारत करते हैं वे अनुचित मुनाफा न लें और सच्चे व्यापारी बनें। वे मुनाफा लें; लेकिन कितना? जितना पेट भरनेको चाहिए उतना ही लें। अगर सब एक ही तरह मुनाफा लें तो फिर क्या! अनाजपर कंट्रोल क्या? कोई कंट्रोल नही चाहिए। इसी तरहसे सब हो जायं तो अच्छा है।

आला दर्जेकी चीज यह है कि हम तबतक शांतिसे नही बैठ सकते जबतक सब शरणार्थी अपने-अपने घर नही लौट जाते। मुसलमान

आया तो उसको काट डाले ; वह पाकिस्तानसे डरके मारे जायदाद छोडकर भागकर आया है, इसलिए यहासे उसे हटा दे, ऐसा करना पागलपन है। अब तो अखिल भारतीय काग्रेस-कमेटीने हुक्म दिया है और जो भाई जहा पड़े है धनको वही रखना है और आरामसे रखना है और जो लोग खुशीसे घर लौटना चाहते है उन्हे लौटाना है। और लोग खूबसूरत घर छोडकर आ गए, लखपति, करोड़पति सैकड़ों हजारो थे वे घरबार छोड़कर आ गए, लेकिन जो बेचारे गरीब थे वे तो अब भी पड़े है। मै आज तो सब सुनाना नही चाहता ; लेकिन हमारा फर्ज क्या है, वह हमारा प्रस्ताव बताता है। वही आलां दर्जेकी चीज है। वे जो मुसलमान रहते हैं वे निकम्मे है, ऐसा मानकर बैठे तो वह बडा गुनाह हो जाता है। यह सबका परमधर्म हो जाता है कि हम किसीको न निकाले। तीन-चार दिन पहले कार्य-समितिका प्रस्ताव भी लोगोने देखा और अखबारोंमे जो इशारा आया था उसे भी देखा। तो भी मुसलमान जा रहे है। लोग कहते है कि तुमने जोर दिया तो काग्रेस महासमितिने उसे मान लिया। उन्हे – मुसलमानोंको —तो यहासे चला ही जाना चाहिए, नही तो वे मारे जाएगे। लोग पूछते है कि क्या तुम उन्हे मरने दोगे ? मै क्या करूंगा, यह तो मैने बता दिया है ; मै करूंगा या मरूंगा। जब मैं मरने को तैयार हूं तो अगर मुसलमानोंको मरना पडे तो वे भी मरे। वे जाड़ेके दिनोंमे ३०० मील चलकर जाएं हम ऐसे निष्ठुर बन गए है ! लोग कहते है कि कैंपोंमे ज्यादा आदमी नही मरते है – रोज दस-बीस मरते है। अब अगर मानो कि पांच हजार, दस हजार, पचास हजारमें इतने मरें तो इस हिसाबसे हिदुस्तानमे कितने मरते है, क्या इसकी परवाह नही कि वे कैसे करते है ? किसीको खाना नही मिलता, किसीको हैजा हो जाता है, किसीको पेचिश हो जाती है, किसीको कुछ हो जाता है, इस तरहसे वे मरते है। लेकिन क्यों मरते है, क्या इसकी किसीको परवाह है ? हम परवाह करते है कि हमारे लिए खाना है कि नहीं और सब कुछ है कि नही। हम देखते रहते है कि जहांसे मुसलमान भाग गया वहा हिंदू और सिखको बसाना है। हां, हर जगह

तो ऐसा हुआ नही, तो भी हुआ तो है। इससे मुझको बहुत दु:ख पहुचा और मैने कई बार आप लोगोंको बताया भी है। अब तो कांग्रेस महासमितिने भी कह दिया कि ऐसा जो हुआ है वह बहुत बुरा हुआ। यह बात करोडोंतक पहुचाना है तो यह एक दिनमे तो हो नहीं सकता। हुकूमतमे बड़े-बडे पडे है—जवाहर, सरदार, राजेंद्रबाबू, लेकिन अब तो राजेंद्रबाबू नही रहे - उनको क्या नाखुश करना! इसलिए कह दिया कि हॉ, करेंगे। मैने सुना है कि अब तो कांग्रेसमैन भी ऐसे ही बन गए हैं कि वे समझते है कि यहा अब मुसलमानोंको रहना ही नही चाहिए। वे समझते है कि तभी हिंदू-धर्मका भला हो सकता है, हिंदू-धर्म ऊचा जा सकता है। लेकिन वे जानते नही हैं कि दिन-ब-दिन हिंदू-धर्म नीचे जा रहा है। अगर वे दिलको नही बदलते तो यह बहुत खतरनाक बात है। कांग्रेस-कमेटीमे जितने प्रतिनिधि आए है वे सारे हिंदुस्तानके प्रतिनिधि है। वे अगर सब एक ही दिलके हैं, और होना चाहिए, तो हिंदुस्तानकी शक्ल बदल जाएगी। उनका यह धर्म हो जाता है कि वे दूसरा होने ही नही देगे। हिंदुस्तानमें जितने चले गए है, उनको किस तरह लाय यही उनका बडा काम है। हम तबतक परेशान रहेंगे जबतक हिंदुस्तानसे जितने मुसलमान गए है उन्हे यहा ले न आए। ऐसा वातावरण पैदा करना है और यह मुश्किल काम नही है। यह तो खूबीकी बात है कि यहा अभी ३॥ करोड़ मुसलमान है—कोई जानता नही है कि कितने गए और कितने आनेवाले है। मानलो कि जितने गए है वे सब आ गए तो वे अपने घर-मे रहे, उनका घर पडा है, उसमे हमको कोई खर्च तो करना नही पड़ेगा। उनका जो घर है वह हम दे दें, इतना ही हमारा काम है। लेकिन सब घर खाली कहा है? उनमे तो शरणार्थी घुस गए है। तो भी उनको बसाना तो होगा ही। अगर हम ऊटपटांग बातें कर लेते हैं, लेकिन दिल साफ नही रखते तो बाहरवाले कहेगे कि जो हिंदुस्तानके नुमाइंदे आए थे वे क्या ऐसे खोटे थे? मै समझता हूं कि वे ऐसे नही है। वे दिन चले गए जब हम गुस्सा रखते थे कि वे चले जाएं। आज हम सबको भाई-भाई समझते है।

मैं समझ लूं कि दिल्लीके लोग अच्छे हो गए है, गुड़गावके लोग अच्छे हो गए हैं। मै हालहीमे जब पानीपत गया था तब वहां सब ठीक रहते थे, लेकिन अब सुनता हूं कि वहा जो शरणार्थी आए है वे मुसलमानोंके घरमे चले गए है और अब मुसलमान पाकिस्तान जाना चाहते है। वे कह सकते हैं कि हम खुशीसे पाकिस्तान तो जाना नही चाहते, क्योंकि वहा खीर या पकवान तो पडा नहीं है पहननेको अच्छा कपडा भी नही है और यह हो भी कैसे सकता है, जैसे हम यहां है वैसे वे वहा है। और आखिर वहा बहुत इतजाम है और यहा नही, ऐसी बात तो है नही। वहा जो गए हैं वे लिखते है कि अगर हम हिंदुस्तानमें रहते तो अच्छा था। अब घरबार छोड़ दिया—कैंपोंमे पड़े है, बडे परेशान है। ऐसा तो होगा ही। तो फिर क्या वजह है कि पानीपतके मुसलमान पाकिस्तान जाना चाहते है? अगर ऐसी बात है तो पानीपत मेरे लिए कसौटी बन जाती है और मुझे भी शायद वहा जाना पड जाय। वह यहासे ५० मील दूरीपर तो है। वह दूर नही कहा जा सकता, वह दिल्ली ही-जैसा है। अब अगर वहाके एक भी मुसलमानको पाकिस्तान जाना पड़ेगा तो मुझे चुभेगा और आपको भी चुभेगा। हा, जब वे रहते है तो उन्हे जो पैसा मिलता है उसका खाना भी मिलना चाहिए। वे मेहनती हैं—कमाते है और खाते है। अगर पैसे दे दें और खाना न मिले तब फिर कैसे रहेगे? अगर ऐसे कारीगरको जो भाई-भाई बनकर रहते हैं, जाना पडे, क्योकि वहां पंजाबसे दूसरे भाई आ गए हैं, तो इससे और खराब चीज कोई हो ही नहीं सकती। पानीपतमें जितने शरणार्थी पडे है उनसे मै कहूंगा कि वे मुसलमानोंका घर छोड दें और मुसलमान भी कहें कि हम रहेगे—हिफाजतके लिए हमें पुलिसकी जरूरत नही है, हम आपसमें रहेगे। पुलिसका यही काम रहे कि जितना अनाज आए उसे सबको दें, कपड़ा सबको दें, इससे ज्यादा काम करनेकी जरूरत नही। तब मैं कहूंगा कि कांग्रेस महासमितिने जो किया है वह अच्छा किया है और हम भी उसके साथ है। हम सब चाहे चार आनेके सदस्य हों या नही, कांग्रेसका अदब करते हैं। इतने दिनोंतक जिस

संस्थाने देशकी सेवा की है तो आज भी, जब कि खिलाफ वातावरणमें जान-बूझकर जो चीज वह कह रही है उसकी ताईद करें और अमलमें लाएं ? बस, आज मैं इतना ही कहूंगा।

: १५३ :

१९ नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

कल शामको मैंने हिंदू-मुस्लिम-संबंधोंके बारेमें पास किये गए ए० आई० सी० सी० के खास ठहरावका जिक्र किया था। लेकिन आज ही मुझे मिसाल देकर आपसे यह कहना पड़ता है कि दिल्लीमें उस ठहरावको कैसे बेकार बनाया जा रहा है। मुझे इस बातकी कल्पना भी नहीं थी कि जिस शामको मैं जनताके बरतावके बारेमें अपना शक जाहिर कर रहा हूं, उसी शामको पुरानी दिल्लीके केन्द्रमें उसे सच साबित करके दिखाया जायगा। कल रात मुझसे कहा गया कि चांदनी चौककी एक मुसलमानकी दुकानके सामने हिंदुओं और सिखोंकी बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई थी। वह दुकान थी तो मुसलमानकी लेकिन उसका मालिक उसे छोड़कर चला गया था। वह इस शर्तपर एक निराश्रितको दी गई थी कि मालिकके लौट आनेपर उसे दुकान छोड़ देनी होगी। खुशीकी बात है कि दुकानका मालिक लौट आया। वह हमेशाके लिए अपना व्यापार नहीं छोड़ना चाहता था। जिस अफसरके हाथमें यह काम था, वह दुकानमें रहनेवाले निराश्रितके पास गया और उसे असल मालिकके लिए दुकान खाली कर देनेको कहा। पहले तो वह निराश्रित कुछ हिचकिचाया, लेकिन बादमें उसने कहा कि आप जब शामको दुकानका कब्जा लेनेके लिए आएंगे, तो मैं जरूर खाली कर दूंगा। अफसर जब शामको दुकान-पर लौटा, तो उसे पता चला कि वहां रहनेवाले निराश्रितने दुकानका

कब्जा उसके मालिकको सौंपने के बजाय अपने साथियों और दोस्तोंको इस बातकी सूचना कर दी, जो, कहा जाता है कि वहां धमकी दिखानेके लिए इकट्ठे हो गए थे। चादनी चौकके थोड़ेसे पुलिसवाले उस भीडको काबूमें न रख सके। इसलिए उन्होंने ज्यादा मदद बुलाई। पुलिस या फौजके सिपाही आए और उन्होंने हवामें गोली चलाई। डरी हुई भीड बिखर तो गई, लेकिन साथ ही एक राहगीरको छुरेसे घायल भी करती गई। तकदीरसे वह घाव जानलेवा साबित न हुआ। लेकिन फिसादी लोगोंके प्रदर्शनका अजीब नतीजा हुआ! वह दुकान खाली नहीं की गई। मैं नही जानता कि आखिरमें उस अफसरके आदेशको ठुकरा दिया गया या इस वक्ततक वह दुकान खाली कर दी गई है। फिर भी, मुझे आशा है कि हिंदुस्तानको जो बहुमूल्य आजादी मिली है, उसमें अगर सरकारी सत्ताको सच्ची सत्ता बने रहना है, तो वह अपराधीको अपराधकी सजा दिये बिना न रहेगी। वर्ना सरकारकी सत्ता सत्ता ही न रह जायगी। मुझसे कहा गया है कि हिंदुओं और सिखोंकी वह भीड़ दो हजारसे कम न रही होगी।

यह खबर जिस तरह मुझे मिली, उसे कुछ कम करके ही मैंने सुनाया है। अगर फिर भी उसमें सुधारकी कोई गुंजाइश हुई और वह मेरे ध्यानमें लाई गई, तो मैं खुशीसे आपको बता दूंगा।

यही सब कुछ नहीं है। दिल्लीके दूसरे हिस्सेमें मुसलमानोंको अपने घरोंसे जबरन निकालनेकी कोशिश की जा रही है, ताकि वहां हिंदू और सिख निराश्रितोंको जगह दी जा सके। इसका तरीका यह है कि सिख लोग अपनी तलवारें म्यानसे निकालकर घुमाते हैं और मुसलमानोंको अपने घर न छोडनेपर भयानक बदला लेनेकी धमकी देकर डराते है। मुझसे यह भी कहा गया है कि सिख शराब पीते है, जिसके नतीजोंका आसानीसे अंदाजा लगाया जा सकता है। वह नंगी तलवारें लेकर नाचते है, जिससे रास्ता चलनेवाले लोग डर जाते है। मुझसे यह भी कहा गया है कि चांदनी चौकमें और उसके आसपास यह रिवाज है कि मुसलमान कबाब या गोश्तकी बनी दूसरी खानेकी चीजें नही बेचते, लेकिन सिख और शायद दूसरे निराश्रित भी बंद की

हुई ये चीजें वहां आजादीसे बेचते हैं। इससे उस मुहल्लेके हिंदुओंको बड़ा दुःख होता है। यह बुराई यहांतक बढ़ गई है कि लोगोंको चांदनी चौकमें खड़ी भीड़में निकलना मुश्किल मालूम होता है। उन्हें डर लगता है कि कहीं उनके साथ बुरा या असभ्य बरताव न किया जाय। मैं अपने निराश्रित दोस्तोंसे अपील करता हूं कि वे अपने खातिर और अपने देशके खातिर इस तरहकी बातें न करें।

कृपाणोंके बारेमें थोड़े समयके लिए यह कानून बना दिया गया है कि सिख एक खास नापसे बड़ी कृपाण नहीं रख सकते। इस पाबंदीके दरमियान बहुतसे सिख दोस्त मेरे पास आते हैं और मुझसे कहते हैं कि मैं अपना असर डालकर एक खास नापसे बड़ी कृपाण रखनेपर लगाई पाबंदीको हटाने की कोशिश करूं। उन्होंने कुछ साल पहले दिया हुआ, प्रिवी कौंसिलका यह फैसला मुझे कह सुनाया जिसमें कहा गया है कि कोई सिख किसी भी नापकी कृपाण अपने साथ रख सकता है। मैंने वह फैसला नहीं पढ़ा है। मैं समझता हूं कि जजोंने कृपाणका अर्थ किसी भी नापकी 'तलवार' लगाया है। उस समयकी पंजाब-सरकारने प्रिवी कौंसिलके फैसलेपर अमल करनेके लिए यह ऐलान किया कि हर आदमी तलवार रख सकता है। इसलिए पंजाबमें कोई भी आदमी किसी भी नापकी तलवार रख सकता है।

मुझे पंजाब सरकार या सिखोंकी इस बातसे कोई हमदर्दी नहीं है। कुछ सिख दोस्तोंने मेरे सामने ग्रंथ साहबके ऐसे हिस्से पेश किये हैं, जो मेरी इस रायका समर्थन करते हैं कि कृपाण बेगुनाहों पर हमला करने या किसी भी तरह इस्तेमाल करनेका हथियार नहीं है। सिर्फ ग्रंथ साहबके आदेशोंको मानने वाले सिख ही बिरले मौकोंपर बेगुनाह औरतों, मासूम बच्चों, बूढ़े और दूसरे असहाय लोगोंकी रक्षाके लिए कृपाणका उपयोग कर सकता है। इसी कारणसे एक सिख सवा लाख विरोधियोंके बराबर माना जाता है। इसलिए जो सिख नशा करता है, जुआ खेलता है और दूसरी बुराइयोंका शिकार है, उसे पवित्रता और संयमका धार्मिक प्रतीक कृपाणको रखनेका कोई हक

नही है, जो सिर्फ बताए हुए ढंग और मौकोंपर ही काममें लाई जा सकती है।

मेरी रायमे कृपाणके मनमाने उपयोगको सही साबित करनेके लिए प्रिवी कौसिलके गए-गुजरे फैसलोकी मदद चाहना बेकार और नुकसान-देह भी है। हम हालमे ही गुलामीके बंधनमे छूटे है। आजादीकी हालतमें सारी अच्छी पाबदियोंको तोडना बिल्कुल गैर मुनासिब है। क्योंकि उनके बिना समाज आगे नही बढ सकता। इसलिए मै अपने सिख दोस्तोंसे कहूगा कि वे किसी भी ऐसे काममे, जिसके सही और मुनासिब होनेमें शक हो, कृपाणका उपयोग करके महान् सिख-पथके नामपर धब्बा न लगावें। जिस पंथको ऐसे कई शहीदोने, जिनकी बहादुरीपर सारी दुनियाको गर्व है, बनाया उसे वे मिटा न दे।

मै एक दूसरी बातकी तरफ आपका ध्यान खीचना चाहता हूं। मुझे एक छावनीकी कहानी सुनाई गई, जिसमें फौजपर असभ्य बरतावका इलजाम लगाया गया है। छावनीका सारा जीवन भीतरी और बाहरी शुद्धता और सफाईका नमूना होना चाहिए। इसकी रक्षाके लिए दोनोंको एक-दूसरेसे बढकर कोशिश करनी चाहिए। इसलिए मुझे आशा है कि जो सूचना मुझे दी गई है, वह कानून और व्यवस्थाके इन रक्षकोंपर आम तौरपर लागू नही की जा सकती—वह एक अपवाद ही है। फौज और पुलिसको सचमुच सबसे पहली आजादीकी चमक और उत्साह महसूस करना चाहिए। उनके बारेमे लोगोको यह कहनेका मौका न मिले कि ऊपरसे लदे हुए भयानक संयम और पाबंदियोंमे ही उनसे अच्छा बरताव कराया जा सकता है। उन्हे अपने सही बरतावसे यह साबित कर देना है कि वे भी दूसरोकी तरह हिंदुस्तानके योग्य और आदर्श नागरिक हो सकते है। अगर ये कानूनके रक्षक ही कानूनको ठुकराएगे, तब तो राज चलाना भी नामुमकिन हो सकता है। और अखिल भारत-कांग्रेस-कमेटीके ठहरावोको ठीक तरहसे अमलमे लाना सबसे ज्यादा मुश्किल हो जायगा।

तस्वीरका धुधला पहलू बतानेके बाद अब मै आप लोगोंको उसका चमकीला पहलू भी खुशीसे बताऊंगा। मुझे आदर्श बहादुरी-

की एक आंखोंदेखी कहानीका जो वर्णन मिला है, वह मैं आपको सुनाता हूं।

"मीर मकबूल शेरवानी बारामूलामें नेशनल कान्फरेंसका एक नौजवान बहादुर नेता था। उसने अभी तीसवें बरसमें प्रवेश ही किया था।

"यह जानकर कि वह नेशनल कान्फरेंसका बडा नेता है, हमलावरोंने उसे निशात टाकीजके पास दो खंभोंसे बांध दिया। पहले उन्होंने उसे पीटा और बादमें कहा कि वह नेशनल कान्फरेंस और उसके नेता शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्लाको छोड़ दे। उन्होंने शेरवानीसे कहा कि वह आजाद काश्मीरकी आरजी हकूमतकी, जिसका हेडक्वार्टर पालंद्री में है, वफादारी की सौगंध ले।

"शेरवानीने मजबूरीमें नेशनल कान्फरेंसको छोडनेसे इन्कार कर दिया। हमलावरोंसे साफ कह दिया कि शेरे काश्मीर अब राजके प्रधान मंत्री है। हिंदुस्तानी संघकी फौज काश्मीरमें आ पहुंची है और वह थोड़े ही दिनोंमें हमलावरोंको काश्मीरसे निकाल बाहर करेगी।

"यह सुनकर हमलावर गुस्सा हुए और डर गए। और उन्होंने १४ गोलियोंसे उनका शरीर छलनी बना डाला। उन्होंने उसकी नाक काट ली, उसके चेहरेको बिगाड दिया, और उसके शरीर पर एक इश्तहार लगा दिया, जिसपर लिखा था—'यह गद्दार है। इसका नाम शेरवानी है। सारे गद्दारोंका यही हाल किया जायगा।'

"मगर इस बेरहमीभरे खून और आतंकके बाद ४८ घंटोंके भीतर ही शेरवानीकी भविष्यवाणी सच साबित हुई। हमलावर घबड़ाकर बारामूलासे भागे और हिंदुस्तानी फौजने जोरोंसे उनका पीछा किया।"

यह ऐसी शहादत है जिसपर कोई भी अभिमान कर सकता है, फिर वह हिंदू, सिख, मुसलमान या दूसरा कोई भी क्यों न हो।

एक दोस्तने मुझे फख्रकी एक ऐसी मिसाल सुनाई है, जिसका तेज दुखदायी परिस्थितियोंमें भी कम नहीं होता, और दोस्तीका ऐसा उदाहरण बताया है, जो कड़े-से-कड़े वक्तमें भी खरी उतरती है। यह नारायणसिंह नामके एक पुराने अफसरकी कहानी है। उन्होंने पच्छिमी

पंजाबमे अपनी बहुत बड़ी मिल्कियत खो दी है। अब वह दिल्लीमे हैं। उनके पास कुछ भी नहीं बचा है। इसलिए या तो उन्हें अब भीख मांगनेपर लाचार होना पड़े या मौतका शिकार होना पड़े। वह अपने एक पुराने दोस्तसे मिले, जिसे वह अपने साथ दुःखी नही होने देना चाहते थे, क्योंकि अपनेपर आए हुए दुर्भाग्यकी उन्हे बिलकुल परवाह नही थी। वह सिख अफसर अपने दोस्त और साथी अफसर अलीशाहसे मिलकर बेहद खुश हुए। अलीशाह भी अपना सब कुछ खो बैठे है। वे फिरकेवाराना पागलपनकी वजहसे नही, बल्कि किसी और कारणसे बद-किस्मतीके शिकार हुए है। वह भी नारायणसिहकी तरह ही बहादुर है, और दोनोको एक-दूसरेकी दोस्तीका अभिमान है। वे दोनों अपनी पच्चीस सालकी जुदाईके बाद जब मिले, तो इतने खुश हुए कि अपने दुर्भाग्यको भूल गए।

: १५४ :

२० नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझे एक ही शख्सकी तरफसे दो चिटें मिली है, जिनमेसे एकमें लिखनेवाले भाईने कहा है कि उन्होंने अपनी नौकरी छोड दी है और वे मेरे मातहत काम करना चाहते है। दूसरी चिटमे उन्होंने प्रार्थनामें एक भजन गानेकी अपनी इच्छा जाहिर की है। उनकी पहली इच्छाके बारेमे मुझे कहना पडता है कि उन्होंने अपनी नौकरी छोड़कर गलती की है। यह सच है कि अंग्रेजी हकूमतके दिनोंमें मैने लोगोको सरकारसे असह-योग करनेकी सलाह दी थी, मगर अब ऐसी बात नही है। अगर कोई आदमी चाहे, तो वह अपनी रोजी कमानेके लिए कहीपर नौकरी करते हुए भी अपने देशकी सेवा कर सकता है। हर रोजी कमानेवाला शख्स, अगर वह ईमानदारीसे और किसी भी किस्मकी हिंसा किये बगैर ऐसा

करता है, देशसेवा ही करता है। लेखकको यह भी महसूस करना चाहिए कि मेरे पास उनके लिए कुछ काम नही है। अगर वे कुछ सेवा करना चाहते हैं, तो उन्हें उस गोशालामें अपनी सेवाएं देनी चाहिए जिसका मै अभी जिक्र करूंगा।

प्रार्थनामे भजन गानेके बारेमे तो यह है कि हर किसीको उसमें गाने नही दिया जा सकता। सिर्फ वे ही लोग पहलेसे इजाजत लेकर गा सकते है, जो भगवान्के सेवक कहे जाते हैं।

(इसके बाद गांधीजीने सुचेतादेवी और उनके साथी कार्यकर्त्ताओंके साथ किये गए ओखला छावनीके अपने मुआइनेका जिक्र किया। उन्होंने कहा—)

उस छावनीकी तारीफके लायक सफाईको देखकर मुझे खुशी हुई। वहांपर जगह-जगह यात्रियोंके लिए धर्मशालाएं बनी है, जो मेलोंके वक्त वहां आते है। वे मेले निश्चित समयके बाद वहां भरते रहते है। ये धर्मशालाएं अब निराश्रितोंके काममें लाई जाती है। वहां पानीकी कुछ दिक्कत है, जिसे अधिकारी लोग दूर करनेकी कोशिश कर रहे है। इसमे मुझे कोई शक नही कि आज वहां जितने निराश्रित है उनसे कही ज्यादा निराश्रितोंको, अगर पानी पुरानेकी गारटी दी जा सके, उस जगहमें आसरा दिया जा सकता है।

जब मै निराश्रितोके बारेमें बोल रहा हूं, तब कुछ ऐसे दोषोंके बारेमे उनका ध्यान खीचना चाहूंगा जो मुझे बताए गए है। मुझसे यह कहा गया है कि निराश्रितोंमे आपसमें ही काला बाजार चल रहा है। जिन अफसरोंके जिम्मे निराश्रितोंकी देखभालका काम है, वे भी दोषी बताए जाते हैं। मुझसे कहा गया है कि जिन अफसरोंके हाथमें छावनियोंका इंतजाम है, उन्हें घूस दिये बिना वहां जगह पाना मुमकिन नही है। दूसरी तरहसे भी उनका बरताव दोषसे परे नहीं माना जाता। यह ठीक है कि सभी अफसर दोषी नही हो सकते, लेकिन एक पापी सारी नावको डुबो देता है।

इसके बाद मुझसे कहा गया है कि निराश्रित लोग छोटी-मोटी चोरियां भी करते हैं। मैं उनसे पूरी ईमानदारी और खरे बरतावकी

आशा रखता हूं। मुझे यह रिपोर्ट दी गई है कि निराश्रितोंको जाड़ेसे बचनेके लिए जो रजाइयां दी जाती है, उनमेंसे कुछ चीर दी जाती है, उनकी रूई फेंक दी जाती है और छीटके कमीज वगैरा बना लिये जाते हैं। मुझे इसी तरहकी दूसरी बहुत-सी बातें बताई गई है, लेकिन मैं निराश्रितोंके सारे बुरे कामोंका वर्णन करके आपका वक्त नही बरबाद करना चाहता। मैं आज शामके विषयपर जल्दी ही आना चाहता हूं।

दिल्लीकी किशनगज नामकी बस्तीमे एक गोशालाका सालाना जलसा हो रहा है। कल आचार्य कृपलानी उस जलसेके सभापति बनने-वाले हैं और मुझपर यह जोर डाला गया है कि मै कम-से-कम १० मिनटके लिए तो भी जलसेमें जाऊं। मुझे लगा कि मुझे किसी जलसे या उत्सवमे सिर्फ शोभा के लिए नहीं जाना चाहिए। १० मिनटमे न तो वहां मैं कुछ कर सकता हूं और न देख सकता हूं। और, मै सांप्रदायिक सवालोंमे ही इतना उलझा रहता हूं कि मुझे दूसरी बातोंकी तरफ ध्यान देनेका समय नही मिलता। इसलिए मैंने अपनी मजबूरी जाहिर की। जलसेका इंतजाम करनेवाले लोगोंने मेरी लाचारीको महसूस करके मुझे माफ कर दिया और कहा कि अगर आप गोसेवाके बारेमें—खासकर गोशालाओके बारेमें—अपनी बात प्रार्थना-सभामें कह देगे, तो हमे संतोष हो जायगा। मैने उनकी यह बात खुशीसे मान ली। मै साफ शब्दोंमें यह कह चुका हूं कि हिंदुस्तानके पशु-धनको सभालने व बढ़ानेका काम और गाय और उसकी संतानके साथ उचित बरताव करनेका काम सियासी आजादी लेनेके कामसे कही ज्यादा कठिन है। मैं इस मामलेमें श्रद्धा और लगनसे काम करनेका दावा करता हूं। मेरा यह भी दावा है कि मुझे इस बात-का सच्चा ज्ञान है कि गाय कैसे बचाई जा सकती है। लेकिन मै यह कबूल करता हूं कि अभीतक मै आम लोगोंपर किसी तरह ऐसा असर नही डाल सका जिससे वे इस सवालपर उचित ध्यान दे सकें। जो लोग गोशालाओंका इंतजाम करते हैं वे उनके लिए पैसा लगाना या फंड जमा करना तो जानते है, लेकिन हिदुस्तानके पशु-धनका वैज्ञानिक-ढंगसे पालन-पोषण करनेका उन्हें बिलकुल ज्ञान नही होता। वे यह नहीं जानते कि गायको कैसे पाला जाय कि वह ज्यादा दूध दे। उन्हें यह भी नहीं

मालूम कि गायके दिये हुए बैलोंका कैसे विकास किया जाय, या उनको नसल कैसे सुधारी जाय।

इसलिए हिदुस्तानभरमें गोशालाएं ऐसी सस्थाएं होनेके बजाय—जहा कोई शख्स हिदुस्तानके ढोरोंको ठीक तरहसे पालनेकी कला सीख सके, जो आदर्श डेरिया हों, और जहांसे लोग अच्छा दूध, अच्छी गाये, अच्छी नसलके सांड और मजबूत बैल खरीद सकें—सिर्फ ऐसी जगहे है, जहां ढोरोंको बुरी तरह रखा जाता है। इसका नतीजा यह हुआ है कि हिदुस्तान दुनियामे ऐसा खास देश होनेके बजाय, जहा बडे अच्छे ढोर हों, और जहा सस्ते-से-सस्ते दामोपर जितना चाहो उतना शुद्ध दूध मिल सके, आज इस मामलेमे शायद दुनियाके सारे देशोंसे नीचे है। गोशाला-वाले इतना भी नही जानते कि गोबर और गोमूत्रका अच्छे-से-अच्छा क्या उपयोग किया जाय; न वे यही जानते है कि मरे हुए जानवरका कैसे उपयोग किया जाय। नतीजा यह हुआ है कि अपने अज्ञानकी वजहसे उन्होंने करोडो रुपए गवा दिए है। किसी माहिरने कहा है कि हमारा पशुधन देशके लिए बोझ है और यह सिर्फ नष्ट कर देनेके ही काबिल है। मै इससे सहमत नही हूं। मगर यदि आम अज्ञान इसी तरह कुछ दिनोतक और बना रहा, तो मुझे यह जानकर ताज्जुब नही होगा कि पशु देशके लिए बोझ बन गए है। इसलिए मुझे उम्मीद है कि इस गोशालाके प्रबध करनेवाले इसे हर दृष्टिकोणसे एक आदर्श सस्था बनानेकी पूरी-पूरी कोशिश करेंगे।

: १५५ :

२१ नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मैं आप लोगोंके सामने अपना भाषण दे रहा हूं, तब शायद जिस गोशालाके बारेमे मैने कल शामको आपसे कुछ कहा था, उसका

सालाना जलसा अभी हो रहा है। मै एक बात कहना चाहूंगा। कल शामके अपने भाषणोंमे मैने फौजियोंके लिए हिदुस्तानमे चलाई जानेवाली विभिन्न डेरियोंका जिक्र नही किया था। डॉ० राजेद्रप्रसादने मुझे बतलाया है कि वे डेरिया अभी भी चल रही हैं। बरसो पहले मै बंगलोरकी सेंट्रल डेरी देखने गया था। तब कर्नल स्मिथकी देख-रेखमे वह चल रही थी। मैने वहां कुछ सुदर ढोर देखे थे। उनमे एक इनाम पाई हुई गाय थी। वे लोग मानते थे कि एशियाभरमे वह सबसे अच्छी गाय है। वह हर रोज ७५ पौड दूध देती थी या एक ही बारमे इतना दूध देती थी, यह मुझे बराबर याद नही है। वह गाय बिना किसी रोक-टोकके चाहे जहां घूम-फिर सकती थी। उसके लिए जहा-तहां चारा रखा रहता था, जिसे वह चाहे तब खा सकती थी। यह इस तसवीरका अच्छा पहलू है।

दूसरा पहलू मैने नही देखा, मगर मुझे प्रामाणिक तौरपर कहा गया है कि बहुतसे नर बछडोको मार डाला जाता है, क्योकि उन सबको बोझ ढोने लायक बैल नही बनाया जा सकता। ये डेरिया, बहुत ज्यादा नही, तो सैकडों एकड जमीन घेरे हुए है। ये सब खास तौरपर यूरोपियन सिपाहियोके लिए है। इनमे कई करोड रुपया लगा है। अब चूंकि ब्रिटिश सिपाही हिदुस्तानमे नही है, इसलिए मै इनकी और ज्यादा जरूरत नही समझता। मुझे पूरा विश्वास है कि अगर हिदुस्तानी सिपाहीको यह मालूम हो कि ये खर्चीली डेरिया उसके लिए चलाई जा रही है, तो उसे शर्म मालूम होगी। मुझे यह भी विश्वास है कि हिदुस्तानी सिपाही ऐसे किसी खास बरतावका दावा नही करेगा जिसका मामूली नागरिक भी उतना ही हकदार न हो।

गाय और भैस के बारेमे सबसे ज्यादा प्रामाणिक और शायद पूर्ण साहित्य, खादी-प्रतिष्ठानके श्री सतीशचंद्रदास गुप्तद्वारा लिखे हुए एक बड़े भारी ग्रंथमे पाया जा सकता है। जहा-तहाके साहित्यके अवतरणोंसे इस ग्रथको नही भरा गया है, बल्कि उसे निजी अनुभवके आधारपर, जब वे एक बार जेलमे थे,' तब लिखा गया है। बंगाली और हिंदुस्तानीमे उसका अनुवाद हो चुका है। पुस्तकको ध्यानसे पढ़ने-

वाले लोग इसे हिंदुस्तानके पशुधनको अच्छा बनाने और दूधकी पैदावार-को बढानेके काममें बहुत-उपयोगी पाएगे। इस किताबमें गाय और भैसकी तुलना भी की गई है।

(इसके बाद गाधीजीने एक सवालका जिक्र किया; जो उनके पास श्रोताओंमेंसे किसीने भेजा था। सवाल यह था—हिदू क्या है? इस शब्दकी उत्पत्ति कैसे हुई? क्या हिदुत्व नामकी कोई चीज है? इसका जवाब देते हुए गाधीजीने कहा—) ये सब वक्तके लिए योग्य सवाल है। मै इतिहासका कोई बडा जानकार नही हूं। मैं विद्वान् होनेका दावा भी नही करता। मगर हिदुत्वपर लिखी हुई किसी प्रामाणिक किताबमे मैने पढ़ा है कि हिदू शब्द वेदोमे नही है। जब सिकंदर महान्ने हिदुस्तानपर चढ़ाई की, तब सिधु नदीके पूरबके देशमें रहनेवाले लोग, जिसे अंग्रेजीदां हिदुस्तानी 'इंडस' कहते है, हिदूके नामसे पुकारे गए। सिधुका 'स' ग्रीक भाषामें 'ह' हो गया। इस देशके रहनेवालोका धर्म हिदू-धर्म कहलाया, और जैसा कि आप लोग जानते है, यह सबसे ज्यादा सहिष्णु (रवादार) धर्म है। इसने उन ईसाइयोंको आसरा दिया जो विधर्मियोसे सताए जाकर भागे थे। इसके सिवा इसने उन यहूदियोंको, जो बेनिइजराइल कहे जाते हैं; और पारसियोको भी आसरा दिया। मै इस हिदू-धर्मका सदस्य होनेमें अभिमान महसूस करता हूं जिसमे सभी धर्म शामिल हैं और जो बड़ा सहनशील है। आर्य विद्वान् वैदिक धर्मको मानते थे और हिदु-स्तान पहले आर्यावर्त कहा जाता था। वह फिरसे आर्यावर्त कहलाए ऐसी मेरी कोई इच्छा नही है। मेरी कल्पनाका हिदू-धर्म मेरे लिए अपने आपमें पूर्ण है। बेशक, उसमे वेद शामिल हैं, मगर उसमे और भी बहुत कुछ शामिल है। यह कहनेमे मुझे कोई नामुनासिब बात नहीं मालूम होती कि हिदू-धर्मकी महत्ताको किसी भी तरह कम किये बगैर मैं मुसल-मान, ईसाई, पारसी और यहूदी-धर्ममें जो महत्ता है उनके प्रति हिंदू-धर्मके बराबर ही श्रद्धा जाहिर कर सकता हूं। ऐसा हिंदू-धर्म तबतक जिंदा रहेगा, जबतक आकाशमें सूरज चमकता है। इस बातको तुलसी-दासने एक दोहेमें रख दिया है—

दया धरमको मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लगि घटमें प्रान।।

मेरे ओखला छावनीके मुआइनेके वक्त जो बहन मेरे साथ थी, वे इस खयालसे घबडा गई कि निराश्रितोकी कुछ छावनियोंमे बुरा आचरण होनेकी मैने जो बात कही थी, उसका संबंध कही ओखला छावनीसे तो नही है। ओखला छावनीको मैने बहुत जल्दीमे देखा है, इसलिए उसके बारेमे ऐसी कोई बात कहना मेरे लिए नामुमकिन है। अपने भाषणमें मैने आम छावनियोमें होनेवाले बुरे आचरणोंका ही जिक्र किया है।

मै इस बातका जिक्र किए बिना नही रह सकता कि मुझे जो सूचना मिली है उसके मुताबिक दिल्लीकी करीब १३७ मसजिदें हालके दंगोंमें बरबाद-सी कर दी गई है। उनमेसे कुछको मंदिरोमें बदल डाला गया है। ऐसी एक मसजिद कनॉट प्लेसके पास है, जिसकी तरफ किसीका भी ध्यान गए बिना नही रह सकता। आज उसपर तिरंगा झंडा फहरा रहा है। उसे मंदिरका रूप देकर उसमे एक मूर्ति रख दी गई है। मसजिदोको इस तरह बिगाडना हिंदू और सिख-धर्मपर कालिख पोतना है। मेरी रायमें यह बिलकुल अधर्म है। जिस कलंकका मैंने जिक्र किया है, उसे यह कहकर कम नही किया जा सकता कि पाकिस्तानमें मुसलमानोंने भी हिंदू-मंदिरोंको बिगाडा या उन्हे मसजिदोंका रूप दे दिया है। मेरी रायमे ऐसा कोई भी काम हिंदू-धर्म, सिख-धर्म या इस्लाम-को बरबाद करनेवाला काम है।

(गांधीजीने इस बारेमें अखिल भारत-कांग्रेस-कमेटीका हालका ठह-राव लोगोंको सुनाया।)

आज हमेशासे ज्यादा समयके लिए प्रार्थना-सभामे ठहरनेका खतरा उठाकर भी मै अंतमें एक बात कह देना अपना फर्ज समझता हूं। मुझसे यह कहा गया है कि गुडगांवके पास रोमन कैथोलिकोंको सताया जाता है। जिस गावमें यह हुआ है, उसका नाम कन्हाई है। वह दिल्लीसे करीब २५ मीलपर है। एक हिंदुस्तानी रोमन कैथोलिक पादरी और एक गांवके ईसाई प्रचारक मुझसे मिलने आए थे। उन्होंने मुझे वह खत

दिखाया जिसमे कन्हाई गावके रोमन कैथोलिकोने हिंदुग्रोंद्वारा अपने सताये जानेकी कहानी बयान की थी। ताज्जुब यह है कि वह खत उर्दूमे लिखा था। मै समझता हूं कि उस हिस्सेके रहनेवाले हिंदू, सिख या दूसरे लोग केवल हिंदुस्तानी ही बोल सकते और उर्दू-लिपिमे ही लिख सकते हैं। सूचना देनेवाले लोगोंने मुझे बताया कि वहाके रोमन कैथोलिकोंको यह धमकी दी गई है कि अगर वे गाव छोड़कर चले नही जायगे, तो उन्हे नुकसान उठाना पडेगा। मुझे आशा है कि यह धमकी झूठी है और वहाके ईसाई भाई-बहनोको बिना किसी रुकावटके अपना धर्म पालने और काम करने दिया जायगा। अब हमे सियासी गुलामीसे आजादी मिल गई है। इसलिए आज भी उन्हें धर्म और कामकी वही आजादी भोगनेका हक है, जो वे ब्रिटिश हकूमतके दिनोंमे भोगते थे। मिली हुई आजादीपर यूनियनमे सिर्फ हिंदुओंका और पाकिस्तानमे सिर्फ मुसलमानोंका ही हक नही है। मै अपने एक भाषणमे आप लोगोसे कह चुका हूं कि जब यूनियनमे हिंदुओं और सिखोका मुसलमानोके खिलाफ भडका हुआ गुस्सा कम हो जायगा, तो संभव है वह दूसरोपर उतरे। लेकिन जब मैने यह बात कही थी तब मुझे यह आशा नही थी कि मेरी भविष्यवाणी इतनी जल्दी सच साबित होने लगेगी। अभीतक मुसलमानोके खिलाफ बढ़ा हुआ गुस्सा पूरी तरह शांत नही हुआ है। जहातक मै जानता हूं, ये ईसाई बिलकुल निर्दोष है। मुझे सुझाया गया कि उनका गुनाह यही है कि वे ईसाई है। इससे भी ज्यादा बडा गुनाह है कि वे गाय और सूअर का गोश्त खाते हैं। मैने उत्सुकतासे मिलने आये हुए पादरीसे पूछा कि इस बातमे कोई सचाई है? तब उन्होंने कहा कि इन रोमन कैथोलिकोने अपनी मरजीसे बहुत पहले ही गाय और सूअरका मास खाना छोड दिया है। अगर इस तरहका नादानीभरा द्वेष चालू रहा तो आजाद हिंदुस्तानका भविष्य अंधेरा ही समझिए। वह पादरी जब रेवाडीमें थे, तब उनकी खुदकी साइकिल उनसे छीन ली गई और वह मौतसे बाल-बाल बचे। क्या यह दुःख सारे गैर-हिंदुओं और गैर-सिखोंको मिटाकर ही मिटेगा?

: १५६ :

२२ नवंबर, १९४७

(गुडगांवके नजदीक एक गांवमे ईसाइयोंके साथ होनेवाले बुरे बरतावका फिरसे जिक्र करते हुए गाधीजीने अपने आजके भाषणमे कहा —)

भाइयो और बहनो,

मुझे खबर मिली है कि कुछ-कुछ ऐसा ही बरताव सोनीपतके ईसाइयोंके साथ हुआ है। मुझसे कहा गया है कि पहले तो वहां ईसाइयोसे प्रार्थना की गई कि वे निराश्रितोको अपने मकानोका उपयोग करने दें। ईसाइयोंने खुशीसे इसकी इजाजत दे दी और इसके लिए उन्हे धन्यवाद भी दिया गया। मगर यह धन्यवाद अभिशापमें बदल गया; क्योंकि उनके दूसरे मकान भी जबरदस्ती निराश्रितोंके काममें ले लिये गए और उनसे कह दिया गया कि अगर वे सोनीपतमे अपनी जिदगीको बहुत दुःखी नही देखना चाहते, तो वहांसे चले जायं। अगर यह बात ऐसी ही हो, जैसी कि वह कही गई है, तो साफ जान पडता है कि यह बीमारी बढ़ रही है और कोई नही बता सकता कि यह बीमारी हिंदुस्तानको कहां ले जानेवाली है।

जब मै कुछ दोस्तोंसे चर्चा कर रहा था, तब मुझसे कहा गया कि जबतक पाकिस्तानमे होनेवाली इसी किस्मकी बुराइयां कम नही होतीं, तबतक हिंदुस्तानी सघमे ज्यादा सुधार की उम्मीद नही की जा सकती। इस बातके समर्थनमे मेरे सामने लाहौरके बारेमे जो कुछ अखबारोंमें छपा है, उसका उदाहरण रखा गया। मै खुद अखबारोंकी खबरोंको सोलह-आने सच नही मानता और मै अखबार पढनेवालोंको भी चेतावनी दूंगा कि वे उनमे छपी कहानियोंका अपने ऊपर आसानीसे असर न पड़ने दें। अच्छे-से-अच्छे अखबार भी खबरोको बढा-चढाकर कहने और उन्हें रंगनेसे बरी नही है। मगर मान लीजिए कि जो कुछ आपने अखबारोंमें पढा वह सब सच है, तो भी एक बुरे नमूनेकी कभी नकल नहीं की जानी चाहिए।

एक ऐसे समकोण चौखटकी कल्पना कीजिए, जिसमे स्लेट नही लगी है। अगर उस चौखटको जराभी बेढगे तरीकेसे पकडा जाय, तो उसके समकोण न्यूनकोण और अधिककोणमें बदल जायंगे। और अगर चौखटको एक कोनेपर फिरसे ठीक ढंगसे पकडा जाय, तो दूसरे तीन कोने अपने आप समकोण बन जायंगे। इसी तरह अगर हिंदुस्तानी सघकी सरकार और लोग, सही बरताव करें, तो मुझे इसमे जरा भी शक नही कि पाकिस्तान भी ऐसा ही करने लगेगा और सारा हिदुस्तान फिरसे समझदार बन जायगा। ईसाइयोंके साथ किये गए बुरे बरतावको, जिन्होंने, जहांतक मै जानता हूं, कोई अपराध नही किया है, इस बातका संकेत समझा जाय कि इस पागलपनको और ज्यादा बढ़ने देना ठीक नही है। और अगर हिदुस्तानको दुनियाके सामने अपना अच्छा लेखा-जोखा रखना है, तो एकदम और तेजीके साथ इस पागलपनका मुकाबला किया जाय।

(इसके बाद निराश्रितोंकी समस्यापर बोलते हुए गांधीजीने कहा—)

उनमें डाक्टर, वकील, विद्यार्थी, शिक्षक, नर्स वगैरा है। अगर उन्होने गरीब निराश्रितोसे अपने आपको अलग कर लिया, तो वे अपने ऊपर पड़े हुए एकसे दुर्भाग्यसे कोई सबक नही ले पायगे। मेरी राय है कि सब व्यवसायी और गैर-व्यवसायी, धनवान और गरीब निराश्रित एक साथ रहे और जिस तरह लाहौरके धनवान लोगोने लाहौरको आदर्श शहर बनाया—और जिसे हिदुओं और सिखोको लाचार होकर खाली करना पड़ा—उस तरह वे भी आदर्श शहर बसाएं। ये शहर, दिल्ली-जैसी घनी आबादीवाले शहरोंका बोझ हलका करेंगे और इनमे रहनेवाले लोगोंकी तंदुरुस्ती बढेगी और उनकी तरक्की होगी। अगर कुरुक्षेत्रकी बड़ी छावनीमे रहनेवाले दो लाखसे ऊपर निराश्रित बाहरी और भीतरी सफाईके मामलेमें आदर्श बन गए, अगर व्यवसायी और धनवान गरीब निराश्रितोके साथ बराबरीके आधारपर रहे, अगर उन्होंने तंबुओंकी इस बस्तीमे अच्छी सड़कें बनाकर संतोषकी जिदगी बिताई, अगर वे सफाईसे लगाकर सारे काम खुद करते रहे और दिनभर किसी-न-किसी उपयोगी काममें लगे रहे, तो वे सरकारी बजटपर बोझ नही रह जायंगे।

और उनकी सादगी और सहयोगको देखकर शहरोंमें रहनेवाले लोग सिर्फ उनकी तारीफ करके ही नहीं रह जायंगे, बल्कि उन्हें अपने जीवनपर शर्म मालूम होगी और वे निराश्रितोंकी सारी अच्छी बातोंकी नकल करेंगे। तब मौजूदा कड़ुवाहट और आपसी जलन एक मिनटमें गायब हो जायगी। तब निराश्रित लोग, चाहे वे कितनी ही बड़ी तादादमें क्यों न हों, केंद्रीय और मुकामी सरकारोंके लिए चिंताके विषय नहीं रह जायंगे। लाखों निराश्रितोंद्वारा बिताई गई ऐसी आदर्श जिंदगीकी दुःखी दुनिया तारीफ करेगी।

अंतमें मैं कंट्रोलोंको हटानेके बारेमें खासकर अनाज और कपड़ेका कंट्रोल हटानेके बारेमें चर्चा करूंगा। सरकार कंट्रोल हटानेमें हिचकिचाती है, क्योंकि उसका खयाल है कि देशमें अनाज और कपड़ेकी सच्ची तंगी है। इसलिए अगर कंट्रोल हटा दिया गया तो इन चीजोंके दाम बहुत बढ़ जायंगे। इससे गरीबोंको बड़ा नुकसान होगा। गरीब जनताके बारेमें सरकारका यह खयाल है कि वह कंट्रोलोंके जरिए ही भुखमरीसे बच सकती है। और तन ढकनेको कपड़ा पा सकती है। सरकारको व्यापारियों, अनाज पैदा करनेवालों और दलालोंपर शक है। उसे डर है कि ये लोग कंट्रोलोंके हटनेका बाजकी तरह रास्ता देख रहे हैं, ताकि गरीबोंको अपना शिकार बनाकर बेईमानीसे कमाये हुए पैसेसे अपनी जेबें भर सकें। सरकारके सामने दो बुराइयोंमेंसे किसी एकको चुननेका सवाल है। और उनका खयाल है कि मौजूदा कंट्रोलोंको हटानेके बदले बनाए रखना कम बुरा है।

इसलिए मैं व्यापारियों, दलालों और अनाज पैदा करनेवालोंसे अपील करता हूं कि वे अपने प्रति किये जानेवाले इस शकको मिटा दें और सरकारको यह यकीन दिला दें कि अनाज और कपड़ेका कंट्रोल हटनेसे कीमतें ऊंची नहीं चढ़ेंगी'। कंट्रोल हटानेसे काला बाजार और बेईमानी जड़से भले ही न उखाड़ी जा सकें, लेकिन इससे गरीबोंको आजसे ज्यादा सुख और आराम मिलेगा।

: १५७ :

२३ नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाई लिखते है कि अगर हक नहीं मिले तो क्या हिंसाका मार्ग नही लेना चाहिए ? हिंसासे हम हक ले नही सकते। मै तो कहूंगा कि हिंसासे कुछ मिल ही नही सकता। लगता तो है कि मिल सकता है, लेकिन कैसे ? हां, एक बच्चा है, उसके हाथमें रुपया है, उसको दो-चार तमाचा मार दू और रुपया ले लूं, तो मीठा तो लगेगा कि रुपया तो ले लिया लेकिन मैंने गुमाया कितना ! बच्चा बेचारा करे क्या ? लेकिन मेरा दिल चुभेगा कि बेचारे बच्चेका रुपया ले लिया, मारपीट करके। लेकिन ऐसे पाजी दुनियामे भरे पड़े है। मैं तो ऐसा कर नहीं सकता। ऐसा छीननेका मेरा हक नही है। छीन लिया तो नतीजा बुरा होगा। इसलिए मै कहता हूं कि हिंसासे हक ले नही सकते। हक लेनेका एक ही तरीका है और वह मैंने प्रकट कर दिया है। वह सबको पसंद पडा। उसमें लिखा है कि लोगोंका हक क्या है और कैसे मिल सकता है। मै तो कहूंगा कि हक है ही नही। जिसके पास फर्ज नही है तो उसका हक नही है, अर्थात् सब हक अपने फर्जमेंसे निकलता है—फर्ज नही तो हक नही है। जैसे मैं खाता हूं, खानेका धर्म है तो खाता हूं, शौकसे लिया तो कुछ-न-कुछ रोग पैदा होगा। अगर खाता हूं धर्म समझकर, ईश्वरका नाम लेता हूं, दुनियाकी सेवा करता हूं तो मुझे हक मिल जाता है। क्या मिलता है ? सेवा करनेका हक मिलता है। आप कहेंगे कि इसको हक कैसे कहेंगे ? आप विचार करेंगे तो यह मालूम हो जायगा। मै तो कहूंगा कि वही हक हो जाता है। मानो कि मैं दिनभर काम करता हूं तो आठ आना कमा लेता हूं—वह आठ आना हकसे मिलता है। हक कैसे आया ? काम किया तब। काम न करूं और आठ आना पैसा लूं तो हकसे

नही लिया, छीन लिया। हक तो तभी होता है जब मजदूरी करनेका इकरार कर दिया और वह दिलसे किया अर्थात् मनसे, वचनसे, कर्मसे किया। लेकिन अगर दिलसे काम नही करता हूं, सरदारका बिगाड़ता हूं, सरदार देखता नही है, इसलिए धोखा दू तो वह पाप है। और जब देखता हूं कि दूसरेको तो एक रुपया मिल रहा है तो मै भी एक रुपया ले सकता हूं, लेकिन कब? सरदारको कहकर। उनको कहूं सबको तो एक रुपया मिलता है तो मैं कैसे आठ आनेमे काम करूं—एक रुपया नहीं तो पंद्रह आने तो दे दो। वह कहे कि आठ आनेमें काम करो तो करो नहीं तो चले जाओ। तब मैं क्या करूं? क्या माल जला दूं, उसका काम रोक दू, धरना दू, फाका करूं, क्या करू? मै कहूंगा कि मै इस्तीफा दे सकता हूं, लेकिन आठ आनेमें तो मजदूरी नही कर सकता हूं—यह तो शराफत हुई। मैं तो कहूंगा कि जो कुछ करना चाहो वह शराफतसे करो। शराफतमे यही आता है कि हम धर्मका पालन करें, फर्जको अदा करें और फर्ज करके अहिंसासे हक पैदा करें। हिंसाके मारफत कुछ भी लेनेकी कोशिश न करें—इसीसे दुनिया चलती है, नहीं तो दुनिया बिगड़ती है।

तो क्रिस्तियोंके बारेमें तो कह दिया था। आज मैं आप लोगोंको हरिजनोंके बारेमे कहूंगा। वह तो हमारे लिए शर्मकी बात है कि रोहतकमें, रोहतक जिलेमे कहो, हर जगह हरिजन पडे है—पहले भी थे, अब भी हैं। तो वहां भी हरिजन पडे हैं। वहां तो जाट लोग पडे हैं, शायद अहीर भी पड़े है। उनके दिलमें ऐसा हुआ कि हरिजन है, वे हमारे गुलाम है, जो कुछ काम लेना है लेंगे—वहां फिर हक की बात आ गई—वे तो जन्मसे गुलाम पैदा हुए हैं। पानी चाहिए तो दें, खाना खाए तो ठीक है, नही तो हकसे ले नहीं सकते। इसको मैं तकबरी (अभिमान) मानता हूं। जब अंग्रेजी सल्तनत थी तब चलती थी और अब वह चीज ज्यादा बन गई। बेचारे हरिजन गरीब हैं तो मेरे पास आए और कहा कि हमपर ऐसी गुजर रही है तो क्या हम गुलामीमें रहें, कि मर जाएं या रोहतक छोड़ दें या क्या करें? अभी वे छोड़ भी नहीं सकते, यह समझने लायक बात है। यदि वे

रोहतक छोड़ते हैं तो दूसरे लोग मरेंगे, क्योंकि उनका काम बिगडता है ; लेकिन हरिजनोंको गुलामी ही करना है तो ऐसा हो जाता है। तो वे बेचारे आ गए—मदरसेमें पढते है, कोई आगे पढता है, कोई पीछे है, उद्योग भी सीखते है ; लेकिन वे लोग जो नाराज कर रहे हैं उनको क्या कहे। अब तो हम ऐसे हो गए है कि हम सोचते नही कि हम कहां जा रहे है। अंग्रेजी सल्तनत चलती थी तब डरते थे कि हमको मारपीट डालेंगे। अब वह सल्तनत चली गई तो कौन क्या कर सकता है ! जजके सामने पेश किये जाएंगे तो जजको भी डरा सकेंगे। जज क्या कर सकता है ? अब ऐसी तकबरी पैदा हो गई है। इसका नतीजा यही आता है कि हरिजन तबाह हो जाता है। तो मैंने उन लोगोंसे कहा कि आप बापा साहब (ठक्कर बापा) के पास जाइए— उन्होंने तो हरिजनों और आदिवासियोंकी सेवा करनेके लिए जन्म लिया है, वे हरिजनोंके लिए सब कुछ करते हैं। तो वे गए और पीछे मेरे पास आए और मुझको सुनाया कि बापा साहब कुछ नही करते है। मै तो समझ गया कि वे क्या चाहते हैं। वे यही बैठे हैं। मैंने कहा कि आप डाक्टर गोपीचदके पास जाइए। वे तो प्रधान मत्री बन गए है तो क्या, पहले तो हरिजन-सेवक-सघका सब काम करते थे। आज आनेवाले थे तो मैंने कहा कि उनसे मिलू। मिला। लेकिन वहा जो लोग जालिम बन गए है, मजबूर करते हैं, हठीले बन गए है तो क्या करना ? आज अंग्रेजी सल्तनत तो है नही, वैसा कर भी नही सकते हैं, तो वे करें क्या ? तो मैने सोचा कि आज मै हरिजनोंकी करुण कथा सुनाऊ। हम इतना भी नही कर सकते है ? आज हमारा धर्म क्या है ? आजतक हम उन्हें अछूत, गुलाम मानते आए है, वह अधर्म किया। गलती की और पाप किया, उसके प्रायश्चित्तके रूपमे हरिजन-सेवक संघ बना, सघने बहुत काम भी किया है। सब हिंदूने ऐसा नही किया—करोड़ोंकी संख्यामे हिंदू, सब हिंदूने तो उसे अपनाया भी नहीं है। अगर सब हिंदुओंने अपना लिया होता तो मुझे यह करुण कथा क्यों सुनानी पड़ती ? अंग्रेजोंके राज्यमें तो करते थे—उनको गाली देते थे कि अगर ये नही होते तो हम अच्छे हो जाते, लेकिन

अब तो वे चले गए—हम अब अच्छे है या बुरे ? मैं तो कहूंगा कि पहलेसे ज्यादा बुराइया आ गई। हम ज्यादतिया तब करते थे और अब भी करते है, पहले तो मुसलमानोंपर ज्यादतियां कीं, यह भी पाप किया—पाकिस्तान है यह भूल जाओ, उसका खयाल मत करो। समझो कि अगर एक आदमी पाप करता है तो क्या हम भीकरें। सोचोगे तो मालूम होगा कि वह बुरा है—एक बुराईसे दूसरी बुराई पैदा होती है। हमने काफी लोगोंको मार डाला है, हमारे दिलमें झूठी हिम्मत आ गई है कि मारो क्रिस्तियोंको, पीछे हम जाटिस्तान.. अही-रिस्तान, हर एक अपना-अपना स्थान बनाएगे ; लेकिन हिंदुस्तान कोई नही बनाएगा। हरिजनोंको तो अपनाना ही चाहिए—वे तो हम जैसे हिंदू है, वो पंचम जाति तो है नही। पंचम वर्ण तो हिंदूमे है नही, चार वर्ण हैं—उनमें एक नीचा और दूसरा ऊंचा तो है ही नही। इन चारोंमें ऐसा है कि एक धर्म सिखाता है, दूसरा रक्षा करता है, तीसरा तिजारत करता है—घर भरनेके लिए नही, अपने लिए करोड़ों रुपया पैदा करनेके लिए नही, प्रजाके लिए भले ही पैदा करे—और चौथा प्रजाकी सेवा करता है। लेकिन चारो साथ-साथ खडे रह सकते है, बैठ सकते हैं। अगर शूद्र है, वह बैरिस्टर बन जाय तो वह बैरिस्टरी नही कर सकता, ऐसी बात नही है। वह बैरिस्टर होकर भी सेवा कर सकता है। जो धर्म सिखाता है वह भी सेवा करता है, तिजारत करता है, नौकरी करता है वह सेवा करता है और झाड़ू लगाता है वह भी सेवा करता है—ये चारों सेवा है, सेवाक्षेत्र बन गया है। पीछे जो धर्म सिखाता है उसको ज्यादा सीखना पड़ता है—इसका मतलब यह नही है कि वह अगर उस कामको छोडकर दूसरा काम करता है तो पाप करता है। वह उस कामको नही कर सकता ऐसी बात नही है। इसी तरह हमने अनेक जातियां पैदा की और अब पंचम वर्ण पैदा करते है, तो हमारी गलती है, दुष्टता है। अगर हम अपने-अपने धर्मके मुताबिक चलें तब तो हो सकता है। आज हमारे हाथमे बागडोर आ गई है तो हिंदू-सिख सब अपने-अपने धर्मके अनुसार चलें तो मैं समझता हूं कि सबका काम चल सकता है। मैंने भी समाप्त कर दिया और यह भी समाप्त हो गई।

: १५८ :

२४ नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मैं प्रार्थनामें आता हूं आप लोग मेहरबानी करके मेरे और मेरी लडकियों के लिए काफी जगह गुजरनेके लिए छोड देते है, मगर जानेके समय लोग चरण छूनेके लिए मेरे इर्द-गर्द भीड़ कर देते हैं। वह अच्छा नही लगता। मेरी प्रार्थना है कि जानेके समय भी आप लोग मुझे शांतिसे रास्ता दें। आपकी मुहब्बत मै समझता हूं, और उसकी मुझे कदर है। मगर मैं चाहता हूं कि यह मुहब्बत बाह्य उभारकी जगह किसी रचनात्मक कार्यका रूप ले। इस बारेमे मै बहुत बार कह चुका हूं और लिख चुका हूं। रचनात्मक कार्यक्रममेसे मुख्य तो आज कौमी मेल-जोल है। पहले भी झगडा होता था मगर उसमें किसीको बर्बाद करनेकी बात नही होती थी। अब तो मारनेकी ही बात है। जहर फैल गया है। एक तरफसे हिंदू और सिख, दूसरी तरफसे मुसलमान एक दूसरेके दुश्मन बन गए है। इसका शर्मनाक नतीजा आप देख ही चुके है।

प्रार्थनामे आनेवालोका अपना हृदय वैरभावसे खाली हो, यह बस नही। उन्हे साम्प्रदायिक मेलजोल फिरसे कायम करनेमें सक्रिय भाग लेना है। खिलाफतके जमानेमे हिंदू-मुस्लिम-ऐक्यका हमे गर्व था। उन दिनोंमें मिली-जुली बड़ी-बड़ी सभाओंमे जाना मै भूला नही। उस ऐक्य-को देखकर मेरा हृदय आनदसे उछलता था। क्या वे दिन फिर कभी वापिस नही आवेंगे।

हिंदुस्तानकी राजधानीमें कल ही जो दु:खद घटना हुई उसका विचार कीजिए। कहा जाता है कुछ हिंदू और सिखोंने एक खाली मुस्लिम घरका कानून विरुद्ध कब्जा लेनेकी कोशिश की। उसपरसे झगड़ा हुआ और कुछ लोगोंको चोट पहुँची। मगर किसीकी मृत्यु नही हुई। यह घटना बुरी थी। मगर उसे और भी बढ़ाया-चढ़ाया गया। पहली

खबर यह थी कि चार सिख मारे गए है। नतीजा वही हुआ जो ऐसी चीजोंमे होता है। बदलेकी भावना भड़की और कई लोग छुरेसे घायल हुए।

सुनता हूं कि अब एक नया तरीका इस्तेमाल होने लगा है। छोटी कृपाणकी जगह सिख लोग बड़ी तलवार रखने लगे हैं। तलवार खीचकर हिंदुओके साथ या अकेले मुसलमानके घरोमे जाते है, और उन्हे मकान खाली करनेको धमकाते है। अगर यह खबर सच्ची है तो राजधानीमे ऐसी चीज असह्य पशुपन है। अगर यह सही नही है तो इसकी तरफ और ध्यान देनेकी जरूरत नही। सही है तो न सिर्फ सत्ताधारियोंको, बल्कि जनताको भी फौरन इसकी तरफ ध्यान देना चाहिए। जनताके पीठ-बलके बिना सत्ताधीश कुछ नही कर सकते।

मै नही जानता कि ऐसी हालतमे मेरा धर्म क्या है? इतनी बात स्पष्ट है कि हालत ज्यादा बिगड रही है। जल्दी ही कार्तिककी पूर्णिमा आनेवाली है। मेरे पास तरह तरहकी अफवाहे आती है। मै उम्मीद रखता हूं कि जैसे दशहरा और बकरीदके समय हुआ, उसी तरह अब भी ये अफवाहे झूठी सिद्ध होंगी।

इन अफवाहोंसे एक पाठ तो हम सीख ही सकते है। आज हमारे पास शांतिकी कोई मिल्कियत जमा नही। हमे रोजकी कमाई रोज करना है। यह स्थिति किसी राष्ट्र या राज्यके लिए अच्छी नही। देशके हरेक सेवकको ध्यानपूर्वक सोचना है कि वह इस खा जानेवाले जहरको मिटानेके लिए क्या कर सकता है और उसे क्या करना चाहिए।

यहांपर लायलपुरके सरदार संतसिंहजीके एक लंबे पत्रकी चर्चा करना अच्छा होगा। वे पहले सेंट्रल असेम्बलीके सदस्य थे। उन्होंने सिखोंका जबर्दस्त बचाव किया है। उन्होने मेरे पिछले बुधवारके भाषणका जो अर्थ किया है, वह उस भाषणके शब्दोमेंसे नही निकलता। मेरे मनमें तो वह था ही नही। शायद सरदार साहब जानते होंगे कि १९१५ मे दक्षिण अफ्रीकासे लौटनेके बाद मेरा सिख मित्रोंके साथ घनिष्ट संबंध रहा है। एक समय था कि जब सिख, हिंदुओं और मुसलमानों-

की तरह मेरे वचनोंको वेद-वाक्य मानते थे। अब समय बदल गया है, उसके साथ लोगोंके ढंग बदल गए हैं। मगर मै जानता हूं कि मै नही बदला। शायद सरदार साहब नही जानते, सिख आज किस तरफ बहे जा रहे है। मै उनका पक्का मित्र हूं। मुझे अपना कोई स्वार्थ नही साधना। सो मैं सब चीज देख सकता हूं। मैं उनसे साफ-साफ दिल खोलकर बात कर सकता हूं, क्योकि मै उनका सच्चा मित्र हूं। मै यह कहनेकी हिम्मत करता हूं कि कई बार सिख भाई मेरी सलाहको मानकर कठिनाइयोंमेंसे बच निकले हैं। इसलिए मुझे कभी यह खयाल भी नही आया कि मुझे सिखोंके बारेमें, या तो किसीके भी बारेमे, सोच-समझकर बोलना चाहिए। सरदार साहब और हरेक सिख जो सिख जातिका भला चाहता है और आजके प्रवाहमे बह नही गया, इस बहादुर और महान् जातिको पागलपन, शराबखोरी और उसमेसे निकलनेवाली बदियोंसे बचानेमे मदद करे। जिस तलवारका वे काफी प्रदर्शन कर चुके है और बुरी तरह इस्तेमाल कर चुके है, उसे अब वापस म्यानमें रख दें। अगर प्रिवी कौंसिलके फैसलेका यह अर्थ है कि कृपाणका मतलब है किसी भी मापकी तलवार, तो भी, वह उससे मूर्ख न बनें। किसी भी बेउसूल शराबी आदमीके हाथमें जानेसे, या उसका मनमाना इस्तेमाल करनेसे कृपाणकी पवित्रता जाती रहती है। पवित्र चीजका पवित्र और बाकानून मौकेपर ही इस्तेमाल हो सकता है। इसमें शक नही कि कृपाण शक्तिका प्रतीक है। कृपाण रखनेवालेको वह तभी शोभा देती है जब वह अपने आपपर आश्चर्यजनक काबू रखे और बहुत ही भारी विरोधी ताकतके सामने उसका इस्तेमाल करे।

सरदार साहब मुझे यह कहनेके लिए माफ करेंगे कि मैने सिख-इतिहासका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है और ग्रंथ साहबके तत्त्वोंका अमृतपान किया है। उन वचनोंके हिसाबसे देखा जाय तो जो सिखोंने किया बताया जाता है, उसका कोई बचाव नही हो सकता। वह अपने आपको बर्बाद करनेका रास्ता है। किसी भी हालतमें सिखोंकी बहादुरी और ईमानदारीका इस तरह नाश नहीं होना चाहिए। वे सारे

हिंदुस्तानके लिए भारी संपत्ति हो सकते हैं, आज तो वे भयरूप बन गए है। सो नही होना चाहिए।

यह कहना कि सिख इस्लामके पहले नंबरके दुश्मन हैं, बिलकुल वाहियात बात है। मुझे भी यही अल्काब दिया जा चुका है न! क्या यह अल्काब मुझे सिखोंके साथ बांटना पडेगा? मेरा सारा जीवन इस इल्जामको गलत सिद्ध करनेवाला है। सिखोंपर यह इल्जाम लगाया जा सकता है क्या? शेरे-काश्मीरको जो सिख आज मदद दे रहे है, उनसे तो वे पाठ सीखें। उनके नामसे जो मूर्खताके कारनामे किये जा रहे है, उसका वे पश्चात्ताप करें।

मैं जानता हूं कि एक बुरी और भयानक बात यह चलती है कि हिंदू सिखोंको छोड दे तो उन्हे पाकिस्तानमे कोई खतरा नही। सिखोंको पाकिस्तानमें कभी बर्दाश्त नही किया जाएगा। ऐसे भाई-भाईको मारनेवाले सौदेमे मै तो कभी हिस्सेदार नही बन सकता। जबतक हरेक हिंदू और सिख बाइज्जत और सुरक्षित रूपसे पश्चिमी पंजाबमे अपने घर वापस नही जाता, और हरेक मुसलमान यूनियनमें अपने घर उसी तरह नही लौट आता, तबतक इस बदकिस्मत देशमें शांति होनेवाली नही। जो लोग अपनी खुशीसे खास कारणोंसे अपने घरोंको न लौटना चाहे उनकी बात अलग है। अगर हमें शातिसे, एक-दूसरेको मदद देनेवाले पडोसी बनकर रहना है तो जनताके तबादलेके पापको धोना होगा।

पाकिस्तानकी बुराइयोंको यहां दुहरानेकी जरूरत नही, उससे हिंदू और सिख दुखियोंको कोई फायदा पहुंचनेवाला नही। पाकिस्तानको अपने पापोंका बोझ उठाना है। और मैं जानता हूं वह भयानक है। मेरी क्या राय है, यह जानना सबके लिए काफी होना चाहिए। अगर उस रायकी कोई कीमत है तो वह यह है कि १५ अगस्तसे बहुत पहले मुस्लिम लीगने शरारत शुरू की थी। मैं यह भी नही कह सकता १५ कि अगस्तको उन्होंने नई-जिंदगी शुरू कर दी और शरारतको भूल गए। मगर मेरी यह राय आपको कोई मदद नहीं कर सकती। महत्त्वकी बात यह है कि यूनियनमें हमने

उनके पापोंकी नकल की, और उनके साथ हम भी पापी बन गए। तराजूके पलडे करीब-करीब बराबर हो गए। क्या अब भी हमारी मूर्च्छा छूटेगी और हम अपने पापोका प्रायश्चित्त करेगे ? या फिर हमें गिरना ही है ?

: १५६ :

२५ नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मै आपसे पाकिस्तानसे आए हुए शरणार्थियोके बारेमे कुछ कहना चाहता हूं, लेकिन अभी मुश्किलकी बात यह है कि उनको शरणार्थी कहना चाहिए कि नही। कल चद भाई मुझको कहते थे कि आप हमको शरणार्थी क्यों कहते है ? एक तरहसे तो उनकी बात सच्ची है, क्योंकि शरणार्थी तो उनको कहते हैं जो शरण चाहते हैं। वे वहासे कष्टके मारे आ तो गए, लेकिन यहा किसीकी शरण क्यो चाहें ? और शरण भी किसकी, जब सारा हिंदुस्तान है और वह सबका है ! यहां तो मैं पाकिस्तानको भी उसमे मानता हूं। लेकिन अगर वह नही है और ऐसा कहो कि हमारे दो टुकड़े हो गए हैं, तो भी यूनियन तो सबका है और होना भी चाहिए। तब वे वहां आते है तो अपने हकसे आते है। इसलिए उनकी बात मुझको सच्ची लगी। जब आदमीको किसी जगह कष्ट होता है और वह वहांसे भागता है और आकर अपनी माके गोदमे छिप जाता है, तब उसको शरणार्थी कहेंगे या हकसे आया है, ऐसा कहेंगे ? मैंने उनको कहा कि आप यह तो मानेंगे कि मुझे कोई द्वेष-भाव तो हो नही सकता कि जो मैं इस कटु भाषाका इस्तेमाल करूं। हकीकतमे यह पहले अंग्रेजीका शब्द 'रिफ्यूजी' था और हम तो अंग्रेजी भाषाके अबतक ऐसे गुलाम रहे है कि गुलामीमेसे छूट नही सकते है। इसलिए 'रिफ्यूजी' शब्द तो पहले बना और उसका एक ही मानी हो सकता था जो कि पीछे अखबारवालोंने शरणार्थी या निराश्रित किया। तब उन्होंने कहा कि

अंग्रेजीमें और भी तो शब्द बहुत है, जैसे 'सफरर्स' (पीड़ित) है कि नहीं, तो फिर उनको 'सफरर्स' क्यों नही कहते ? मैं तो अंग्रेजी इतनी जानता हूं, इसलिए 'सफरर्स' कैसे कहूं ! तो फिर क्या कहूं उनको ? पीछे मेरे दिलमे ऐसा हुआ कि दुःखी तो वे है ही, इसलिए दुःखी कहो । वैसे तो हम सभी यहां दुःखी पड़े है; लेकिन जो लोग लाखोंकी तादादमें अपने घरबार छोडकर यहा आए हैं, वे दरअसल दुःखी है । इसलिए उनके बारेमे मैं आज कुछ कहना चाहता हूं ।

मेरे पास आज तीन किस्मके लोग मिलने आए । एक किस्मको तो मै छोड देना चाहता हूं । लाहोरमे उसका एक बडा सारा कबीला था । कुछ होटल वगैरह उसका चलता था, तो वहां उसका सब घरबार और मालमता छूट गया और अपनी बीबी-बच्चोको लेकर यहां आ गए। सबको तो यहा नही लाए । लेकिन मुझको सब हाल सुनाया और पीछे कहने लगे कि मुझको यहां कही घर दिलवा दो । मैने कहा कि मेरे हाथमें कोई हकूमत तो है नहीं, और अगर हकूमत भी होती तब भी मैं घर दिलवाने-वाला नही था । एक तो दिल्ली शहरमे वैसे ही घर कम है और यहांके लोग ही काफी परेशानीमे पडे है, इसपर भी उनसे हकूमत घर छुड़वा लेती है । जब कोई अमलदार या राजदूत आ गया तो उनको तो तंबूमें नही रख सकते हैं । इसलिए उनको किसीका घर या कोठी खाली कराकर दे देते है । जो लोग उनमें पहलेसे रहते है, वे जब कहते है कि हम कहां जाएं तो कहा जाता है कि कही भी जाओ । हकूमत यहातक तो नही जाती, लेकिन जा सकती है, और कई लोगोंको इस तरहके नोटिस मिले है कि तुम्हें अपना घर खाली करना पडेगा। जब यह हालत है तो जो ये लाखों लोग दुःखी पडे है, उनको घर कहांसे दिया जाय ? उसने कहा कि हम सत्रह आदमी खोकर यहां आए है । मैंने कहा कि आप सत्रह आदमी खोने लायक तो थे । ऐसे भी कबीले है जिनमें एक मर्द और औरतके सिवा दूसरे कोई हैं ही नही । अगर आप यह मानें कि सारा हिंदुस्तान हमारा है तो जो सत्रह गए वे तो गए, लेकिन बाकी हिंदुस्तानके लोग तो हैं । खैर, यह तो एक ज्ञानवार्ता हो गई, उसको तो छोड़ो । तब मैंने उनको कहा कि जो कैंप यहां चल रहें हैं उनमें आपको चले जाना चाहिए ।

वहा सब किस्मके लोग रहते है और वहा रहना कोई बुरी बात नही है। उसने कहा कि क्या मै कोई भिक्षार्थी हूं। मैने कहा, हर्गिज नही। अगर मै कैंप चलानेवाला बनूं तो किसी भिक्षुकको अन्न दूगा ही नहीं। आप सब लोग तगडे है, काम करो और खाओ, कपडे बनाओ और पहनो। हां, रातमे कुछ कपडा ऊपर तान लो जिससे कि ऊपरसे जो ओस गिरती है, उससे बच जाओ। दिनमे उसकी भी कोई जरूरत नही होती। आकाश साफ होता है और सूर्यनारायण जो गर्मी देता है वह गर्मी लेनी चाहिए। मै तो दिनके समय घरमे रहता नही। बाहर सूर्यनारायणकी धूप मुझको अच्छी लगती है। उसने कहा कि हम तो ऐसे नही है, हमारे तो छोटे-छोटे बच्चे है, हमे तो रहनेके लिए मकान ही चाहिए। मैंने कहा कि क्या आपके ही बच्चे है और किसीके है ही नही ? मै तो जिस कैंपमें गया वही देखा कि माताए और उनके बच्चे सभी वहां रहते हैं। कोई उनमे गर्भवती भी है और वही बच्चे पैदा करती हैं। तब आपको वहां रहनेमे क्या आपत्ति है ? वहां जो दूसरे लोग खाते है वह खाओ और वे जो मेहनत करते है वहां करो। तुम तो काफी चुस्त और तगडे हो, होटल वगैरह भी चला सकते हो। तो फिर क्यों नही ऐसा काम करते जिससे दूसरोंको भी राहत मिले ?

उन्होंने कहा कि यहां जो मुसलमान रहते है वे खाली करके क्यों नही जाते ? वे अबतक क्यों यहां बैठे है ? यह सुनकर मुझे काफी चोट लगी। मुसलमान एक तो पहलेसे ही डरके मारे हट रहे है और जो बाकी रहे है उनमेसे भी रोज कुछ-न-कुछ हलाक हो जाते हैं। हर कोई जाकर उनको कहता है—यहांसे हटो, हमको तुम्हारे घरमें रहना है। इस तरह हरेक आदमी अगर हाकिम बन जाए तो फिर रैयत कौन रहेगा और देश किसका होगा ? हर आदमी तो हकूमत चलानेवाला हो नही सकता। दुनियामे किसी जगहपर भी ऐसा नहीं होता। हां, जहां बिलकुल जगली लोग रहते है वहां कहते हैं कि कोई हाकिम नहीं होता। लेकिन लुटेरोंका भी कोई हाकिम रहता ही है। जैसे अलीबाबा और चालीस चोरकी वार्ता चलती है तो वहां भी उनका एक सरदार तो था ही। इस तरह दुनियामें कोई जगह नही जहां सब आदमी हाकिम हों या कोई भी हाकिम

न हो। हम हाकिम बनना और अपने ऊपर हकूमत चलाना तो जानते ही नहीं। तभी तो आज इस झंझटमे पडे है। आप उन लोगोंके घरोंपर, जो कि डरके मारे उन्हे छोड़ गए है या मारे गए है या पुलिसने पकड लिए है, ऐसी नजर करें, यह बहुत बुरी बात है। यह बात आपके लायक नही। आप अगर कह सकते है तो मुझसे कह सकते है, क्योंकि मै जहां रहता हूं वह एक महल-जैसा घर है। मुझे कह सकते हो कि तू यहासे हट जा और किसी कैंपमे चला जा। तुझको क्या है? न तेरे पास पत्नी है, न लड़के हैं और न लडकी है, ये कोई दूसरी-तीसरी लडकिया लेकर बैठ गया है और कहता है कि मेरी लडकिया है। वहा कैंपमे जा। वे भी तेरी ही लड़कियां है। मै तुम्हारी यह बात सुनूंगा। हां, हंसूगा तो सही, क्योंकि अगर मै भाग भी गया तब क्या आप यहा रह जायंगे? यह घर तो दूसरेका है, मेरा नही है। हा, इस घरका मालिक ऐसा है कि उसने मुझको ही मालिक बना रखा है और यह कह रखा है कि जिसको तुझे रखना है रख और न रखना हो मत रख। मुसलमान तो अपने घरोंसे हटने लायक हैं कहा, उनसे बहुत लायक तो गांधी है। उसको यहांसे उठाकर कही भी पटक देगे तो उसकोतो इस तरहसे कोई पडने देगा नही। उसे तो कोई दूध देगा, कोई फल देगा और कोई खजूर दे देगा, इस तरह उसका निर्वाह तो हो ही जाएगा। नंगा वह रहनेवाला नही है, कपडे भी उसको मिल जायंगे। जब इस तरहसे मैने उनको कहा तो वे शर्मिंदा बन गए।

इसके पीछे मेरे पास जो लोग आए वे सिख भाई थे। उन्होंने कहा कि हम ऐसे सिख नही है जैसे यहां है। खूबीकी बात यह थी कि उनके पास कृपाण नही थी। मैंने पूछा तो नही कि उनके पास कृपाण क्यों नही है, लेकिन हाथोंमें कडा पहना हुआ था और मेरा खयाल है कि दाढी भी थी। उन्होंने कहा कि हम बहुत परेशानीमें पडे है। हम हजारा जिलेके है। मैने पूछा कि वहां आप क्या करते थे? उन्होने कहा कि वहां हमारे खेत थे और उनमें खेती किया करते थे। यहां भी हम खेती चला सकते है, अगर हमे जमीन और खेती करनेका सामान दे दिया जाय। मुझको दर्द हुआ कि वे बात तो ठीक ही कहते हैं। मैंने कहा कि आप पूर्वी पंजाबमे क्यों नही जाते? उन्होंने बताया कि पूर्वी पंजाबकी हकूमत

हमें कहती है कि जो लोग पश्चिमी पंजाबमें आए हैं उन्हींको हम ले सकते है। सब जगहसे अगर लोग आए तो उतनी जगह हम कहांसे दे सकते है ? चूंकि तुम लोग सरहदी सूबेके हो इसलिए केंद्रीय सरकारके पास जाओ। यह जवाब हमको वहां से मिलता है।

केंद्रीय सरकारके पास जो जमीन रहती नहीं है, लेकिन वह अगर इन लोगोंको जमीन दे दे और खेतीका काम ये करने लगें तो बहुत ही अच्छा हो। उनके लिए बैल, हल और बीज वगैरहका भी प्रबंध सरकार-को करना चाहिए। दिल्ली प्रांतमें इतनी जमीन है या नहीं, इसका मुझ-को पता नहीं है। लेकिन जो लोग हल जोतना चाहते है उनको कहीं भी बसा देना चाहिए। अगर हकूमत मेरे हाथमें होती तो मैंने उनके लिए एक अलग कैंप खोल दिया होता। वहांपर वे सब अपने लिए खाना-पीना पैदा करें। अगर वैसे नहीं तो हकूमत उनके खातेमें लिखकर इस कामके लायक पैसा दे दे। वे कहते है कि आज तो पैसे हमारे पास नहीं है, लेकिन हम मेहनती आदमी है और अगर हमें खेतीका काम मिल गया तो हम सब कुछ पैदा कर लेंगे, हम कोई शौकसे तो बैठेंगे नहीं। मुझको ऐसा लगता है कि ऐसे खेतिहर-लोग जो इधर-उधर पड़े है उससे हमारे मुल्क-का नुक्सान होता है। वे हमारे ही भाई है, इसलिए उनके लिए कुछ-न-कुछ करना चाहिए। हकूमतमें मैं किससे मिलूं, मुझको पता नहीं। मगर मैं आपकी मार्फत हकूमतको सुनाना चाहता हूं कि ऐसे लोगोंकी मदद करना हमारा काम हो जाता है। वे कहते है कि हम कहां रहे और क्या खाएं ? मैं तो कहूंगा कि उनके लिए कोई अलग कैंप होना चाहिए और जबतक वह न हो तबतक वे इन्हीं कैंपोंमें रहकर अपना गुजारा करें। अगर यहां उनको जगह नहीं मिलती है तो सारे हिंदुस्तान-में कहीं कोई खाली जगह मिलती हो वह हमारी ही जगह है। वे यह भी नहीं कहते कि हमें किसी मुसलमानका घर दिलवा दो। वे कहते हैं कि हमने जो मुसीबत भुगती वह हम दूसरोंको देना नहीं चाहते। हम तो गरीब लोग है। वैसे तो तगड़े है, लेकिन हमारा तगड़ापन किसीको डरानेको नहीं है। हमें तो ईश्वरसे डरकर बैठना है और जिस तरहसे जीवन बसर हो सकता है वैसे करना है। लेकिन मैंने कहा कि ये सब

चीजें केवल चंद दिनोंके लिए हैं। उन्होंने पूछा कि यह कैसे? जैसा कि यहां भी एक भाईने पूछा है कि आप कहते हैं कि पाकिस्तानसे आनेवालोंको वही जाना होगा और यहांसे गए हुए मुसलमानोंको यहां आना होगा, यह कैसे होगा? मैंने कहा कि यह आज नहीं तो कल होकर रहेगा। लेकिन उसकी शर्त यह है कि पहले हम लोग यहां अच्छे बने। हम ऐसा मान लें कि हमारा कोई दुश्मन ही नही है, मुसलमान भी हमारे दुश्मन नही है। कुछ लोग कहते है कि मुसलमान यहा भी फिफ्तकालम है। बेचारे क्या 'फिफ्तकालम' हो सकते है! हम यहां ऐसे पडे है कि हमको कोई सता नही सकता और अगर सताएगा भी तो भगवान् उसको देखेगा या हमारी हकूमत ही उसको मार डालेगी। आज अगर हम यहां ठीक हो जाते हैं तो कल सब काम ठीक हो सकता है। तब तो मै भी आजाद हो जाऊंगा। आज तो मै परेशान पडा हूं, मेरे लिए अब जीना भाररूप बन गया है। मै सोचता हूं कि क्यों मै यहां पडा हूं। अगर दिल्ली मान जाए तो मैं तगडा बन जाता हूं और तब मै भागता हुआ चला जाऊंगा पश्चिमी पंजाबमे, और जो मुसलमान यहांसे गए है उनको कहूंगा कि मैं तुम्हारे लिए सब सामान तैयार करके यहां आया हूं, आप अब जहां चाहें और जब चाहे तब वापिस जा सकते है। अगर ऐसा मौका आ गया, और कभी-न-कभी तो यह मौका आना ही है, क्योंकि करोडों आदमी कैसे एक-दूसरेके दुश्मन बनकर रह सकते है? हमारे यहां जो ३॥ या ४ करोड मुसलमान हैं, उनको मारो या यहांसे भेज दो, यह कोई बननेवाली बात नही है। यह तो ख्वाबमें भी नही आ सकता और न मै ऐसा ख्वाब चाहता हूं। लेकिन आज तो मैं भारस्वरूप पड़ा हूं। एक दिन वह था जब मेरी चलती थी, मगर आज नही चलती। तो क्या मै भाग जाऊं? मै जिंदा रहूं या मर जाऊं, लेकिन जितने ये दुःखी लोग है उनको कभी-न-कभी अवश्य अपने-अपने घरोंको वापिस लौटना है और पूरी शान तथा मर्दानगीके साथ, किसीसे लडनेके लिए नहीं, बल्कि अपने भाइयोंसे भेंट करनेके लिए। उसी तरहसे, मुसलमानोंको यहां आना है। केवल वही चीज हमको ज़िंदा रख सकती है और दूसरी तरहसे हम जिंदा नहीं रह सकते।

: १६० :

२६ नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाईने मुझे खत लिखा है। उसमे बबईके एक अखबारकी कतरन भेजी है। उस कतरनमे लिखा है, गाधी तो कांग्रेसका ही बाजा बजाता है। लोग वह सुनना भी नही चाहते। इस तरहसे कांग्रेस रेडियो वगैराका अपने ही प्रचारके लिए इस्तेमाल करेगी तो आखिरमे यहां हिटलरशाही कायम हो जायगी। मै कांग्रेसका बाजा बजाता हूं, यह बात सर्वथा गलत है। मै तो किसीका बाजा बजाता ही नहीं या फिर सारे जगतका बजाता हूं। उस कतरनमे यह भी कहा है कि अहिसाकी बात तो यो ही ले आते है, हेतु तो यही है कि हकूमतको अपना ही गान करना है। मै यह कहता हूं कि जो हकूमत अपना गान करती है वह चल नही सकती। और, मै तो धर्मकी ही सेवा करना चाहता हूं। धर्मसे संबंध रखनेवाली बाते ही आप लोगोको सुनाता हू। हो सकता है कि कुछ लोग मेरी बाते सुनना पसद न करते हों, मगर, दूसरे लोग मुझे लिखते है कि मेरी बातोसे उनका कितना हौसला बढता है। जिन्हे मेरी बातें नापसंद हों उन्हे कोई सुननेके लिए मजबूर नही करता। और, अगर आपका मन कही और है तो यहां बैठकर भी आप मेरी बात बिना सुने जा सकते हैं। आप लोग मुझे छोड़ देंगे, तो मै यहा प्रार्थना भी नही कराऊंगा और भाषण भी नहीं होगा। मै खास तौरसे रेडियो पर बोलने जानेवाला नही, मुझे वह पसद नही है। यहांपर भी मुझे क्या कहना है, यह मै सोचकर नही आता।

हमारी काफी औरतें पाकिस्तानमें पडी है, लोग उन्हे बिगाडते हैं। वे बेचारी ऐसी बनी है कि उसके लिए शर्मिदा होती है, मेरी समझमें उन्हें शर्मिदा होनेका कोई कारण नही। किसी औरतको मुसलमान जबर्दस्ती पकड़ लें और समाज उसको निकम्मी मानने लगे और भाई, मां, बाप, पति सब छोड़ दें तो यह घोर निर्दयता है। मै मानता हूं कि जिस

औरतमे सीताका तेज रहे उसे कोई छू नही सकता। मगर आज सीता कहांसे लावे? और सब औरतें तो सीता बन नही सकती। जिसे जबर्दस्ती पकड़ा गया, जिसपर अत्याचार हुआ, उससे हम घृणा करे क्या? वह थोड़े ही व्यभिचारिणी है। मेरी लड़की या बीबीको भी पकडा जा सकता है, उसपर बलात्कार हो सकता है, लेकिन मैं कभी उससे घृणा नही करूंगा। ऐसी कई औरतें मेरे पास नोआखालीमे आ गई थी। मुसलमान औरतें भी आई है। हम सब बदमाश बन गए हैं। मैने उन्हे दिलासा दिया। शर्मिदा तो बलात्कार करनेवालेको होना है, उन बेचारी बहनोंको नही।

एक भाई कहते है कि मान लीजिए कि कंट्रोल मिट जाय, देहातोंमे लोग अपने लिए अनाज पैदा करने लगें, गावके लोग फसल वगैरा काटनेके लिए एक-दूसरेकी अपने आप मदद करे तो अनाज सस्ता होगा; लेकिन अगर किसानको दाम देकर मजदूर लगाने पड़ेंगे तो दाम बढेगा। पहले तो यह रिवाज था ही, एक किसान दूसरे किसानोंको निमंत्रण देता था फसल काटनेका और साफ करके घरमें ले जानेका काम हाथोंहाथ खतम हो जाता था। आज हम वह रिवाज भूल गए है, मगर उसे वापस लाना चाहिए। एक हाथसे कुछ काम नही हो सकता।

फिर वह भाई यह भी कहते है कि मंत्रियोंमेसे कम-से-कम एक तो किसान होना ही चाहिए। हमारे दुर्भाग्यसे आज हमारा एक भी मंत्री किसान नही है। सरदार जन्मसे तो किसान है, खेतीके बारेमे कुछ समझ रखते है, मगर उनका पेशा बैरिस्टरीका था। जवाहरलालजी विद्वान् है, बडे लेखक है, मगर वह खेतीके बारेमे क्या समझे! हमारे देशमें ८० फीसदीसे ज्यादा जनता किसान है। सच्चे प्रजातंत्रमें हमारे यहां राज्य किसानोंका होना चाहिए। उन्हे बैरिस्टर बननेकी जरूरत नही। अच्छे किसान बनना, उपज बढाना, जमीनको कैसे ताजी रखना, यह सब जानना उनका काम है। ऐसे योग्य किसान होंगे तो मै जवाहरलालसे कहूंगा कि आप उनके मंत्री बन जाइए। हमारा किसान-मंत्री महलोंमें नही रहेगा, वह तो मिट्टीके घरमे रहेगा, दिनभर खेतोमे काम करेगा, तभी योग्य किसानोंका राज्य हो सकता है।

: १६१ :

२७ नवंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आपने देखा होगा, शायद देखोगे, क्योंकि देखा तो अभी कैसे होगा कि मै आज गवर्नर जनरलके पास चला गया था, अभी अखबारोंमे आ जायगा। और बादमें लियाकतअली साहबसे भी मिलने गया। ऐसा मौका आ गया दोनोंके पास जानेका। काफी बाते हुई और कुछ काम भी वे कर रहे है। लियाकत साहब बीमार तो हैं और मैने देखा कि बिस्तरमे ही उनको पड़ा रहना पड़ता है। छातीका दर्द उनको हो गया था और धड़कन भी होती है। वह तो अब ठीक हो गई है, लेकिन बहुत दुबले हो गए है। वे गवर्नर जनरलके मकानमें ही ठहरे हुए है, इसलिए मै वहा उनके पास चला गया था। जैसे जवाहरलालजी भी यहाके प्रधान मत्री है वैसे वे पाकिस्तानके प्रधान मंत्री है। तो वे, और वहाका जो अर्थमंत्री है उसका नाम मै भूल गया हू, सरदार पटेल और पीछे दो और, ये सब एकसाथ मिले और उन्होंने कुछ-न-कुछ कर भी लिया है। पूरा-पूरा तो उसका बयान मै नही दे सकता हूं। अगर वह सब हो जाय तो मुमकिन है कि आज इतनी भीडमें जो हम लोग पडे है और जिस परेशानीमेसे हम गुजर रहे है उसमेसे तो निकल पाए। लेकिन सब तो ईश्वरके हाथमें है कि क्या होनेवाला है और क्या नही। आखिर इन्सान तो सिर्फ कोशिश ही कर सकता है।

आपने यह भी देख लिया होगा कि शेख अब्दुल्ला साहब भी यहां आ गए हैं। जितने काश्मीरके लोग है वे तो सब उनको 'शेरे काश्मीर' कहते हैं। और वह है भी ऐसा ही। बहुत काम उन्होंने कर लिया है और सबसे आला दर्जेका काम तो उन्होने यह किया कि काश्मीरमे जितने हिंदू, मुसलमान और सिख रहते हैं उन सबको अपने साथ ले लिया है। तादादमें तो मुसलमान बहुत अधिक हैं और हिंदू और सिख तो मुट्ठीभर हैं, ऐसा हम कह सकते हैं, लेकिन तो भी उनको अपने साथ लेकर वे चलते

है। वे खुश न रहे ऐसा कोई काम वे नही करते। पीछे हमने देखा कि वे यहा आते हुए जम्मू भी चले गए थे। जम्मूमे हिंदुओंकी तरफसे ज्यादतिया हुई है और काफी ज्यादतिया हुई है। उनका पूरा-पूरा बयान तो हमारे अखबारोंमे नही आया। महाराजा साहब भी वहा चले गए थे और नए प्रधान मंत्री भी। तब वहा दो प्रधान मत्री है क्या, या कुछ और हैं, मजाकमे मैं उनसे पूछ रहा था। उन्होंने कहा कि मुझको भी यह पता नही, मगर इतना तो है कि मैं वहाका इनजाम कर रहा हूं। दो हो या एक हो। तो वे भी जम्मूमें चले गए थे। जम्मूमे जो कुछ हुआ वह महाराजाने करवाया या जो उनके नए प्रधान मंत्री है उन्होंने करवाया, इसका तो मुझको पता नही। लेकिन वहा हुआ और हमारे लिए यह बड़ी शर्मनाक बात है कि हम ऐसा करे। शेख अब्दुल्लाने यह सब देखकर भी अपना दिमाग बिगड़ने नही दिया और जम्मूमें जो हिंदू पड़े है उन्होंने भी उनका साथ दिया। पीछे उसमे उनको कहना भी क्या था? यह होते हुए भी उनको तो बताना है, काश्मीरको और सारे हिंदुस्तानको भी, कि यही तरीका है जिससे हिंदू, मुसलमान और सिख सब मिलकर रह सकते है और एक-दूसरेपर एतबार कर सकते है। तभी काश्मीर और हिंद दोनो एकसाथ रह सकते है। उनकी तरफसे कोशिश तो ऐसी ही हो रही है; लेकिन उसमे एक रुकावट है। वह पहाडी मुल्क तो है ही, चौदह हजार फुट तो शायद नही, लेकिन दस हजार फुट ऊंचा तो है। बहुत बर्फ वहां पडती है इसलिए एक जगहसे दूसरी जगह आना-जाना आराममे नही हो सकता। आरामसे तो पाकिस्तानमेंसे ही होकर जा सकते है। लेकिन कौन कह सकता है कि वे जाने दे या न जाने दे। इसके अलावा जो अफरीदी हमलावर है, या उनको पाकिस्तानके कहो, उनके साथ कुछ लड़ाई तो चल ही रही है। तब इस हालतमे काश्मीरके लोग वहासे होकर कैसे आवें? यों तो हिंद सरकारने उनको मदद भी भेज दी है। तब उनको सीधा रास्ता तो यूनियनमेंसे ही मिल सकता है। काश्मीरमें वैसे कोई बड़ी तिजारत तो नही है, लेकिन वहांके लोग उद्यमशील हैं और हाथके कारीगर हैं। फलोंका तो काश्मीर एक बड़ा बगीचा है लेकिन ये सब चीजें कौन वहांसे यहां लाए और कैसे लाए? हवाई जहाजसे

तो सब चीजें आ नही सकती, और जो बेचनेवाले हैं वे भी कैसे हवाई जहाजसे आएं ? ऐसे तो काम नही बन सकता। इसलिए वहां एक ही रास्ता है जो पूर्वी पजाबमें पठानकोटकी तरफसे है। है तो वह छोटा-सा ही रास्ता, लेकिन है। तब पूर्वी पंजाबमे जो हिंदू रहते है, वे इतने बदमाश हो गए है कि उस रास्तेसे कोई मुसलमान आ नही सकता। शेख साहब कहते हैं कि यही सबसे बडा खतरा है। शेख अब्दुल्ला तो एक बडा आदमी है, लेकिन वह कहते है कि हम भी अगर उधरसे जाते है, तो हमको भी बहुत दुश्वारी होती है। यह जरूरी नही कि कोई सिपाही ही हो, बल्कि आम लोग भी वहांके, यह पूछ लेते है कि तुम कौन हो, लाओ तुम्हारी पगडी उतारकर देखें तो कि चोटी भी है कि नही, और इसके बाद दूसरी-तीसरी चीजें भी पूछ लेते है। अगर वह हिंदू या सिख है तो खैर है और अगर मुसलमान निकला तो बस फिर खत्म हुआ। ऐसी हालत है वहां !

तब गवर्नर जनरल और ये जो चार लोग इकट्ठे बैठ गए है वे अगर कुछ कर लें तो अच्छा ही है, और कुछ कर भी लिया है। मगर उनके करनेसे क्या ? जब जनता बिगडी हुई है तो फिर कोई काम बनता नही है। मै तो पूर्वी पंजाबकी जनताको यह कहूँगा कि अब बहुत हो चुका, हमने कितनी खराबियां की, मगर अब तो भूल जाओ। या हमेशाके लिए यही होनेवाला है ? मै कहता हूं कि यह रास्ता बिलकुल साफ हो जाना चाहिए। उसमें हकूमतको भी पूरा काम करना है। अगर यह काम न कर सकी और हवाई जहाजोंसे थोडा-बहुत लश्कर वहां भेज दिया तो उससे क्या हुआ ? उससे क्या काश्मीरका व्यापार चलनेवाला है ? अगर नही तो क्या हिंदू यूनियन काश्मीरियोंका पेट भरता रहेगा ? यह तो हो नहीं सकता है। आज अगर हमारी हकूमतके पास करोड रुपये आ गए है तो क्या वह उनको इधर-उधर उडाती रहेगी ? सुनता हूं कि अब हकूमतमे हरएक आदमीको एक-एक सेक्रेटरी मिलनेवाला है। क्या होगा उसका, और क्या दरमाहा उस सेक्रेटरीको मिलनेवाला है, मुझको तो कुछ पता नहीं चलता। अगर इस तरहसे हम पैसे उडाते रहे तो हमारा जल्दी ही खात्मा होनेवाला है। हमारा मुल्क करोडपतियोंका नही है, एक गरीब मुल्क है, जहां लोग ताबेके पैसे भी बडी मुश्किलसे पैदा करते है। यहां जो करोडपति या ताजिर

(व्यापारी) लोग है, वे तो केवल मुट्ठीभर है । उनके पास भी जितना पैसा पडा है वही क्या है ? इस तरह अगर पैसा उडाया जाय तो वह भी एक मिनट-में खत्म हो सकता है । पीछे तो सारा हिंदुस्तान पडा है, उसका खर्च भी हमे चलाना है । हम पैसेका दुरुपयोग तो कर ही नही सकते। तब हकूमतको यह देखना होगा कि किस तरहसे यह रास्ता सुरक्षित हो सकता है जिससे कि कोई भी आदमी उस रास्तेसे आ-जा सके । काश्मीरमे बहुत खूबसूरत कपडे बनते है, वे आ सकते है, शाल आ सकते है, और भी जो चीजे कारीगर लोग बनाते है वे सब उस रास्तेमे आ सकती है । काश्मीरकी मेवा यहा आ सकती है । आज तो अगर काश्मीरका सेब खाना हो तो बहुत मुश्किल-से ही मिलेगा। काश्मीर भारतीय-यूनियनमे आ तो गया; लेकिन इस तरह-से वह कहातक हमारे साथ रह सकता है ? अगर काश्मीरको सुरक्षित रास्ता न मिले तो फिर क्या होगा यह मुझको भी पता नही है । अब एक तीसरी बात और कहकर आजका मामला तो मै खत्म करता हूं ।

अभी मेरे पास पाकिस्तानके 'डान' और 'पाकिस्तान टाइम्स' दोनों अखबार आ गए है । ये दोनो पाकिस्तानके अच्छे बडे अखबार है । जब 'डान' मे या 'पाकिस्तान टाइम्स' मे कुछ निकलता है तो हम यह नही कह सकते कि अरे, यह तो कुछ अखबार नही है । तब तो वहाके लोग भी कह सकते है कि 'हिंदुस्तान टाइम्स' मे जो लिखा है, वह क्या है, 'बंबई क्रानिकल' मे जो लिखा है वही क्या है ? यह तो एक निकम्मी बात हो जाती है । मै तो यह मानता हूं कि वे भी अच्छे अखबार है, उनको मुसलमान लोग पढते है और अच्छे-अच्छे मुसलमान उनको चलाते है । तो उनमे वे काठियावाडके मुसलमानोंके बारेमे लिखते है । जब सरदार जूनागढमे चले गए थे तब तो मुझको बहुत अच्छा लगता था यह देख-कर कि वहांके मुसलमानोंने भी उनका इस्तकबाल किया । वे कहने लगे, आप तो भले आए, हम सब परेशान हो रहे थे, अब शायद आरामसे रह सकेंगे । जब काठियावाडके सब राजा और प्रजा एक तरफ मिल गए हैं तब जूनागढ कहातक अलग जा सकता था ! इसलिए मुझको अच्छा लगा कि कुछ मारपीट भी न हुई और सारा मामला निपट गया। वे बिलकुल अहिंसापर तो कायम नही रहे, मगर जो हिंसा उन्होंने अख्तियार की थी

उसमें उन्होंने बहुत सोच-विचारकर काम लिया। मैं तो यह सब देखकर खुश हुआ था। लेकिन अभी सुनता हूं और 'डान' अखबारमें भी है कि काठियावाड़में मुसलमान आज आरामसे नहीं बैठ सकते हैं। ठीक मौकेपर एक मुसलमानका भेजा हुआ मुझको तार भी मिल गया है। काठियावाड़ ऐसा मुल्क है जहां मुसलमान बहुत आरामसे रहते थे और उनको कोई छूता भी नहीं था। वहां अच्छे और तगड़े मुसलमान भी थे और बलवाखोर भी थे। बलवा वे कोई आपस-आपसमें नहीं करते थे, बल्कि जीविकाके लिए कुछ कर लेते थे। आज उसी काठिया-वाड़में उनको ऐसा लग रहा है कि वे वहां रह सकेंगे कि नहीं। तब क्या काठियावाड़से सारे-के-सारे मुसलमान चले जाएं या उनको हिंदू लोग काट डालें? हैरान हैं वे सब-के-सब और मेरे लिए तो यह एक बहुत बड़ी दुश्वारी है, क्योंकि मैं काठियावाड़में पैदा हुआ हूं, वहांके सब राजाओंको जानता हूं। वहांपर तो जो मेरा लडका-सा ही सावलदास गाधी है वही जूनागढका सब कुछ होकर बैठ गया है। उसने एक आरजी हकूमत भी बना रखी है। इन लोगों की हकूमतके होते हुए काठियावाड़में ऐसा हो कि जिस मुसलमानने कुछ भी नहीं किया है उसको भी लोग मार डालें तो फिर यह आरजी हकूमत क्या हुई? जब लोग इस तरहसे कानूनको अपने हाथमे ले लेते है तो फिर मुसलमान कैसे वहां सही-सलामत रह सकते है? अगर यह पीछे सब जगह फैल जाए तब क्या हो, मै जानता नहीं। यह सब वहां हुआ है या नहीं यह भी नहीं जानता, लेकिन 'डान' मे जो लिखा है वह मैंने पढ़ा है और तार भी मेरे पास आ गए है। बाद-में मैंने चंद हिंदुओंसे भी पूछा और उन्होंने भी कहा कि हां, कुछ आग लगानेके मामले तो हुए है, कुछ लूट भी हो गई है, मगर किसीका खून भी हुआ कि नहीं यह हम नहीं जानते और मुसलमानोंकी औरते भी छीनी गई है कि नहीं यह भी हम नहीं कह सकते। लेकिन 'डान' तो लिखता है कि ये चारों बातें हुई है और अच्छे बड़े पैमानेपर हुई हैं। बहुत से तार मेरे पास आ गए थे, लेकिन मुझको एक ही तार बताया गया और दूसरे तार गफलत से नहीं बताए गए। शायद ऐसे पचास तो आगए होंगे,

मुसलमानोने इधर-उधरसे भेजे होंगे। और उनको हक है मुझसे यह कहनेका कि तुम्हारा लड़का वहांका सबकुछ बना हुआ है। लड़का जो कुछ करे उसकी जिम्मेदारी मै कैसे लू ? लेकिन इससे तो मै दुनियाको या उन मुसलमानोंको क्या समझा सकता हूं ? वे तो ठीक ही मुझको लिखते हैं। लेकिन मै लड़केको सुनाता भी कब ? आज ही तो मैने सब पढा है। इसलिए मै आपकी मार्फत, अपने लडकेको ही नही, सारे काठियावाडको सुनाना चाहता हूं कि अगर हिंदू वहांके ऐसे पाजी हो गए है—हिंदू ही हो सकते हैं; क्योंकि सिख तो वहां है ही नहीं, क्या हुआ अगर एक-दो वैसे काम करनेके लिए चले गए हों—तब काठियावाड सही-सलामत नही रह सकता। हमने जूनागढ़ लिया तो सही, मगर इस तरहसे हम उसको खोनेवाले है, ऐसे ही, जैसे कि हमने अपनी मुल्ककी आजादी ली तो सही, लेकिन खोनेके लिए ली। पीछे वे सुनाते है कि याद है सरदारने जूनागढमे क्या कहा था ? उसने कहा था कि अगर मुसलमानका एक बच्चा भी होगा तो उसके एक बालको भी कोई छू नही सकेगा, बशर्ते कि वह काठियावाड, यानी हिंद यूनियनके प्रति वफादार बनकर रहा। अगर मुसलमानकी एक भी छोटी लडकी है और उसको कोई छूता है तो मैं देख लूगा। वह तो ऐसा कह सकते थे, क्योकि एक तो सरदार, और दूसरे हिंदुस्तानके गृहमंत्री थे। उनको तो कहनेका हक था। उन्होंने कहा तो, लेकिन वह अब कहां गया, मैं पूछता हूं। मेरे दिलमे चुभता है कि काठियावाडमे ऐसा हो सकता है और वहांके लोग इस तरह दीवाने बन सकते है। हमारा धर्म गया, कर्म गया और इस तरहसे हमारा मुल्क भी चला जायगा। मेरा तो यही धर्म था कि मैं आप लोगोंको यह सब बता दूं। हमारे अखबारोंमें तो ऐसी चीजे आती नही है। मेरे पास ये सब आ जाती है। मेरा धर्म तो था कि मै इतनी तहकीकात करता, लेकिन मेरे पास कहां इतना वक्त है ! इसलिए जैसे मैंने सुना वैसे ही मैने आपको कह दिया। मैं तो जब लियाकतअली साहबसे मिला तब भी मैंने कहा कि अगर आपकी इजाजत हो तो एक बात पूछना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि पूछो। तब मैने कहा कि क्या आप काठियावाडके बारेमें कुछ जानते है ? उन्होंने कहा कि मै सब कुछ जानता

हूं। ऐसा वहां हुआ है और यही चारों बातें हुई हैं, लेकिन कितने पैमाने-पर हुई, यह मै नही कह सकता। वे तो पाकिस्तानके प्रधान मंत्री है। इसलिए उन्होंने तो सब साफ-साफ कहा, हालाकि मै तो दबी जबानसे ही बात कर रहा था। तब मैंने सोचा कि आज शामको मै इसको जरूर कह दूगा। मेरे दिलको इस बातसे कितनी चोट पहुंची है।

काठियावाड मेरा घर है। जब घर ही इस तरहसे जल जाता है तो फिर किसीको कहनेका क्या मौका रह जाता है! तब दिल्लीवालोंको मैं क्या सुना सकता हूं? मेरे पास तो कुछ ऐसा बन गया है कि इर्द-गिर्द चारों ओर यही चलता है। तब फिर उसमे मैं कैसे साबूत रह सकता हूं। जो इन्सान है और समझदार है वह इस तरहके वातावरणमें साबूत रह नही सकता। यह मेरी दुःखकी कथा है या कहो सारे हिंदुस्तानके दुःखकी कथा है, जो मैंने आपके सामने रखी है।

: १६२ :

२८ नवबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आप जानते है कि आज गुरु नानक साहबका दिन है। मुझको भी किसीने निमंत्रण तो भेज दिया था, मगर उस वक्त तो मैने कह दिया था कि आनेके लिए तो मुझे आप माफ करेगे। लेकिन आज बाबा विचित्र-सिह मेरे पास आ गए और उन्होंने कहा कि आपको तो आना ही चाहिए। वे १० बजे मिले थे और एक घंटेमें ही जाना था। तो फिर मैंने समझा कि अब मुझको जाना ही चाहिए। अपनी ओरसे मैने तो कुछ किया नहीं है, लेकिन आज सिख भाई मुझसे नाराज तो हैं। हां, मैंने उनको एक कडवी घूट पिलानेकी चेष्टा की है। यह तो है, लेकिन ऐसे ही बनता है दुनियामें। तब उन्होंने कहा कि कुछ भी हो, आपको तो वहां आना ही चाहिए। वहां हजारों सिख भाई-बहनें होंगी और उनमें काफी दुःखी सिख भी पड़े होंगे, जो आपकी बात सुनना चाहते हैं। तब मैंने कहा कि

अच्छा, मुझको ११ बजे ले जाइए। ११ बजे शेख अब्दुल्लाको भी अपने साथमें लेकर आए। उनको भी वहीं ले जानेवाले थे। मैंने कहा कि शेख अब्दुल्ला कैसे वहां जा सकता है; क्योंकि आज तो ऐसा बन गया है न कि सिख और मुसलमान तो एक-दूसरेको बर्दाश्त ही नहीं कर सकते; लेकिन कुछ भी हो, शेख अब्दुल्लाने एक बहुत बडा काम कर लिया है। काश्मीर-में उन्होंने हिंदू, सिख, और मुसलमानको एक साथ रखा है और एक साथ मरना और एक साथ जीना, ऐसा कर लिया है। तब मैंने सोचा कि शेख अब्दुल्लाको भी ले जाना चाहिए। इसलिए मै उनको अपने साथ ले गया। मुझको यह बड़ा अच्छा लगा। हजारों सिख भाई-बहनें वहां थी। मैंने कुछ थोड़ा-सा ही कहा, लेकिन शेख अब्दुल्ला तो काफी बोला और सब लोगोंने बहुत ध्यानसे सुना। आंखसे भी कोई कुछ बताता नहीं था, आवाज तो कौन करनेवाला था! क्योंकि हम लोगोंको तो निमंत्रण देकर वे ले गए थे। आखिर सिख बहादुर तो है ही, इसलिए यह सब अच्छी तरहसे हो गया। मैंने सोचा कि आपको इतनी खबर तो देनी ही चाहिए।

मेरे पास बगालसे एक खत आ गया है। वहां जो मुस्लिम चेंबर ऑव कामर्स है उसका वह खत है। जवाब तो मैं नही दे सकता हूं, लेकिन सोच लिया है और पीछे घनश्यामदासको भी मैंने पूछा कि आप कुछ इस बारेमे जानते है। उसने बताया कि यह जो मुस्लिम चेंबर ऑव कामर्स है उसको गवर्नमेटके साथ ताल्लुक करना है, गवर्नमेंटके साथ खतोकितावत करना है। लेकिन हकूमत तो सबकी है, हिंदू, मुसलमान, पारसी सबकी। तब मुसलमान एक चेबर बनाए, हिंदू दूसरा, पारसी तीसरा और अंग्रेज चौथा, तो ऐसा कैसे वन सकता है। इसलिए सरकारने इन्कार कर दिया। तब वे लिखते है कि कैसा गोलमाल करते है कि मारवाड़ी चेंबर रह सकता है। यूरोपियन चेंबर रह सकता है, लेकिन मुस्लिम चेंबर है, वह नही रह सकता। मुझको उनकी यह बात अच्छी लगी और मेरे दिलको चोट लगी। अगर सरकार मुस्लिम चेंबरके साथ कोई ताल्लुक नहीं रखती तो पीछे मारवाड़ी चेबरके साथ भी नही रख सकती और यूरोपियनके साथ भी नही होना चाहिए। अबतक यह सब था और यूरोपियन चेंबर तो

इसलिए भी बन गया था कि वे लोग हकूमतमे थे। यहां यूरोपियनोंकी हकूमत चलती थी, तभी तो वाइसराय उनके प्रेसिडेंट बनते थे। पीछे तो ऐसा बन गया था कि बडे दिनोंके अवसरपर उनको कलकत्ता तो जाना ही होता था, तो वहा यूरोपियन चेंबरमे एक बडा व्याख्यान भी दे देते थे। लेकिन अब वह सिलसिला रह नहीं सकता। जो यूरोपियन है वह अलग करें, मुसलमान अलग और मारवाडी अलग, इस तरहसे कैसे हो सकता है! केवल एक इंडियन चेंबर ही बन सकता है। अगर हिंदू, मुसलमान और पारसी सब अलग-अलग अपने व्यापारिक चेंबर बनाने लगे तो फिर हिंदुस्तानकी आजादी किसके लिए होगी? और यूरोपियनोंको तो खसूसन आज झुक जाना चाहिए। उनको अलग रहकर कोई चीज करनी ही नही चाहिए। वे कहें कि हमको कोई अलग हक नही चाहिए। जो दूसरोंके हक हैं वही हमारे हक है। तब आजाद हिंदुस्तानकी यह एक बडी भारी निशानी बन जाती है। यूरोपियन चेंबरवाले हर साल वाइसराय साहबको बुला लेते थे, लेकिन आज मेरी निगाहमें तो वे वहाके प्रधान मंत्रीको या उप-प्रधानमंत्रीको या ऐसा कहो कि लार्ड माउंटबेटन साहबको भी अपने यहां बुला नही सकते है। हा, एक यूरोपियनकी हैसियतसे वे वहां यूरोपियनोंसे मिलने जा सकते हैं। मगर चेंबरकी हैसियतसे वे माउंटबेटन साहबको नही बुला सकते। मैं तो बहुत अदना आदमी हूं, लेकिन मेरी राय यह है कि इसमें मुझको शक नही। इसी तरहसे जो मारवाड़ी चेंबरके लोग है वे हकूमतसे किसी आदमीको बुला नही सकते है वैसे मारवाडी मारवाड़ियोंकी हैसियतसे किसीको भी बुला सकते हैं, मगर चेंबरकी तरफसे नही। उन सबकी हस्ती सारे हिंदुस्तानकी हस्तीके साथ है। मुसलमान भी यहां कोई अलग कौमकी हैसियतसे नही रह सकते। हिंदी होकर रहें। इसी तरहसे जो सिख हैं वे, जो हिंदू है वे, और यूरोपियन है वे भी यहां हिंदी होकर ही रह सकते हैं। वे सब हिंदुस्तानके वफादार होकर रह सकते हैं। दूसरा कोई स्थान मैं उनके लिए नहीं पाता हूं। इसलिए मैंने सोचा कि जो अहम बात है उसको तो मैं उनको कह दूं। मैं यहांसे लिखूं और पीछे वह उनके पास पहुंचे, इससे पहले अच्छा है मेरी आवाज उनतक पहुंच जाय। मुसलमान अगर ऐसा

कहें कि वे राजनैतिक दृष्टिसे अलग रहेगे और दूसरी तरहसे भी, तो यह कोई चलनेवाली बात नही है। जो यूरोपियन है, वे क्रिस्टी बनकर रह सकते है और क्रिस्टीधर्ममे जो खूबियां है उनका वे पालन कर सकते है। यह तो उनका सामाजिक या धार्मिक क्षेत्र हुआ। लेकिन जहातक राज्य-व्यवहार या राज्य-प्रकरणका संबध है उसमे वे सब एक ही-जैसे माने जा सकते है। उसी तरह व्यापार तो सबके लिए है ही। तब उसमें मारवाडी कहे कि हम सब खा जाएं, गुजराती कहे हम खा जाएं और पंजाबी कहे हम खा जाएं, तो पीछे बाकी सारा हिंदुस्तान क्या खाएगा? ऐसे हमारा काम निपटता नही है।

एक चीज तो कहनी मै भूल गया, जो भूलनी नही चाहिए। वहां सिख-सभामे तो मैंने कह दिया था, लेकिन यहां भी जो सिख है या हिंदू भी है, क्योंकि जो बात एकके लिए सत्य है, वह दूसरोके लिए भी है, तो मै कहूंगा कि आज सिखोका नया दिन है, ऐसा मानना चाहिए। इस-लिए आजसे ही सिखोका यह धर्म हो जाता है कि वे सब लोगोंको अपना भाई-भाई समझे। गुरु नानक साहबने कोई दूसरी बात सिखाई ही नही। वे तो मक्का शरीफ भी चले गए थे और गुरु ग्रंथ साहबमे भी काफी लिखा है। गुरु गोविंदने क्या किया था? बहुतसे मुसलमान उनके शागिर्द थे और उनको रखनेके लिए या उनकी हिफाजतके लिए उन्होंने कई अन्य लोगोको मारा भी। ऐसा वह नहीं करते थे कि एक सिखको बचाने के लिए दूसरोको मारा हो। तलवार उन्होंने ली तो थी, लेकिन उसमे एक मर्यादा रख दी थी। तब मुसलमानोंने चाहे कुछ भी किया हो, लेकिन हमे उनकी नकल नही करनी। हम लोग सब शरीफ रहे और अपने धर्मका पालन करे। आज जब मै वहां सिख-सभामे बोलने गया तो मुझको तो इस बातका बहुत ही दर्द हुआ कि रास्तेमें मुझको एक भी मुसलमान नही दिखाई दिया। चांदनी चौकमें एक भी मुसलमान न दिखाई देता हो, इससे बड़ी शर्मकी बात हमारे लिए और क्या होगी? मैंने देखा कि वहा आदमियोंकी बहुत भीड़ थी और मोटरोकी तो लंबी-लबी कतार चलती थी। लेकिन उनमें कोई मुसलमान नही था। सिर्फ एक मुसलमान शेख अब्दुल्ला मेरे पास

बैठे थे। जब ऐसी हालत है तब हमारा काम कैसे निपट सकता है ?

एक भाई मुझको लिखते है कि जो सोमनाथ मंदिर था उसका जीर्णोद्धार होगा। उसके लिए पैसा चाहिए और वहा जूनागढ़से जो आरजी हकूमत सावलदास गाधीने बनाई है, उसमेसे वे ५० हजार रुपया उसके लिए दे रहे है। जामनगरने एक लाख रुपया देनेको कहा है। सरदारजी आज जब मेरे पास यहा आए तो मैंने उनसे पूछा कि सरदार होकर क्या तुम वहां ऐसी हकूमत बनाओगे कि जो हिंदू-धर्मके लिए अपने खजानेमेसे जितने पैसे चाहे निकालकर दे दे। हकूमत तो सब लोगोंके लिए बनाई गई है। अंग्रेजी शब्द तो उसके लिए 'सेकुलर' है, अर्थात् वह कोई धार्मिक सरकार नही है, या ऐसी कहोंकि वह किसी एक धर्मकी नहीं है। तब वह यह तो कर नहीं सकती है कि चलो, हिंदुओंके लिए इतना पैसा निकालकर दे दे, सिखोंके लिए इतना और मुसलमानोके लिए इतना। हमारे पास तो एक ही चीज है और वह यह कि सब लोग हिंदी है। धर्म तो अलग-अलग व्यक्तिका अलग-अलग रह सकता है। मेरे पास मेरा धर्म है और आपके पास आपका।

एक भाईने और लिखा है, एक पर्चेमें, और अच्छा लिखा है। वह कहते है कि अगर जूनागढ़की हकूमत सोमनाथके जीर्णोद्धारके लिए पैसा देती है या यहाकी मध्यवर्ती हकूमत कुछ देती है तो वह एक बडा अधर्म होगा। मै मानता हूं कि वह बिलकुल ठीक लिखा है। तब मैंने सरदारजीसे पूछा कि क्या ऐसी ही बात है ? उन्होंने कहा कि मेरे जिंदा रहते हुए यह बननेवाली बात नहीं है। सोमनाथके जीर्णोद्धारके लिए जूनागढकी तिजोरीसे एक कौडी नही जा सकती। जब मेरे हाथसे यह नही होगा तो सांवलदास बेचारा क्या करनेवाला है ! सोमनाथके लिए हिंदू काफी पडे है जो पैसा दे सकते है। अगर वे कंजूस बन जाते हैं और पैसा नही देते तो वह ऐसे ही पडा रहेगा। डेढ़ लाख तो हो गया है और जामसाहबने उसके लिए एक लाख रुपया दे दिया है। रुपयेका इंतजाम तो हो जायगा।

एक बात और मेरे पास आ गई है। आपने देखा होगा कि पाकिस्तान-में हमारी लड़कियोंको मुसलमान छीन ले गए है। उनको छुड़ानेके लिए

कोशिश हो रही है, और वह होनी ही चाहिए। हरएक लडकीको जो कि वहां अबतक जिंदा पडी है, वापिस लानेकी कोशिश की जाय। अगर जुल्म और जबर्दस्ती करके उसे उन्होंने बिगाड दिया है, तो क्या उसका धर्म और कर्म सब खत्म हुआ? मै तो ऐसा मानता नही हूं और कल मैने आपको इस बारेमे बताया भी था। जबर्दस्तीसे किसीका धर्म नही बदला करता। लेकिन उस लडकीको लानेके लिए कुछ पैसे दो, ऐसी भी बात आज चलती है। कुछ गुंडे आ जाते है और कहते है कि लाओ, एक-एक हजार रुपया फी लड़की दे दो, हम उनको ला सकते है। तब क्या यह कोई व्यापार बन गया है? अगर मेरी इन तीन लडकियोंमेसे एकको कोई उठा ले जाता है और वह पीछे मेरे पास आकर कहे कि एक हजार या एक-सौ ही दे दो, मै वापस ला दूगा, तो मै जवाब दूगा कि तू उसको मार डाल। अगर ईश्वर उसको बचाना चाहते है तो मेरी लडकी मेरे पास आ जायगी। लेकिन क्या तू उसके लिए सौदा करना चाहता है? एक तो लुटेरा बनता है और फिर दंगाबाजी करता है। अपने धर्मको तो तूने छोड दिया और चूकि मेरी लडकी है, इसलिए अब मुझको दबानेके लिए आया है। मै एक कौडी नहीं देनेवाला हूं। इसी तरह सेकोई भी मां-बाप अपनी लडकियोंके लिए ऐसा सौदा न करे। उनकी लड़की खुदाके पास पडी है। ईश्वर सब जगह है। अगर एक लडकीका पति मर जाता है तो वह लड़की कहां जायगी? हां, यह बात दूसरी है कि अगर लड़कीको वहांसे आना है और किराया नहीं है, तो किराया दे देते है। लेकिन अगर वह गुडा आता है और कहता है कि इतने पैसे दे दो तो कोई बननेवाली बात नही है। इसी तरहका एक दृष्टांत मै दे देता हूं वहांका, और यहांका भी; क्योंकि यहां हमने भी तो ऐसा ही किया और मुसलमान लडकियां छीनी हैं। तब पूर्वी पंजाबकी सरकार या मध्यवर्ती सरकार जिन्ना साहबसे कहे कि एक लाख रुपया दे दो, जितनी मुसलमान लड़किया हमारे कब्जेमे है सब दे देंगे, तो क्या हमारी हकूमत ऐसा पाजीपनका काम करेगी? मैं तो हकूमतको एक कौडी भी नही दू। एक तो उसके यहां ऐसा नीच काम हुआ है और पीछे उस नीचताके बदलेमें वह पैसा भी मांगे! हकूमतको तो मेरे पास आकर तोबा करनी चाहिए और मुझ-

को लडकी भी वापिस करें और उसके साथ ही कुछ इनाम भी दें। ऐसे अगर हम शुद्ध न रहे और हम वहादुर न बने तो फिर हमारा काम अच्छी तरहसे होनेवाला नही है।

कल काठियावाडकी बात मैंने कही थी। मैंने तो जो पाकिस्तानके अखबारोंमे पढ़ा और पीछे कुछ हिंदुओंने भी सुनाया वही आपको कह दिया था, लेकिन आज जब सरदारजी मेरे पास थे तब मैंने उनसे पूछा। मैंने कहा कि जब आप वहां गए तब तो आपने बडे-वडे व्याख्यान दिए थे कि वहां एक भी मुसलमान लड़के या लडकीको कोई छू भी नही सकेगा। मगर अब मै सुनता हूं कि उनको लूटा गया, मारपीट भी हुई, उनकी जायदाद वगैरा जला दी गई और उनकी लड़कियोंको भी उठा ले गए। उन्होंने कहा कि जहांतक मै जानता हूं और ठीक जानता हूं कि वहां एक भी मुसलमानको मारा नही गया और एक भी मुसलमानका मकान जलाया नही गया और लूटा भी नही गया। हा, इतना तो कुछ हो गया, लेकिन वह तो उनके पहुंचनेसे पहले की बात हुई, जब कि वहां यह सब गोलमाल चल रहा था। तब कुछ लुटमार भी हुई और शायद एकाध मकान जलाया भी गया है, लेकिन ये दो बातें तो तब भी नही हुई, न तो किसी को मारा गया और न किसी लडकीको उठाया गया। वहां तो मध्यवर्ती सरकारका एजेंट या कोई कमिश्नर वगैरा भी रहता है तो उसको हुक्म चला गया है कि इस तरहकी चीज नही हो सकती, तुमको पूरा बंदोबस्त करना है। कोई भी, मुसलमानको वहां छू नही सकता, लूटना और मारना तो दूर रहा। बादमें वहा ऐसा कुछ नही हुआ। मैने कहा कि क्या मैं इस बातको शामकी सभा में कह सकता हूं। उसने कहा कि बड़ी खुशीसे तू कह सकता है, अगर कुछ हुआ है तो मै उसके पीछे पड़ूंगा। उसने यह भी कहा कि वहां जो कांग्रेसी हिंदू हैं उन्होंने अपनी जान खतरेमें डालकर भी मुसलमानोंको और उनकी मिल्कियत वगैराको बचाया। वहां कोई गुंडाबाजी चल नहीं सकती। जबतक मै वहां पड़ा हूं और गृह-विभाग मेरे हाथमें है तबतक मैं ऐसा कभी भी नही होने दूंगा। मैं तो यह सब सुनकर राजी हुआ और मैंने पूछा कि क्या मैं यह सब लोगोंको बता दूं। उसने कहा कि बड़ी खुशीसे, और मेरा नाम लेकर तू कह सकता है।

मुझे कितनी खुशी हुई इस वातकी कि कल ही हमने ऐसा कहा था और आज मुझको यह खबर मिल गई ।

: १६३ :

२६ नवंबर, १९४७

भाइयो और वहनो,

मैने आपसे कल कहा था कि सिखोंके लिए तो कलका दिन एक बहुत बडा अवसर था, लेकिन हमको भी वह ऐसा ही मानना चाहिए । अगर सचमुच कलसे उन्होंने एक नया जीवन शुरू किया है और जो गुरु नानक सचमुच हमारे सबके लिए रख गए है, उसके मुताबिक वे चलना चाहते हैं तो जो चीजें आज दिल्लीमे बन रही है, वे होनी नही चाहिए ।

मैने आज तो अखबारोंमें भी पढ लिया है और यों भी मैंने सुन लिया था कि दिल्लीमें काफी लोग शराब पीते है । शराब पीनेवाले क्या-क्या कर सकते है, यह तो हम जानते ही हैं । तो वे कहते है कि अब तो शराबका मामला बडा कठिन हो गया है और दिल्लीमें वह बहुत फैल गया है, यहां-तक कि उसको काबूमे लाना बहुत मुश्किलकी बात हो गई है । अगर कल-से एक नया पन्ना खुल गया है तो यह होना चाहिए कि जो शराबका दौर पहले चलता था वह अब कम हो जाना चाहिए । शराब पीकर तो हम दीवाने ही बन सकते है । तब शराब क्या पीना था ! सब चीजें तो मैं आपको बताऊं भी क्या, मेरे पास तो न जाने क्या-क्या आ जाता है ।

एक तो यह चीज हुई और दूसरी, उसमे कुछ तो हुआ है, ऐसा कहते हैं—वह यह कि जिन मस्जिदोंमें हमने नुकसान किया था, वह तो है, लेकिन जहां मस्जिदको मंदिर बना लिया था, वहां अगर पुलिस या मिलि-टरीकी चौकी पडी है तब तो वह जैसी थी वैसी ही बद रहती है । लेकिन मुझको तो वह भी चुभेगा, क्योंकि अगर नया पन्ना हमने कल खोल लिया है तब यह कैसे बन सकता है ? जिन मस्जिदोंको मंदिर बना रखा है, उसमें

सिखोका काम तो नही हो सकता। लेकिन सिख एक बड़ी कौम है, और वे अगर यह निश्चय कर लेते है कि हमको तो आज से पाक ही बनना है और पाक काम ही करना है तो पीछे उसका हिंदुओपर भी असर पडता है, इसमे मुझे थोडा-सा भी शक नही है। तब सिख लोग तो सचाई और हकके फैलानेवाले बन जाते है और उनका पेशा ही यह बन जाता है कि हम तो हर जगह अमन चाहते है, दूसरा तो कुछ है ही नही। अगर ऐसा हो जाता है तो फिर शक्ल दूसरी ही बदलनेवाली है। अतः जिन लोगोंने मस्जिदोको मंदिर बनाया है उन्हे वहासे मूर्तिया उठा लेनी चाहिए और जो मस्जिद है, उसको मस्जिद-जैसी ही रखना चाहिए। अगर ऐसा बन जाए तो फिर जो पुलिस या मिलिटरी हम वहां रखते है उसकी दरकार भी क्यों रहेगी। जब सब लोग भले हो जाते है तो पुलिसकी दरकार ही नही रहती।

एक तीसरी चीज और है और वह यह कि हमारी काफी लडकियोंको पाकिस्तानमे लोग उडा ले गए है। कहा ले गए है वे, इसका तो हमे कुछ पता ही नही है। तो कल मैंने कहा था कि एक कौडी भी हम किसी लड़की-को खरीदनेके लिए न दे। जिन्होने हमारी लड़कियोको उडानेका गुनाह किया है वे उनको वापिस दे दे और उनके साथ-साथ पश्चात्ताप भी करें। हम उसके लिए पैसा दे यह बन नही सकता है। लेकिन एक बयान हमारे लिए भी मेरे सामने आता है और वह तो बहुत खतरनाक बयान है। वे कहते हैं कि पूर्वी पंजाबमे हम जिन मुस्लिम लडकियोंको अपने पास रखकर बैठ गए है, उनका हम बेहाल करते है। मैं नही समझ सकता कि हम इन्सानियतसे यहांतक गिर गए है! मुझसे तो यह बर्दाश्त होता नहीं है, यह मै कबूल करता हूं। उन लडकियोंको तो हमें अपनी मां या अपनी लडकियो-जैसी ही समझना चाहिए। जो मुसलमान लडकी है तो वह मेरी ही लडकी है। तब मेरी जो ये लडकी हैं, इनका कोई बेहाल करे, और मै मौज उड़ाऊं, जिदा बना रहूं और खूब खाऊं-पीऊं तो यह कैसे कर सकता हूं। जिन भाईने यह खबर दी है उसमें मुझको लगता है कि कुछ-न-कुछ अतिशयोक्ति है। लेकिन अतिशयोक्ति मानकर उसे भूलना तो नही चाहिए और पीछे अगर उसमें अतिशयोक्ति है भी

तो अच्छा ही है, क्योंकि उससे हमको सोचना तो पड़ेगा कि क्या इन्सान यहां-तक भी गिर सकता है। वह चीज तो ऐसी है कि जो हमारे अंदर कपन पैदा कर दे। तो कलसे हमने एक नया पन्ना खोल दिया है, क्योंकि जब सिखोंने खोल दिया तो हिंदुओंने भी खोला और कहो कि मुसलमानोंने भी। लेकिन मुसलमानोंको तो भूल जाओ, क्योकि यूनियन में तो हमने उनको लाचार बना दिया है। लेकिन हिंदू और सिख तो लाचार नही हैं। तब उनको बराबर यह सोचना है कि क्या करना चाहिए। हां, यहां तो हम ऐसा करते नहीं है। लेकिन कही भी अगर कोई गुनाह करता है तो मै गुनहगार बन जाता हूं, ऐसा मुझको लगता है और आपको भी ऐसा ही लगना चाहिए। मैने अगर कुछ गुनाह किया है तो आप भी यही सोचें कि गाधीने गुनाह किया तो हम लोग भी गुनहगार है। हम ऐसे ओत-प्रोत बनें कि जैसे एक समुद्र-के बिन्दु होते है। अगर समुद्रके बिन्दु अलग-अलग होकर रहे तो वे सूख जाते हैं, मगर जब वे समुद्रमे ही रहते है तो वे सब मिल जाते है और बड़े-बड़े जहाजोको भी अपनी छातीपर उठा लेते है। जैसे समुद्र का हाल है वैसे हमारा है। आखिर हम भी तो मनुष्योंका समुद्र है। अगर एकने बुरा किया है तो सबने किया। पीछे ऐसा होनेसे वह बुराई मिट जाती है। हम सबको जाग्रत हो जाना चाहिए। इसलिए मैंने आपको इतनी चीजे तो कही, लेकिन मैं अब इसके बाद कंट्रोल पर आना चाहता हूं।

चीनीपरसे तो कंट्रोल हट गया और मेरी उम्मीद तो ऐसी रहती है कि कपडोंपर और खुराकपर जो दूसरे-तीसरे कंट्रोल है, वे भी सब छूटने ही चाहिएं। लेकिन वे कैसे छूटें और उनके छूटनेके बाद हमारा धर्म क्या हो जाता है? चीनीका तो कंट्रोल छूट ही गया, इसलिए पहले तो मै उसकी बात कर लू। अभी तो चीनीके बड़े-बड़े कारखाने हैं, उनके लोग ऐसा न करें कि चलो, अब तो हमें छुट्टी मिल गई है, इसलिए हम जितने पैसे लोगोंके पाससे छीन सकते हैं उतने छीन लें। अगर वे चीनीका दाम बढ़ा दे तो पीछे सब लोग कंगाल हो जायंगे। यह तो अच्छी बात है कि चीनी खानेवाला सारा हिंदुस्तान तो नहीं है। उनको कुछ खाना है तो गुड़ खाना चाहिए और गुडपर तो कोई अंकुश वगैरा है ही नही। गुड़को

सो देहाती लोग आरामसे अपने-अपने घरोमें बना सकते है, लेकिन चीनी तो वे नही बना सकते। उसके लिए तो हिदुस्तानमें बडे-बड़े यंत्रालय बने है और जो लखपति-करोडपति लोग है। वे कुछ मजदूर रखकर उनमे चीनी बनाते है। लेकिन गुड तो जहा भी गन्ना पैदा होता है वहा आम बन सकता है। और फिर गुड तो बडा खाने लायक होता है, अगर वह शुद्ध बना है तो। बचपनमे मेरे पिता मुझको ले जाते थे या पिताके पास जो दूसरे नौकर रहते थे, उनके साथ मै चला जाता था उन देहातोमे जहां गन्ना पैदा होता है। तो वहाके लोग हमे बिलकुल ताजा और स्वच्छ गुड़ खानेके लिए देते थे। तब तो वह एक खुराक जैसा बन गया, मगर चीनी खुराक नही बन सकती। तब गरीब लोग तो गुड खाएं, लेकिन आज उनमेसे कुछ चाय पीनेवाले भी तो बन गए है और पीछे चायमे वे गुड नही, बल्कि चीनी डालते है। मै तो लोगोंको यह सिखा दूं कि उसमें गुड़ डालो, लेकिन मेरी वे माननेवाले थोड़े ही है! तब अगर चीनीका दाम बढ़ता है तो वे सोचें कि चीनीपर भी अंकुश रहता तो ही अच्छा था, हमे इतने दाम तो देने पडते। ऐसी हालतमे जितने चीनीके व्यापारी या कारखानेदार है उनका यह परमधर्म हो जाता है कि आपसमे मिलकर कुछ ऐसी व्यवस्था करे कि जिससे सारा हिदुस्तान यह देखे कि आज हमको आजादी मिल गई है तो इस आजादीमे हम केवल शुद्ध कौडी ही कमाएंगे। इस आजादीमे हम लोगोंको दगा नही देंगे और धोखेबाजी भी नही करेंगे, जो भी सड़ान या गंदगी है उसको निकाल बाहर करेगे। अगर वह नही होता है तो मुझको सुनना ही पड़ेगा, क्योंकि आखिर काफी काम मैंने इस-परसे कंट्रोल हट जानेके लिए किया है और अभी भी कर रहा हूं। चीनीके व्यापारी और कारखानेदार अगर अपने मुनाफेके टके बढा देते है तो फिर चीनीका दाम बढ़ता ही है। अगर वे सौमेंसे पांच लेते है, तब तो वह शुद्ध कमाई ही मानी जायगी और अगर दस या बीस फी सदी अपनी जेबमे डालते है, तो वह शुद्ध कौड़ी नही कही जा सकती। सौमेंसे पांच बहुत काफी है, उससे अधिक तो लेना नही चाहिए। तब जो दूसरे कंट्रोल है वे तो अपने आप ही उड़ जाते है। हकूमतको यह न कहना पडे कि तब तो सब कहते थे कि अंकुश उडा दो और अब वह उड़ा तो दिया, लेकिन जो गरीब

लोग हैं वे क्या खायंगे ? गरीबोको तो वह मिलती ही नही है । ऐसा नही होना चाहिए । जो कारखानेवाले पडे है उनको स्वच्छ बनना है और आपसमे मिलकर एक मंडल बना लें और एक ही भाव बाध दें । उससे ज्यादा कोई भी कारखानेदार न ले । लेकिन ऐसा भी नही होना चाहिए कि जो गन्ना बोनेवाले किसान लोग है उनको गन्नेका दाम कम दे । अगर किसानोको ज्यादा दाम दें और उसकी वजहसे कुछ भाव बढता है, तब तो वह शुद्ध कौडीकी ही बात हो गई । वे सच्चा हिसाब करे और वह हिसाब सबको बता दे कि कल किसानोके पास इतना जाता था और आज उनको इतना मिलता है जो सीधा किसानोकी जेबमे जाता है और बीचमे उसे कोई खा नही सकता । हम लोग तो कल जो दो रुपए फी सदी या पाच रुपये फी सदी लेते थे, आज सवा पाच भी नही लेते है । मान लीजिए, मिलवालोने तो पाचसे ज्यादा नही लिए, लेकिन जो बीचमे छोटे-छोटे ताजिर लोग आ जाते है, वे अगर ज्यादा दाम लेते है तो फिर चीनीके खानेवाले तो मर जाते है । तब कारखाने-दारोको चाहिए कि वे चीनी सीधी खानेवालोको बेच डालें । अगर यह हो जाता है तब तो काम सीधा-सीधा चलता है, इसमें मुझको शक नही है ।

एक भाईने लिखा है कि देखो तो सही, जो लोग तीसरे दर्जेमे सफर करते है उनके रेल-किराए भी बढा दिए है, हालाकि दूसरे और पहले दर्जेके किरायोसे तो वे कुछ कम बढे है । लेकिन वह लिखते है और ठीक लिखते है कि तीसरे दर्जेके किरायेमे इतनी-सी वृद्धि भी हमको क्यों करनी पडी ? माना कि हमको अब ज्यादा काम करना है और उसके लिए हमको पैसे चाहिए, लेकिन ऐसी बहुत-सी चीजे है, जैसे तंबाकू है, बाहरसे कई चीजें ऐसी आती हैं और यहा भी बनती है कि जो हरएक आदमीके जीवन-निर्वाहके लिए आवश्यक नही है । इन चीजोंपर चाहो तो कुछ कर बढ़ा दो । उसमेंसे कुछ बन सकता है । तब जो हकूमतमें हमारे बड़े-बड़े लोग पड़े हैं उनको देखना और हिसाब करना है कि इस तरहकी बुद्धिसे क्या कुछ निकाल सकता है । लेकिन यह समझने लायक बात तो है ही, और हकूमतको भी यह देखना है कि ऐसे लिखनेवाले भी मेरे पास पड़े

हैं। वे कोई निकम्मे नहीं, बहुत समझदार है। आज अगर करोड़ों रुपये हमारे हाथ में आ गए है तो करोड़ों ही हम खर्च कर डालें, ऐसा नहीं है। करोड़ोंमेंसे एक-एक कौड़ी लेकर भी हम आहिस्ता-आहिस्ता और फूंक-फूंककर चलें। एक कौड़ी हम खर्च तो करें, लेकिन वह हिंदुस्तानकी झोंपडियोंमें जाती है कि नहीं, मेरे लिए तो यही हिसाब काफी रहता है। जो करोड़ों रुपये हिंदुस्तानकी झोंपड़ियोंमेंसे खिचकर आते हैं, उनमेंसे कितना हम उनको वापिस भेज सकते है ? जो सच्चा पंचायती राज्य या लोकराज्य होता है उसे लोगोंके पाससे पैसा तो लेना पड़ता है, लेकिन उसका दाम दस गुना उनके घरोंमें चला जाना चाहिए। जैसा कि मैं तालीमके लिए लोगोंसे पैसा लेता हूं तो मैं ऐसी तालीम उनके लडकोंको दूं और इस तरहसे खर्चका अंदाजा करूं कि जिससे दस गुना पैसा उनको वापिस मिल जाय। मान लीजिए, मैं देहातोंमें सफाईका काम करूं, लोगोंके लिए सड़कें और रास्ते बनवाता हूं तो देहातके लोग यही सोचेंगे कि जो पैसा हम देते है वह हमारे ऊपर ही खर्च होता है। नतीजा यह होगा कि आज मिलिटरीके पीछे हम जो इतने दीवाने बन गए हैं, तब उतने नहीं रहेंगे। हमारे दिलमें पीछे यही विचार पैदा होगा कि मिलिटरीपर तो कम-से-कम खर्च करें और आम लोगोंपर ज्यादा-से-ज्यादा। तब तो लोग मिलिटरी भी खुद ही बन जाते हैं और उसका काम सीख लेते हैं। इस तरहसे जब वह अपनी और अपने पड़ोसीकी भी रक्षा कर लेते है तो फिर हिंदुस्तानकी रक्षा तो अपने आप हो जाती है। ऐसे तो हिंदुस्तानपर कोई गंदी नजर डाल भी नहीं सकते हैं।

आज तो ऐसा है कि अंग्रेजी राज तो यहांसे गया, लेकिन अंग्रेजी हवा अभी नहीं गई है। हम उस हवाको बदल दें। वे तो यहां एक बड़े पैमानेपर खर्च करते थे और ऐसा खर्च कि जो लोगोंके पास वापिस नहीं आता था; लेकिन आज तो सब-का-सब खर्च हमको वापिस आना चाहिए, तब तो हमारे लिए खैर हो जाती है। बस, आज तो इतना ही मैं आपसे कहूंगा।

: १६४ :

३० नवबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

कल ही मैं तो आपसे कहना चाहता था, लेकिन चूंकि और बहुत कुछ कहना था, इसलिए रह गया। आपने देखा होगा कि ये लड़कियां जो बैठती है तो फर्शपर ही बैठ जाती है और उससे ठंड लगती है। मैंने तो कह दिया था कि हमारे पास इतने कागज पडे है या अखबार है जिनका हमने इस्तेमाल कर लिया है, उनपर बैठो; लेकिन आज तो किसी भाईने चद्दर बिछा दी है तो अच्छा किया। इस बेदरकार रहते है यह एक तरहसे तो अच्छा भी है। हम क्यों ऐसे नाजुक बनें कि हम अगर कही बैठ गए तो हमको ठंड लगे। फिर भी घासपर अगर हम बैठते है तो एक कागजका टुकड़ा अच्छा-सा मिल जाय और वह गीला नही हो जाता है तो वह ठंडसे बचा लेता है। ऐसा नही हो तो पीछे हमारा तो एक पुराना तरीका भी है कि जहा भी कही जाना है, सबको आसन अपने साथ ही लेकर चलना है और पीछे जहां भी बैठना होता है वही आसन बिछाकर बैठना है। आज तो हम यह सब भूल गए है और ऐश-आराममें पड़ गए है। लेकिन मै तो कहता हूं कि कागजका टुकड़ा भी छोड़ो, ले लो अगर लेना ही है तो, और वह भी एक खासा अखबार है तो, मगर जो आसन होता है, या तो ऊनका या फिर जूटका या दोनोंमेंसे किसीका, नही तो फिर कपड़ेका या सूखी घासका ही हो, वह एक बड़ी चीज है। जहां बैठना है, उसे बिछाया और बैठ गए और पीछे उसको बगलमें रखकर चले गए। क्योंकि मुझको ठंड लगती है, इसलिए सबको ठंड तो लगती ही होगी। पीछे डाक्टरोंका भी बताया हुआ है कि भीगी जमीनपर या कि वहां जहां ठंड लगती है, नही बैठना चाहिए। जो भाई धोती पहनते हैं या जो बहनें सिलवार या घाघरी पहनती हैं, वे अगर भीतर मोटा कपड़ा पहना हुआ है तो आसनका काम दे देता है। लेकिन वे भी तो नाजुक बन गई हैं तो फिर उनके पहननेको भी मुलायम चीज ही होनी चाहिए। वे मोटा कैसे पहनें

और भीतर जो कपड़ा पहनते है वह मुलायम होना चाहिए। तब वह यहांकी जो सर्दी है, उससे बचा नही सकते।

अभी मेरे पास तो बहुतसे तार आ गए है काठियावाडसे। उनके बारे-में मैने सुना तो दिया है जो कुछ भी मैने सुना था और पीछे जो पाकिस्तान-के अखबारोमे लिखा था। उनको भी वहासे हजारो लोग पढते हैं, शायद दस हजार पढते हों। कितने पढते होगे, इसका तो मुझे कुछ पता नही; लेकिन उनमे जो चीजें आती हैं, उनके बारेमे मै ऐसा सोचूं कि क्या पता ऐसा हुआ है कि नही तो ऐसे काम नही निपटता। इसलिए मैने बडा अच्छा किया कि जो कुछ उनमे पढा था वह आपके सामने रख दिया। मैं नही जानता कि वह सब सही है या नही। अगर वह सही है तो सारे काठियावाडके लिए बडी शर्मकी बात है और अगर सही नही है तो पीछे जो अखबारोंमें लिखनेवाले है उनके लिए शर्मकी बात है। तब एक या दूसरोके लिए वह शर्मका बात तो हो ही गई। उस बारेमे सरदारजी क्या करते है, यह भी मैने आपको बता दिया था। आज भी वे आ गए थे और मुझको सुनाते थे कि वहासे जो बाते आती है वे तुम्हारे कहने लायक नही होती। वे तो बहुत बनी-बनाई आती है।

लेकिन राजकोटमे जो तार आ गया है वह तो आपके समझने लायक है। काफी लबा तार है, उसका थोडा-सा बयान मै आपको दे देता हूं। आखिर मै तो काठियावाडके मुसलमानोंको पहचानता हू। उनमेसे एक-एकको तो नही पहचानता, लेकिन वहा जो खोजा लोग रहते है, मेमन हैं, बाघेर है और किसानोंमे भी कुम्बिय है, महेर है इन सबको मै जानता हूं। आखिर मै तो वहा पैदा हुआ हूं और करीब-करीब १७ साल वहा रहा हूं। करीब-करीब क्या, पूरे १७ साल रहा हूं; क्योंकि कही बाहर तो पढने मै गया ही नही। मेरे बापने मुझको कही भेजा ही नही। मेरा पढ़ना तो वही पूरा हुआ और कालेजमे तो क्या हुआ, कोई दो-चार महीने पढा था और वह भी भावनगरमे। इम्तहान भी मेरा अहमदाबादसे आगे नहीं जा सका। यह मेरे हाल थे। पीछे वहां कुछ था तो मै सब चीजे देख लेता था; और बादमे भी आता-जाता सबसे मिलता रहा। तो वे लिखते हैं कि तुमको तो हमारी तरफसे बड़ी चिंता हो गई है और तुम्हारी चिंता

पीछे हमारी चिंता बन गई है। यह ठीक है कि काठियावाड़मे हिंदू कुछ बिगड़ गए और आज तो कहां ऐसा नही हुआ, और उन्होंने कुछ मारपीट भी की, मुसलमानोंको कुछ रंज भी पहुचाया, उनके घर ढाए और जलाए भी; लेकिन हमने उसको आगे बढने ही नही दिया। जितने काग्रेसके लोग थे और उनके मुखिया तो ढेबर भाई थे। उनको तो मै अच्छी तरह पहचानता हूं। वे उनको बचाने गए और उनको काफी कामयाबी भी मिली। सब लोगोका तो इस लूटमारमे हाथ नही था, क्योंकि अगर सबका हाथ होता तो फिर राजकोटमे जितने मुसलमान थे, उन सबके मकान जल जाते, मारपीट भी बहुत होती और कोई खून हो गया होता। लेकिन यहांतक तो नौबत नही पहुची। कांग्रेसवालों और दूसरे लोगोने वहां बहुत एहतियातसे काम लिया। ढेबर भाईके साथ तो यहांतक भी हुआ, हालांकि वह तो खासा बडा आदमी है और वकील भी है, लेकिन भीडको जब इस तरहसे गुस्सा आ जाता है तो फिर छोटे-बड़ेकी बात ही छूट जाती है, उन्होंने कहा कि अच्छा, इनको बचाने आता है, गालियां दी और बहुत परेशान भी किया। ढेबर भाईके साथ जो दूसरे लोग हैं, वे लिखते है कि कुछ नुकसान तो किया, लेकिन ढेबर भाईको तो दूसरे लोगोंने बचा लिया। तब तारमे तो यह भी लिखा है कि वहांके जो ठाकुर साहब है उन्होंने भी हमारे साथ हाथ बटाया और वहाकी जो पुलिस है, उसने भी। तब वहां दंगा करनेवाले रहे कौन ? हिंदु महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ, ऐसा वे कहते है। इन लोगोंने कुछ-न-कुछ तो किया भी, लेकिन इनकी कोशिश तो यह थी कि मुसलमानोको, कमसे कम राजकोटसे, तो निकाल ही दें। मगर वह कर नही सके। लेकिन अब हम निश्चित हो गए और मुसलमानोंके लिए कोई खतरा अब नही रहा है। और आप भी अब निश्चित रहिए। दूसरी जगह भी हम देखनेकी कोशिश कर रहे है और इसके बाद एक दूसरा तार हम भेजेगे।

वहींसे एक मुसलमान भाईका भी तार आ गया है। वे लिखते हैं कि हम तो कांग्रेसवालों और दूसरे लोगोंके बहुत अहसानमंद हैं। हमारी जान-मालकी रक्षाके लिए उन्होंने पूरी कोशिश की। लेकिन बंबईसे एक दूसरा तार आया है, वह भी मुसलमानका ही है। वे लिखते हैं कि

पहले जो आपने कहा था वह तो ठीक कहा था, लेकिन अब जो तुमको काठियावाड़के बारेमे सुनाया गया है, वह ठीक नही है। वहां काफी हुआ है और अभी भी हो रहा है।

मुझको नही मालूम कि मै बवईसे जो तार आता है उसको सच मानूं या इस दूसरे मुसलमानके तारको। लेकिन जो बंवईसे तार आता है उसमे मुझको शक हो जाता है, क्योंकि वे तो बवईमे बैठे हुए लिखते है और दूसरा तार तो उनका है जो खुद काठियावाड़मे पड़े है। और पीछे जो काठियावाड़मे है वे मुझको धोखा भी नही दे सकते, धोखा देकर वे जायगे कहां? इसलिए मुझको ऐसा लगता है कि जो बंबईसे तार आया है उसमें कुछ अतिशयोक्ति या मुबालगा है। क्यां है और क्या नही, यह तो मुझको पीछे पता चल जायगा, लेकिन अभी तो मै उसे सबके सामने रख दूं।

एक तार भावनगरसे भी आया है। वह वहांके महाराजाका है। उनको भी मै पहचानता हूं, क्योकि मै तो वहां तीन-चार महीने रहा हूं। इसलिए महाराजाको मेरे लिए यह लगा कि वह परेशान क्यों होता है। उन्होने लिखा है कि तुम फिक्र क्या करते हो। हम यहां सब जाग्रत हैं और यहाके हिंदू भी जाग्रत है। मुसलमानोंको कोई नुकसान नही होने देगे। तुमको इस बारे मे कुछ शक मनमे नही लाना चाहिए।

लेकिन जूनागढसे अभी एक तार आ गया है। वह मुसलमानोंकी तरफसे है और वे लिखते है कि ये लोग तो तुमको धोखा दे रहे है। तुम एक कमीशन बिठाकर इसकी तहकीकात कराओ कि हम लोगोंको परेशान किया जाता है कि नही। यह तार जवाहरलालजी, सरदारजी और दूसरे लोगोंको भी भेजा है और उनमे एक मैं भी आ गया हूं। मैं कहता हूं कि हरएक चीजके लिए इस तरहसे कोई कमीशन नही बैठ सकता है। कमीशन बनाना कोई छोटी बात नही होती। हां, अगर कोई चीज कोई ऐसी है कि सचमुच इतना नुक्सान हुआ है तो फिर इसमें कमीशन बिठानेकी क्या दरकार है? काठियावाडके लिए तो मै ही कमीशन-जैसा पडा हू। अगर मेरे ध्यानमें कुछ आता है तो मै दबा सकता हूं, वहांके राजा लोगोंको और रैयत-को भी। मैं यह दावा नही करता हूं कि मै हर चीजमें कामयाब रहता हूं और वह मेरी हर बातको मान ही लेते हैं; लेकिन काठियावाड़के लिए

तो ऐसा है न, कि जैसा बिहारके लिए कहो। बिहारमे अगर कोई कहे कि तू कमीशन बिठा दे तो मै क्या कमीशन बिठाऊंगा ? मै तो खुद ही वहां पड़ा हू। वहाके सब लोग मुझको चाहते है और मेरी मान भी लेते हैं। तो वहांके लिए कोई कमीशन बिठाना तो ठीक नही हुआ।

मेरे पास तो राजकोटसे काफी खत भी आए है मुसलमानोके। वे लोग काफी हिंदुओके दोस्त है और काग्रेससे भी खुश है। तब हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघमे कौन है। उनसे मुझको कोई अदावत तो हो नही सकती। वे सोचते है कि हिंदू-धर्मको बचानेका यही तरीका है, लेकिन मै मानता हूं कि इस तरहसे हिंदू-धर्मकी रक्षा नही होगी। वे मानते है कि अगर एक आदमीने कुछकर लिया है तो उसके साथ मारपीट करना। मगर मै यह कहता हूं कि बुराईका बदला बुराईसे क्या देना ! हमारी जो हकूमत पडी है उसको सताओ और उससे कहो कि ऐसा क्यो होता है। और फिर हमारी हकूमत तो जाग्रत पडी है और जितना भी हो सकता है कोशिश कर रही है। तब हिंदूमहासभाको मै कहूंगा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघको भी—ये दोनो हिंदुओकी सस्था है और अच्छे बडे और पढे-लिखे आदमी इनमे है, जैसे कि और सस्थाओमे भी है—आप हिंदू-धर्मको ऐसे नही बचा सकते, अगर यह बात सही है कि इन्होने ही मुसलमानोको सताया है और अगर यह बात सही नही है तो फिर किसने उनको सताया है ? काग्रेसने नही सताया, वहाकी हकूमतने नही सताया और यहाकी हकूमतने नही, तो पीछे और कौन हिंदू है जिसने किया ? आज तो यह इल्जाम सारे हिंदुओं और सिखोंपर पडता है जैसा कि पाकिस्तानमे सारा इल्जाम मुसलमानोंपर पडता है, और वह ठीक तो पड़ता है। इसलिए मै कहूंगा कि जो बेगुनाह है और जिनके खिलाफ इल्जाम लगाए गए है उनको अपना नाम साफ करना चाहिए। जूनागढमे जो मुसलमान भाई पड़े है वे अगर इन्साफ चाहे तो वह मिल सकता है, फिर कमीशन हम किसलिए बिठाएं ?

वहांकी बात मैने आपको कह दी, लेकिन अब यहाके बारेमे भी तो आपको कुछ सुनाऊं। सरदारजीने कुछ इंतजाम तो कर लिया है और जितनी मस्जिदें हमने यहां रखी है उनकी वे रक्षा करने जा रहे हैं। आपने अखबारों-

में उनका यह नोटिस तो देख लिया होगा कि सात दिनके अंदर जितनी मस्जिदोंपर कब्जा किया हुआ है वे खाली कर दें, नही तो पुलिसको भेजकर खाली कराई जायगी। मैं तो कहता हूं कि वे पुलिस भेजकर क्या करेंगे? वहा अगर मस्जिदमे किसी हिंदूने मूर्ति रख दी है, पीछे वह मूर्ति तो सोनेकी हो सकती है, चांदीकी भी, पीतल, मिट्टी या पत्थरकी भी हो सकती है, लेकिन ऐसा कहते है और मै भी मानता हूं कि जबतक उसमे प्राण-प्रतिष्ठा नही की गई है और जबतक लोग पाक हाथसे उसकी पूजा नही करते है तबतक वह मेरी दृष्टिमे तो मूर्ति नही, बल्कि पत्थर या सोनेका टुकडा है। ऐसी कुछ मूर्तियां कनाट प्लेसके कोनेवाली मस्जिदमे भी बिठा दी गई हैं और उनमे अभी तो हनुमानजी नही है। मेरे नजदीक तो वह नही है। मेरे नजदीक तो वह पत्थरका टुकडा है जिसे हनुमानजीकी शक्ल दे दी है और कुछ सिंदूर भी लगा दिया है। मेरी दृष्टिमें तो वह कोई पूजाके लायक नही है। पूजाके योग्य तो वह तभी बन सकता है जबकि उसको कही हकसे बिठाया जाय, और उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की जाय। वह सब तो नही हुआ। इसलिए जिन लोगोंने उनको वहा बिठाया है उनका यह धर्म हो जाता है कि वे दिनके आरंभके साथ उसको वहासे उठा ले जायं और पीछे जहा भी उसको रखना है वहां रखें। इस तरहसे वे एक तो मस्जिदको बिगाडते है और दूसरे उस मूर्तिका अपमान करते है। हिंदू-धर्ममे हम मूर्तिपूजक होकर भी इस तरहसे किसी मूर्तिकी पूजा करे तो वह धर्म नही, बल्कि अधर्म है। तब सरदारजीको क्या पडी कि वह वहां पुलिस भेजें! आप जितने हिंदू है वे सब पहरेदार बन जाए और जिन मस्जिदोंमे मूर्तियां रखी है वहासे उनको हटा दे। जो मस्जिदें बिगडी हुई है हमको कहना चाहिए कि हम उनकी मरम्मत कर देंगे। लेकिन आज तो सरदारजी कहते है कि हकूमत अपने खर्चपर उनकी मरम्मत कर लेगी; हकूमत क्यों करेगी, इसलिए न कि हम नहीं कर रहे है। उसको तो सबकी रक्षा करनी है। लेकिन यह हमारे लिए धर्मकी बात हो जायगी। आज जितने हिंदू या सिख है, लेकिन सिखको तो मैने कही मूर्ति बिठाते हुए सुना नही, उनकी तो एक ही मूर्ति या पुस्तक कहो, वह गुरुग्रंथ साहब ही है। मैने तो देखा नही कि किसी सिखने गुरुग्रंथ साहबको मस्जिदमें लाकर

रखा हो। अगर किसीने ऐसा किया भी है तो उसने गुरुग्रथ साहबका अपमान किया है। गुरुग्रंथ साहबको तो गुरुद्वारेमे ही रखा जा सकता है। जो पवित्र सिख है वही उसको ऊंची जगहपर सजाकर रखते है। मेरे जैसा अगर कोई हो तो वह तो बहुत सुदर खादी बिछाकर उसको रखे। लेकिन आज यदि देसी-परदेसीका तो खयाल नही है, फिर भी बड़े खूबसूरत ऊनी और रेशमी वस्त्र हम हाथोमे तैयार करते है। उस रेशमको हम वहा बिछाएं और गुरुग्रंथ साहबको रखे तब तो वह पूजाके लायक है और अगर कोई सिख उसे मस्जिदमे लेजाकर रखता है तो वह गुरुग्रंथ साहबकी तौहीन करता है और वह पूजाके लायक नही हो सकता।

आज एक मुसलमान मेरे पास आया। मै समझा नहीं कि वह क्या कहना चाहता था। लेकिन उसके हाथमे एक कुरानशरीफ थी, जो आधी जली हुई थी। लेकिन उसके लिए तो वह भी पाक थी। इसलिए उसने उसको बहुत साफ कपडेमें लपेटा हुआ था। उसने आरंभमे वह कपड़ा खोला और मुझको दिखाया। वह कुछ बोला तो नही, लेकिन रोने जैसी उसकी शक्ल बन गई और पीछे चला गया। बृजकिशनजीसे तो कुछ बाते भी की, लेकिन मै तो काममे पडा हुआ था। इसी तरह अगर एक मुसलमान यहा आकर कुरानशरीफ बिठा जाता है और मुझको और आपको मारता है तो मै कहूंगा कि वह कुरानशरीफकी तौहीन करता है। कुरानशरीफ यह नही कहती कि किसीको मजबूर करके उसे रखो।

इसलिए मै तो बडे अदबसे कहना चाहता हूं हिंदू-महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघसे तथा और भी लोगोसे, जो मेरी सुनना चाहते है और साथ-साथ सिखोको भी, क्योकि सिख तो बडे है और अगर वे सीधे हो जाते है और गुरुनानकके सच्चे अनुयायी बन जाते है तो हिंदू भी आप-ही-आप सीधे हो जाते है। मेरे दिलमे सिखोंकी कद्र है। लेकिन आज क्या हिंदू और क्या सिख, सब बिगडते जा रहे है और हिंदुस्तानको धूलमे मिला रहे है। जिस हिंदुस्तानको हमने ऊचे चढाया है, क्या उसको नीचे खींचकर हम मटियामेट करेंगे? क्या हम अपने धर्म, कर्म और देशको इस तरहसे धूलमे मिला देंगे? ईश्वर हमको इस चीजसे बचा ले।

: १६५ :

मौनवार १ दिसंबर, १९४७

(लिखित सदेश)

भाइयो और बहनो,

कई मित्र नाराज होते है कि मै 'अगर यह सही है तो' कहकर क्यों कोई निवेदन करता हूं। मुझे पहले तय कर लेना चाहिए कि बात सही है या नही। मैं मानता हूं कि जब-जब मैने 'अगर' इस्तेमाल किया है मैंने कुछ गमाया नही है। जो काम उस समय मेरे हाथमें था उसे फायदा ही हुआ है।

इस वक्तकी चर्चा काठियावाड़के बारेमें है। मित्र लोग कहते हैं कि मैंने काठियावाडके बारेमे मुसलमानोंपर ज्यादतियोंके झूठे बयानको मशहूरी दी है। अधिकतर इल्जाम सरासर झूठे थे। जो थोड़ी-बहुत गड़बड़ी हुई थी उसे फौरन काबूमे लाया गया। मेरे 'अगर' के साथ उन इल्जामोंका जिक्र करनेसे सचाईको कोई नुकसान नहीं पहुचा। काठियावाड़के सत्ताधीश और काग्रेस, जिस हदतक सचाईपर खड़े रहे है, उतना ही उन्हें फायदा होगा। मगर मित्र लोग कहते है कि सचाई आखिरमें जाहिर होकर रहती है। इसमें भले शक न हो, मगर उससे पहले नुकसान तो हो ही जाता है। जिन्हे सच-झूठकी कुछ पड़ी नहीं, ऐसे बेईमान लोग मेरे कथनको अपनी बात सिद्ध करनेके लिए काममें लाते है। इस तरहसे झूठको फैलाया जाता है। मै इस तरहकी चालबाजीसे आगाह रहूं। जब-जब इस तरहकी चालाकी खेलनेकी कोशिश की गई है वह निष्फल हुई है और ऐसा करनेवाले बेईमान लोग जनतामे झूठे बने है। मैं 'अगर' कहकर इल्जामोंका जिक्र करता हूं तो उससे किसीको घबरानेकी जरूरत नही, शर्त सिर्फ यह है कि जिनपर इल्जाम लगाया जाता है वे सचमुच इल्जामसे सर्वथा मुक्त हों।

इससे उल्टी स्थितिका विचार कीजिए। काठियावाड़की मिसाल लीजिए। अगर पाकिस्तानके बड़े-बड़े अखबारोमें लिखे इल्जामोंकी तरफ

मैं ध्यान न देता, खास करके जब पाकिस्तानके प्रधान मंत्रीने भी कहा कि इल्जाम मूलमें सही है, तो मुसलमान उन इल्जामोंको वेद-वाक्य माननेवाले थे। मगर अब भले मुसलमानोंके मनमे उनकी सचाईके बारे-में शक है।

मै चाहता हूं कि इसपरसे काठियावाड़के और दूसरे मित्र यह पाठ सीखे कि हम अपने घरमे तो किसी तरहकी गडबड होने नही देंगे, टीका-का स्वागत करेंगे, चाहे वह कड़वी टीका ही क्यों न हो ; अधिक सच्चे बनेंगे और जब कभी भूल देखनेमे आवे उसे सुधारेंगे। हम यह सोचनेकी गलती न करें कि हम कभी भूल कर ही नही सकते, कडवी-से-कड़वी टीका करनेवालेके पास हमारे विरुद्ध कोई-न-कोई सच्ची काल्पनिक शिकायत रहती है अगर हम उसके साथ धीरज रखें, जब कभी मौका आवे उसकी भूल उसे बतावें, हमारी गलती हो तो उसे सुधारें, तो हम टीका करने-वालेको भी सुधार सकते है। ऐसा करनेसे हम कभी रास्ता नहीं भूलेंगे। इसमें कोई शक नही कि क्षमता तो रखनी ही होगी। समझदारी और शिनाख्तकी हमेशा जरूरत रहती है। जान-बूझकर शरारतकी ही खातिर जो बयान दिए जाते है उनकी तरफ ध्यान नही देना चाहिए। मैं मानता हूं कि लंबे अभ्याससे मै शिनाख्त करना थोड़ा-बहुत सीख गया हूं।

आज हवा विगडी हुई है, एक दूसरे पर इल्जाम-ही-इल्जाम लगाए जाते हैं। ऐसी हालतमें यह सोचना कि हम गलती कर ही नही सकते, मूर्खता होगी। हम ऐसा दावा कर सके वह खुशकिस्मती आज कहां! अगर मेहनत करके हम झगड़ेको फैलनेसे रोक सके और फिर उसे जड-मूलसे उखाड़ फेंके तो बहुत हुआ। यह हम तभी कर सकेंगे अगर हम अपने दोष देखने और सुननेके लिए अपनी आखे और कान खुले रखें। कुदरतने हमें ऐसा बनाया है कि हम अपनी भूल नही देख सकते, वह तो दूसरे ही देख सकते है। इसलिए बुद्धिमानी यही है कि जो दूसरे देख सकते हैं उनसे हम फायदा उठावें।

कल प्रार्थनामे जाते समय मुझे जो जूनागढ़से लंबा तार मिला उसकी बात कल पूरी नही हो सकी। कल मैने उसपर सरसरी नजर ही डाली थी। आज उसे ध्यानपूर्वक पढ़ गया हूं। तार भेजनेवाले कहते

हैं कि जिन इल्जामोंका मैंने पहले दिन जिक्र किया था वे सब सच्चे हैं। अगर यह सही है तो काठियावाड़के लिए बहुत बुरी बात है। अगर जो इल्जाम साथियोंने स्वीकार किए हैं और मैंने छापे हैं उनको बढ़ानेकी कोशिश की गई है तो तार भेजनेवालोंने पाकिस्तानको नुक्सान पहुंचाया है। वे मुझे निमंत्रण देते है कि मैं खुद काठियावाड़में जाऊं और अपने-आप सब चीजोंकी तहकीकात करूं। मैं समझता हूं कि वे जानते है कि मैं आज ऐसा कर नही सकता। वे एक तहकीकात कमीशन मांगते हैं। मगर उससे पहले उन्हें केस तैयार करना चाहिए। मैं मान लेता हूं कि उनका हेतु जूनागढ़को या काठियावाड़को बदनाम करना नहीं है। वे सच निकालना चाहते हैं और अल्पमतकी जानमाल और इज्जतकी रक्षाका पूरा प्रबंध करना चाहते हैं। वे जानते है कि हरएक आदमी जानता है कि अखबारी प्रचार, खास करके जब वह पूरी-पूरी सचाईपर न हो, न जानकी रक्षा कर सकता है, न मालकी, न इज्जतकी। तीनों चीजोंकी रक्षा आज हो सकती है, उसके लिए तार भेजनेवालोंको सचाईपर कायम रहना चाहिए और हिंदू मित्रोंके पास जाना चाहिए। वे जानते हैं कि हिंदुओंमें उनके मित्र है। वे यह भी जानते हैं कि अगरचे मैं काठियावाड़से बहुत दूर बैठा हूं, मगर यहासे भी उनका काम कर रहा हूं। मैंने जान-बूझकर यह बात कह दी और मै सब सच्ची खबरें इकट्ठी कर रहा हूं। मैं सरदार पटेलसे मिला हूं और वे कहते हैं कि जहांतक उनके हाथकी बात है, वे कौमी झगड़ा नहीं होने देंगे और कहीं कोई मुस्लिम भाई-बहनोंसे बदतमीजी करेगा उसे कड़ी सजा दी जायगी। काठियावाड़के कार्यकर्त्ता, जिनके मनमें कोई पक्षपात नही, सच ढूंढ़नेकी और काठियावाडके मुसलमानोंको जो तकलीफ पहुंची हो, उसको दूर करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। उन्हे मुसलमान उतने ही प्यारे है जितनी अपनी जान। क्या मुसलमान उनकी मदद करेंगे ?

: १६६ :

२ दिसंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

मैने तो आपको कहा था कि आज मुझको पानीपत जाना है। इरादा ऐसा था कि ४ बजे वापस आ जाऊंगा। लेकिन काम इतना निकल गया था कि बडी मुश्किलसे ५॥ बजकर ५ मिनट हो गई थी—३ मिनट तो हो ही गई थी आया। तब प्रार्थनाकी आवाज सुनी। प्रार्थना तो शुरू हो ही जानी चाहिए थी, मै रहूं चाहे न रहूं। मैने तो कह दिया है कि प्रार्थना शुरू हो ही जानी चाहिए, नियमके मुताबिक चलना ही चाहिए। पीछे मुह धोने चला गया इसलिए देर लग गई। मै इसके लिए क्षमा चाहता हूं।

मै क्यों पानीपत गया, इसका थोडा-सा तो इशारा कर दिया था। मेरी उम्मीद तो थी और अब भी उम्मीद नही छोड़ आया हूं कि किसी-न-किसी तरह पानीपतके मुसलमानोको रख सकें तो अच्छा है। हमारे लिए तो अच्छा है ही, सारे हिदुस्तानके लिए भी अच्छा है और जो हिदुस्तानके लिए अच्छा है वह पाकिस्तानके लिए भी अच्छा है।

वहां आज लोग मुसीबतमे पडे है। वहांसे जो दुःखी लोग आए हैं—दुःखीको शरणार्थी कहते हैं—वे दुःखमें है और रहनेवाले है, जबतक अपने घर नही चले जाते है। वैसे ही मुसलमान मजबूर होकर जो पाकिस्तान गए है वे भी दुःखमे ही रहनेवाले है। इसमे आप कोई शक न रखें।

मै धर्मका पालन करता हूं तो वहां चला गया, यह अच्छा हुआ। डाक्टर गोपीचद भार्गव भी आ गए थे, गृह-मत्री सरदार स्वर्णसिह भी आ गए थे। मुझको पता नही था कि डाक्टर गोपीचंद आनेवाले थे। सरदार स्वर्णसिहने तो कहला भेजा था कि मेरी दरकार हो तो मै आ सकता हूं। मैने कहा कि दरकार तो नही है; क्योकि जो कुछ करना है, वह करूंगा; लेकिन वे आ गए। पूर्वी पंजाब उनका इलाका है तो उनका तो वह हक है, इसलिए वह भी आ गए। देशबंधु गुप्ताने कहला भेजा था

कि मैं बीमार हूं सो नही आऊगा। मैंने कहा कि ठीक है; लेकिन वहां तो उनका घर पड़ा है, इसलिए वह भी आ गए। तो अच्छा हुआ सब आ गए। मौलाना है वह जो यहां हमेशा आते हैं, वह भी आए। पीछे उन लोगोसे बातचीत की। मुसलमानोंसे अकेलेमे बातचीत की; लेकिन दोनों मत्री तो साथ थे। उन लोगोंने कहा कि मत्री तो रहे। जो बात मत्रीसे अलहदा है, जिसे मै इस्तेमाल न कर सकू तो वह किस कामकी है! उन लोगोंने कहा कि वहा उस वक्त जो बात हो गई थी तब तय किया था कि रहेगे और आपको कहा भी था। बादमें हालत बिगड गई। जैसा तुम कहते थे, कुछ भी हो ही नही पाया, इसलिए हम परेशान हो गए। हमारी इज्जतकी कोई परवाह नही की गई। जब इज्जत, माल और जान, तीनों-की रक्षा नही हो सकी तो कैसे रहेगे? जो कुछ भी हो, घर गिरा तो क्या, आग लगी तो क्या, जानको जाने देगे, मालको जाने देगे, लेकिन मानकी हिफाजत करना अपना काम है। उसकी हिफाजत कर सकेंगे तो रहेगे। तो मैने कहा कि मरनेकी बात कहते है वह तो ठीक है, लेकिन मनमे जगत-प्रेम है वही ईश्वरका भक्त है।

पीछे वहा जो दुःखी शरणार्थी है उनसे बहुत बाते हुई। यह करते-ही-करते ३॥ बज गए। यहांसे १०॥ बजे निकल गया था और करीब ११॥ बजे वहा पहुंच गया। ३ बजेतक बातें चलती रही—बातें काफी थी। पीछे दुःखी लोगोसे मैने कहा, पीछे डाक्टर गोपीचद भार्गव थे उन्होंने कहा, सरदार स्वर्णसिंह खडे हुए तो गोलमाल शुरू हो गया, लोगोने चीखना शुरू कर दिया, इसलिए नही कि वे लोग उनका अपमान करना चाहते थे, लेकिन वे लोग अब गवारा नही कर सकते थे। वह क्या बताएंगे हमको, इसलिए वे लोग गुस्सा हो गए।

काफी लोग थे—करीब २० हजार होगे। मैदान भर गया था। छत सब भर गई थी। इस तरहसे लोग भरे थे। मेरी बात तो शातिसे सुनी। पीछे उन्होंने शुरू किया तो लोग खड़े हो गए। हमारेमे तो रिवाज हो गया है कि गुस्सा बता दे। सब खड़े हो गए, चीखना शुरू कर दिया कि मुसलमानोंको हटा दो। मैंने कहा कि मुसलमानोंका जाना अच्छा नही है, उनका घर है तो रहने दो, मजबूर करनेसे क्या होगा? यहां ऐसा करोगे

तो वहां हमारा काम बिगड जायगा। तो यह सब समझाया। मैं तो बैठनेवाला था, लेकिन स्वर्णसिंह गृह-मंत्री हैं, बहादुर आदमी है, वे माननेवाले नहीं। उन्होंने कहा कि ऐसे कैसे चलेगा ? उन्होंने बोलनेकी बडी चेष्टा की; लेकिन काम चला नही। लोग चीखते ही रहे, सब खड़े रहे। तो दु:खी लोगोंके जो प्रमुख हैं, नुमायदा है, वह उतरे। पीछे उन्होंने शुरू किया। मुझको पता नही था कि वे शायर है, पंजाबीमें शुरू किया, पहले तो भजन शुरू किया—वे लोग तो जानते है कि पंजाबियोंमें ऐसा है कि उनको भजन अच्छा लगता है—पीछे पंजाबीमे ही डाटा और कहा कि मै तो आपका नुमायंदा हूं, आप क्यो नही सुनते, चीखनेसे क्या होगा ? सभा बिगाडनेसे आपका क्या फायदा होगा ? आपका नुक्सान ही है। तो पीछे शांति हुई, मेहनतसे। लोग बैठ गए तो पंजाबीमे सब बाते हुई।

मै पंजाबी बोल तो नही सकता, लेकिन समझ लेता हू। उन्होंने जो कहा वह मुझको अच्छा लगा था। मुसलमानोके साथ बैठे थे तब भी कहा था कि हम दो चीज जरूर करनेवाले है, पाकिस्तानमें चाहे कुछ भी हो, हम वहशी नही बनेगे। हम आजादीकी सल्तनत चलाते है तो ऐसा थोडे होने देगे। मुस्लिम लडकीको जो भगा लिया है उसको हम हर हालतमे वापस करेगे। हा, कोई भी आदमी बता दे, कह दे कि वह लडकी वहा है, क्योंकि हमको पता तो है नही, तो वह जहा होगी वहांसे हम लाएंगे। और दूसरी बात यह कि जिन मुसलमानोंको मजबूरीसे हिंदू और सिख बनाया है वे मुसलमान ही है; धर्म-परिवर्तन हुआ है उसे हम बाकानून नही समझेंगे; क्योंकि यह नीतिके विरुद्ध है। ऐसे जो लोग पडे है उनकी हम हिफाजत करेगे। अभी जैसे है वैसे ही उनकी हिफाजत करेगे, पाकिस्तान चाहे करे या न करे। स्वर्णसिंहने तीसरी बात भी कह दी कि मस्जिदोंकी भी हिफाजत करेगे। ये तीन चीज तो हर हालतमे हम करनेवाले हैं।

हां, जान-मालके बारेमे कौन क्या कह सकता है ! हकूमत है, पुलिस है, वह पूरी कोशिश तो करेगी; लेकिन अगर सब-के-सब लोग लूटमार करने लगे तो क्या गोलीसे उडा दे ? क्या करे ? हम लाचार है, हमारी आजादी लूली है, हम लाचारी कबूल करते है। हा, लोगोको डाटेगे; लेकिन लाचारी तो कबूल करनी ही चाहिए। उन्होने लोगोको खूब सम-

झाया, मिन्नतकी कि हमारी लाज, आबरू, शर्म सब आपके हाथमें है, उसकी आप रक्षा करें। हकूमत हमारी थोड़ी है, हकूमत आपकी ही है, आपने ही हमें भेजा है तो हम पडे है। जब हम पड़े है तो हम काम तो करें और आप इसमें मदद दे। यह सब समझाया। इसमे काफी समय लग गया। गोल-माल हो गया, उसे शात करनेमे काफी देर लगी। हमेशा ऐसा रहा है कि ऐसे मौकेपर जब लोग बेचैन हो जाते है, गुस्सा कर लेते है, तब मैंने देखा है कि थोड़ी देर बाद जब वे लोग ठडे दिलमे सोचते है तो समझने लग जाते है। मै जब आजादीकी लडाई करता था तब भी देखा था। ऐसी भी नौबत आजाती थी कि सभाको खत्म कर देंगे; लेकिन देखता था कि बादमें समझ जाते थे। तो पीछे नुमायदे आए। मैने कहा था तो वे मेरे पीछे आए। मैंने उनको गाडीमे ले लिया। अगर न लू और वहा बैठ जाऊं तो यहां समयमें पहुच नही सकता था, इसमे भी समय लगता, मिनट-मिनटका हिसाब करना पडता था, जब यहा आना था।

मैने आराम करना छोड दिया, जब सब दु खी है तब मै क्या आराम करूं! उनसे तो मुझको बहुत आराम है ही। तो वे सुनाते है कि जो यहां दुःखी पड़े है वे खुद बहुत रजमे पडे है। कुछ तो है ही, जैसा मैंने देखा था वैसा ही है, ऐसी बात नही है। कुछ इनजाम तो हुआ ही है, कुछ छते लगाई गई है, वे अब तबूमे रहते है, ऐसा तो है, लेकिन खाना जैसा होना चाहिए वैसा नही है, पूर्वी पजाबके गवर्नरने भी देखा और कबूल किया कि ऐसा तो नही होना चाहिए। कपडेके बारेमे ऐसा होता है कि अच्छे कपडेको भीतरसे ही कोई ले जाता है—कौन लेता है, क्या कहूं। उसको छोड़ देता हूं, लेकिन पीछे उनको टूटे-फूटे सडे कपडे मिल जाते है, ऐसा नही होना चाहिए। जो चीज उनके लिए भेजी जाती है वही मिलनी चाहिए। वहा लोग मरते भी है, मृत्यु तो होनी ही है। दो मरनेवालोको जलानेके लिए लकडी मिली ही नही। सारा दिन चला गया। कोई डाक्टर महाशय है उनका नाम भूल गया, उनके हाथमे इसका इंतजाम है। वे एक जगह नही मिले, दूसरी जगह गए, वहां नही मिले तो तीसरी जगह गए, वहां भी नही मिले। इस तरह दिनभर चला गया, शामको ७ बज गया तो कुछ लोगोने उनके रिश्तेदारको कहा कि वहांसे लकडी नही मिली तो क्या हुआ। हम आठ-आठ आना

देते है इस तरहसे १०) या १५) हो गए। लेकिन वह तो तगडा आदमी था। उसने रुपए लेना मजूर नही किया। उसने कहा कि लकड़ी नही मिलती है तो मेरा नसीब, मै दफना दूंगा। हिंदू दफन नही करते, लेकिन उसने दफना दिया। तो मुझको दुःख हुआ कि ऐसा नही होना चाहिए।

पीछे मुझको सुनाया कि कोई भी चीज हो, वह बडे शरणार्थीको तो मिल जाती है, गरीबको नही मिलती है; क्योंकि वे अफसरोके हाथमै नही है। रखें भी कैसे, कहांतक रखे, वहां जो लोग पडे है, उनको ले लिया, उनकी मारफत करते है। अगर वे भले है, परमार्थी है, सेवाभावी है तब तो हो जाता है, लेकिन जब सेवाभावी नही रहते हैं तो दुश्वारी हो जाती है। मैं सब चीज जाहिर कर देता हूं। हम मारपीट तो न करें, इससे जहर पैदा होता है। हमारे पास दूसरा तरीका है, वह यह कि साफ-साफ कह देना चाहिए। ढाकनेसे कोई फायदा तो होता नही है। मै कहता हूं कि जो चीज बनी है वैसा कह देना चाहिए। जो बुरा करते है उनपर इल्जाम लगाया जाय तो उसमें बुरा क्या है? इल्जामके लायक है तो कहना ही चाहिए। ऐसा समझकर मै सुनाता हूं कि यह बात बुरी है। एक तो हम दुःखी है, लाखो लोग घर-बार छोडकर आए है, फिर ऐसा करने लगें यह बहुत दुःखकी बात है। आज मुझको एक छोटा-सा लडका मिला, वह स्वेटर पहने था, उसे निकालकर खडा हो गया। मेरे सामने आखें तो बहुत करता था मानो कि खा जायगा। लेकिन बच्चा था, क्या करनेवाला था? कहने लगा कि आप बात करते है कि आप हिफाजत करने आए है! लेकिन मेरा बाप मर गया है तो मुझे मेरा बाप तो दे दो। वह तो मर गया, मै कहासे लाऊ? आखिर उस लडकेको गुस्सा आ गया। मै समझ सकता हूं कि अगर इतनी ही उम्रका मै रहता तो शायद मै भी ऐसा ही करता। यह सुनना पडता है, मुझको गुस्सा नही आया, दया आई।

आजका नजारा देखा। ऐसा था तो पीछे वे कहते है कि इतना तो करो कि हम जो शरणार्थी है वे सब खराब थोड़े है, उनके हाथमें इंतजाम दे दो, ऊपरमें मजिस्ट्रेट वगैरा तो हैं ही, वहाके लोगोके ऊपर भी तो देखना पड़ता है, मजिस्ट्रेट वगैरा हमारे ऊपर भी देख-रेख करे; लेकिन कंबल बाटने हैं तो हमको दे दो। बच्चोंको दूध तो मिलना

चाहिए, फिर भी मिलता नही, वह तो ऊपरके अमलदारोंके लिए है। वे या सेवा-भावके लिए जो कमेटी बनी है उसके सदस्य पी जाय, इससे बेहतर तो यह है कि हमको दे दो। चोरी होती है तो क्या, जैसा करते हैं वैसा भोगेंगे। पीछे वे कहते है कि उनके पास और दुःखी भाई लोगों-ने चिट्ठी भेजना शुरू किया। चिट्ठियोंमे वे लिखते हैं कि महात्माको तो कहो कि वह हमारी भी सुने। वे सुनाते थे कि उनमे ऐसी-ऐसी बातें लिखी हैं। तो मै समझता हूं कि मै चला गया तो अच्छा हो गया। मैंने उनसे कहा कि अगर आप शातिसे रहें और आप मुसलमानोंको कहे कि आप भाई हैं, यही रहो, पानीपतमे तो बहुत-सी लडाई हो गई हैं, तो यह सबसे आला दर्जेकी चीज हो जायगी।

आप २८००० आदमी डेरेमें रहते हैं, दूसरे आते है तो इससे क्या। आपको खाना मिल जाय, पहनने और ओढनेको कपडा मिल जाय, छत हो या तंबू ही मिल जाय तो ठीक है। कही भी रहोगे तो अभी चौथी चीज तो मिल नही सकती। इन तीनों चीजोंसे आप बहुत-सी चीजें पैदा कर सकते हैं। तो मैंने सोचा कि यह आप लोगोंको सुना दूं। आप भी समझें कि हमारे हिंदुस्तानमें कैसे-कैसे खेल चल रहे है और उसपर हम कैसे काबू पा सकते है। आज तो हकूमत है। हकूमत आपपर जबरदस्ती तो कर नही सकती। आजादी हमने पाई है तो क्या ऐसा होना चाहिए? कल जवाहरलालने सुदर कहा है। आज देख लिया, मै हमेशा कहां पढ़नेवाला था, पढनेका मौका कहां आता था। जवाहर कहता है कि मुझको प्रधान मंत्री कहते हैं तो मुझको चुभता है, मै प्रधान मंत्री कब बना था? हां, यह कहो तो अच्छा लगेगा कि मैं अव्वल दर्जेका खादिम हूं, सेवक हूं। अगर सब ऐसे बन जायं कि प्रधान सेवक है तो उनको २४ घटे लोगोंका खयाल करना है। पीछे उनके नीचेके नौकर ऐसा करेंगे तो हमारा देश सचमुच स्वर्णभूमि बन सकता है, रामराज्य हो सकता है, खुदाई राज्य बन सकता है। तब हमारी आजादी मुकम्मिल बन सकती है। अगर हम आजादीके बाद ऐसा करेंगे जैसा आज हो रहा है तो ऐसी आजादी मुझको चुभती है। क्या हमारी आजादी ऐसी होगी? ऐसी कभी नही होगी।

: १६७ :

३ दिसबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरे पास काफी लोग आते है, सबका हिसाब तो मै आपको देता नहीं हूं, कोई ऐसी चीज होती है तो कह देता हूं। तो आज भी कुछ भाई लोग मेरे पास आए। उनका कोई ताल्लुक हमारी हकूमतके प्रधान जो हैं उनसे हुआ होगा। तो वे कहते है कि प्रधानने एक समय तो एक चीज कही थी, लेकिन अभी अपनी प्रतिज्ञा, वचनको भंग कर रहे है। वह कैसे, मैं तो कह नहीं सकता हूं। उनके पास लिखित खत था कि उन्होने एक बार कल या तीसरे दिन—ऐसा कहा था और अब ऐसा कहते है। तो मैंने कहा कि लिखित चीज हो तो बताइए। आखिर मै भी वैसा ही हूं जैसे आप है। मै हकूमत तो हूं नही, मेरे पास कोई अधिकार तो है नही; लेकिन मै सेवक हू, उनका दोस्त हूं, उनके साथ काम किया है, इसलिए उनके साथ बात कर सकता हूं, लेकिन ऐसी बात कैसे कहू ? इसपर मुझको लगा कि ऐसा क्यो होता है, हमसे कहे एक बात और करे दूसरी बात। ऐसा होता है तो मुझपर बीतती है न ? मै समझता हूं कि मैने कभी इरादा करके, समझके किसीको धोखा नही दिया है। हां, हो सकता है कि आदमीको जानकारी नही है, सद्भावसे कहता है, बुरा हेतु नहीं है, उसे धोखा मानें और दुःख मानें तो ऐसी बहुत-सी चीज दुःखकी होती है। बहुत-सी चीज बगैर समझे होती है और उससे भी वचन-भग हो जाता है; लेकिन अगर कोई जान-बूझकर अपना वचन-भग करता है तो बुरा करता है। ऐसा नही होना चाहिए। इसके लिए जहातक हो सके वहातक मौन ही रखना चाहिए। कभी बेकार एक शब्द भी नही कहना चाहिए, और अगर एक बार दिलकी बात निकाल दी तो उसके मुताबिक काम करना चाहिए। हम ऐसा करेंगे तभी हम एक-वचनी बन सकते है। और अभी जब सारे देशकी हकूमत चलाते है तो हमको सावधानीसे काम करना चाहिए, उसमें मर्यादा होनी चाहिए, विवेक होना चाहिए और नम्रता

होनी चाहिए, उद्दडता नही होनी चाहिए। ये सब हो तब हमारा काम आखिरतक पहुच सकता हे और लोगोको कुछ कहनेकी गुजाइश नही रहेगी। हा, एक बार कह दिया कि अमुक चीज मुफ्तमे बाटेगे, ऐसा तो होता नही है, लेकिन मानो कि हुआ, बादमे कहा कि दो पैसा लेगे तो वह वचन-भंग हुआ। इस तरहसे वचनका भग करना ही नही चाहिए। आज हम ऐसे वन गए है कि हमारे पास वचनकी कोई कीमत ही नहीं रही। आज बोल दिया और कल अलग हो जाते है। आज मै कह देता हूं कि कल कोई ४ बजे आपके पास आता हू, लेकिन उस वक्त नाचमें चला गया या और कहीं चल देता हू तो वह वचन-भंग होता है। मैं तो कहूंगा कि हमे बड़ी सावधानीसे काम करना चाहिए। तो मैने सोचा कि मै कह तो दू कि वह हकूमतपर लागू नही होता, व्यक्तिपर लागू होता है। सब वचनपर कायम रहे, बोलें तो तौलकर बोलें, आवेशमें तो कुछ कहना ही नही चाहिए। जैसे हम एक चीजका बयान देते है कि मारपीट हो गई, पीछे उसमे रग डालनेके लिए कह देते है कि खून हुआ। ऐसी बात तो छिप नही सकती, अभी नही तो बादमे, कभी-न-कभी तो मालूम हो ही जायगी। मै तो यही कहूंगा कि ऐसा करना ही नही चाहिए।

अभी मुझे एक डाक्टर सिंधसे लिखते है कि वहा जितने हरिजन रहे है वे बेहाल है। हरिजन अगर अकेले वहां रह गए और कोई दूसरे नही रहते तो वे कहते है कि उनको वहां मरना है। अगर मरना नही है तो गुलामीमे रहना होगा और आखिरमे मुसलमान बनना होगा। यह बहुत बुरी बात है। आज तो ऐसा हो गया है कि पाकिस्तानकी हकूमत जो कहती है उसको उनके मातहत जो आदमी है, वे करते नही है। आज हिंदुस्तानमे भी ऐसा हो गया है। जवाहरलाल कह देगे सरदार कह देगे कि हम तो मुसलमानोकी हिफाजत करेगे, हम नही चाहते कि जबरदस्ती एक भी मुसलमानको पाकिस्तान जाना पडे, लेकिन चलती नही है, उनके पास ऐसे करनेवाले नही है; क्योंकि उनके मातहत करते नही है, पीछे प्रजा तो करती ही नही है।

मैंने कल सुनाया ही था कि मै पानीपत चला गया था। वहां २८००० हिंदू सिख दुःखी पडे है। उनके साथ पाकिस्तानमे अच्छा सलूक नही

हुआ। तभी तो उनको भागना पडा, दुःख पडा तभी तो भागे, नही तो भागनेकी क्या गरज पडी थी ! जब वे ऐसा दुःख उठाकर आए है तो क्या वे दूसरेको भगाए ? लेकिन ऐसा होता है । मै पाकिस्तानको किस मुहसे कहूं ? तो भी कहना पड़ता है । वे लिखते है— लंबा-चौडा खत लिखा है, मेरे पास पडा है— वहां कोई हरिजन रहना नही चाहता। वे अगर एक जगह बैठना चाहते है तो बैठकर रह नही सकते, उनसे जबरदस्ती काम लिया जाता है । कहा जाता है कि पैखाना साफ करो, झाडू निकालो। यह सब हमको करना चाहिए । लेकिन उनको ऐसा करनेको कहते है तो आज भगी पैखाना ही साफ करे, ऐसी बात थोडी है । एक भगी हमेशा पैखाना साफ करनेका काम करे, ऐसी बात तो होनी ही नही चाहिए । अगर वह बैरिस्टर बन सकता है तो वह क्यो न बने ? हम ऐसा क्यो कहे कि तुम यही काम करो—उनके दिलकी बात होनी चाहिए । अगर उनसे ऐसा कहा जाय कि मुसलमान बनके रहो, नही तो ठीक नही है तो बेचारे हरिजन जाय कहा ? क्या करे ? आपने देखा ही होगा कि जगजीवनरामने एक लबा बयान दिया है। उसमे उन्होंने कहा है कि हरिजनोको वहांसे आ जाना चाहिए । अगर वे आना चाहते है तो उनके लिए सब सहूलियत पैदा करनी चाहिए । जबतक वे पाकिस्तानमे भी रहते है तबतक उनको उनकी खुशीके मुताबिक करने देना चाहिए, नही तो छोड देना चाहिए । ऐसा नही करते है तो हमेशा के लिए हिंदू और सिखको चुभनेवाली बात है हिंदुस्तान या पाकिस्तान कुछ भी बने, तो भी हम एक-दूसरेको भूल नही सकते । हमको तो एक शराफतसे काम करना है, किसीको रंज पहुंचाना नही है, किसीको मजबूर करके मुसलमान भी नही बनाना है, किसीकी लडकीको या औरत को मजबूर करके छीनकर भागकर नही जाना है । कल डाक्टर गोपीचंद भार्गव और सरदार स्वर्णसिहने भी कहा था कि इसको हम बर्दाश्त करनेवाले नही है । आजकल अगर कोई मुसलमान कहे कि मै हिंदू बन गया हूं तो उसे मानना नही चाहिए, हरिजन कहे कि हम मुसलमान बन गए है तो वह मानने लायक चीज नही है । डरके मारे ऐसा कह देते है लेकिन उसे मानने लायक चीज नही समझना चाहिए ; क्योंकि वह बेकानून चीज है ।

अभी एक बात और रह गई है—काठियावाडमे दो किस्मकी चीजें आती है। एक किस्मकी तो ऐसी आती है कि जो तुमने लिखा था वैसी ही चीज बन गई है। आज भी ऐसा तार आया है। दूसरी किस्मकी कांग्रेसकी चीज है कि नही ऐसा नही बना है। कांग्रेसवाले ऐसा करते ही नही है, हिंदूमहासभावाले और राष्ट्रीय स्वयसेवक संघवाले करते है। वे कहते है कि मुसलमानोको कोई नुक्सान ही नही पहुचा है। हिंदू-महासभावाले और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघवाले कहते है कि हमने तो किसीका मकान जलाया ही नही है। मै किसकी बात मानू ? कांग्रेसकी या मुसलमानोंकी या हिंदूमहासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक संघकी ? हमारे मुल्कमे ऐसा हो गया है कि ठीक-ठीक पता लगाना मुश्किल हो गया है। गलती हो गई तो मान लेना चाहिए। हिंदुओसे गफलत हो गई, हिंदुओंने ज्यादतिया की तो कह देना चाहिए। इसमें क्या है ? अगर नही हुआ है और मुसलमान अतिशयोक्ति करते है कि उनका मकान जला दिया गया है, उनको जबरदस्ती हिंदू बनाया गया है, उनकी लडकी भगा ली गई है तो डंका पीटकर संसारको बता देना चाहिए कि बात क्या है, इसमे मुझे कोई शक नही है। इसी तरहसे अगर हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघसे कुछ नही हुआ है तो मै धन्यवाद देनेवाला हूं। बड़ी अच्छी बात है। सही क्या है वह मै नही जानता हूं। इसे जाननेकी मेरी कोशिश तो चल रही है। मै वहा जिनको जानता हूं उनको मैने लिखा है। मुसलमानोंको लिखा है कि क्या हुआ है, उसका हवाला दो, तब तो मै समझू कि किस तरहसे काम चल रहा है। आखिर इसका अजाम क्या आएगा, वह नही जानता हूं।

अभी दक्षिणी अफ्रीका की बात है। आपने देखा होगा कि पंडित विजयालक्ष्मीने क्या कह दिया है। वह कहती है, हम यहा हार तो गए, क्यो ? क्योंकि दो-तिहाई मत नही मिले। दो-तिहाई मत मिले तब अमरीकामे काम हो सकता है, लेकिन काफी लोगोंने मदद दी और कहा कि आप जो कहती है वह सही है। दूसरी बात यह कि सच तो हमारे साथ है, पीछे हमारी एक प्रकारकी विजय तो हो ही गई है। इसलिए दक्षिण अफ्रीकावालोंको मायूस नही होना चाहिए। लेकिन मै तो दूसरी बात कहूंगा। वह विजयालक्ष्मी बहन तो कह नही सकती ; क्योंकि वह तो यहांसे

सरकारकी ओरसे गई थी—आपके' पास उपाय नही है तो मेरे पास तो है, मैने तो जनूबी (दक्षिण) अफ्रीकामे शुरू किया था, तो मै कहूगा कि हारना-जीतना क्या है, चाहे दक्षिण अफ्रीकाके अग्रेज कहे, स्मट्स कहे कि वह वहा हमको नही चाहते, जाओ, नही तो मारेगे, खाना-पीना नही देगे जैसे पाकिस्तानमे होता है और यहा भी ऐसा होता है कि हम मुसलमानोंको खाना नही देगे। पाकिस्तानमे हिंदू और सिखको भगा दिया गया उनसे कहा गया कि नही जाओगे तो मारेगे। जैसे अभी बन्नूमे काफी हिंदू, सिख पडे है, उनका क्या हाल होगा, मुझे पता नही है। आज ही मेहरचद खन्ना आए थे तो उन्होने कहा कि दूसरी जगह भी पडे तो है, लेकिन कहा नही जा सकता कि जिंदा रहेगे; और अगर जिदा रहना है तो इस्लाम कबूल करना ही है; लेकिन बन्नूमे तो बहुतसे हिंदू सिख पडे है, वे क्या करे? जैसे जेलमे रहते है वैसे पडे है। बाहर निकल नही सकते; भीतर रहते है तो खाएं क्या, ऐसी बडी आपत्तिमें पडे है। हकूमत क्या करे? वह भी पेचीदगीमे पडी है। मै जो यहा कहता हू, वैसे ही वहा दक्षिण अफ्रीकामे हिंदू, मुस्लिम, सिख सब पडे है। उनको मै एक ही बात कहूंगा कि हार-जीत तो चलती है। लेकिन सच्ची हार-जीत तो आप ही खानेवाले है, नही तो आप कहे कि हम इज्जतमे रहेगे, हटेगे, नही। यहासे सब गए, ऐसी बात नही है। हमको बुलाया गया था। जो गिरमिटमे गए थे, फिर वहा हमारे बाल-बच्चे पैदा हो गए। तो यदि वहा किसीका रहनेका हक है—हब्शी को छोड़कर, क्योकि वह तो उनका देश है—तो सबसे पहले इनका है। बोर लोगोको भी हमारे-जितना हक नही है।

अमरीकामे सब देशके नुमायदे गए थे। जमा हो गए थे, तो हमारे देशके नुमायदेको भी जाना था। वह बुरा नही, अच्छा किया। वहा तो इन्साफ करने जमा होते है, इन्साफ नही कर पाते या कर नही सकते यह बात दूसरी है। लेकिन मै तो कहूंगा कि दक्षिण अफ्रीकामे हम लडे, तलवारसे नही, बाहुबलसे नही, आत्मबलसे। आत्मबल तो छोटी लड़की जो मेरे पास बैठी है उसके पास है, और बैठे है उनके पास है, सिपाहियोंके पास है। तलवारको तो कोई छीन सकता है, हथियारको छीन लेगा, हाथ-

को काट डालेगा ; लेकिन आत्माको तो कोई छीन नहीं सकता —वह तो सनातन सत्य है, आज रहेगा, कल रहेगा, परसों रहेगा। बिना आत्माके शरीर निकम्मा है। शरीर तो दफन होनेवाला है। मेरी पत्नी मर गई तो उसे मैं रख नहीं सका, जला दिया उसी रोज। दो दिन भी नहीं रख सका। महादेव मर गया, वह तो मेरा सब काम करनेवाला था। तो मैं उसको रख थोड़े सका! जो काम करता था वह चला गया तो उसके शरीरको जला दिया। तो मैं तो यही कहनेवाला हूं कि अगर दक्षिण अफ्रीकावालोंमें अपनापन है और मैं मानता हूं कि वह है, अगर हिम्मत-वान हैं तो उन्हें नम्रतासे कहना है कि अमरीकामें दो-तिहाई मत तो नहीं मिले, लेकिन काफी तो मिले। दक्षिण अफ्रीकाके लोगोंसे कहे कि हम नम्रतासे कहते हैं कि आप इतना तो करें कि हमें इज्जतसे रहने दें। हम इज्जतसे रहेंगे। वहां महकमोंमें हमें कोई हिस्सा नहीं चाहिए। आप हमें मदद न करें, लेकिन हमें हवा तो खाने दें, पानी पीने दें, जमीनमें रहने दें, जिस जगह हम रहना चाहते हैं, पैसे देकर रहना चाहते हैं, मुफ्तमें नहीं, हमें आपका मत नहीं चाहिए, मिले तो जैसे अंग्रेजोंको मिलते हैं वैसे मिले, नहीं तो नहीं मिले। उसके लिए हम सत्याग्रह नहीं चलाएंगे ; लेकिन हमें अपनी इज्जत रखनी है और हमें पानी चाहिए, रोटी चाहिए और जमीन चाहिए, और हमारे लड़कोंको तालीम चाहिए, इसके लिए पैसे न दें उसे तो समझ सकेंगे। हम इधर घूमते हैं तो लड़कोंको तालीम तो दें। यह हमारा हक है और इन चीजों-के लिए इस तरहसे लड़नेका हमारा हक है। हारनेकी बात तो है नहीं, मरनेकी बात है। करना या मरना इसके सिवा कोई दूसरा चारा नहीं है। अगर दुनियामें हमें इज्जत रखनी है तो करना या मरना है। इसमें कोई बेहालकी बात नहीं है। यह सीधा धर्म है। यह मैं दक्षिण अफ्रीकावालोंको बताता हूं और आपको भी बताता हूं दूसरा मेरे पास है ही नहीं।

: १६८ :

४ दिसबर, १६४७

भाइयो और बहनो,

काठियावाडकी बात मैने कल भी की थी। आज मेरे पास सामलदास गाधीका तार आया है। कल श्री ढेबरभाईका तार आया था। दोनों कहते है कि मेरे पास बहुत अतिशयोक्तिभरी खबरे आई है। वहां औरते उडाई ही नही गई और जहातक वे जानते है, एक भी खून वहा नही हुआ। सरदार पटेलके जानेके बाद तो कुछ भी नही हुआ। इसके पहले थोडी लूटपाट और दगा हुआ था। सामलदासको मेरे कहनेकी चोट लगी, लगनी ही चाहिए थी। वह खुद बबईसे काठियावाड चले गए है। वहा और तहकीकात करके मुझे ज्यादा खबर देगे।

इधर अमेरिका, ईरान और लंदनसे मेरे पास तार आते रहे है, जिनमें लिखा था कि काठियावाडमे मुसलमानोंपर बडा अत्याचार किया गया है। इस तरहका प्रचार करना सच्चे लोगोका काम नही। इस बारे में ईरानका हिंदुस्तानके साथ क्या ताल्लुक ?

सामलदास गाधी कहते है कि 'मेरे पास हिदू-मुसलमानका भेद नही।' तो जो मुसलमान भाई मुझे लिखते हैं उनका मै पूरा-पूरा साथ देना चाहता हू। मगर शर्त यह है कि वे सचाईकी राहपर हो। वे अति शयोक्तिभरी खबरें विदेशोंमे भेजे, सारी दुनियामें शोर मचावें, यह मुझे बुरा लगता है। हिदुस्तानमेसे भी मेरे पास तार आते है उन्हे तो मै बरदाश्त कर लेता हू, लेकिन जब विदेशोसे तार आते है तो मुझे लगता है कि यह तो बहुत हुआ। उससे मुझे चोट लगती है।

होशंगाबादसे एक मुसलमान भाईका खत आया है। उन्होने लिखा है कि यहा गुरु नानकके जन्म दिनपर सिखोंने मुसलमानोंको बुलाया और उनसे कहा कि आप हमारे भाई है, आपसे हमारा कोई झगडा नही है। मुझे यह जानकर खुशी हुई। होशंगाबाद वही जगह है, जहां स्टेशनपर एक घटना हो गयी थी। होशंगाबादमें गुरुनानकके जन्म-

दिनपर सिखोंने जैसा किया, वैसा सब जगह लोग करें, तो आज हमपर जो काला धब्बा लग गया है उसे हम धो सकेंगे।

व्यापारी-मंडलवाली बात आगे चल रही है। मैंने इशारा तो किया था कि मारवाडी और यूरोपियन व्यापारी-मंडल रहे, तो मुसलमान-चेंबर क्यों न रहे? एक मारवाडी भाईने मुझे लिखा है कि हम है तो मार-वाडी, मगर हमारे चेंबरमें दूसरे भी आ सकते है। मैंने उनसे पूछा है कि आपके चेंबरमें गैर-मारवाडी कितने है और हिंदू कितने है। उनका खत अंग्रेजीमें है, मुझे यह बुरा लगता है। उनकी रिपोर्ट भी अंग्रेजीमें है। क्या मै अंग्रेजी ज्यादा जानता हू? मेरा दावा है कि जितनी मै अपनी जबान जानता हूं, उतनी अंग्रेजी कभी नही जान सकता। माका दूध पीनेके समयसे जो जबान सीखी, उससे ज्यादा अंग्रेजी—जिसे १२ बरस-की उमरसे सीखना शुरू किया—मुझे कैसे आ सकती है? एक हिंदुस्तानी के नाते जब कोई मेरे बारेमे यह सोचता है कि मैं अपनी जबानसे अंग्रेजी ज्यादा जानता हू, तो मुझे शर्म मालूम होती है।

हम अपने आपको धोखा न दें। यूरोपियन चेंबर वाले भी ऐसा दावा कर सकते है कि हमारे चेंबरमे सब लोग आ सकते है। मगर इससे काम नही चलता अगर सब कोई आ सकते है तो अलग-अलग चेंबर रखनेकी जरूरत क्या? यूरोपियनोंसे मेरा कहना है कि वे हिंदुस्तानी बनकर रहें, अगर वे हिंदुस्तानी बनकर रहे और हिंदुस्तानके भलेके लिए काम करें तो हम उनसे बहुत कुछ सीख सकते है। वे बडे होशियार व्यापारी हैं। उन्होंने अपना सारा व्यापार बंदूकके जोरसे नही, बल्कि बुद्धिकी शक्तिसे बढाया है।

बर्माके प्रधान मंत्री मुझसे मिलने आ गए थे। वह बडे नम्र और सज्जन हैं। उनसे मैने कहा, आप हमारे यहा आए, यह अच्छी बात है। हमारा मुल्क बडा है, हमारी सभ्यता प्राचीन है। मगर आज हम जो कर रहे है, उसमें आपके सीखने-जैसा कुछ नही है। हमारे देशमे गुरुनानक हुए, उन्होंने सिखाया कि सब दोस्त बनकर रहे, सिख मुसलमानोंको भी अपना दोस्त बनावें और हिंदुओंको भी। हिंदुओं और सिखोंमें तो फर्क ही क्या है? आज ही मास्टर तारासिहका बयान निकला है। उन्होंने कहा हैं, जैसे नाखूनसे मांस अलग नही किया जा सकता, वैसे ही हिंदू

और सिख अलग नही किए जा सकते। गुरु नानक खुद कौन थे? हिंदू ही थे न? गुरु ग्रंथ साहब वेद, पुराणों वगैराके उपदेशोसे भरा पडा है। बातें तो कुरानमे भी वही है। हिंदू-धर्ममें 'वेदके पेट' में सब धर्मोका सार भरा हुआ है वर्ना कहना पड़ेगा कि हिंदू-धर्म एक है, सिख धर्म दूसरा, जैन-धर्म तीसरा और बौद्ध धर्म चौथा। नामसे सब धर्म अलग-अलग है, मगर सबकी जड एक है। हिंदू-धर्म एक महासागर है, जैसे सागरमे सब नदियां मिल जाती है वैसे हिंदू-धर्ममें सब धर्म समा जाते है। लेकिन आज हिंदुस्तान और हिंदू अपनी विरासतको भूल गए मालूम होते है। मै नही चाहता कि बर्मावाले हिंदुस्तानसे भाई-भाईका गला काटना सीखें। आज हम अपनी सभ्यताको नीचे गिरा रहे हैं। लेकिन बर्मावालोंको हमारे इस काले वर्तमानको भूल जाना चाहिए। उन्हें यही याद रखना चाहिए कि हिंदुस्तानकी ४० करोड प्रजाने बिना खून बहाए आजादी हासिल की है। हो सकता है कि अंग्रेज थके हुए थे। मगर उन्होंने कहा है कि 'हिंदुस्तानियोकी लड़ाई अनोखी थी।' उन्होंने हमसे दुश्मनी नही की, बंदूकका सामना बदूकसे नहीं किया। उन्होंने हमे नाराज नही किया। ऐसे लोगोपर क्या हम हमेशा मार्शल ला चलाते रहें? यह नही हो सकता। सो वे हिंदुस्तान छोड़कर चले गए। हो सकता है कि हमने कमजोरीके कारण हथियार नही उठाया। अहिंसा कमजोरोंका हथियार नही, वह बहादुरोंका हथियार है। बहादुरोंके हाथमे ही वह सुशोभित रह सकता है। तो आप हमारे जंगलीपनकी नकल न करें, हमारी खूबियोंका ही अनुकरण करें। आपका धर्म भी आपने हमसे लिया है। हिंदुस्तान आजाद हुआ तो बर्मा और लंका भी आजाद हुए। जो हिंदुस्तान बिना तलवार उठाए आजाद हुआ उसमे इतनी ताकत होनी चाहिए कि बिना तलवारके वह उसको कायम भी रख सके। यह मैं इसके बावजूद कह रहा हूं कि हिंदुस्तानके पास सामान्य फौज है, हवाई फौज है, जल-सेना बन रही है, और यह सब बढाई जा रही है। मुझे विश्वास है कि अगर हिंदुस्तानने अपनी अहिंसक शक्ति नही बढ़ाई तो न तो उसने अपने लिए कुछ पाया और न दुनियाके लिए। हिंदुस्तानका फौजीकरण होगा तो वह बरबाद होगा और दुनिया भी बरबाद होगी।

: १६६ :

५ दिसंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझको यहा जो खत दिए जाते है वे लंबे-लंबे मिलें तो उनको मैं पढ़ूं और उत्तर दूं, ऐसा तो नही बन सकता है। तो मैं इतना ही कहूंगा कि ऐसे जो पत्र आते है वे अगर जवाब देने लायक हैं तो दूं; लेकिन उनको पढ़नेमें समय लगता है। उनको यहा पढ तो नही सकता हूं, क्योंकि उनमें मेरा समय जाता है और आपका भी। एक खतमे लिखा है कि आप लियाकत अली खां साहबसे मिले और बातचीत की। क्या अब भी पता नही चला है कि काठियावाडमे कुछ भी नही हुआ? वह भाई अगर यहां हैं तो सुन लें, नही है तो भी इसके (रेडियोंके) मारफत सुन ही लेंगे कि काठियावाडमें कुछ भी नही हुआ है। सामलदास गांधीने कहा है कि जैसा बयान आपको मिला है वैसा नही हुआ। हां, हुआ है; लेकिन उतना नही हुआ है। वह पाकिस्तानके अखबारोंमें आ गया और तार भी छूटा। वह भयानक चीज है, लेकिन भयानक चीज नही हुई। आज सामलदासका दूसरा तार आया है। वह लिखते है कि मैंने तहकीकात की तब पता चला कि ऐसा हुआ नही है और सरदारके आनेके बाद तो कुछ हुआ ही नही। पहले जो मुझे खबर दी गई थी उसका कहनेका मतलब यह है कि सरदारने लोगोंको भड़काया तब हुआ, लेकिन उनके जानेके बाद तो कुछ हुआ ही नही तो शक्ल बदल जाती है। तो सामलदास गांधीने कहा कि मैं मुसलमान भाइयोंसे कहूंगा कि आप ऐसे तार क्यों भेजते है। तो मेरे पास उन्ही लोगोंने, जिन मुसलमान भाइयोंने शिकायत की थी, तार भेजे हैं कि उसमे गलती थी, उसमें अतिशयोक्ति थी। वे लिखते है कि पाकिस्तानके अखबारोंने जो लिखा है वह गलत है। जितना नुकसान हुआ बताया जाता है वह भी गलत है। उसमे यह भी है कि मुसलमान लोग भड़क उठे हैं, सब दहशतमें है—यह भी गलत है। तो मुझको अच्छा लगा। क्यों? मैंने तो कह दिया है कि मुसलमान भाइयोंके लिए जितना

मुझसे हो सकता है करूंगा। जो गिरे हैं उन्हें हमे लात नही मारनी चाहिए, उनको उठाना चाहिए। यह हमारी इन्सानियत बताता है, हमारी मोहब्बत बताता है; हम सभ्य है, शरीफ है, यह बताता है। किसीको नीचे गिराना तो मेरेसे कभी हो ही नही सकता। मेरा दुश्मन भी हो—मेरा दुश्मन तो कोई है नही—तो उसको भी मैं कभी नुकसान नही पहुंचाऊंगा। हां, लोगोंका जो बडा ख्वाब था कि जब पाकिस्तान हो जायगा तो वहां सब कुछ हो जायगा। ऐसा क्या होगा? ऐसा थोड़ा है कि जो पाकिस्तानमे रहेगे वे जिंदा रहेंगे और जो बाहर रहेगे वे जिंदा नही रहेगे। पाकिस्तान क्या बचा सकता था? पाकिस्तानमे तो समुदर भरा है हिंदू और मुसलमानोंका। क्या वहा जो हिंदू-सिख भरे है उनको भगाएं? वे हटना तो चाहते नही थे; लेकिन नही होने लायक चीज हो गई। वे हटना थोडे चाहते थे। सिखोंके पाससे मेरे पास खत आया है कि वे वहां जाना चाहते है और उनको उनके बिना चैन नही। मानो कि लायलपुरके नजदीक किसीकी हजार एकड जमीन पडी है, वहा उसने खेत बना लिया है, बगीचा बना लिया है, केले पकाता है, गेहूँ पकाता है, कपास पकाता है, फल पकाता है तो वह उसको कैसे छोड सकता है। जबतक वह वहां लौट नही जाता है तबतक उसको चैन मिल ही नही सकता। तो वहां तो ऐसा हुआ और यहां क्या हुआ? सिखोंको गुस्सा आया कि हम तो वहासे भागकर आए और वे लोग यहां आराममे रहते हैं तो बदला लें। तो मैने कहा कि यह इन्सानियत नही है, हैवानियत है। ऐसा करना नही चाहिए। बुरेका बदला अच्छा ही देना चाहिए। बुरेकी नकल नही करनी चाहिए। अच्छेकी नकल हो सकती है। यह इन्सानका काम है। तो मुझको अच्छा लगा कि काठियावाडसे तार आया। मैं तो मुसलमान भाइयोंसे कहूंगा कि एक चीज बन गई है तो उसका आधा बताओ; पाव बताओ, उसका दुगुना, दस गुना क्या करना था, और बाहर क्या भेजना था! दुनियामे फैलाएं, ऐसा क्यों करना था! पीछे हिंदू, सिख - सिख तो हैं नही, हां अभी थोड़े चले गए है—बिगड जाएं तो दुनिया क्या बचा सकती थी? हां, वे कहते कि क्या तुमने इसलिए आजादी पाई? हम उसे छीन लेते है। वह सब बन सकता है; लेकिन जो मर जाय वह थोड़े आ सकता है। इसलिए मैं कहूंगा

कि हम कोई चीज बढ़ाकर न कहें। जो दुःख है वह दुःख तो है ही उसको कोई बाहरवाला हटानेवाला नही है। उसको छोटा करके कहे। दूसरोंका जो भला काम है उसको बढ़ाकर बताए और बुरेको छोटा करके बताएं तब तो हम दुनियामें काम कर सकते है।' तो आपको यह खबर देनी थी, दे दी। एक भाईने लिखा था, वह भी आ गया। उसमें और क्या लिखा है, देखूगा। कहना होगा तो वह खबर कल दे दूंगा।

अभी एक बात और आपको कहनी है। उसका आपसे कोई ताल्लुक नही है; लेकिन आपके मारफत कह तो दूं। मैंने बृजकिशनजीको कह दिया है कि मेरेसे जो मिलने आते है उनको ६ तारीखसे १३ तारीखतक वक्त न दें। नही मिलना चाहता हू, इसका मतलब यह नही है कि मै बीमार हू या शौक करता हू। वह तो कई महीनेसे बात चल रही है। मै सेवाग्राम जा नही सकता हू। इसलिए वे लोग सेवाग्रामसे यहां आ रहे है। कलसे कस्तूरबा ट्रस्टकी बैठक शुरू होती है, उसके बाद चर्खा-संघ, फिर नई तालीम पीछे ग्राम-उद्योग संघकी बैठक होगी। इन दिनोमे चार बैठक हो जायंगी। अच्छी तरहसे हो सकें तो इसमे वक्त तो जायगा। तो इनको वक्त दू या मिलनेवालोको वक्त दू? तो मैंने कह दिया कि मेहरबानी करके इन दिनोंमे वक्त न मागें। हा, बादमें मिल सकते है। मै यहां अपना काम नही करूंगा ऐसी बात नही है। बाहरसे आते है तो कितना चाहते है; क्योंकि मै तो सूखा जानवर-सा बन गया हूं। जब घर रहता है तब कहते है कि देखनेके लिए तो चले जाएं। बाहरसे आते है तो कहते है कि सूखा जानवरको तो देख लें लेकिन समझ ले कि थोड़े दिन घरके भीतर बैठा हुआ है। तो इतना मैने कह दिया।

अभी एक बात आपको और कह देनी चाहिए। कह तो चुका हूं। बातें भी चल रही है कि कपड़ोपर जो अंकुश है, कंट्रोल है, वह छूट जायगा। खुराकपर है वह भी छूट जायगा—कल छूट जायगा, ऐसी बात थोड़ी है। लेकिन प्रवाह चल गया है तो कहते है कि तुमने अच्छा किया। सब जगहसे खत आते है कि अंकुश छूट जाय तो अच्छा है। तब मुझे कहना चाहिए कि अंकुश छूट जाता है तब हमारा कुछ फर्ज नही है, ऐसी बात नही है। जब छूट जाता है तो जो इस बारेमें व्यापार करते है उनका पहला फर्ज हो

जाता है। मैं घनश्यामदासको भी कहूंगा कि आप ज्यादा कपड़े क्यों नहीं पैदा करते ? वह कह सकते है कि मैं तो एक मजदूरी कर लेता हूं। जो हुकम होता है वे कपडे हम बनाते है, जो दाम होना है वह दाम ले लेते है, लेकिन जब अकुश उठ जाता है तब घनश्यामदास क्या करें, दूसरे मित्र लोग क्या करे ? छूट मिल गई तो लोगोंको लूटना है ? तब तो मेरी हजामत होनेवाली हैं। ऐसा हो गया है कि लोग कहते है कि यह मैंने हटाया। हकूमतमे मेरे भाई-बद है, मेरे दोस्त है, उनको कहा तो छूट गया, ऐसी बात थोडी है। मैंने तो हिदुस्तानकी खिदमतकी है। मै कितना भी बड़ा होऊ, कितना भी कहूं; लेकिन अगर हकूमतको नही जचती है, लोगोंको, जिनकी हकूमत है, नही जचती है तो मैं कितना भी कहूं, उससे क्या ? मै भगवान थोडे हू कि जो कहू वह अच्छा है। मै तर्क करता हू, अनुमान करता हू, तब कहता हूं कि कपडे और दूसरी चीजोंपर जो अकुश है वह हट जाय। इसका मतलब यह है कि अगर आज हमारे पास ५ मन अनाज पडा है तो कल १० मन होना चाहिए; क्योंकि मै समझता हूं कि दबाकर बैठ गए है। अगर आज किसानके पास नही है और तब भी मै कहूं कि अंकुश हटा लो, लोग भूखे मरेंगे तो क्या ? मै इतना बेवकूफ थोडे हूं कि कहूं कि लोगोंको भूखे मरने दो ! मेरे लिए तो घनश्यामदास बकरीका दूध तैयार करा देते है, फल दे देते हैं, भाजी-तरकारी दे देते है, मै थोडे भूखा मरता हूं। मै क्या ऐसा कर सकता हूं कि लोग भूखे मरें ? मै तो मान बैठा हू कि किसानोके पास अनाज पड़ा है, लेकिन उतना दाम नही मिलता है जिससे वे खाना भी खा सकें। मजबूर करके सरकार उनसे जितना लेती है उतना दे देते है और कहते है कि जब छूट हो जायगी तब बता देगे कि हमारे पास कितना अनाज है। दूसरे व्यापारी है, जब हमारे पास हकूमत नहीं थी तब वे नखरा करते थे और हरएक किस्मका पैसा लोगोंसे ले लेते थे, लेकिन अब वैसे एक कौडी भी लेना हराम है। मै तो समझता हूं कि किसान अनाज निकाल देगे, उसको अच्छे दामपर बेच देंगे तो भूखे नही मरेगे। माना कि हमारे पास उतना अनाज नही है जितना चाहिए, तो क्या जिसके हाथमे जितना अनाज आए उतना सब खा जाय और पडोसी भूखा मरे ? अगर हम इतने नालायक बन गए तो उसका इलाज नही है। तब भी मै कहूंगा कि

उसका इलाज अंकुश नहीं है । अगर, ऐसा हुआ तो हमारी हकूमतको जिसमें आला दर्जेके हमारे लोग हैं, हट जाना है । लोग चालाकी करते है, सचपर नहीं रहते है, जिन व्यापारियोंको लोगोंके लिए व्यापार करना है वे अपना ही घर भरते है, अपने लडके-लडकीके लिए व्यापार करते है तो हमारी जो सल्तनत है उसे हट जाना चाहिए। हकूमत क्या करे ? गोली मारे, मजबूर करे ? हमारी ऐसी ताकत है नही और ऐसी ताकत हमे चाहिए भी नही । पुलिस रखना है तो रखे, लेकिन गोली मारनेके लिए थोड़े रखना है ! व्यापार करते है उनको मारना है तो किसके लिए मारे ? किसानोंको मारे तो कौन रहेगा ? मै तो कहूंगा कि ३० वर्षमे तालीम ली वह कहा गई ? इन्सानियत कहा चली गई ? ऐसा चल नही सकता । यह तरीका तो जो आजादी मिल गई है उनको खोनेके लिए है इसलिए मै तो कहूगा कि अंकुश हट जाय । अगर हकूमत कहे कि अंकुश हटा लेंगे तो लोग मर जाएगे तो मै कहूगा कि पचायत राज नहीबना, लोगोंका राज नही हुआ, रामराज्य तो हुआ ही नही । मै तो उसीके खातिर जिदा रहना चाहता हू। मै कहूंगा कि जो अंकुशसे बरी हो जाते है वे अपनेपर अंकुश रखकर दूसरोंको खुश करे। पीछे हकूमत चलानेमे जो सिविल सर्विसके लोग है वे कहें कि यह गाधी कहासे निकला, यहा क्यों कूद पड़ा, उसको हकूमत चलानेका अनुभव कहा है । बादमे अंकुश लाना और खाना खिलाना मुश्किल हो जायगा । तो मै कहूंगा कि हा, ठीक है, मै सिविल सर्विसमे नही गया हू, हकूमत नही चलाई है ; लेकिन हजारो करोडों लोगोंमे मै घूमा हू, उनके दिलको जानता हू, इसलिए मै समझता हू । मै सिविल सर्विसवालोंसे जो हकूमत चलाते है, उनके पाससे प्रमाणपत्र मागूगा कि वे ऐसा कहे, गाधीकी बात सुन ली और नतीजा यह आया कि अबतक हमारेमें जो काला-बाजार चलता था मिट गया । जो ताजिर करते है वे अपना ही काम नही करते है—वे लोगोको साथ रखकर चलें ।

पीछे कपडेका भी आ जाता है । अनाज निकालना तो एक अलग बात भी है । आप कह सकते है कि हमारे यहां अनाज पूरा नही है, लेकिन अभीतक किसीने ऐसा नही कहा है कि कपास काफी नहीं है । कपास तो यहातक ज्यादा है कि बाहर जाता है । तो कहोगे कि हमारे पास इतनी

मिलें कहां है ? मै कहूंगा कि मिल मेरे घरमें है, आपके घरमें है, यहां जितनी माताएं बैठी है उनके घरमें है। दो हाथ तो सबके पास है। कपडा पहनना है तो चर्खा चलावें, नही तो नगे रहे। हा, तो ताजिरको कहोगे कि खबरदार, जितना पैसा चाहो लोगोसे ले नही सकते, और कहोगे कि मिल हम चलाएगे तो मै कहूंगा कि वह तो हुकूमतके पास है, वह ले सकती है। हमारे पास इतनी मिले है फिर भी उम्मीद है कि कम पडेगा तो हमे हाथसे कातना और बुनना पडेगा। बुनना आसान है। हमारे यहा इतने जुलाहे, बुनकर पडे है कि जितना चाहिए उतना बुन सकते है। लेकिन हमारे यहा शौकीन बडे है, मिलका सूत मिले तो बुन सकते है, हाथका सूत नही चाहिए। हाथ जब दबावमें आता है कि नही बुनेगे तो नगा रहना पडेगा तब लाचारीमे हाथके सूतको ही बुनेंगे। अगर हाथके सूतको बुनने लगे तो नगा रहनेकी कोई दरकार नही। तो हमारा खूबसूरत मुल्क, जिसमे इतने करोड लोग रहते है, जो धंधा जानते है, जिनको इतना इल्म है कि कपडा किस तरह तैयार किया जाता है, नगा नही रह सकता। इस कारण कपडेपर अंकुश रखना कि २ गज कपड़ा मिले, ४ गज मिलेगा, ज्यादा नही, अच्छा नही लगता। कपडेपर अकुश रखना मेरी निगाहमे अज्ञानताकी सीमा है। आज छूट सके तो आज छूट जायगा। हा, अनाजकी बात है तो मै कहूंगा कि किसान और व्यापारी कहे कि हमे तो लोगोंके लिए पैदा करना है, कोई दगाबाजी नही करना है। किसान समझें कि अनाज बोना है तो अपने ही पेटके लिए नही, सब लोगोंके लिए। मै यह भी कहूगा कि हमारे मुल्कमें आधा सेर पैदा होता है तो हम अपनी जमीनसे एक सेर क्यों न पैदा करे, लेकिन इसके लिए लोगोंको बताना तो चाहिए, उत्तेजन तो दे, हमारे पास जो यंत्र पडा है उसे रोक लें और इसमे लगा दें कि क्यो ज्यादा नही होता है।

हमारा मुल्क ऐसा है कि भूखे मरने, नंगे रहनेकी कोई दरकार नही। हम अपनी अज्ञानतासे नंगे रहते है, जितना अनाज चाहिए उतना पैदा नही करते, जितना दूध चाहिए उतना दूध पैदा नही करते, हमारे यहा इतनी भैस पडी है तो भी हमारा यह हाल है ! इससे ज्यादा मूर्खता मै समझ नहीं सकता हूं।

: १७० :

६ दिसंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोगोने लक्ष्मी बहनका भजन सुना, रामधुन भी सुनी। वे तो यहा नई है, जलसामें चली जाती है। रामधुन तो ऐसी है, भजन भी ऐसी चीज है जिसमे लीन होना पड़ता है। आज आपने समझ लिया कि उनका गाना सुननेके लिए क्यों आतुर रहते हैं--सुर अच्छी रहती है। उन्होने उसके लिए जब पैगाम भेजा तब मुझको अच्छा लगा।

हां, तो आज १५ मिनटसे ज्यादा नही बोलना चाहता हूं। कल २५ मिनट लग गए, वह ज्यादा हो गया। यह मेरे लिए शर्मकी बात है। मैं नहीं चाहता हूं कि २५ मिनट लू। १५ मिनट करना है तो मै १५ मिनट बोलनेका अभ्यास कर लूं। बाकी छूट जाय तो छूट जाय। आज १५ मिनटमें पूरा कर दूंगा।

कल एक भाईने पत्र भेजा था उसको पूरा पढ़ नहीं पाया हूं, थोड़ा पढ़ा है। आज दूसरा पत्र आया है। उसको पढ नही सका हूं। इसके लिए माफी मांग लूगा। एक ढेर पडा है, उसमें कही पड़ा होगा। वह खत जिसे पढ़कर आया हूं उसमे लिखा है कि मै तो भोला-भाला हूं, पीछे दुनिया कैसी चलती है उसको मै नही जानता हूं। उसका उत्तर कैसे दूं, यह भी नही जानता हूं। इसलिए धोखा दे सकते हैं। जो धोखा है उसका तात्पर्य भी बताता है। तो वह खबरदार करता है कि मै सावधानीसे रहूं। वह लिखता है कि देखो, पाकिस्तानमें क्या हो रहा है, हम भी ऐसा ही करें और बदला लें। अगर सावधान रहते है तो कुछ होनेवाला नही है—हम बदला लें, हमारे मकान वगैरा तो सब गए। मै ऐसा नहीं मानता हू। ऐसा समझकर मुसलमानोंके मकानोंको, थोडा या ज्यादा, जलाए तो जिसका मकान जलता है उसके लिए तो उस मकानकी उतनी ही कीमत है जैसे करोड़पतिका मकान जल जाय; क्योंकि उसीमें उसक

गुजारा होता है। यह बड़ा मकानवाला है तो ज्यादा खाता है, ऐसा थोडा है। जितना आप खाते है, मै खाता हूं उतना करोडपति खाता है। तो मै आपको यह बताना चाहता हूं कि जब मुसलमानको मजबूरन पाकिस्तान जाना पडता है तो उसको भी नुकसान पहुचता है।

वह पूछते है कि हिंदू, सिख पाकिस्तानमे सब छोडकर यहा चले आए तो वह कब मिलनेवाला है ? मुझे कहना है कि हां, यह ठीक शिकायत है, लेकिन मै तो कहूंगा कि मै सतुष्ट होकर बैठनेवाला नही हूं जबतक सब हिंदू, सिख—मर गए वह दूसरी बात है—अपने मकानपर जाकर बैठ नही जाते है। जबतक एक भी हिंदू, सिख ऐसा रह जायगा जिसे उसका मकान वापस नही मिला हो तबतक मै शातिसे नही रह सकता हूं। हा, जो मकान जल गया है उसको कहे कि ऐसा-का-ऐसा बना दो, तो ऐसा तो कोई हकूमत नही कर सकती, न आपकी हकूमत ऐसा कर सकती है। हकूमतसे ऐसी आशा करनी ही नही चाहिए। मै कहता हूं कि मॉडल-टाउनमे हिंदू-सिख सब जाकर रहे तो यह काफी है। लाहौरके हिंदू, सिख है वे अपने घरपर, जमीनपर जाकर बैठे और कहे कि जो मकान जैसा है दे दो, जो जमीन है वैसे दे दो। इसी तरह सब अपने घर चले जाय और अपने घरमे जाकर रह सकते है तो मेरे लिए काफी है। हा, इतना होना चाहिए कि जिन मकानोपर मुसलमानोने कब्जा कर लिया है वहासे उनको हटा दे और जिस हालतमे वह मकान है, दे दे। उनको हवेली बनाकर, दे, ऐसा थोडा है। जमीन है, उसे ही लौटा दे, बस इतना काफी है। लेकिन हा, इस यूनियनमे जितने है वे सच्चे बने, अच्छे बने, शरीफ बने तो दूसरा नतीजा बन नही सकता। इसमे मुझे कोई शक नहीं है। मै तो यह भी कहूंगा कि वे जैसा करे, हम भी वैसा ही करे, ऐसा थोडा है। वे नाक कटाकर बैठ गए है तो क्या हम भी नाक कटाकर बैठ जायं ?

यह भाईका जो खत है उसके जवाबमे मै कहता हूं जो हमारी गलती हो गई—गलती सब करते है, उसमे क्या, लेकिन जब गलतीपर कायम रहते है तब हम जो करते है उसको शैतानियत मानता हूं, उसीपर हम कायम रहे तो वह इन्सानियत नही है। आदमी तो गलतीका पुतला है, वैसे धर्मका भी पुतला है। जिस जगह गलतियां कर लेता है उसको दुरुस्त कर लेता है।

तो वह धर्मका ही पुतला रह जाता है। तो हम अपने धर्मपर कायम रहें तो पीछे सारी दुनियाको सुनानेकी जरूरत नही है।

काठियावाडके मुसलमानोको जितना नुक्सान हुआ है उसके बारेमें मुझको लिखना पडा, और यह ठीक भी है, वहांके हिदुओको उनके बारेमे कहना अच्छा है, वहाकी हकूमतको कहना अच्छा है, यहा हमारी जो हकूमत पड़ी है उसको कहना चाहिए। यह हमारा हक है। हमने ऐसे थोड़े माना है कि जब पाकिस्तान हो जायगा तो वहां सब हिंदू-सिखका मकान जला दें, सब वहासे चले जाय, ऐसी बात थोडी है। लेकिन गलती हो गई तो गलतीको दुरुस्त करो। उसमे वक्त लगता है। हमको भी कह सकते है कि तुम भी गलतीको दुरुस्त करो। वे कह सकते है कि जितने मुसलमान पडे है, जिनको मजबूरन वहां जाना पड़ा है, उनको ले लो। ऐसे ही पाकिस्तानसे यहा जितने हिदू-सिखोको आना पड़ा है वे वहां चले जाय तो हम दोनों शरीफ बन जाते है, पाक बन सकते है। नही तो पीछे दुनियामे भारी मुह काला होनेवाला है। हमारा मुह सब दिन सफेद रहा है। हा, हम गुडे रहते है और गुंडेपनसे आजादी ले तो बात दूसरी है। दुनिया कहती है कि हमने शराफतसे आजादी ली। मै कहूं तो बात दूसरी है, हिदू-मुसलमान कहे तो बात दूसरी है, बाहरकी दुनिया कहती है हमने जो आजादी ली है, मिल गई है, वह शराफतसे ली है, शराफतसे मिली है। तो शराफतमे उसे हमे रखना भी चाहिए; गुडेबाजीसे नही, गुडेबाजीसे हम उसे गवानेवाले है। उसी तरहसे हम अपना आचार रखे तो दुनिया देख ले कि हमने गलती दुरुस्त कर ली। पीछे आप कहे कि दुनिया पाकिस्तानका क्या करती है, देखना है। मै तो कहूंगा कि दुनिया क्या करेगी, दुनियाको कहनेकी दरकार नही। उसे साफ होना ही पड़ेगा। मुझको कहते है कि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटीने जो प्रस्ताव पास किया है उसमे मेरा हाथ था, तो सुनाते है कि तुमने करा तो लिया, लेकिन लोगोके दिलमे है नहीं—पाकिस्तानसे जो हिदू, सिख आए है वे जाना नही चाहते। तो मै थोड़े कहता हूं कि वे मिस्कीन होकर जायं। यह ठीक है कि पाकिस्तानसे जितने हिदू, सिख आए है वे लाचारीसे आए हैं; लेकिन मै कहता हूं कि लाचारीसे जानेकी जरूरत नही, शानसे जाय। पाकिस्तानके मुसलमान कहें

कि हम सब मुसलमान ठीक हो गए है, आप आइए। ऐसा हम मुसलमानोंसे कहें कि आप मेहरबानी करके आइए, आपका मकान, आपकी जमीन जैसी-की-तैसी पडी है, उसपर कब्जा लीजिए। हमारा दीवानापन मिट गया है। हम शराफतमे चलनेवाले है तो आज अच्छा हो जाता है। इसमे धोखा देने की बात क्या है ? मै तो जानता नही हूं कि धोखा कैसा है, किस तरह धोखा दिया जाता है। इसमे दुनियाको धोखा माननेकी बात नही है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीने प्रस्ताव पास किया है कि जितने हिंदू, सिख यहा आए है उन सबको आदरसे, मोहब्बतसे अपने घरोंपर, जमीन पर जाना है, लायलपुरमे जाना है। जैसे हमारे सिख भाई वहा खेती वगैरह चलाते थे तो उनको तो वहां जाना ही है। ऐसा मेरा ख्वाब है। यही देखनेके लिए मै जिंदा रहना चाहता हूं। ईश्वर मेरे ख्वाबको पूरा नही करना चाहता है तो मुझे उठा ले। दिल्लीमें मैं रह इसीलिए रहा हूं, दिल्लीमे न कर सकू तो दूसरी जगह क्या करनेवाला हूं ! हम शरीफ हो जाय तो यह चीज बननेवाली है, इसमें मुझे कोई शक नही है। पाकिस्तानवाले भले बन जाते है और भलेपनसे कहते है कि हमारी गलती हो गई, अब हम शराफतमे पेश आएंगे, आप आइए। इस तरहसे हो जायं तो ठीक बन सकता है। तभी हम अच्छे पडोसी बन कर रह सकते है।

: १७१ :

७ दिसंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मैं आपको बहुत गूढ बात कहना चाहता हूं। बात तो हमेशा रहती है; लेकिन यह बहुत नाजुक चीज है। अखबारोमे तो आ गई है। आप लोगोंने देखा है कि कल लाहौरमे यहासे चंद हिंदू बहनें चली गई थीं और लाहौरमे चंद मुसलमान बहने थी। वे आपसमे मिली—इस कारण कि जिन बहनोंको मुसलमान उठा ले गए हैं और जिन

बहनोंको हिंदू और सिख उठा ले गए हैं, पूर्वी पंजाबमें, उनका क्या किया जाय ? यहांसे काफी मुसलमान चले गए और हो सकता है कि अभी और जायं । अगर हम हिंदू और सिख समझ जाय कि हम एक भी मुसलमानको मजबूर करके वहांसे भेजना नही चाहते है, अपने आप चले जायं, यह बात दूसरी है । लेकिन ऐसा है कि अपने आप कोई जाना नही चाहता । क्यों जायं अपना घरबार छोड़कर ? वहां पाकिस्तानमें उनके लिए घरबार तैयार है, ऐसी बात तो है नही । इच्छासे वहा जानेका तय कर लिया है या नौकरीवाले वहा जा रहे है तो यह बात दूसरी है । लेकिन ऐसे कम है । और, लोगोको वहा क्या जाना था ! वहा पाकिस्तानमें उनके लिए काम खाली है, ऐसी बात भी नही है । पहलेके व्यापारमे यहा उनका कोई हर्ज नही होता है तो वे क्यो जायंगे ?

यह तो हुआ, लेकिन औरतोंका क्या ? यह मामला गूढ है, पेचीदा है । कोई कहते है कि बारह हजार औरतोंको हिदू और सिख उठा ले गए और उससे दुगुनी पाकिस्तानके मुसलमान उठा ले गए । कोई कहते हैं कि यह बहुत कम तादाद है, इससे भी ज्यादा है । मै तो कहूंगा कि बारह हजार की तादाद कम नही है, एक हजार भी कम नही है, एक भी कम नही है मेरी निगाहमें । ऐसा क्यो हो कि किसी औरतको कोई उठाए ? कोई हिदू औरत है या सिख औरत है उसको मुसलमान उठाए और मुसलमान औरत है उसको हिदू और सिख उठाए, यह तो बड़ा अत्याचार है । कुछ लोग जो कहते है कि बारह हजारको उठा ले गए, यह कम-से-कम तादाद बताई जाती है । मै तो कम-से-कम लेना चाहता हूं । मेरे लिए यह बहुत ज्यादा है । बारह हजार औरतोंको पाकिस्तानके मुसलमान उठा ले गए और बारह हजार औरतोको पूर्वी पंजाबके हिदू, सिख ले गए । इनको कैसे लाना एक पेचीदा प्रश्न है । इसको हल करनेके लिए वे बहनें चली गई थी । मुसलमान बहनें है, उन लोगोंने भी सोचा । जितनी हिदू और सिख बहनोको उड़ा ले गए है उनको वापस लाना चाहिए, इसके लिए ये गई थी । उसी तरह जितनी मुसलमान बहनें है उनको भी उनके घर पहुंचाना चाहिए । ऐसा नही कि वे आकर ले जाय । हमे ही पहुचा देना चाहिए । उसमें वहाके प्रधान गजनफअर ली और वहांके पुलिस

अफसर भी थे—नाम तो भूल गया—और दूसरे भी थे जो इसमें काम कर सकते थे। मृदुला बहन, रामेश्वरी बहन चली गई थीं। दोनोंने मुझे अलग-अलग सुनाया कि सबने मिलकर तय किया कि बहनोंको घर वापस पहुंचाना चाहिए। लेकिन बात यह हुई कि यह कैसे हो सकता है? अगर आज उनको निकालनेके लिए ऐसा करना पडे कि पुलिस भेजनी पड़े, फौज भेजनी पडे, उसके साथ बहनें भेजनी पडे तो यह काम करनेका कोई तरीका नही है। जैसे कि पाकिस्तान है, तो वहा हिंदू, सिख बहनें चली जायं, पुलिस अफसर चले जायं, शायद पूर्वी पंजाबके अफसरभी चले जायं, उन बहनोको लानेके लिए, और उन बहनोंको ले आएं। लेकिन दोनोंमेसे एक भी जगह ऐसा हुआ नही है। कह सकते है कि वे बहनें आना नही चाहतीं तो भी लाना है। उसी तरहसे यहासे भी वहा पहुचाना है। कोई कह सकता कि हिंदू और सिख बहन मुसलमान बन गई हैं, उनके साथ निकाह कर लिए है। हा, हुआ है; लेकिन वे आनेको तैयार नही है, यह मै माननेके लिए तैयार नही हूं। मै इसे गलत बात समझता हूं। उसी तरहसे यहा है। वे बहन खुशीसे रहती है, यह माननेके लिए मैं तैयार नही।

दूसरी बात भी मै सुना चुका हूं। हमारा व्यवहार वहशियाना तौरसे चलता है, पूर्वी पंजाबमे, और ऐसे ही पश्चिमी पजाबमे। उसमें एक ज्यादा हैवान है और दूसरा कम, ऐसा कहोगे? हैवानमे ज्यादा और कम क्या हो सकता है? राजा गजनफरअलीने कहा है कि दोनोने काला काम किया है। किसने ज्यादा किया और किसने कम, इसे जाननेकी जरूरत नही। काफी तादादमे हुआ, किसने पहले की यह तहकीकात करनेकी जरूरत नही, इसके निर्णय की जरूरत नही। जरूरत यह है कि जिन बहनोंको जबरदस्ती उठा ले गए है, जिनके साथ बुरा व्यवहार हुआ है, उनको उनके घर पहुचाना है। तो उनको कैसे लाना? यह काम कैसे हो सकता है? मुझको कहना चाहिए कि यह काम पुलिससे नहीं बन सकता है, फौजसे नही बन सकता है। चद बहनोंको पूर्वी पजाब भेज दो और चंद बहनोंको पश्चिमी पंजाब—तो यह काम हो सकता है, नहीं तो हो नही सकता, ऐसी बात नही है, लेकिन यह तरीका नही है। मै नही कहता कि जान-बूझकर करना नहीं चाहते; लेकिन मैं तजुर्बेकार होनेके

नाते कहता हूं कि इस तरहसे काम होता नही है। यह काम हकूमतका है। मै यह नही कहता कि औरतोंको उडानेका काम हकूमतने कराया—पूर्वी पंजाबका काम हकूमतने थोडे कराया—पूर्वी पजावमे हिंदू और सिखों ने किया और पश्चिमी पंजावमें मुसलमानोने किया। इसमें तहकीकात क्या करनी है ? वह तो हुआ है। सख्या कितनी ही हो, मै कम-से-कम वारह हजार मानता हूं। तो पूर्वी पजाव और पश्चिमी पंजाब इतनेको तो दे दे।

कुछ ऐसा सवाल उठा है कि उनके घरवाले उनको लेना नही चाहते। जगली मा-बाप या पति होगे जो कहते है कि हम अपनी लडकीको या बीबीको नही लेगे। उनको तो लेना ही है। उन बहनोंने बुरा काम किया, यह मै माननेको तैयार नही। उनके साथ जबरदस्ती की गई तब हुआ। उनपर काला तिलक लगा देना और कहना कि यह समाजमे रहने लायक नही है, अधर्म है। मुसलमानोंमे ऐसा नही होता है। उसमें इसलाममे, तो उदारता है कि वह निकम्मा नही बनाता है। यहा निकम्मे बन जाते हैं ऐसा थोडा है। निकम्मे बनानेवाले ही निकम्मे बन जाते है। तो मै तो यही कहूंगा कि यह काम हकूमतका है। हकूमतको पता लगाना है कि से कहा-कहां है—दो-चार थोडे हैं ; वारह हजार है। उनको निकालना है और घर पहुचाना है। अगर हम समझें कि पुलिसको भेजें, औरतोंको भेजें उन वहनोंको लानेके लिए, तो यह तरीका नही है। इस तरीकेसे वे आनेवाली नही है। यह पेचीदा सवाल है। इसका मतलब यह है कि लोकमत तैयार नही है, वारह हजार औरतें उडा ले गए है तो कहोगे कि बारह हजार आदमी ले गए होंगे। और वे गुडे लोग हैं, तो मैं कहूंगा कि ऐसी बात नही है। शरीफ ही गुडे वन गए हैं। गुंडे तो कोई दुनियामें पैदा होते नही। मौका मिलनेपर वे वन जाते है और इस तरहसे ले जाते हैं। ऐसा क्यो होता है ? तो मैं कहूंगा कि दोनों हकूमत इस काममें पंगु है। दोनों हकूमतोंने अपना अधिकार यहांतक नही जमाया है कि अधिकारके जरिये उन औरतोंको लावें। अगर इतना अधिकार होता तो पूर्वीपंजाव में जो हो गया है वह होनेवाला नही था, इसी तरहसे पश्चिमी पंजाबमें होनेवाला नही था। हमें तो तीन महीने पहले आजादी मिली है। हमारी आजादी तो अभी बच्चा है।

मेरी निगाहमें पाकिस्तानने यह जहर फैला दिया। लेकिन उसको क्या कहूं ? कहनेसे क्या बन सकता है ? बहनोंको तो बचानेका एक ही तरीका है—वह यह कि हकूमत अब भी समझ जाय, जाग्रत हो जाय, इसको पहले दर्जेका काम बनाकर इसमें सारा वक्त लगा दे और इसके लिए मरनेतकको तैयार हो जाय। तब इन औरतोंको बचाया जा सकता है, नही तो कितनी ही बहनोको पूर्वी पजाब भेजो व पश्चिमी पंजाब भेजो इससे वे बचनेवाली नही है। बचानेका एक ही तरीका है जो मैं कहता हूं। हा, मदद मांगें तो मदद दें, यह बात दूसरी है। इतनी बड़ी बात मैने सुना दी।

मैने कल कह दिया था कि मुझे पंद्रह मिनटसे ज्यादा नही लेना है। इसलिए इतना ही कहकर खतम कर दूगा। दो-तीन मिनट रह गई है, उन्हें मैं छोड़े देता हू।

: १७२ :

मौनवार, ८ दिमबर, १९४७

(लिखित सदेश)

एक मुस्लिम सोसायटी मुझे चेतावनी देती है कि मुझे हिदू या मुसलमानोंकी बातें मानकर दलीलमें नही उतरना चाहिए। बेहतर यह होगा कि मैं पहले तहकीकात करूं और बादमे जो करना हो सो करूं। सोसायटी आगे चलकर मुझे सलाह देती है कि मुझे काठियावाड़ जाकर खुद सब कुछ देखना चाहिए। मै कह चुका हू कि आज मै वह नहीं कर सकता। मुझे दिल्लीमे और दिल्लीके आस-पास अपना धर्म-पालन करना चाहिए। यह सलाहकार भूल जाते है कि मेरे मिठासके तरीकेसे, जहांतक आवश्यक था वहांतक, उनकी शिकायत वापिस खिचवा सका हूं। इसमेंसे सीखनेको तो यह है कि जहा सचाईकी खातिर सचाई निकालनेका प्रयत्न रहता है वहां परिणाम अच्छा ही आता है। इस बातको बहुत

बार आजमाया जा चुका है। ऐसी बातोंमें धीरजकी ओर लगकर काम करनेकी बहुत जरूरत रहती है।

सिंधसे दुःखी पत्र आया ही करते है। सबसे आखिरका खत कराची से है। उसमे लिखा है, "खून तो नहीं हो रहे, पर हिंदू इज्जत व आबरूसे यहा रह नही सकते। यूनियनसे आए हुए मुसलमान जब चाहें हिंदुओंके घरोंमे आ घुसते है और आरामसे कहते है—'हम यहां रहने आए है।' उनके हाथमे सत्ता नही. पर हम उन्हे 'ना' कहनेकी हिम्मत नही कर सकते। ऐसे किस्से काफी संख्यामे देखनेमें आते है। चंद महीने पहलेका कराची आज स्वप्न-सा हो गया है।" यह एक लंबे खतका सारांश है। मै जानता हू कि यह खत विश्वास करनेके लायक है। यह बताता है कि वहा अधाधुधी मची हुई है। यह तो आदमीका लहू सुखाकर मारनेकी बात हुई। साथ ही इसमें आत्माका भी हनन होता है। पाकिस्तानवालोंसे मेरा अनुरोध है कि वे इस अंधाधुधीको रोकें। यह बीमारी है। उससे जितनी जल्दी छुटकारा पाया जाय उतना ही अच्छा है।

चीनीपरसे अंकुश उठ गया है। अन्नपरसे, दालों और कपडेपरसे जल्दी ही उठ जाएगा। अंकुश उठानेका मूल हेतु यह नही है कि कीमतें एकदम कम हों। आज तो असल हेतु यह है कि हमारा जीवन स्वाभाविक बने। ऊपरसे लदा हुआ अंकुश हमेशा बुरा होता है। हमारे देशमें वह और भी बुरा है; क्योंकि हमारी करोडोंकी आबादी है और वह एक विशाल देशमे फैली हुई है, जो १९०० मील लंबा और १५०० मील चौडा है। यहां देशके बटवारेको सामने रखनेकी जरूरत नहीं। हम फौजी कौम नही है। हम अपनी खुराक खुद पैदा करते हैं, या यों कहिए कि कर सकते है, और हमारी जरूरतके लिए काफी कपास पैदा करते है। जब अंकुश उठ जायगा, लोग आजादी महसूस करेंगे, उन्हे गलतियां करनेका अधिकार रहेगा। यह प्रगतिका पुराना तरीका है, आगे बढ़ना, गलतियां करना, और उन्हे सुधारते जाना। किसी बच्चेको रुईमें लपेटकर ही रखा जाय तो या तो वह मर जायगा, या बढेगा नही। अगर आप चाहते हैं कि वह तगड़ा आदमी बने तो आपको उसे सिखाना होगा कि वह सब किस्मके मौसमको बर्दाश्त कर सके। इसी तरहसे हकूमत अगर हकूमत कहलानेक

लायक है तो उसे लोगोंको सिखाना है कि कमीका सामना कैसे करना। उसे लोगोंके बुरे मौसमका और जीवनकी दूसरी मुसीबतोंका अपनी संयुक्त कोशिशसे सामना करना सिखाना है। बिना अपनी मेहनतके जैसे-तैसे उन्हे जिंदा रखनेमें मदद नहीं करना है।

इस तरहसे देखा जाय तो अंकुश निकालनेका अर्थ यह है कि हकूमतके चंद लोगोंकी जगह करोड़ोंको दूरंदेशी सीखनी है। हकूमतको जनताके प्रति नई जिम्मेदारियां उठानी होंगी, ताकि वह जनताके प्रति अपना फर्ज पूरा कर सके। गाडियों इत्यादिकी व्यवस्था सुधारनी होगी, उपज बढानेके तरीके लोगोंको बताने होंगे। इसके लिए खुराक-विभागको बडे जमींदारोंके बजाय छोटे-छोटे किसानोंकी तरफ ज्यादा ध्यान देना होगा। हकूमतको एक तरफसे तो सारी जनताका भरोसा करना है, उनके काम-काजपर नजर रखना है और हमेशा छोटे-छोटे किसानोंकी भलाईका ध्यान रखना है। आजतक उनकी तरफ ध्यान नही दिया गया, मगर करोड़ोंकी जनतामे बहुमत इन्ही लोगोंका है। अपनी फसलका उपयोग करनेवाला भी किसान खुद है। फसलका थोडा-सा हिस्सा वह वेचता है और उसके जो दाम मिलते है उनसे जीवनकी दूसरी जरूरी चीजें खरीदता है। अंकुशका परिणाम यह आया है कि किसानोंको खुले बाजारसे कम दाम मिलते है। इसलिए अंकुश उठानेसे किसानोंको जिस हदतक अधिक दाम मिलेंगे उस हदतक खुराककी कीमत बढेगी। खरीदारको इसमें शिकायत नही होनी चाहिए। हकूमतको देखना है कि नई व्यवस्थामें कीमत बढनेसे जो नफा होगा वह सब-का-सब किसानकी जेबमे जाय। जनताके पास रोज-रोज या हफ्ते-के-हफ्ते यह चीज स्पष्ट करनी होगी। बड़े-बड़े मिल मालिकों और बीचके सौदागरोंको हकूमतके साथ सहयोग करना होगा और हकूमतके नीचे काम करना होगा।

मैं समझता हूं कि यह आज हो रहा है। इन चंद लोगोंमें और मंडलोंमें पूरा मेल-जोल और सहकार होना चाहिए। आजतक उन्होंने गरीबोंको चूसा है। उनमें आपसमें जो स्पर्धा चलती आई है वह सब दूर करना होगा। खास करके खुराक और कपड़ेके बारेमें इन चीजोंमे नफा कमाना किसीका हेतु नही होना चाहिए। अंकुश उठानेसे अगर लोग नफा कमानेमें

सफल हो सके तो अकुश उठानेका हेतु निष्फल हो जायगा। हम आशा रखे कि पूजीपति इस मौकेपर पूरा सहकार देगे।

: १७३ :

९ दिसवर, १९४७

भाइयो और वहनो,

आज मैं चर्खा-सघके ट्रस्टियोंकी सभामे गया था। वहनोंके साथ तो आध घंटे बात करना ही था। अगर समय रहा, क्योकि मै १५ मिनटमे तो खतम करता हू, तो उसके बारेमे कहूगा, नही तो कल कहूगा।

आज एक चीज तो अखबारोंमें यह आ गई है कि सरदार पटेल और मैं पिलानी जा रहे है और वह किस कामके लिए ? हवा खानेके लिए। यह बात बिलकुल निकम्मी है। सरदारके दिलमे क्या है यह तो मै नही जानता हू, लेकिन मै इतना तो जानता हू कि यह हवा खानेका समय नही है। सरदार सारा दिन काम करते हैं और रातको आराम करते हैं, वही हवा खाना है। वही हाल मेरा भी है। हां, मेरा काम इतना नही है, क्योंकि मेरे हाथमें हकूमत नही है। लेकिन मेरे पास लोग आते-जाते है इसलिए थकान हो जाती है, तो भी आराम तो करता ही हूं। आजकल हवा तो यहां भी अच्छी है। इस वक्त हवा क्या खाना था ! आजकल तो यहांकी हवा ठंडी है। पिलानीमें है क्या ? मेरा तो ऐसा है कि करना या मरना। यह भी नही कर पाया हूं। अखबारवाले इस तरहकी हवाई बाते क्यों छापते हैं, यह मै नही समझ सकता हूं। मै यही समझूंगा कि अखबारोंमें जो कई बातें आती है, वे गलत है। पीछे मैने सुना कि—वह अखबारमें नही है—क्योंकि हम वहां जा रहे है, इसलिए जयपुरसे हुक्म निकला है कि इतनी चीनी चाहिए, इतना गेहूं चाहिए, क्या-क्या चाहिए। पीछे आदमी तो दो रहे, इसलिए इतना चाहिए नही, लेकिन ऐसा हो गया कि वहांके बाजारमें

सन्नाटा हो गया। यह सुनी हुई बात है, देखी हुई नही। यह कितनी बुरा चीज है कि जो चीज होनेवाली नही, वह भी हो गई। हम ऐसे है कि बाजारपर भी असर हो गया। बाजारमे ऐसा हो गया कि इतना दूध चाहिए, इतना सेर चीनी चाहिए, जैसे हम खानेके लिए ही जिदा रहते है या हमारे साथ इतना बड़ा रिसाला जाता है। ऐसा तो होना नही चाहिए। सरदार मिस्कीन है, मै भी मिस्कीन हू। यह है कि वह आलीशान मकानमें रहते हैं, आलीशान मकानमें तो मै भी पडा हूं। नही तो कहा ढूंढू। तो इस तरहसे है। आलीशान मकानमें रहते हुए भी मिस्कीनकी तरह अच्छा है। बड़ा अच्छा तो यही है—मै कबूल करूंगा—कि वह मिट्टीके झोपड़ेमें रहें और मैं भी मिट्टीके झोंपडेमे रहूं। कुछ भी हो, मै तो यही बात बताना चाहता हू कि इस तरहसे गप्प उड़ती है। मै तो यही पडा हू तो पूछ लेना चाहिए था कि क्यों भाई, तुम पिलानी जाओगे? हमारे पास तार आ गया है और वह भी एसोशियेटेड प्रेसका—उसकी तो एजेंसी यहां है, जो मुझको और चुभा। सरदार तो ज्यादा काममें रहता है। उसको नही मुझको तो पूछ सकते थे कि क्या कहीं जानेवाले हो?

दूसरी बात यह है कि एक सिधी भाईका पत्र आ गया है। उसने तो अपना नाम दिया है; लेकिन मै उसका नाम देना नही चाहता हू। उनकी तरफसे कोई मनाही नही है। सिधके एक डाक्टरकी बात तो मैंने बताई ही थी। नाम नही दिया था। उन्होंने बताया था कि वहा हरिजनोंको कितनी तकलीफ है। वह पकड लिए गए। इसी कारण पकड लिए गए या दूसरे कारण, यह मै नही जानता हूं। कई आदमी जो हरिजनोंकी सेवा करते है वे पकड लिए गए है। ऐसा सिलसिला आज सिधमें चलता है। हां, इतना है कि खून नही होता है, लेकिन जैसा मैने कल बताया, वह खूनसे बदतर है; क्योंकि खून तो एकका हुआ, वह खतम हुआ, पीछे सब समझ जाएगे कि इतना हुआ। लोगोको परेशान कर मारना, यह तो बदतर काम है। एक आदमीको पकड लिया और छोड़ दिया, मुमकिन है दूसरोंको भी छोड़ दें। लेकिन तो भी इस तरह लोगोंको पकड़ना बुरी बात है। मैं पाकिस्तानकी हकूमतपर इल्जाम नही लगाता हूं; लेकिन मैं पाकिस्तानको सावधान करता हूं कि अगर वे इस तरह

करते है कि कोई हरिजनोंकी सहायता करता है, इसलिए गिरफ्तार कर ले तो सिंधमें कार्यकर्त्ता कैसे रहेंगे ? हरिजन लोग कैसे रह सकते हैं ? हां, यह चीज पहले अंग्रेजों के जमानेमे तो चलती थी। क्या हम भी ऐसा करेंगे ?

अभी चंद मिनट बाकी हैं तो चंद मिनटमें वहाकी एक बात सुना दूं—वह औरतोंकी बात है। कस्तूरबा स्मारकका सिलसिला है, वह तो इस कारण है न कि हमारे यहा सात लाख देहात है, वहां बच्चे और बहनें पडी है, उनकी जाग्रति करना, उनकी सेवा करना कस्तूरबा स्मारक-का काम है। लेकिन यहा तो एक बडा मामला हो रहा है कि एक तरफसे हिंदू और सिख औरतोंको, लडकियोंको मुसलमान भगा ले गए है। और दूसरी तरफसे हिंदू और सिख मुसलमान लड़कियोंको भगा ले गए है। यह बात छोड दो कि कौन ज्यादा भगा ले गए और कौन कम। कुछ भी हो, एक-एक हकूमतमें बारह-बारह हजारसे ज्यादा लडकियोंको भगा ले गए हैं। इसमें कस्तूरबा स्मारक क्या करे ? मेरे हाथमें है तो जो होना चाहिए वह तो करूंगा ही। लेकिन यह एक बात साफ है कि कोई नामके लिए तो कर नही सकते है। जो सेवक है तो उन्हे काम करना है - काम किया, खतम हुआ, भूल गए — अखबारमें आए चाहे न आए, इसकी ओर ध्यान नही देना चाहिए। इसी तरहसे दूसरा काम भी है—यह काम भी औरतोंका ही है। दूसरे भी मदद करेंगे। एक बात यह भी है कि औरतोंके लिए क्या-क्या किया जाय वह तो बताओ। वह थोडा-सा मै यहां बता देना चाहता हू। इसमे जितनी सेविकाएं है, वे शहरोंसे है—बहुत-सी सेवकाए देहातोंसे नही मिली, दैवयोगसे मिली तो बहुत कम मिली और जो देहातोंसे मिली हैं वे भी शहरोंसे ताल्लुक रखतीं है। शहरोंसे ताल्लुक रखना बुरा है, गंदा है, ऐसा नही है; लेकिन ऐसा सिलसिला बन गया है—१५० वर्षोंसे भी अधिक समयसे—कि शहर है वह देहातियोंसे पैसे लेनेके लिए है, देहातोंसे कच्चा माल ले, देश-विदेशोंमें व्यापार करे और करोडों रुपये कमाये। लेकिन करोड़ों रुपया देहातियोंको नही मिलेगा, थोड़ा मिलेगा, ज्यादा रुपया करोड़पतियों, धनिकों तथा मालिकोंको मिलेगा। शहर देहातियोंको चूसनेके लिए है। इसलिए शहरकी जो सभ्यता है वह देहातोंके

ढांचेमें नही है । एक बहन शहरकी है तो उसे किस दृष्टिसे देहातको जाना है, तो मैंने तो बता दिया है कि उसे शहरोंकी आवहवा व सभ्यता लेकर नहीं जाना चाहिए । माना कि उसके पास पैसे पड़े है, शौककी चीजें पडी है, मोटर पड़ी है, रंग-रागकी चीजें है, मखमल है, ऐसी कीमती चीजें पड़ी हैं । दांत साफ करनेका—बाहरसे या यहांका हो—मंजन पड़ा है तो ले लें, टूथ ब्रुश ले लें, और अच्छे, खूबसूरत लगते हैं वैसे बूट ले लें, जूतियां ले लें, चप्पल ले लें—ये सब चीजें पडी हैं, इनको लेकर देहात जायं तब देहातकी सेवा कैसे कर सकती हैं ? यह देहातके लिए आदर्श है, ऐसा हुआ तो ये चीजें देहातको खा जायगी । होना तो ऐसा चाहिए कि शहर है वह देहातके मारफत समृद्ध बननेके लिए है, पैसे भेजनेके लिए है, देहातकी सभ्यताको जितना बढा सके उतना बढानेके लिए है, लेकिन वैसे हुआ तो उल्टा हो जायगा । अभी मैंने सब बातें तो बताई नही हैं; लेकिन इतना तो कह दूं कि जिन बहनोंको सच्ची सेवा करना है, चूसना नहीं है, तो उनको विवेकशक्ति रखनी होगी और विवेककी दृष्टि रखकर जो चीजें देहातोंमें जा सकती है वहां ले जायं । जो सुधार करना है वह भी देहातोंके ढांचेमें करें । तब तो हमारे सात लाख देहात, जो गिरी हुई हालतमें है, ऊपर आ सकते है । ऐसा नहीं है कि देहातोंमें जंगली पड़े है, वहां कला नहीं है, वहांके जीवनमें कुछ भी अच्छापन नही है । देहाती जीवनमें तो बहुत कुछ खूबसूरती भरी है, ऐसा मेरा मत है । यहां बहुत कला भरी है, यहां अनेक प्रकारके उद्योग पड़े है, जो सारी दुनिया जानती है । यहांके उद्योग पश्चिममें नमूना बनकर गए । तो मै आज इतना ही बता देना चाहता हूं कि जिन बहनोंको वहां सेवा करनी है उनको समझना चाहिए कि शहरोंकी चीज शहरोंमें ही छोड़ दें । शहरकी जो उत्तम चीज है, नीति-वर्धक है, उसे ही ले जायं, बाकी शहरमें ही रख जायं । तभी करोड़ों बहन और बच्चोंको ऊपर ले जानेमें मदद दे सकते हैं । इतना तो हम कर ही सकते हैं ।

: १७४ :

१० दिसंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

कल तो मैंने आपको कह दिया था कि मैं चर्खा-संघकी सभामें गया था और औरतोंसे थोडी बात कर ली थी, पर आज भी वहां तालीमी संघकी बैठकमें जाना पडा, लेकिन शायद आज यह बात छोड दूंगा। आज मुझे चर्खा-संघकी बात करनी चाहिए। चर्खासंघ क्या चीज है, आप जानते ही है। वह तो खद्दरका काम करता है और चर्खासे (चर्खीसे) शुरू होता है, माने यह कि पहले कपासका बिनौला निकालना पडता है, पीछे धुनाई करनी होती है, पीछे पूनियां बनानी पडती है, फिर कातना, फिर बुनाईकी बात आती है। मैं उस सबमें जाना नही चाहता हूं। मैं तो इतना बता देना चाहता हूं कि हिंदुस्तानमें करोड़ों लोग पड़े हैं। अगर वे यह काम करें—यह आसान काम है, हम चर्खा-संघमें ऐसे बच्चों-को भी सिखाते है—तो कपडेका खर्च करीब-करीब बच जाता है। अगर देहातोंमें कपड़े बन जाते हैं तो मुफ्त-सा हो जाता है—मेहनत की और हो गया। अगर देहातमें कपास बो ली तो करीब-करीब सब खर्च बच गया, दुगुना पैसा बच गया— एक तो पैसा खर्च नही करना पड़ा और दूसरा कुछ उद्योग करते हैं, कला भी भूलते नहीं, और आगे बढ़ते हैं। इस कारण, मैं तो कहूंगा कि अगर हम पागल नही बनते है तो कपड़ेका घाटा तो हमारे यहां होना ही नही चाहिए। कोई भी मिल न रहे तब भी घाटा नही होना चाहिए। आज तो हम मिलका मुह ताकते है, मिलका ही कपड़ा अपनाते है। आज हम चर्खेको, खद्दर-गाढ़ेको अपनाना भूल गए हैं। आज कोई खद्दरकी टोपी पहन लेता है, क्योंकि कुछ अभ्यास हो गया है, उसको साथ लेकर आजादीकी लड़ाई लडी थी, लेकिन आज वह चीज हमारे जीवनमें जिंदा नही है। यह हमारे लिए दुःखकी बात है। इतने वर्षोंसे चर्खा-संघने काम किया और लोगोंको करोड़ों रुपये दिए, लेकिन फिर भी हम ऐसे-के-ऐसे रह गए है, तो इसके लिए सोचना चाहिए। कल सोचते थे तो

बताया गया कि चर्खाके मारफत क्या काम होता है, वह क्या बताता है। चर्खा अहिंसा बतानेवाली चीज है। अगर सब लोग चर्खामय बन जाते है और सब देहात सचमुच समृद्ध बन जायं तो आज जो हालत देखते है, करुणामय है, वह बननेवाली नही थी। वहां बहस चलती थी। वहां बताया गया किस तरह चर्खेके मार्फत—खादीके मार्फत—कपडेका घाटा आरामसे पूरा करते है, करोड़ों रुपए देहातोंमें दाखिल कर सकते है। नगद नही, लेकिन करोडों रुपए जो मिलके कपड़े खरीदनेमें खर्च करते है, वह बच जाते है। लोग कह सकते हैं कि खादी तैयार करनेमें भी तो कपासका दाम पडेगा, लेकिन मै कहता हू कि कपासका दाम तो कम पडेगा। आज यहा किस तरहसे कपास निकलता है उसे लगा दो तो उसमें करीब-करीब ऐसा बन जाता है। लेकिन यह हिसाब सच्चा नही है। इसलिए नही है कि कपड़ोंका दाम मिलमे जो होना चाहिए उससे कममें दिया जाता है। सल्तनतकी मदद नही हो तो दाम तो बहुत बढ़ जाय, लेकिन उसको सब मदद सरकारसे मिलती है। मिलके लिए सब सुविधा पैदा की जाती है। हम राज चलाते है, उसमे धनपति है, उनकी तो चलती है और जो हलपति है उनकी नही चलती है। यह एक बड़े दु:खकी बात है। धनपतिसे मेरा द्वेष तो है नही, क्योंकि मै एक धनपतिके घर पडा हू। धनपतिका जो रवैया रहा है उसे जानता हूं। धनपति मिल चलाते है, तो मै थोडे हिस्से लेता हू, या काम करता हू! कर भी नही सकता और हिस्सा भी नही लेना है। हां, उनके मार्फत चर्खाका काम निकाल लू तो अच्छा है, लेकिन कर नही पाया हू। ये सब सुविधाएं धनपतियोने सरकारके मार्फत पैदा कर ली है। अगर वे कहते है कि गरीबोंके लिए हैं तो वैसा तो अंगरेज भी कहते थे। लेकिन सच बात यह है कि गरीबोंका काम नही होता है। इस हकीकतको दीनतासे कबूल कर लेना चाहिए। अब अगर ऐसा नही होता है तो बुरी बात है। कह तो सभी देंगे कि हां, गरीबोंका काम होना चाहिए, लेकिन हमारे जितने मत्री है वे कहें कि हम तो देहातोंमें जाकर कहनेवाले हैं। अगर समाजवादी है, और मेरी चले तो यही आवाज निकलवा लूँगा कि सब समाजवादी बन जायं। अगर समाजवादी सच्चे हैं, लोगोंकी सच्ची सेवा करते है—मजदूरोंकी ही नहीं, हलपतियोंकी भी, क्योंकि

इनकी संख्या ज्यादा है, और हम लोगोंको ऊपर उठाना चाहते हैं तो उनसे यही कहलाऊंगा कि हमको तो यही सिखाना है कि तुम कपडा खादीका ही पहनो। तुम घरमें खद्दर बना लो, उसमें कोई रुकावट नहीं है। मतलब यह है कि वे क्या कर रहे है, यह मैं लोगोंको बता दूगा। जबसे मैं आया हू तबसे मैं यही कह रहा हूं, तो भी मुझसे कुछ हुआ नही है। मुझसे यही हुआ कि कई करोड रुपये देहातोंको दे दिये, लेकिन मैं तो चाहता हूं कि हरएक देहातके घरोंमें चर्खा गुंजन करे और गाढेके सिवा दूसरा दीखे ही नहीं। ऐसा बना सकू तो जो दीनता है वह रहनेवाली कहा है! ऐसा अभीतक हो नही सका, यह बहुत दुःखकी बात है।

आजकल यहाँ सब ठीक चल रहा है, गोलमाल नही है, ऐसा नही है। हिंदू मुसलमानोंके बारेमे एक तरहसे सुनता हूं कि ऐसे व्याख्यान भी चलते है—अभी नाम नही बताऊगा क्योंकि पूरा-पूरा नाम अभी नहीं आया है—कि यहां चंद मुसलमान पड़े हैं उनको रहने नही देंगे। जो मस्जिदें रह गई है उनपर कब्जा करेंगे और उनमें हिंदू रहेगे। फिर क्या करेंगे, दैव जानता है, मै नही जानता हू। मैं समझता हूं कि अगर उनमें हिंदू रहेगे तो उससे हिंदू-धर्म मिट जाता है। यह दिल्लीकी बात है।

अभी अजमेरकी बात भी आ गई। अजमेरमे भी ऐसा हो रहा है। वहा तो मैं कई बार गया हूं। वहा मुसलमान पडे है, हिंदू पड़े हैं। वहां तो बडी भारी दरगाह है। उस दरगाहमे हिंदू भी जाते है और हिंदू जाकर मानता भी करते है। इसी तरहसे मुसलमान भी जाते हैं। तो सब एक ही बन गए है, ऐसा चलता है। धर्मसे नही, कर्मसे। हिंदू और मुसलमानके बीच वहां कभी झगडा नही हुआ है, ऐसी बात नही है। होता था; लेकिन आज ज्यादा हो गया है। ऐसा थोड़ा-सा अखबारमें आया है, उससे जानता हू वहां काफी मुसलमान मारे गए। पहले तो वे डरे, डरके मारे भागे। पीछे थोडे रुक गए। फिर झगड़ा हो गया। सुनता हू कि इर्द-गिर्दके देहातोंमें यही हो रहा है। पूरी खबर मिल जायगी तो सही-सही बता दूंगा। इतना तो कहूंगा कि यह शर्मनाक बात है। हम अभी इतना तो करें कि ईश्वरसे प्रार्थना करें कि हमें ऐसी सुबुद्धि दे कि हम ऐसे न बिगड जायं कि हम हिंदू-धर्मका भी नाश करें।

मुसलमानोंका नाश करनेके बहाने हिंदू-धर्मका भी नाश करें, यह तो कुछ अच्छी बात नही हो सकती। अगर हम जिदा रहना चाहते है तो हमें सबको जिंदा रखना है, तभी हम भी रह सकते है। ईश्वरने ऐसा नहीं बताया है कि एकको मारकर दूसरोको जिदा रखें। पाकिस्तानमे सब हिंदू और सिखोंको मार डाले और हिंदुस्तानमें मुसलमानोंको मार डालें और जो बाकी रहे उनको गुलाम बनाकर रखें, यह हो नही सकता। तो मै कहूंगा कि हम विनाशका काम कर रहे है। जैसे सस्कृतमें है 'विनाश-काले विपरीतबुद्धिः', ऐसी हमारी बुद्धि विपरीत हो गई है। मारो, काटो, निकाल दो मुसलमानोको, यह पागलपनकी बात है। बहुत-सी बाते ऐसी हो गई है, लेकिन सब नही सुना सकता हू. क्योकि मैंने तो ऐसा कर लिया है कि घड़ी निकालकर रखता हू, जिससे १५ मिनटसे ज्यादा न बोलू।

: १७५ :

११ दिसंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

पहले तो जिस भाईने बड़ी नम्रतासे पूछा या तो कहा कि कुरान-शरीफमेंसे यहां जो आयतें पढ़ी जाती है, उसके माने अगर समझा दिये जायं तो अच्छा हो, माने पुराने हों या नए। नया तो कोई हो नही सकता। कुरानशरीफ तो मुहम्मदसाहबने उतारा। उनकी जबान है, ऐसा कहते हैं। इसे १३०० वर्ष हो गए, इतना पुराना है। उसमेंका जो हिस्सा हम पढ़ते हैं वह बड़ा बुलंद माना जाता है। जैसे हमारे मंत्रमें है, वह विभूति मानी जाती है, उसे पढ़नेमें ही पुण्य मिल जाता है, वैसे ही यह भी मानो। अर्थ जाने चाहे न जाने, शुद्ध उच्चारणसे ही उसका पुण्य मिल जाता है। मै उसका अर्थ, निचोड़ दे सकता हूं, क्योंकि मैं अरबी या फारसी तो जानता नही हूं। मेरे पास शब्दार्थ है। अभी तो नही है, कल दे दूंगा। उसका अर्थ यह है कि हम ईश्वरकी प्रार्थना करते है। ईश्वर तो एक ही है, उसे चाहे किसी नामसे पुकारो। उसका नाम अल्ला भी है। वह कैसा

है, उसके विशेषण दिए है। वह रहीम है, रहमान है, दयावान है, दयाका भडार है। उसमें यही आता है कि ईश्वर एक है, ईश्वर अनेक नही है। उसमें यह भी है कि तू ही हमे शैतानसे बचा सकता है, शैतान तो हमको नीचे गिराता है, शैतान पाप-कर्म कराता है, तो तू ही उस बलासे बचा सकता है। उसमे एक आदमीने इकरार किया है कि वह पुरुपार्थका काम नही करता है, दैव कराता है, ईश्वर कराता है। पीछे कहता है कि हे ईश्वर, तू ही शैतानसे बचा सकता है। हम छोटे इन्सान तो समुदरमें एक बिदुके समान है। तू नही बचाएगा तो शैतान हमको खा जायगा। तू महान् है, तू सब कुछ है, तेरी मेहरबानी रहे तो हम बच सकते है। तो मै कहूगा कि हम उसका जितना उच्चारण करें उसका मनन करे और उसके मुताबिक चलें, कम है। इसीसे दुनिया चलती है। तब आप कहेगे कि फिर मुसलमान ऐसा मिथ्या आचरण क्यों करते है? उसका जवाब यही हो सकता है कि क्रिस्टी आला बन गए है, शास्त्रज्ञ बन गए है; लेकिन बाइबिलके मुताबिक चलते कहां है? उसके मुताबिक चलनेवाले क्रिस्टी कहा है? हिंदू गायत्री मंत्रके मुताबिक कहां चलते है? वह कितना बडा मंत्र है। हम सदा पढते है—"ईशावास्यमिद सर्वम्" उसके माने यह है कि सारा जगत ईश्वरसे भरा है। सब चीज वही देता है। तो आदमी कहता है कि हमारे पास सारा जो कुछ है वह तेरा है। वह हम सब त्याग देते है और जो हमें भोगना चाहिए भोगते है। हमारी कोई चीज नही है, घरबार सब ईश्वरके अर्पण कर दिया। यह तो बडी चीज है। पीछे ऐसा है कि दूसरेका धन है, दूसरेकी दौलत है, उससे द्वेष न करें। उसकी इच्छातक न करें। उसमे यह सब चीज है। एक ही मंत्रके मुताबिक सब हिंदू चलें, सारा संसार चले, हिंदूके लिए ही थोड़े है, हिंदूका नाम भी नही है—सिख चलें, सिख नही मानते है, ऐसा थोडा है। तो हम आज दुनियामें जो करुणामय दृश्य देखते है वह थोड़े होनेवाला था। तो कहोगे कि उसके मुताबिक नही चले तो कैसे यह दुनिया चलती है? तो मै कहू कि सब-के-सब बदमाश है, ऐसे थोड़ा है। सब हिंदू फरिश्ता थोड़े है। सब सिख बदमाश हैं, ऐसा थोड़े है। सब हिंदू देवरूप है और सब मुसलमान फरिश्ता हैं, ऐसी भी नहीं है।

दूसरा मंत्र पारसियोंका है। पहला मंत्र जो होता है वह गुरुदेवको

नमस्कार है। पीछे मस्कृतमे है वह है। पीछे भजन गाते है वह है। इतना होते हुए भी मनको साफ नही करते है, यह दु.खकी बात है।

अब हरिजन-बस्तीमे जो चल रहा है, उसकी एक चीज समझा दू, लेकिन आज मै उसको छोड़ देता हू, क्योकि दूमरा काम करना है। सात मिनट हो गए और १५ मिनटमे खतम करना है।

आज मेरे पास कुछ मुसलमान भाई आए। पहले भी आए थे, आज दुबारा आए। उन लोगोंने मुझसे कहा कि अभी हम पाकिस्तान, पंजाबमें गए थे। यही काम करनेके लिए युक्तप्रातके मुसलमान वहां गए थे। पीछे वहां दूसरे मिले। उनके दिलमे हुआ कि वहा सुलह करा सकेगे तो यहा सुभीता हो जाएगा और पीछे कोई बात नही रहेगी। मुझको पूछकर गए थे। तो मैंने कह दिया था कि जाओ। सच्चे दिलसे जाते हो तो अच्छा है। तो आज वहासे आए। मेरे पास आए और कहा कि हम तुम्हारे पाससे एक चीज चाहते है, इतना चाहते है कि हिदुओंको कहो, सिखोंको कहो—पहले हिदूको कहो कि वे लाहौर जायं और हम उनके साथ जाएगे। पहले हम मरेगे, फिर कोई दूसरा मर सकता है। पर ऐसा तो होगा नही। हमने वहाकी हकूमतके साथ बात करली है। वह गैर-मुसलमानोको बसानेके लिए राजी है। तो मैने कहा कि यह सब लिखकर तो दो। आज-के-आज तो ऐसा होता नही। यह बडी बात है। अगर ऐसा हो गया तो मेरा बहुत सारा काम हो जाता है। पीछे उन लोगोंने कहा कि करो तो सही, हम जो कहते हैं उसकी जितनी परीक्षा करते हो करो तो उन लोगोंने लिखकर दिया। उसमें लिखा है—

"युक्तप्रातके शाति-दलने दो मर्तबा पश्चिमी पजाबका दौरा किया। पहली मर्तबा एक महीना और दूसरी मर्तबा एक हफ्ता घूमा। अब वहांकी हालत पहलेसे अच्छी है। पहलेके मुकाबलेमे अवाम और हकूमत दोनों अमनके लिए कोशिश कर रहे है। चुनांचे पश्चिम पंजाबकी सरकार खाहिशमंद है कि जो गैर-मुस्लिम वहां इस वक्त रहते है तो रहें और जो वहांसे चले गए है वे वापस आएं, सरकारने यह हिदायत जारी की है कि जो गैर-मुस्लिम पश्चिम पंजाब वापस जाएंगे उनको उनकी मिल्कियत और जायदादपर कब्जा दिया जायगा और जो गैर-मुस्लिम

भाई आएंगे और रहेगे उनकी पूरी हिफाजत की जायगी और उनको कारोबारकी हर तरहसे सहूलियत दी जायगी। अगर बावजूद मिन्नतके कोई गैर-मुस्लिम वहां रहने या वापस जानेका खाहिशमंद न हो तो उसको अपनी जायदादको बदलने या फरोख्त करनेका पूरा हक है। बलवा-फसाद करनेवालोंको हकूमत सख्त सजा दे रही है और आनेवालोंकी हिफाजतके लिए हर तरहकी तदबीर एहतियात बरत रही है। शांतिदलने वहांके अवाम और सरकारको इस बातके लिए आमादा और तैयार कर लिया है कि पाकिस्तानकी हकूमतका यह फर्ज है कि गैर-मुस्लिमकी इज्जत-आबरूकी पूरी जिम्मेवारी ले। चुनाचे सरकार और अवाम दोनों इसके लिए तैयार है। युक्तप्रातीय शाति-मिशनके सदस्य गैर-मुस्लिम भाइयोंसे गुजारिश करते है कि जो भाई पश्चिमी पंजाबमें बसना चाहते हैं हम उनके साथ चलकर उनको वहां बसानेके लिए तैयार है। हम अपनी जानसे ज्यादा उनकी जिम्मेवरी लेते हैं और उनको पूरा इतमीनान कराके हम वापस आएंगे।"

चार मुस्लिम भाइयोने दस्तखत किए है। इसे मैं अच्छी खबर मानता हूं अगर यह सही है। वे शरीफ आदमी हैं तो मैंने कहा कि लिखकर दे दो तो काम करूं, मै सारी दुनियाको बताऊंगा। और अगर ऐसी बात नही होगी तो बुरी बात है। पीछे मैने कहा कि माडल टाउनसे काफी हिंदू, सिख आए है, लाहौरमें भी हिंदुओंकी बड़ी-बड़ी इमारतें है, सिखोंकी भी इमारतें है, उनका वहां गुरुद्वारा भी है, क्या वहां जा सकते है? उन लोगोंने कहा कि जरूर जा सकते है। वहां सब अवाम ठीक हो गए हैं ऐसी बात नही है। कुछ जहर तो भरा ही है, वह जल्दी नही निकाला जा सकता है। लेकिन हकूमतने तय कर लिया है कि वहां किसीको हलाक नहीं किया जाय।

अगर सचमुच ऐसा होगा तो यह बहुत बडी चीज है। मेरी उम्मीद नही थी कि इतनी जल्दी काम हो जायगा। कितना सही है, वह मैं नहीं जानता हूं; लेकिन हम कम-से-कम दिलमें समझें तो सही कि ऐसा करनेवाले मुसलमान भी पड़े हैं। ऐसा समझें कि सब मुसलमान बदमाश हैं तो वह इन्सानियत नहीं है। उनमें भी शरीफ पड़े हैं। पीछे उनके साथ एक हिंदू आया। वह भी खत लाया। अब ज्यादा वक्त नहीं है, इसलिए उसे पढ़ूंगा

नहीं, लेकिन उसमें भी यही चीज है। वह वहां होटल, विश्रामगृह चलाता है। वहां करीब एक हजार आदमी हमेशा आते है। मुसलमान ज्यादा आते होंगे; लेकिन कुछ हिंदू भी आते होंगे। उनके आनेमें कोई रुकावट नही होती है। उस खतमे उन्होंने लिखा है और कहते है कि हिंदू भाइयोंको वहां जानेमें कोई रुकावट नही है। इतना मै आजके तजुर्बेसे कहता हूं। लेकिन मै यह नही कहता हू कि कल चले जाओ। मै ऐसा भी नहीं कहनेवाला हू कि न जाओ, जाओ तो अच्छा है।

: १७६ :

१२ दिसंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाईने खत लिखा है। उसमें लिखा है कि मैंने कल कहा था कि पाकिस्तान जाना शुरू करें। मैने तो कहा था कि मैं उस बातकी जांच अवश्य करूंगा, निश्चय हो जायगा तो कहूंगा। मैं देख लू कि जिन भाइयोंने कहा है वह ठीक है या नही। तब कहूंगा कि जाओ या नही जाओ। तो वह भाई कहता है कि मै अभी जाना चाहता हूं, क्योंकि वहा लूटमार चल रही है, आते है तो कोई पूछता नही है, तन ढाकनेको कपड़ा और खानेको अनाज नही मिलता, हमारे लिए कुछ भी नही होता है। हां, मैं जानता हूं कि ऐसा है। ऐसा हो गया है कि सबको पूछ नही सकते, सब चीज पहुचनेवाली भी नही है। मेरा खयाल है कि जितनी तजवीज हो सकती है, कर रहे है। लेकिन अगर तजवीज नही है तो भी मैं कह नही सकता कि आज जाओ। नही आए थे तो बात दूसरी थी, लेकिन जब आ गए है तब ठीक-ठीक हो जाय तब जायं। मैं अभी खुद यह कहनेको तैयार नही हूं कि आप अभी जायं। हां, तैयारीमें रहें तो अच्छा है। जितनी जल्दी जाने लायक हो सकें उतना अच्छा है।

मैंने कल कहा था कि कुरानशरीफकी जो आयत पढ़ी जाती है उसका

तर्जुमा सुना दूगा । उसका सार तो बता दिया था । मेरे पास आज तर्जुमा पडा है । इसमे यह है कि मै अल्लाहकी शरण लेता हू, वह भी शैतान पापात्मासे बचने के लिए । पीछे कहा है कि मै शुरू करता हू ईश्वरके नामसे ही । मै जो कुछ भी कहता हू उसीके लिए, क्योंकि सब कुछ बख्शनेवाला वही है । जो रहीम है, रहमान है, दयालु है वह सब वही है। पीछे कहा है कि अल्लाह एक है, वह जन्म नही लेता और जन्म नही देता है। जन्म नही देता है, यह गलत है, गलत तर्जुमा हुआ है । सबको जन्म देने वाला तो वह ही है । उसकी बराबरीका कोई नही है—वह तो अकेला है। इसलिए हम कहते है कि वह निरंजन है, निराकार है । गुणका भी आगार है—गुणकी थाहको बता नही सकते । ऐसी चीज उसमें है ।

आज मेरे पास चार-पांच खत आ चुके है । एक तो काठियावाड़से है। मैंने कहा था कि काठियावाड़से मुसलमान भाइयोंने लिखा, लेकिन चंद मुसलमानोंको वह भी चुभा है । क्यो, मै जानता नही हूं, क्योंकि जिन लोगोंने शिकायत की थी वे खुद लिखते है कि कुछ हुआ नहीं है और जो हुआ भी तो उसे मिटानेके लिए कांग्रेसियोने पूरा जोर लगाया, इसलिए हम आरामसे घरमे है ।

एक खत ब्रह्मदेशसे आया है और दूसरा शायद बंबईसे । उनमें किसीके दस्तखत तो है नही, तो जवाब किसको दू ? बंबईसे लिखते हैं कि तुम्हे कुछ करना तो है नही । वह कहते है कि आप गोलमाल करते हैं। मै यहां गोलमाल करता हू या क्या करता हू, वह तो जो सुनते है वे जानते हैं, और मै जानता हू। जो भाई खतमें नाम नही देते है तो किसको कहूं वह कहते है कि काठियावाड़में हुआ है, तो पीछे उस खतमें अपना नाम-धाम तो देना चाहिए, तब मै तहकीकात करूं । तहकीकात करना मेरे हाथमे तो है नहीं । हकूमतको कहूगा कि तहकीकात करो । यह कैसी बात है कि आप बैठे है और लोग शिकायत करते हैं ।

एक खत अजमेरके बारेमे भी है । वह हिंदुओंका खत है । उसमें लिखा है कि जो तुमने कहा वैसा नही हुआ है । हुआ है सही ; लेकिन हिंदुओं की तरफसे शुरू नही हुआ, मुसलमानोंकी तरफसे शुरू हुआ। ऐसे तो चलता ही आया है । तो मुझको ऐसा लगा कि ऐसे कहनेवाला पक्ष भी है। ईश्वर ही

जानता है कि क्या सही है । मेरे पास तो वहांसे कोई चीज आई नही है । अखबारमें जो चीज आई उसको पढकर मैंने बताया। कुछ दूसरोंने भी कहा कि वहां क्या हो रहा है। तो मैंने कहा कि अगर हम ऐसा करते रहें तो यहांकी हकूमतको कायम नही रख सकेंगे ।

पीछे एक भाई लिखते है कि सोमनाथके मंदिरके जीर्णोद्धारके लिए पैसे निकालने है । सरदारने कहा कि इस मंदिरका जीर्णोद्धार किया जाय, लेकिन उन्होंने कह दिया कि जूनागढ़की तिजोरी या यहांकी हकूमतकी तिजोरीसे पैसा नही निकलेगा । मै कहता हू कि यह ठीक है; लेकिन वह कहते है कि क्यों न निकले, मै इसके बारेमें ज्यादा कहना नही चाहता लेकिन इतना तो कहूंगा कि अगर इसके वास्ते पैसे निकलें तो सबके लिए निकलें । तो यह बडी बात हो जायगी ।

कलकत्तेमें जो हुल्लड हो गया उसकी काफी चीजे अखबारोमे आ गई है । उसपरसे लगा कि आज हमारे यहा एक वायुमडल पैदा हो गया है कि किसी-न-किसी तरहसे हम हुल्लडसे ले सकते है । यह खतरनाक बात है । मैने तो ऐसा कभी सिखाया नही । ३० वर्षतक अंग्रेजोंसे लड़ाई चली; लेकिन यह ठंडी ताकतकी लडाई थी। किसीसे मारपीट करनेकी लडाई नही थी—किसीके पाससे जबरन छीननेकी नही थी । बंगालमें जो हकूमत है वह हमारी है, उसमे काग्रेमके आदमी है । उनके साथ ऐसा क्या करना था ! मानो कि गलती की, मै तो जानता नही हू कि क्या गलती की, लेकिन मानो कि की है, तो जबरदस्ती क्या करनी थी ! हम वहशियाना तौरसे क्यों पेश आएं ? अखबारोंमे जब ऐसी चीज आती है और मै उसे पढ़ता हू कि इस तरहसे हुआ तो मै आपके सामने निचोड रखता हू । वहांके हुल्लडमे विद्यार्थीगण भी है । वे अच्छे लिखे-पढे है, तो उनका यह मार्ग तो हो नहीं सकता है कि एसेबलीमे जो उसके सदस्य जाना चाहते है उनको रोकें और हर एक जगहसे सब दरवाजे रोक दें, इतना ही नहीं, भीतर भी चले जाएं । लेकिन उन लोगोंने ऐसा किया तो मुझको ऐसा लगता है कि इस तरहसे हम हकूमत चलानेवाले नहीं हैं । इस तरहसे मजबूर करना है कि जो हम नही चाहते है उसको कानून न बनाओ। बंगालकी हकूमतने जो कानून बनाया है उसमें यही है कि जो तूफान वगैरा करते

है, उनको रोका जाय। मानो कि यह भद्दा कानून है, तो जब हमारी हकूमत है तब उसका बाकानून इलाज कर सकते हैं, तूफान नही करसकते है। तूफान क्या करना था! हम अंग्रेजोंके विरुद्ध भी ऐसा नही करते थे और जब कोई ऐसा करता था तब मै डाटता था। हम शरीफ-जैसे काम करते थे—मै तो उपवास भी कर लेता था।

आज जो हमारी हकूमत है उसके सामने बहुतसे काम पडे है। इस कामके लिए सब काम रोकना, पीछे सिपाही जाते है, डडा चलाते हैं। तो उसकी शिकायत करना, गोली चलाते है तो उसकी शिकायत करना, अश्रु गैस चलाते हैं तो उसकी शिकायत करना—दोनों चीजे हो नहीं सकती। आजादीका यह अर्थ हो नही सकता कि तूफान करें और अगर उनपर डंडा चलाया जाय तो शिकायत करे। तो क्या हकूमत ऐसे लोगोंको सजा भी न दे? इसलिए इसकी शिकायत करना ठीक नही। हा, बा-कानून करो और जितना कर सको करो। लोगोंको समझाओ, अखबारोंमें लिखो, वहांकी पार्लमेंटमे शिकायत करो, वहां न हो तो यहाकी मरकजी हकूमतको कहो। हमारे पास ऐसे सब सामान हैं? उसे निकम्मा नहीं कह सकते। तीन महीनेमें उसे क्या कह सकते है? हम तीन महीनेके बालक हैं, तीन महीनेकी आजादी है। इसलिए हम सम्पूर्ण हो गए, ऐसा मैं नही कह सकता हू। इसलिए जो गोलमाल कर रहें है उनसे नम्रतासे कहूंगा कि वे ऐसा न करें।

गोलमाल करनेवालोंमें गुडे पड़े है, ऐसा नही है, या अनपढ पडे है, ऐसा नही है। उसमें पढ़े-लिखे है। वे अगर ऐसा करें तो सब काम रुक जायगा। जो काम हम करना चाहते है वह रुक जायगा। लोगोंको खुराक पहुंचाना है, लोगोंको हर तरहकी मदद देनी है यह सब काम रुक जायगा। सब काम रोक देना हमारा पेशा बन गया है? ऐसा होना नही चाहिए। ईश्वरका शुक्र है कि कलकत्तेके जितने आदमी हैं उन सबने यह काम नहीं किया, लेकिन अगर सब-के-सब भी करें तो भी यह शराफतकी चीज हो नहीं सकती। मुझको लगा कि ऐसी चीज रोकी जानी चाहिए तो मैने कह दिया। लोगोको समझना चाहिए कि हकूमत हमारी है; अगर हकूमतसे इमदाद नही मिलती है तो कानूनके मुताबिक लड़ना चाहिए।

: १७७ :

१३ दिसम्बर, १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मै हरिजन-निवास जाता था तब वहाकी बातोंके बारेमे रोज थोडा-थोडा आपको बताना चाहता था। पर मै ऐसा कर न सका। आज आपको फिरसे चरखेकी बात सुनाना चाहता हू। वहापर यह संवाद चला था—चरखेका क्या महत्त्व है ? मै क्यों उसपर इतना जोर देता हू ?

जब मैने पहले-पहल चरखेकी बात शुरू की थी तब मुझे यह पता नही था कि पंजाबमे चरखेका काफी प्रचार था। लेकिन जब मैं गया, तो वहाकी बहनोंने मेरे सामने सूतके ढेर लगा दिए थे। बादमे पता चला कि गुजरात-काठियावाड़मे भी एकाध जगह चरखा चलता था। गायकवाडकी रियासतोंमे बीजापुर नामक एक गाव है। वहा गंगा बहन भटकती हुई जा पहुची थी। इन्हे पता था कि मै चरखेके पीछे दीवाना हूं। वहा परदेवाली चद राजपूत औरतें चरखा चलाती थी। गगा बहनने उन्हे पूनी देकर उनसे सूत खरीदना शुरू किया। उस समय बहुत कम दाम दिए जाते थे। बादमे तो हमने काफी प्रगति कर ली। उस समय हमें इतनी ही कल्पना थी कि खादीके जरिए हम बहनोका पेट भर सकेंगे। उनका पेट कहां बडा होता है ? दो-पैसेकी जगह तीन पैसे मिल गए कि वे खुश हो जाती थी।

बादमें मैंने समझ लिया कि चरखेमें तो बडी ताकत भरी है। वह अहिसाकी ताकत है। एक तरफ तो हिसाकी, मिलिटरीकी ताकत और दूसरी तरफ बहनोंके पवित्र हाथसे चरखा चलानेसे पैदा होनेवाली अहिंसाकी जबरदस्त ताकत ! इसीलिए मैने चरखेको अहिसा-का प्रतीक कहा है। अगर सब लोग इस चीजको समझते तो चरखेको जला न देते।

एक समय सारी दुनियामे चरखा चलता था। कपासका जितना

..पड़ा बनता था सब हाथका बनता था। हिंदुस्तानमें ढाकाकी मलमल और शवनम सब जगह प्रसिद्ध हो गई थी। सबकी आंखें उनपर लग गई थी। कपासमेंसे इतना खूबसूरत कपड़ा पैदा हो सकता है, इसपर सबको ताज्जुब होता था। उस रोचक इतिहासको मैं छोड़ देता हूं। मगर उस वक्त चरखा गुलामीका प्रतीक था। बहनोंको मजबूर किया जाता था कि इतना सूत तो देना ही होगा और अपने मालिकोंसे वे यह नहीं कह सकती थीं कि इतने कम दामपर हम सूत नहीं कातेंगी। तंगीसे पेट भर जाय, इतना दाम भी तो उन्हें नहीं मिलता था। औरतोंको लूटा जाता था। उस करुण इतिहासको भी मैं छोड़ देता हूं। मगर जो चरखा गुलामीका प्रतीक था, वही आजादीका प्रतीक बना; हिंसाके जोरसे नहीं, बल्कि अहिंसाके जोरसे। अली भाई चरखेकी कुकड़ीको अहिंसक बम कहा करते थे। अपने हाथोंसे सूत कातना, कपड़ा बनाना, रुपया बचाना और चरखेमेंसे ताकत पैदा करना—यही चरखेका रहस्य है।

१९१७में चरखा शुरू हुआ। १९१७में मेरा पंजाबका दौरा हुआ। आजादी तो हमने ले ली, पर जो आंधी और तूफान आज देशमें चल रहा है, उसका क्या? हमने चरखा चलाया, पर उसे अपनाया नहीं। बहनोंने मुझपर मेहरबानी करके चरखा चलाया। मुझे वह मेहरबानी नहीं चाहिए। अगर वे समझ लेती कि उसमें क्या ताकत भरी है तो आज जो हालत है वह होनेवाली नहीं थी। अगर हमें अहिंसक शक्ति बढ़ानी है तो फिर चरखेको अपनाना होगा और उसका पूरा अर्थ समझना होगा। तब तो हम तिरंगे झंडेका गीत गा सकेंगे। आज हमारे तिरंगे झंडेमें चरखेका चक्र ही रह गया है। उसमें दूसरा अर्थ भी भर दिया गया है। वह अच्छा है। मगर पहले जब तिरंगा झंडा बना था, तब उसका अर्थ यही था कि हिंदुस्तानकी सब जातियां मिल-जुलकर काम करें और चरखेके द्वारा अहिंसक शक्तिका संगठन करें। आज भी उस चरखेमें अपार शक्ति भरी है। अंग्रेज चले गए हैं, मगर हमारा लश्करका खर्च बढ़ गया है, यह शर्मकी बात है। इतने साल अहिंसासे काम लिया, अब हमारी आंखें लश्करपर लगी हैं। क्योंकि हम चरखेको भूल गए है, इसीलिए हम आपसमें

लडते है। अगर सब भाई-बहन दुबारा चरखेकी सच्ची ताकतको समझ-कर उसे अपनावें तो बहुत काम बन जाय। जब मैं पंजाब गया था, तब वहांके सिख और मुसलमान भाइयोंने मुझसे कहा था—'चरखा चलाना तो औरतोंका काम है। मर्दोंके हाथमें तो तलवार रहती है।' बादमें कुछ पुरुषोंने चरखा चलाया था, मगर उसे अपनाया नहीं। आज अगर सब भाई-बहन चरखेको जला दें, खादीको फेंक दें, तो मुझे उसकी परवा नहीं। लेकिन अगर उसे रखना है तो समझ-बूझकर रखें। अहिंसा बहादुरीकी पराकाष्ठा, आखिरी सीमा है। अगर हमें यह बहादुरी बताना हो, तो समझ-बूझसे, बुद्धिसे चरखेको अपनाना होगा। ४० करोड़ की आबादीमें-से छोटे बच्चोंको छोड दीजिए, फिर भी, अगर ५-७ बरससे ऊपरके बच्चे और बडी उमरके सब तंदुरुस्त लोग कातें, तो हिंदुस्तानमें कपडेकी कमी कभी नहीं हो सकती और करोडों रुपये बच जाते हैं। मगर वह सब भूल जाइए। सबसे बडी चीज यह है कि करोड़ोंके एक साथ काम करनेसे जो शक्ति पैदा होती है उसका सामना कोई शस्त्र-बल नहीं कर सकता। मैं यह सिद्ध न कर सकूं तो दोष मेरा है, अहिंसाका नहीं। मेरी तपश्चर्या अधूरी है, अहिंसाकी शक्तिमें कभी कमी नहीं आ सकती। उस शक्तिका प्रदर्शन चरखे द्वारा हो सकता है, क्योंकि चरखा करोड़ोंके हाथोंमें रखा जा सकता है और उससे किसीको नुक्सान नहीं हो सकता। करोड़ों आदमी मिल नहीं चला सकते, दूसरा कोई धंधा नहीं कर सकते। चरखेमें नीतिशास्त्र भरा है, अर्थशास्त्र भरा है और अहिंसा भरी है।

: १७८ :

१४ दिसंबर, १९४७

भाइयों और बहनो,

मुझे एक खत मिला है। उसमें एक भाई लिखते है कि 'एक मुसल-मान भाईको मजबूर होकर पाकिस्तान जाना पड़ा है। वह अपनी मेहनतकी

कमाईका कुछ सोना-चांदी मेरे पास छोड़ गए हैं। क्या आप बता सकते है कि यह सोना-चादी असली मालिकके पास कैसे भेजा जाय ?" अगर वह लिख भेजें तो मै हकूमतसे कहूगा कि वह मालिकके पास उसकी मिल्कियत भेजनेका इतजाम कर दे। मैने इसका जिक्र इसलिए किया है कि हम जान लें कि हममे अब भी ऐसे शरीफ आदमी पड़े है। इस भाईके दिलमें ख्याल भी नही आया कि चलो, दोस्त तो गया, उसका माल हड़प कर जायं। उसे अमानतको लौटानेकी फिक्र है। अगर हम सब भले बन जायें तो सब अच्छा ही होनेवाला है।

मैने आपसे वायदा किया था कि हरिजन-निवासमें जब मैं जाता था तब वहाँ जो चर्चा होती थी, उसके बारेमें आपको थोड़ा-सा बता दूंगा। आज मै आपको नई तालीमके बारेमे कुछ कहना चाहता हूं। नई तालीमको शुरू हुए आठ साल हुए है। इस संस्थाका उद्देश्य राष्ट्रको नए आधारपर शिक्षा देना है। उसके लिए यह कोई लंबा समय नही है। बुनियादी तालीमका आमतौरपर यह अर्थ किया जाता है कि दस्तकारीके जरिये शिक्षा देना। मगर यह कुछ अशतक ही ठीक है। नई तालीमकी जड़ इससे गहरी जाती है। उसका आधार है सत्य और अहिसा। व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जीवन, दोनोंमे ये ही उसके आधार है। विद्या वह जो मुक्ति दिलानेवाली हो—'सा विद्या या विमुक्तये'। झूठ और हिसा तो बंधनकारक है। उनका शिक्षामे कोई स्थान नहीं हो सकता। कोई धर्म यह नही सिखाता कि बच्चोंको असत्य और हिसाकी शिक्षा दो। सच्ची शिक्षा हर एकको सुलभ होनी चाहिए। वह चंद लाख शहरियोंके लिए ही नही मगर करोड़ों देहातियोंके लिए उपयोगी होनी चाहिए। ऐसी शिक्षा कोरी पोथियोंसे थोडे मिल सकती है! उसका फिरकेवाराना मजहबसे भी कोई ताल्लुक नहीं हो सकता। वह तो धर्मके उन विश्वव्यापी सिद्धातोंकी शिक्षा देती है, जिनमेसे सब संप्रदायोंके धर्म निकले हैं। यह शिक्षा तो जीवनकी किताबमेंसे मिलती है। इसके लिए कुछ खर्च नही करना पड़ता और उसे ताकतके जोरसे कोई छीन नही सकता। आप पूछ सकते हैं कि बुनियादी तालीमका काम करनेवाले भाई क्या ऐसे सत्य और अहिंसामय बन चुके हैं ? मैं निवेदन करूंगा कि

मैं ऐसा नही कह सकता। मै यह थोड़े ही बता सकता हू कि किसके दिलमें क्या है। हिदुस्तानी तालीमी संघके अध्यक्ष डॉ० जाकिरहुसैन है। श्री आर्यनायकम् और आशादेवी उसके मंत्री है। उन्होंने यह कभी नही कहा कि वे सत्य और अहिंसामें विश्वास नही रखते। अगर उनका सत्य और अहिंसामे विश्वास न हो तो उनका तालीमी सघसे हट जाना ही मुनासिब होगा। नई तालीमके शिक्षक सत्य और अहिंसाको पूरी तरह माननेवाले हों, तभी वे सफलता पा सकेगे। तब वे कठोर-से-कठोर व्यक्तियोंको चुबकके मानिन्द खीच सकेंगे। उनमे वे सब गुण होने चाहिएं, जो स्थित-प्रज्ञके बताए गए हैं, और जो आप रोज प्रार्थनाके सस्कृत श्लोकोंमें सुनते है। तालीमी संघको काग्रेसने जन्म दिया, मगर अभी वह कांग्रेस-जैसा कहां बना है? कांग्रेसमेसे मै निकल गया, सरदार भी निकल जायं, जवाहरलाल भी चले जायं, जितने वहा आज काम करते है, वे सब मर जायं, तो भी कांग्रेस थोड़े ही मरनेवाली है? वह तो जिदा ही रहनेवाली है। मगर तालीमी संघके बारेमे आज ऐसा नही कह सकते। उसे ऐसा बनना है। हर संस्थाको ऐसा बनना चाहिए कि व्यक्ति निकल जायं, तो भी उसका काम बंद न हो, बल्कि बराबर बढ़ता और फैलता जाय।

: १७९ :

सोमवार, १५ दिसंबर, १९४७

(लिखित संदेश)

भाइयो और बहनो,

अखबारोंमें पढ़कर मुझे दुःख हुआ कि शरणार्थियोंने ६ म्यूनिसिपल स्कूलोंके मकानोंपर कब्जा कर लिया है और दिल्ली म्यूनिसिपल कमेटीकी पूरी कोशिशोंके बावजूद उन्हें खाली नहीं किया। कमेटी इन मकानोंको खाली करवानेके लिए पुलिसकी मदद लेने जा रही है।

यह रिपोर्ट विश्वासके लायक'लगती है। यह किस्सा शर्मनाक अंधाधुधीका एक नमूना है। यूनियनकी राजधानीमें ऐसी चीजें हरएकके लिए शर्मका कारण है। मै आशा करता हू कि कब्जा करनेवाले अपनी बेवकूफीके लिए पछताएगे और अपने आप स्कूलोंके मकान खाली कर देंगे। अगर ऐसा न हुआ तो आशा है, उनके दोस्त उनको समझा सकेंगे और सरकारको अपनी धमकीपर अमल नही करना पड़ेगा। शरणार्थियोंके सामने यह आम शिकायत है कि इतना दु:ख सहन करनेके बाद भी वे समझदार, गभीर और मेहनती कार्यकर्त्ता नही बने। हम सब आशा करते हैं कि आम तौरपर सब शरणार्थी और खास तौरपर यह स्कूलोंका कब्जा लेनेवाले भाई प्रायश्चित्त करके इस शिकायतको गलत साबित कर देंगे।

शनिवारको मैंने कलकत्तेकी दगा-खोरीका जिक्र किया था। वहां शरारत करनेवाले शरणार्थी नहीं थे। उसकी भूमिका भी अलग थी। सब नेताओंका, चाहे वे किसी भी खयालों या पार्टीके क्यों न हों, यह फर्ज है कि वे हिन्दुस्तानकी इज्जतकी दिलोजानसे रक्षा करें। अगर हिंदुस्तानमें अंधाधुधी और रिश्वतखोरीका राज चले तो हिदुस्तानकी इज्जत बच नहीं सकती। मैंने रिश्वतखोरीका यह जिक्र इसलिए किया है, क्योंकि अराजकता और रिश्वतखोरी दोनो एक ही कुटुबके है। कई विश्वासपात्र जरियोंसे मुझे पता लगा है कि रिश्वतखोरी बढ रही है। तो क्या हरएक अपना ही खयाल करेगा और हिंदुस्तानकी भलाई कोई नही सोचेगा ?

एक भाई लिखते है : "मैंने अभी आपकी कलकी प्रार्थनाका भाषण रेडियोपर सुना। उसमे आपने कहा है कि यू० पी० के कुछ मुसलमान भाइयोंने जो लाहौर जाकर आए है, पाकिस्तानकी हकूमतकी तरफसे आपको विश्वास दिलाया है कि गैर-मुस्लिम, खास करके हिंदू, वहां जाकर अपना कारोबार शुरू कर सकते हैं। पहली बात तो यह है कि हिंदुओंको ही बुलाना और सिखोंको नहीं, यह चालाकी है, और सिखों और हिंदुओंमें फूट डलवानेकी चाल है। इस तरहके आश्वासन धोखाबाजी है, मजाक है। शायद आप-जैसे ही मुसलमानोंकी बातोंमें आ सकते हैं। मैं आपको ११ दिसंबरके 'हिंदुस्तान टाइम्स' की एक कतरन भेजता हूं। उससे आपको पाकिस्तानी सरकारकी सचाई और साफदिलीका पता चल जायगा।

यह पढ़कर भी क्या आप यह मानते है कि जो मुसलमान आपके पास आते है वे ईमानदार है ? वे सिर्फ इतना ही बताना चाहते है कि पाकिस्तान सरकार अल्पमतवालोंके प्रति न्याय करती है और पाकिस्तानमें सब ठीकठाक चल रहा है, अगरचे वाकयात इससे उल्टे है। अगर वे मुसलमान दुबारा आपके पास आवें तो कृपा करके उन्हे यह कतरन दिखाइएगा। मै विश्वास रखता हू कि आप भूले नही होंगे कि २० नवबरको जो हिंदू और सिख अपनी कीमती चीजें बैंकसे निकलवाने लाहौर गए थे, उनका क्या हाल हुआ था। हिंदुस्तानी मिलिटरीपर, जिसकी रक्षामे ये लोग गए थे, मुसलमानोंने हमला किया। पाकिस्तानी अफसरोंके सामने यह वाकया बना। मगर उन्होंने दंगाखोरोंको रोकनेकी कोई कोशिश नही की।" कतरनमे लिखा है :

"लाहौर 'सिविल और मिलिट्री गजट' अखबारमें हालहीमे एक रिपोर्ट छपी थी कि गैर-मुस्लिम व्यापारी और दुकानदार, जो दंगेके दिनोंमे भाग गए थे, धीरे-धीरे महीनोंका बंद पड़ा अपना कारोबार फिरसे चलानेकी आशासे वापिस आ रहे है। मगर उनकी दुकानें वगैरा वापिस करनेसे पहले उनसे ऐसी नामुमकिन शर्तोंपर दस्तखत कराए जाते है कि कई निराश होकर वापिस चले गए हैं। फिर बसानेवाला कमिश्नर इन शर्तोंपर दुकानें खोल देता है :

१—बिक्रीका पूरा हिसाब रखा जाय।

२—बिना इजाजत मालिक कुछ भी माल या रुपया दूसरी जगह न ले जाय।

३—अपनी दुकानका चालू धंधा रखनेका वचन दे।

४—बिक्रीसे जितनी कमाई हो रोज-की-रोज बैंकमें जमा की जाय, बिना इजाजत उसमेंसे कुछ भी निकाला न जाय।

५—दुकानदार कायमी तौरपर लाहौरमें ही रहेंगे।

मुसलमानोंपर ऐसी कोई शर्त नही है तो हिंदुओंपर क्यों ? हिंदू कहते हैं कि इन शर्तोंका वे पालन न कर सकेंगे। सो निराश होकर वापिस जाते हैं।"

ता निराशाकी बात तो मैं पहले ही कर चुका हूं। यह खबर सही हो तो भी जरूरी नहीं कि उन मुसलमान भाइयोंने मुझे जो कहा वह सर्वथा रद्द हो जाता है। उन्हें न सिर्फ अपना नाम रखना है, मगर यूनियनमें, जिनके वे नुमायंदे हैं, उनका और पाकिस्तानका, जिन्होंने उन्हें वह सब आश्वासन दिया उनका नाम भी उन्हे रखना है। मैं यह भी कह दूं कि वे भाई मुझे मिलते रहते है। आज भी आए थे। मगर मेरा मौन था और मैं अपनी प्रार्थनाका भाषण लिख रहा था, इसलिए उनसे मिल न सका। उन्होंने मुझे सदेशा भेजा है कि वे निकम्मे नही बैठे है। इस मिशनका काम कर रहे है। पत्र लिखनेवाले भाईको मेरी सलाह है कि जरूरतसे ज्यादा शक न करें और बहुत ज्यादा नाजुकबदन न बनें। विश्वास रखनेसे वे कुछ खोनेवाले नहीं है। अविश्वास आदमीको खा जाता है। वे संभलकर चलें। मेरी तरफसे तो इतना ही है कि मैंने जो किया है उसका मुझे अफसोस नही। मैने तो सारी जिंदगी खुली आखोसे विश्वास किया है। मैं इन मुसलमान भाइयोका भी विश्वास करूंगा जबतक कि यह साबित नही हो जाता कि वे झूठे है। विश्वासमेंसे विश्वास निकलता है। उससे दगाबाजी-का सामना करनेकी ताकत मिलती है। अगर दोनों तरफ लोगोंको अपने घरोंको वापिस जाना है तो उसका रास्ता यही है जो मैंने अख्तयार किया है और जिसपर मै चल रहा हू। पत्र लिखनेवाले भाईकी शंका कि यह निमंत्रण हिंदुओ और सिखोंमें फूट डलवानेकी चाल है, ठीक नहीं। मैने मुसलमान भाइयोंसे कहा भी था कि उनकी बातका ऐसा खतरनाक अर्थ भी निकल सकता है। उन्होंने जोरोंसे इन्कार किया कि ऐसा कुछ मतलब उसमे है ही नही। वापिस जानेवालोंके लिए रास्ता साफ करनेमें मैं कोई बुराई नही देखता। इस बातसे इन्कार नही हो सकता कि पाकिस्तानमें सिखोंके सामने जहर ज्यादा है, मगर इसमें भी शक नहीं कि हिंदुओं और सिखोंको साथ तैरना है या डूबना है। उनके मनमें कोई बुरे इरादे नही होने चाहिएं। साजिशबाजोंके बीच ईमानदारीका भाई-चारा नहीं हो सकता।

पूर्वी पाकिस्तानसे एक भाई लिखते हैं: हिंदुस्तानके दो टुकड़े हो जानेके बाद भी आप अपने आपको एक हिंदुस्तानका बाशिंदा कैसे

कहते हैं ? आज तो जो एक हिस्सेका है, वह दूसरेका हो नही सकता। कानूनके पंडित कुछ भी कहे, वे मनुष्योंके मनपर राज नही कर सकते। इस मित्रको भी यह कहनेसे कौन रोक सकता था कि वह सारी दुनियाका बाशिंदा है। कानूनकी दृष्टिसे ऐसा नही है और हरएक मुल्कके कानूनके मुताबिक कई मुल्कोंमें उसे कोई घुसने भी नही देगा। जो आदमी मशीन नही बन गया, जैसे कि हममेसे कई लोग नही बने, उन्हे कानूनन हमारी क्या हस्ती है उसकी फिक्र क्या ? जबतक नैतिक दृष्टिसे हम सही रास्ते-पर है हमे फिक्र करनेकी जरूरत नही। हम सबको जिस चीजसे बचना है वह तो यह है कि हम किसी मुल्कके प्रति या किसी मुल्कके लोगोके प्रति वैर-भाव न रखे। मिसालके तौरपर मुसलमानोंके प्रति या पाकिस्तानके प्रति वैर-भाव रखकर कोई भी पाकिस्तानका और यूनियन-का बाशिंदा होनेका दावा नही कर सकता। अगर ऐसा वैर-भाव आम तौरपर फैल जाय तो दोनोंमे लड़ाई ही होनेवाली है। हरएक मुल्क ऐसे बाशिंदोको, जो मुल्ककी तरफ दुश्मनी रखता है और दुश्मन-मुल्ककी मदद करता हैं, दगाबाज और बेवफा करार देगा। वफादारीके हिस्से या टुकड़े नही किए जा सकते।

: १८० :

१६ दिसंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

ऐसा कहा जाता है और कुछ अंशमे ठीक भी है कि जो खाने और पहननेकी वस्तुओंपर अंकुश रखा है वह कुछ तो चला गया है और कुछ और चला जायगा। लेकिन जा रहा है इसमें तो कुछ शक नहीं है और उसका परिणाम भी मेरे सामने है, जो बृजकिशनजीने रख दिया है। मैंने सोचा कि अच्छा है वह भी मैं आपको बता दूंगा। अभी गुड़का भाव एक रुपये सेर था और अब अंकुश हटनेके बाद वही गुड़

आधे रुपयेमें मिलता है। यह तो एक बड़ी बात हुई। इससे भी कम दाम होना चाहिए। मुझको तो पता नही कि वह क्यों कम नही होना चाहिए। मैं जब जवान था तब तो गुड़का इतना दाम क्या होनेवाला था ! एक सेर गुड़ ले लिया तो बस उसका एक आना दे दिया और शायद उससे भी कम। इसलिए आशा तो ऐसी ही है कि वह कम होता जायगा। हा, मुफ्त तो वह मिलेगा नही, लेकिन हमे जो पुराने ढग थे, उनपर पहुचना चाहिए, अगर पहुंच सकते है तो। शक्करका भाव भी जो ३२ रुपए मन था वह २० रुपए हो गया। बडा अच्छा लगता है कि इतना भाव उतर गया। मूग, उड़द और अरहरकी दाल है वह एक रुपयेकी डेढ़ सेर हो गई है। कितना बड़ा फर्क हो गया ? इसी तरहसे चनेका हाल है। मेरी नजरमें तो चना भी एक प्रकारकी दाल ही है। लेकिन उसका इस प्रदेशमें बहुत उपयोग होता है, इसलिए उसे अलग रखा है। वह २४ रुपए मन था उसके अब १८ रुपए हो गए है। और गेहूं चोर-बाजारमें ३४ रुपए मन था वह अब २४ रुपए हो गया है। इस तरहसे यह सब है। मुझको तो पहले सब डरा रहे थे कि तुम कहते तो हो, लेकिन तुमको पता नही कि बाजार कैसे चलता है और किस तरहसे भाव चढ़ते-गिरते है। तुमको अर्थ-शास्त्रका पता ही नही। बस महात्मा हो, इसलिए कह रहे हो। उसका नतीजा तुम्हें तो उठाना नही पडेगा, लेकिन गरीब लोग मर जाएगे। मगर जो परिणाम मैं देख रहा हू उससे गरीबोंको मरना नही, बल्कि तरना है। इसलिए मै तो यह कहूंगा कि मक्का और बाजरा वगैरापर जो अकुश है उनपरसे भी वह हट जाना चाहिए, क्योंकि बाजरा खानेवाले बाजरा ही खाते थे, गेहूं उनको हज्म भी नही होता। इसी तरहसे मक्का खानेवाले भी बहुत है। उनको पसंद भी वही आएगा। इसलिए अकुश जारी रखनेकी कोई वजह मुझको तो लगती नही है। डा० राजेंद्रप्रसादने भी तो यही कहा था कि सब अकुश आहिस्ता-आहिस्ता हटा देंगे। कुछ तो हट गए है और दूसरे भी जो हैं वे भी हट ही जाएंगे। उसका शुभ परिणाम भी हमारे सामने आ गया है। यही दियासलाईका हाल है। अभी तो उसपर बहुत दाम देना पड़ता है। चोरबाजारमें तो क्या, खुले बाजारमे, उसको चोरबाजार कहें भी कैसे, लेकिन होता है, और इसलिए लोगोंको बहुत दाम देने पड़ते है।

उसपरसे भी अगर अंकुश निकल गया तो बड़ा अच्छा परिणाम हो सकता है, मुझको तो इसमें कुछ शक नही है। दियासलाईपरसे कंट्रोलको जाना ही है और उसका दाम भी गिरना ही है। दियासलाईका इतना दाम तो पहले कभी नही था। मेरे जमानेमें तो उसकी कुछ गिनती ही नहीं थी। आज तो एक दियासलाईकी पेटी कोई एक आनेमे देगा, लेकिन तब एक आनेमें १२ पेटी मिलती थी। ऐसा भी एक जमाना था और आज ऐसा जमाना हो गया है! आज तो सब चीजोंके दाम बढ गए है। अगर लोगोंका दरमाहा बढ़े तब तो वह अच्छा लगता है, लेकिन चीजके दाम बढते हुए देखकर मुझको कभी अच्छा नही लगनेवाला है। अगर दाम कुछ बढना है तो वह मेहनत करनेवालेके घरमें चला जाए, लेकिन उनके घरमे जाए तब भी इतना दाम नही बढ सकता है। इतना दाम तो तब बढ सकता है जब तिजारत करनेवाले लोग पाजी बन जाए, उनकी नीयत बिगड जाए और वह सब पैसा उनकी जेबोंमें जायगा। हम आजादी पाकर तो बैठ गए और हमारे ऊपर इतनी बडी आपत्ति भी आई, लेकिन हम शुद्ध काम करना नही सीखे। हमारे जो ताजिर लोग है वे अगर शुद्ध कौडी कमाएं तो मुझको तो जरा भी शक नही है और जिनको शक है उनको भी यह नहीं है कि अंकुश हटा दें तो चीजोंके दाम बढ़ जाएंगे। वे कहते है कि दाम बढ जाएंगे, क्योंकि हम लोग पाजी और दगाबाज है। ताजिर शुद्ध कौडीका व्यापार नहीं करते और जो किसान वगैरा है, या जो पैदा करनेवाले है, वे भी अपना पेट भरना जानते है और प्रजाकी कोई खबर ही नही लेते। तब मै कैसे यह मानू कि हमारे यहा लोकराज्य है? मुझको तो यह मानते हुए शर्म आती है। लोकराज्य या पंचायत-राज्यमें यह कैसे हो सकता है? उसमें तो हकूमतका यह पूरा-पूरा धर्म हो जाता है कि वह लोगोंपर एतबार करे। वह साफ-साफ कह दे कि आप जैसा चाहते है वैसा हम करते हैं, लेकिन उससे अगर कोई तकलीफ होती है तो हम जिम्मेदार नहीं होनेवाले है। यह ठीक है कि हमारे यहा सिविल सर्विस पडी है, लेकिन हम लोग जितने यहां पड़े है, सब-के-सब अपनेको सिपाही समझें और लोगोंकी सेवा करें। अगर हम जिंदा रहते हैं तो भी लोगोंके लिए ऐसा हम लोग सोच लें तो मुझको कोई शक नहीं है कि दाम नहीं बढ़ सकते और आज लोगोंमें जो

एक किस्मका पाजीपन या दगाबाजी आ गई है वह भी मिट जाएगी और हम सरल होकर सीधा-सादा काम करने लगेंगे। लेकिन आज तो सब इसी तरहसे होता है और मेरे पास तो जगह-जगहसे तार वगैरा आते है। मैंने सुना है कि बबईमे तो इस बारेमे कुछ गोलमाल भी चल रहा है। क्या है, इसका मुझको पता नही। लेकिन यह सब होना ही नही चाहिए। अगर अबतक जो शुभ काम हो गया है इसके लिए तो लोगों-को हर प्रकारसे बधाई ही देनी चाहिए। इससे हकूमतको भी उत्साह मिल जाता है। यह तो एक बात हुई।

दूसरी बात यह है कि मेरे पास काफी शिकायतें आ रही है कि अभी यह कहाकी बात है कि सिविल सर्विसपर इतना खर्च कर रहे हो। एका-एक तो हटा भी कैसे सकते है और हटाए तो काम कैसे चल सकता है। उनमेंसे काफी तो चले भी गए और जो जा रहे है उनसे काफी ज्यादा काम ले रहे है। हमारे जो सरदार है उनके मातहत ये लोग है। वे तो उनको धन्यवाद देते है कि उन्होंने अच्छा काम किया है। थोड़े है तो भी वे कामको पहुच जाते है। इस धन्यवादके लायक है तो वह उनको मिले। उनको दरमाहा भी तो काफी मिल जाता है। लेकिन सच्ची सिविल सर्विस तो हम है। हकूमतको चाहिए कि सच्ची सिविल सर्विस हमको बना दे और जितना एतबार वह सिविल सर्विसपर रखे उतना हमपर रखे। यह हो सकता है कि अगर सिविल सर्विसवाले दगा दें तो वे सजाके योग्य होते हैं और उनको सजा हो जाती है। इसी तरहसे वह हमको भी सजा दे। किसीको बुला लें और कहे कि तुम्हें इतना काम करना है। क्या पाजीपन और धोखेबाजी करनेवाले को सजा देनेका कोई कानून नही है? अगर नहीं भी है तो मै कहूंगा कि वे बना लें। जिस तरहसे से सिविल सर्विसको जिम्मेदार समझते है उसी तरह सारी प्रजा को जिम्मेदार समझें। सारी प्रजा का ही यह राज्य चलता है।

मुझको यह क्यो कहना पड़ता है? इसलिए कि अभी जो एक नई बात और हो गई है न, कि कांग्रेसने यह कह दिया कि मंत्रियोंके नीचे पार्ला-मेंटरी सेक्रेटरी भी होने चाहिए और वे सिविल सर्विसके लोग नहीं, बल्कि बाहर कांग्रेससे या जो लोग कांग्रेससे अच्छा संबंध रखते है, उनमेंसे पार्ला-

मेटरी सेक्रेटरी बनाए जाएं। मुफ्त तो कोई बनता नही, सबको दरमाहा देनेको चाहिए। आज अगर करोडों रुपएकी हकूमत हमारे हाथमें नही आती तो हम कहासे दरमाहा दे सकते थे और कहासे देते ? आज वह अगर हमारे हाथमें आ गई है तो हम डेढ़-दो हजार रुपया दें, मकान दे, यह दे, वह दें और पीछे पार्लमिंटरी सेक्रेटरी बना दे मुझको तो यह सब चुभता है। चाहे वह पार्लमिंटरी सेक्रेटरी प्रधान मत्रीका हो, गृह मत्रीका हो या किसीका भी हो। और इसके लिए पार्लमिंट उनको मजबूर करे, पार्लामेंट तो क्या कांग्रेस-पार्टी कहो। कांग्रेस-पार्टीका जो शब्द भी मुझको अच्छा नहीं लगता है। कांग्रेस तो सब लोगोंकी है। हिंदू, मुसलमान और पारसी वगैरा आपस-आपसमें दंगा न करे, ऐसा कुछ करना है तो उसके लिए बड़ा दरमाहा दे तभी क्या हम लोगोंको काम करना है ? ऐसा अगर हम करते रहे तो हिदुस्तान तो एक बिल्कुल निकम्मा देश बन जायगा। हमारी ताकत क्या कल नही थी और आज हो गई है ? इससे ज्यादा अज्ञान मै और कोई नही समझता। हां, पहले कुछ पैदा तो हम कर ले। जितना १४ अगस्तको पैदा होता था उससे कितना आगे हमने बढाया, यह हिसाब तो कर ले। पहले हम जो कुछ पैदा करते थे उससे ज्यादा क्या बनाया ? क्या हमारे अनाजकी पैदावार बढी, क्या कपडा बढ़ा और क्या हमारा उद्योग कुछ बढा ? जब लोग सच्चा उद्योग करने मे लग जाएं, उनकी धन-दौलत बढे और वे कहे कि आप क्या पैसा-पैसा करते हो, ले जाओ हमारे पाससे, तब मै समझूंगा कि हमारा काम बढा है, हिदुस्तानका नाम आगे बढ़ा है और हमारा दाम भी बढ़ गया है। लेकिन आजतो हमारी पैदावार ७० रुपये फी आदमी प्रति वर्ष है। यह तो कुछ भी चीज नही है। जब उसकी आय दुगुनी हो जाय या उससे भी ज्यादा, और देहाती लोग भी यह महसूस करने लगे कि उनकी आमदनी बढ़ती जा रही है, तब आप उनसे ज्यादा पैसे भी मांग सकते है। अगर पैदावार तो बढ़े नही और हम खर्च बढ़ाते ही चले जाएं तो हमारा हाल क्या होगा ? मान लीजिए, एक दुकान है, क्योंकि हिंदुस्तान भी तो एक बड़ी दुकान है, उसका मालिक हमेशा आकर देखता है और अपने मंत्री या कारकूनसे पूछता है कि आज

बिक्री कितनी हुई, साहब ? अगर वह कहता है कि आज एक हजार-की बिक्री हुई और कल पाच-सौकी हुई थी तब तो वह राजी हो जाता है। जब वह पूछता है कि आज खर्च कितना किया और वह बताए कि एक हजारकी आमदनी और डेढ हजारका खर्च, तब तो सेठका मिजाज खराब हो जायगा। उसकी आंखें लाल हो जायंगी और अपने कारकुनको गालियां भी देगा। खैर, गाली देना तो ठीक नही, लाल आंखें करना भी ठीक नही, लेकिन वास्तवमें चीज तो उसकी सच ही है, जब वह कहता है कि हजार रुपयेकी आमद और डेढ़ हजारका खर्च तो ५०० रुपए मै कहासे लाऊं और कौन मुझको देगा ? आज हमारे हाथमे रुपया पडा है, इसलिए हम नाचते है। लेकिन वह नही रहनेवाला है। इसलिए मुझको वह चुभता है कि हम क्यो इतना पैसा फेंक रहे है। बस आज मै इससे आगे और नही जाना चाहता।

: १८१ :

१७ दिसबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाई जो होशियारपुरमे रहते है, शायद वहीके है, नाम वगैरा दिया है, वह सब तो मै नही देना चाहता हूं। काफी प्रश्न भी उन्होंने पूछे हैं, उनको भी मै छोडना चाहता हू। लेकिन उसमें जो तात्पर्य है वह तो यह है कि पहले पजाब तो एक ही था, उसके कोई टुकड़े थोडे ही हुए थे ! इसलिए एक आदमी व्यापार किसी जगह करता था और उसकी जमीन और मकान किसी दूसरी जगह होते थे। यह भाई पश्चिमी पजाबमें तिजारत करता था और मकान उसका पूर्वी पंजाबमें था। वहांसे उसको भागना पडा। जैसे हजारों-लाखों लोग भागे, इसी तरह उसको भी भागना पडा। उसने सोचा कि पूर्वी पंजाबमें चला जाता हूं, वहां मेरा मकान है जिसमें जाकर मैं बैठ जाऊंगा। लेकिन वहां सब जाते हैं तो क्या देखते हैं कि उसमें तो कोई अमलदार रहता है। तब उसको अपने ही घरमें रहनेके लिए सिर्फ दो कमरे मिलते है और बाकीके

बड़े हिस्सेमें वह अमलदार रहते है। मकान कुछ बड़ा है, ऐसा मुझको लगता है; क्योंकि आजही उनका खत मेरे हाथमे आया है। वे पूछते है कि मुझको मकान मिलना चाहिए कि नही। अगर नही मिलता है तो हकूमतको मुझे मदद देनी चाहिए कि नही, या मुझको कोर्ट-दरबारमे ही जाना चाहिए ? मेरा खयाल है कि वह मकान उसको मिलना ही चाहिए। कोर्ट-दरबारमे जानेको उनको क्यो तकलीफ दी जाय ? अगर वह हकूमतका ही कोई अमलदार है तब तो उसपर और भी हक उनका हो जाता है। यह तो मैंने इसका उत्तर दे दिया।

मैने पहले भी कहा था कि जो दु.खी लोग है वे जहा चाहे कब्जा कर लेते है और वहा चले जाते है। किसी जगहपर अगर ताला-कुजी लगी हो तो उसको भी तोड डालते है और वहा जमकर बैठ जाते है। जैसे अमलदार रहता है वह किराएसे रहता है, वहांतक तो ठीक है; लेकिन जब उस मकानका मालिक आ जाता है तब वह कैसे उसमे रह सकता है ? अगर रहना भी है तो मालिकसे मशविरा करके केवल एक हिस्सा अपने पास रखे। लेकिन यह भी तो हो नही सकता कि बड़ा हिस्सा अपने पास रखे और मालिक-मकान अभ्यागत बन जाए। यह तो ठीक नही है। लेकिन जो दुःखी लोग है उनका तो घरमे हिस्सा नही है। उनका तो इतना ही है न कि उनको मजबूरन अपने घरोंमेसे निकलना पडा। इसलिए क्या वे कही भी जमकर कब्जा कर ले ? अगर दुर्भाग्यसे वह मुसलमानका घर हुआ तब तो बस खत्म हुआ। उसपर तो वे अपना एक तरहका हक-सा मानते है; लेकिन इससे हम अपना या हिंदुस्तानका कोई भला नही कर सकते। मेरा तो यह दृढ विश्वास है कि कभी भी वे इस तरहसे अपना भला नही कर सकते। इन्सान क्या चोरी या लूट करनेसे या किसीके मकान जलानेसे कभी अपना भला कर सका है, तब इनका कैसे हो सकता है, इस तरहसे अगर मामला चले और पाकिस्तानमे भी ऐसा बन जाए कि वहा सिवाय मुसलमानोंके कोई दूसरा रहता ही नहीं है। मेरे पास तो रोज ऐसा कुछ-न-कुछ आ जाता है कि वे अगर मीठी जबानसे कुछ कहें तो आपको धोखेमें नही पड़ना चाहिए। बाकी वहां कोई आरामसे रह नही सकता, अगर वह मुसलमान नही है। लेकिन आखिरमें वहां

सब मुसलमान ही रह गए तो फिर वे ापस-आपसमें लड़ेंगे । यह अगर वहां चलता है तो भी अच्छा नहीं है और यहां चलता है तो भी अच्छा नहीं है । यहां अगर चलता है तब तो मेरी निगाहमें वह और भी अच्छा नहीं है, क्योंकि हमने कभी कहा ही नहीं कि हिंदुस्तान हिंदुओंका ही है या उसमें एक ही कौम रह सकती है और दूसरी नहीं । •जो लोग यहां पैदा हुए और जो अपनेको हिंदुस्तानके रहनेवाले मानते है, उन सबको इस देशमें रहनेका हक है । ऐसा अगर था और आज भी है, तो फिर हमारे पास तो कोई कारण नहीं रहता । लेकिन पाकिस्तानके लिए तो बहुत वर्षोंसे वे कहते आए है कि मुसलमानोंके लिए तो कोई जगह होनी चाहिए । उसका मतलब यही हुआ कि उसमें दूसरे चाहे रहे या न रहे, लेकिन बाद में जब यह हो गया और १५ अगस्तका दिन आया, जो पहले ख्वाबमें भी नहीं था, लेकिन वह हुआ और कहा कि अभी तो हमे सबको रखना है । यह आवाज निकली तो मुझको बहुत प्रिय लगी । लेकिन जो बात चुभने लायक है वह यह कि जो कुछ कहा जाता है उसपर अमल नहीं होता। यहा भी हिंदू और सिख अगर वैसा हो करते है तो उसमें मैं तो दोनोंका ही सहार और नाश देखता हूं । उसमे मैं कोई और दूसरी चीज नहीं पाता हूं, ऐसा मैंने कह दिया है ।

अभी एक भाई है, वह कहते है कि मै तो लाहौरमे था । अब तो वे लाहौरमें नहीं हैं, लेकिन यह बात लाहौरकी है । वह कहते है कि मुझको वहांसे निकलना पड़ा, निकलना चाहता था, ऐसी बात नहीं है। लेकिन निकला और पश्चिमी पंजाब छोडकर यहां आ गया । लेकिन जब तुमने कहा कि इस तरहसे वापिस वहीं जाना है तो वहा फिर वापिस चला गया । लेकिन देखता हू कि मेरी जमीन और मेरे मकानपर तो मेरा कुछ होता ही नहीं है । मुझको लंबी-चौड़ी बातें सुनाई गई और जो कुछ मेरा था वह मुझको नहीं मिल सका । ऐसी हालतमें आप कैसे कह सकते है कि वापिस वहीं जाओ ?

मैंने कई बार इसका जवाब दिया है और अब भी जब कोई लिखते हैं तो कुछ कहना ही चाहिए। मैंने तो साफ-साफ यह कहा है कि जब वह मौका आएगा तब जाया जायगा । वहां तो मैंने तैयारीकी बात कही थी

कि जिसके दिलमें वापिस जानेकी इच्छा हो वह तैयार रहे। पहले तो जिन मुसलमान भाइयोंकी तरफसे यह बात आई है उनको वहां जाना है। अभी तो वह सिर्फ बात ही है, लेकिन वह बात-की-बात रहनेवाली चीज नही है। हकूमतके नामसे वे कहते थे। आखिरमें उनको या तो यह कह देना होगा कि हम हार गए और यह हमने गलत कह दिया था कि पाकिस्तान सरकारने कहा है कि हिंदू वहां वापिस आ सकते है। यह भाई लिखते हैं कि कहना तो एक बात है; लेकिन काम असलमें उल्टा ही होता है, इसलिए वह पूछते हैं कि उनको वापिस जाना है? और यह पूछनेका उनको पूरा हक है। लेकिन जब वे इतना लंबा-लंबा लिखते है तो जो कुछ कह चुका हूं वह भी दुहरा देता हू, क्योंकि आखिर तो यह एक भलाईकी बात है। साफ-साफ जो बात है वह यह कि इस तरहसे किसीको वापिस जानेकी बात ही नहीं है। इस तरह तो दूसरे भी वहुतसे लिखते है कि हम भी जानेको तैयार है। मै सबको यही जवाब दे देता हूं कि जब जाना होगा तो मै कह दूगा कि फलां तारीखको आप जानेको तैयार रहे। अभीसे मैं किसीको कोई बात नही कह सकूगा। ऐसी शीघ्रतासे तो यह खयाल भी किसीके दिलमें नही आ सकता था, लेकिन जब मुसलमान भाई ही ऐसा कहते हैं तो मुझको वह अच्छा लगता है। अगर वे इसमे कामयाब हो जाते हैं तो मै कहूंगा कि हमारी फिजां जो आज बिगड गई है उसको दुरुस्त होनेमें उससे एक बडी मदद मिलनेवाली है। उसके लिए जो कोशिश हो सकती है वह की जायगी। लेकिन ये जो भाई लिखते है या दूसरे भी, उनसे मैं कहूंगा कि आपको अभी तो खामोश रहना है, अभी तो कुछ होनेवाला नहीं है। उसकी तजवीज हो रही है। जब हो जायगी तो उसका मैं ऐलान कर दूगा। किसीके खुफिया तौरसे जानेकी तो बात है नही। मेरी तो ऐसी उम्मीद रहती है कि पाकिस्तान उनके लिए गाडी यहां भेज दे और फिर उसमें पांच हजार आदमी चले जाएं। वे वहां शौकसे और हकसे जायंगे। इसलिए वे जाएंगे कि उनको वे वहां बुलाते हैं। अगर यह नहीं होता है तो वह चीज भी नही हो सकती है।

अभी एक तीसरी चीज और है और वह है पूर्वी अफ्रीकाकी। आपको याद रखना चाहिए कि पूर्वी अफ्रीकामें नेरोबी करके जो प्रदेश है वही

सबसे अच्छा है। वह ऐसे ही है जैसे यहां शिमला है। यहा जैसे चार-पांच महीने तो मौसम अच्छा होता है और फिर गर्मी पड़ने लगती है और मैदानमें तो और भी अधिक गर्मी होती है। लोगोंको ठंडक चाहिए, इसलिए वे शिमला या दार्जिलिंग चले जाते है। हिंदुस्तान तो एक बडा मुल्क है, मगर पूर्वी अफ्रीका तो छोटा-सा है। इसके अलावा नेरोवीको बनानेवाले भी सिख थे। सिख लोग कोई ऐसे-वैसे थोड़े ही हैं। बडी काविल कौम है और बहुत तगड़े और काम करनेवाले हैं। बड़ी जहमत उठाकर उन्होंने वहांकी रेल बनाई थी। मगर खूबीकी वात यह है कि रेल तो बनाई उन्होने और नेरोबीमें वे खुद जा भी नही सकते। जा तो सकते है मगर मजदूरी करनेके लिए, रहनेके और तिजारत करनेके लिए नहीं। यह तो नेरोवीमें है, लेकिन आदमी जव बिगडता है तो स्वभावसे ही कुछ ऐसा कि जब वह एक चीजमे बिगड़ता है तो पीछे सब चीजोंमें ही बिगड़ जाता है। इसलिए जो भी हिदुस्तानी वहां रहते हैं उनके विरुद्ध वे भारतीय प्रवेशविरोधी बिल बनाने जा रहे हैं, जैसा कि दक्षिण अफ्रीकामें भी बन गया है। हिदुस्तानियोंके जो हक है उनको वे छीन लेने की कोशिशमें है। अभी यह विल बना तो नही है, लेकिन उनकी लेजिस्लेटिव असेंबली या कौंसिलमें तो आ गया है। इसलिए जो हिदुस्तानी भाई वहां रहते है बेचारे उम्मीद तो हमसे रखते ही हैं। पंडित नेहरूको भी उन्होंने कुछ लिखकर भेजा है, क्योंकि वे हमारे विदेश मंत्री हैं। बाहर जितनी चीजे होती है वे सब उनके हाथमें रहती हैं। इसके अलावा वे हमारे प्रधान मत्री भी है। इसलिए उनको उन्होंने एक तार दिया और तारकी एक नकल मुझको भी दी है। वे कहते हैं कि इस बारेमे कुछ तो कहो। मैं चूकि अफ्रीकामें रहा हूं, इसलिए मुझपर भी उनका हक है। इसलिए मै तो आज कुछ कहे देता हूं और पीछे मेरी आवाज वहां पहुंच जायगी। हिदुस्तान आजाद तो हो गया है, लेकिन आजाद हिदुस्तानके साथ ऐसा ही होगा क्या? मुंबासा और पूर्वी अफ्रीका जो है वह ब्रिटिश इलाका है। जो हिंदुस्तानी वहां गए हुए हैं उनके साथ ब्रिटिश इलाकेमें क्या ये हाल होनेवाले हैं? उनके साथ यह सब गोलमाल क्यों चलता है? आपको समझना चाहिए कि वहां हमारे

काफी ताजिर लोग है, उनमें काफी मुसलमान हैं और खोजा तथा दूसरे मुसलमान भी वहां है। हिंदू भी वहां काफी पड़े है। हर जगहसे वे वहां गए है और पैसे भी काफी वहां कमाए है. कोई लूट या चोरी करके नहीं, बल्कि वहा जो हब्शी लोग रहते है उनके साथ तिजारत करके वे। अंग्रेजों के जानेसे काफी पहलेके वहा है। यूरोपके अन्य लोग भी तबतक वहां नही गए थे और अगर गए भी होंगे तो बहुत कम। हिदुस्तानियोंने वहां बडी बड़ी हवेलिया बनाईं, क्योंकि वे बनाने लायक थे। उस जमानेमे तो जहाज भी हमारे थे, लेकिन जब हम गिर गए तो हमारे जहाज भी सब गए।

पीछे तो वहां अग्रेज भी गए और यूरोपके दूसरे लोग भी। वह तो एक लंबा इतिहास है, जिसपर मै नही जाता। हिदुस्तानी वहाके हब्शी तथा दूसरे लोगोसे मिल-जुलकर रहे और उनके साथ तिजारत की। उन्होंने शुद्ध कौडी ही कमाई हो, ऐसा दावा मै नही कर सकता। लेकिन इतना तो सही है कि उन्होने जबर्दस्ती किसीसे कुछ नही लिया। मुसलमान भी वहा गए और ऐसा कुछ नही था कि जो मुसलमान थे उनको वहां कुछ ज्यादा मिला हो और हिंदुओंको कम। उनमे ऐसा आज भी कोई भेदभाव नही है। इसलिए वे सब मिलकर लिखते है कि इस बिलको आप किसी-न-किसी तरह रोकें, नही तो हमारा बड़ा नुकसान होता है। मैं तो कहूंगा कि वह बिल रुक जाना चाहिए।

हिंदुस्तान आज एक आजाद मुल्क है। मुझको पता है कि जवाहरलालजी तो इस बारेमे जो कुछ हो सकता है वह करने वाले है।

: १८२ :

१८ दिसंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाईका एक खत आया है जिसमे यह लिखा है कि जब आपको उर्दू जबानपर एतराज नही है तो अंग्रेजीपर क्यों है? जब हिंदुस्तान सारी दुनियाका मित्र है, जैसा कि आप कह चुके है तो फिर जैसे मुसल-

मान है वैसे अंग्रेज हैं।

इस भाईको जो दु:ख हुआ है वह केवल अज्ञानताका कारण है। इससे ज्यादा अज्ञानका कारण कोई और हो सकता है मै तो नही समझता। उर्दू पर मुझको एतराज नही होता, मै तो उसका समर्थन कर रहा हू। प्रांतीय भाषाकी हैसियतसे तो उर्दू है, पंजाबी है, मराठी, गुजराती, बंगला और उड़िया वगैरा सब है। जितने भाषावार प्रात है उनकी उतनी ही भाषाए है। यो तो हिदुस्तानमे बहुत अधिक भाषाएं पड़ी है, लेकिन सब विद्वानोने मिलकर जो फैसला किया है उसके मुताबिक तो १४ या १५ भाषाए है जो काफी भव्य है, जिनके अपने-अपने साहित्य है और जिनसे हम कुछ-न-कुछ सीखते ही है। लेकिन १५ या १४ भाषाए सब प्रांतोंमें तो नही चल सकती। सब प्रातोमे एक दूसरेके साथ व्यवहार करनेके लिए कौन-सी एक भाषा होनी चाहिए, यह सवाल है। जबसे मै दक्षिण अफ्रीकासे वापस आया हू तभीसे मै बराबर यह कहता आया हूं कि हमारी राष्ट्र-भाषा वही हो सकती है जिसको हिदू और मुसलमान ज्यादा-से-ज्यादा तादादमे बोलते और लिखते है। तब तो वह देवनागिरी लिपि या उर्दू लिपिमें लिखी हुई हिदुस्तानी ही हो सकती है। मैने तो कहा है कि मैं उर्दू का समर्थन करता हूं, लेकिन सारी दुनिया का मित्र होते हुए भी मैं अंग्रेजीका समर्थन क्यों नही करता, यह समझने लायक बात है। अंग्रेजी भाषाका यहा स्थान नही है। अंग्रेजोंने यहा राज चलाया और पीछे जो राज चलाता है वह अपनी भाषा भी चलाता है। वह परदेशी भाषा है, स्वदेशी भाषा नही है। इसलिए मुझको यह कहते हुए दु:ख नहीं, बल्कि फख्र होता है कि उर्दू हिदुस्तानकी भाषा है और वह हिंदुस्तानमें ही बनी है। तुलसीदासके तो हम सब भक्त है और होना ही चाहिए, लेकिन उनकी रामायणमें आपको यह देखकर ताज्जुब होगा कि कितने ही अरबी और फारसीके शब्द ले लिए हैं। जो शब्द बाजारमें लोग बोलते थे वही उन्होंने ले लिए। आखिर उन्होंने लिखा है वह आपके लिए और मेरे लिए लिखा है। तुलसीदासजीने जो थोड़े-से संस्कृत बोलनेवाले हैं, उनके लिए थोड़े ही लिखा है! इसलिए जो तुलसीकी भाषा है वही हमारी भाषा है। अगर आपको फैसला करना है कि कौन-सी हमारी राष्ट्र-भाष

है तो मैं यह दावेसे कह सकता हू, पीछे हिंदू मुझको चाहे मारे, काटें, या कुछ भी करें, कि हमारी राष्ट्र-भाषा वही हो सकती है जो देवना-नागरी और उर्दू दोनों लिपियोंमें लिखी जाती है।

लाला लाजपतरायजी तो पंजाबके शेर माने जाते थे। वह तो चले गए। मैं तो उनका मित्र था और उनके साथ मजाक भी करता था कि हिंदीमें बोलना कब सीखोगे। वह कहते थे, यह नहीं होनेका। याद रखो वह समाजी थे और यह भी याद रखो कि वे हवन इत्यादि भी करवाते थे। चूंकि मैं उन्हींके घरमें ठहरता था, इसलिए मैं यह सब देखता था। हवनमें तो संस्कृत ही काममें आती है और अजीब बात थी कि यह सब होते हुए भी वे थोड़ा-थोड़ा पढ तो लेते थे देवनागरीमें, लेकिन उनकी मादरी जबान उर्दू ही थी। वे कहते थे कि उर्दूमें तो मुझसे कहो तो घंटों बोल लेता हूं और बोलते थे, और उर्दूके तो मैं आपको क्या बताऊ, वे बडे भारी विद्वान थे और बहुत शीघ्रतासे लिख सकते थे। अंग्रेजीमें भी वे घंटों बोल सकते थे, लेकिन संस्कृत मय हिंदी तो उनकी समझमें भी नही आती थी। जब मैं चुन-चुनकर अरबी-फारसीके शब्द लाता तब वे मेरी बात समझ सकते थे। जब उनकी बात मैंने कर ली तो सबकी कर ली। तब वे भाई क्यों कहते हैं कि उर्दू पर एतराज क्यों नही है? मैं तो कहूंगा कि किसीको भी नहीं होना चाहिए। लेकिन अंग्रेजीके लिए एतराज है। आखिर हिंदी साहित्य सम्मे-लनका भी मैं दो दफा सभापति रह चुका हू और सभापतिके पदसे मैंने यही चीज कही और किसीने शिकायत नही की। की होगी तो शायद १-२ ने की होगी। सब लोगोंने तालिया ही बजाई और कहा कि मैं बिल्कुल ठीक बात कहता हूं। आज भी मैं वही आदमी हूं। तब क्यों आप मुझको ऐसा सुनाएंगे कि मैं हिंदीका पक्ष कम लेता हूं और इसलिए कम हिंदुस्तानी हूं। मुझको तो ऐसा लगता है कि जो आदमी उर्दूपर एतराज करता है, वही कम हिंदुस्तानी है।

हम आज अनेक झंझटोंमें पड़े है और इस तरहसे आपस-आपसमें विष पैदा हो गया है। अजमेरमें भी तो यही हुआ है। अगर आप हिंदू-धर्म की रक्षा करना चाहते हैं तो यहां जितने मुसलमान पडे हैं उनकी दुश्मनी

करके नही कर सकते । मै तो आजकलका ही मेहमान हू । कुछ दिनोंमें यहासे चला जाऊगा । पीछे आप याद किया करोगे कि बूढ़ा जो कहता था वह सही बात है । मै कोई अकेले हिंदू-धर्मकी ही बात नही करता । इस्लाम धर्म भी मर जायगा अगर उन्होने कहा कि हम तो सिर्फ मुसलमानोंको ही पहचानते है, बाकी तो हमारे दुश्मन है । इस तरह तो वे इस्लामको दफना देंगे, इस बारेमे मुझे कोई शक नही है । ईसाई-धर्मके लिए भी मैं यही कहूंगा । अगर वे कहे कि जो ईसाको नही मानते वे सब दुश्मन है और अहले किताब नही है, तो मैं कहूंगा कि वे गलती करते है । दुनियाके जितने धर्म है उनके माननेवाले सब अहले किताब हैं । अगर वे कहे कि जो बाइबिलको माने वह अहले किताब है या जो कुरान शरीफको मानते है वही अहलेकिताब हैं, तो मै कहूंगा कि वे गलत रास्तेपर है । दुनिया-के जितने धर्म हैं वे सब अच्छे है, क्योंकि वे भलाई सिखाते है। जो दुश्मनी सिखाते हैं उनको मै धर्म नही मानता।

अंग्रेजोंके जमानेमे भी वही बात मै कहता था कि यहा अंग्रेजी हो नही सकती । मेरे दिलमें अंग्रेजीकी कद्र है और मैं अंग्रेजी पढ़-लिख भी लेता हू । सब मानते भी है कि मै न अंग्रेजोंका दुश्मन हू, न उनकी भाषा-का । लेकिन सब चीजे अपनी-अपनी जगहपर है । अंग्रेजी दुनियाकी भाषा है । अगर दुनियाके साथ व्यवहार करना है तो अंग्रेजीसे ही हो सकता है । अंग्रेजी बहुत व्यापक बन गई है, लेकिन हिंदुस्तानी व्यापक नही है । हम अंग्रेजीसे तो बरी हो गए, लेकिन अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी सभ्यताका जो प्रभाव हमपर पड़ा है, उस असरसे हम अभी नही निकले है, यह कितने दुःखकी बात है !

याद रखो, मैने कहा है कि हिंदुस्तानी वह चीज है जो उर्दू और हिंदीके संगमसे बनी है, जैसा गंगा और जमनाका संगम प्रयागमें होता है। उस संगममे तो सरस्वती भी बताई जाती है, लेकिन उसको तो न देखते है, न जानते हैं । दोनोंका व्याकरण तो एक होना ही चाहिए और वह हिंदुस्तानी है । उसमें संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी वगैरा सब भाषाओंके शब्द भरे पड़े हैं। अंग्रेजीका शब्द जैसे कोर्ट है, तो उसको कोर्ट ही कहेंगे। अगर कचहरी कहो तो वह भी बाहर का ही शब्द है, हमारा तो नहीं है। इसी

तरह बाइसिकल है और रेल है। रेलको और क्या कहेंगे ? अंग्रेजी शब्द हमारी भाषामें काफी दाखिल हो गए है और उनसे हमे घृणा नही है। लेकिन अगर ये भाई मुझको अंग्रेजीमें खत लिखें तो मै फेंक दूंगा, क्योंकि मै जानता हू कि वे हिंदुस्तानी लिख सकते है। इसी तरहसे अगर मेरा लड़का अंग्रेजीमें लिखे, क्योंकि अंग्रेजी तो वह जानता है तो मै फेंक दूंगा और नही पढ़ूगा। इसी तरहसे अगर मै अंग्रेजीमें कुछ लिखकर भेजूं तो उसे फेकने-का अधिकार है। यह तो बिलकुल ही सरल चीज है, लेकिन हम तो आज अपना धर्म-कर्म सब भूल गए और हमारे अंदर एक प्रकारकी विकृति पैदा हो गई है। ईश्वर उस बलासे हमें बचा ले।

: १८३ :

१६ दिसंबर, १६४७

भाइयो और बहनो,

आज दुपहरको मेवो (एक जाति) को देखनेके लिए गुडगावा चला गया था। वहां तीन तरहके मेवे थे. एक तो अलवरसे भागकर आए हुए, दूसरे भरतपुरसे और तीसरे वहीके। पूर्वी पंजाबके प्रधान मंत्री डा० गोपीचद भार्गव भी साथ थे। उन्होंने मेवोंसे कहा कि जो रहना चाहते है, उनको कोई हटा नही सकता। हकूमत उनकी हिफाजत करेगी। लाखो आदमियो-को अपने मकान छोड़कर वहां से भागना पड़ा, वह एक वहशियाना बात थी। यहांसे जिनको भागना पड़ा वह भी वहशियाना बात थी। पीछे किसने ज्यादा किया, किसने कम किया और किसने शुरू किया, उसको छोड़ देना चाहिए; क्योंकि ऐसे हिसाबमें अगर हम पडें तो दुश्मनी मिट नही सकती और कोई आराममे नही बैठ सकता। हमारे नसीबमे एक-दूसरेकी दुश्मनी रहे, वह नही रहनी चाहिए। वह अगर रही तो हमारा खात्मा हो जायगा। मैने तो कहा है न कि मै तो इसे बर्दाश्त कर नही सकता। हां, जिनको जाना है या जो विदक गए है, उनको कोई रोकनेवाला नही है। लेकिन किसीको मजबूरीसे न जाना पड़े। जो भी हो, वह आदमीकी इच्छासे हो। उनको भागना पड़े, इस तरह उन्हें कोई मजबूर न करे, न

हकूमत करे, न हकूमतके अफसर करे और न जनता करे। अगर कोई करता है तो वह पागलपन है। वहा बहने भी सब थी और पुरुष भी। सब परेशानीमें पड़े है। कई तो ऐसे हैं कि तंबू है, नही है और ये जाडेके दिन ! यह सब एक बहुत ही दुःखद किस्सा है। इनको वापिस जाना चाहिए, अगर अलवर रियासत यह कहे कि गलती तो हो गई, लेकिन अब आप आइए। इसी तरहसे भरतपुर है। और पीछे वहां भी जिन्होंने गुनाह किया है और उनको हलाक किया है, उनको उन्हे निभा लेना चाहिए। ऐसा कहनेसे तो काम नही चलता कि मेव तो गुनाह करनेवाली कौम है। गुनाह करनेवाला कौन है और कौन नही, इसको कौन जानता है ? जो लोग गुनाह करते है उनको क्या आप हिदुस्तानसे जला-वतन करेंगे ? यहांसे निकाल देंगे या मार डालेंगे ? तुम यहासे चले जाओ, यह कहनेसे तो काम हो नही सकता। उनको तो सुधारना चाहिए और सच्ची तालीम देनी चाहिए। जो शराफतका रास्ता है वह उनको बताना चाहिए। एक तो यह बात हुई।

दूसरी बात चीनीकी है। चीनी हर जगहपर तो होती नही और शक्कर भी हर जगह नही होती। जहां होती है, उस जगहसे उसको लाना है। माना कि यहा नही है, तो यू० पी०से उसको लाना है या कोयम्बटूरसे आ सकती है। लेकिन आए कैसे ? वह तो रेलसे ही आ सकती है। लेकिन गाड़ियां तो आज है ही नही। डा० जान मथाईके हाथमें वह विभाग है। वह कहते है कि मै कहांसे दूं ! जितने डिब्बे हैं रेलवेके, वे सब-के-सब तो निकाल दिए है। जितनी जल्दी वे माल ला सकते है, ला रहे है। इसके अलावा कोयला कम, लोहा कम और चलानेवाले कम, ये सब झंझट हैं। रेलवे स्टाफ जितना चाहिए उतना नही है। पीछे दूसरे-तीसरे काममें भी उनको लेना पड़ता है। वह तकलीफ तो जब रफा होगी तब हो जायगी। लेकिन बीच-बीचमें हम क्या करें ? वह जो चीनी और शक्कर बनानेवाले है वे बदमाश हैं और वे दाम बढ़ा देते हैं। आखिर हजारों और सैकड़ों मीलसे माल कोई सिरपर तो ला नहीं सकता। आज तो रेल और हवाई जहाज देखकर लोगोंको ऐसा हो गया है कि उनके हाथ-पैर चलते ही नही है। तब

क्या करना चाहिए ? एक तो मथाई साहबको लिख देना चाहिए । यह सही है कि हमको रेलवे वैगन नही मिलते या ऐसा कहो कि रेल यातायात नही मिलता । मगर हिंदुस्तानमे ऐसा भी तो बन गया है कि एक तरफ रेलवे चलती है तो साथ-साथ दूसरी ओर मोटर भी चलती है। जितनी तेज रफ्तारसे रेल जाती है उतनीसे ही मोटर जाती है । रेलके लिए तो लोहेकी पटरी भी होनी चाहिए, लेकिन मोटरके लिए तो कुछ भी नही । साफ रास्ता हो तो अच्छा है, लेकिन रास्ता जैसा-तैसा हो तो भी जीप तो चली जाती है । काफी तादादमें मोटरें हिंदुस्तानमे चलती है । लेकिन उनके लिए पेट्रोल चाहिए और उसपर अभीतक अंकुश है । मैने बताया कि अभी सब अंकुश तो छूटे नही है । अगर पेट्रोलपरसे अंकुश हटा लें तो सब लारियां चलने लगें और माल लाएं—और ले जाने लगें। उनमे तो पीछे नमक भी आ सकता है । यह कैसी भयानक बात है कि आज हमारे मुल्कमे नमक बन सकता है, उसपरसे कर भी चला गया है, तो भी वह महंगा है; क्योकि वह पूरा आता ही नही है । मेरी निगाहमें तो कुछ लोगोंको नमक बनाने और लानेका जो ठेका दिया गया है वह एक बड़ी गलती हुई है। सबको नमक लानेकी छूट होनी चाहिए । अगर पेट्रोलपरसे अकुश निकल जाय तो ये मोटर-लारिया नमक भी ला सकती है और दूसरी चीजें भी । एक चीजपरसे अंकुश हटा लिया और दूसरीपर रखा तो ठीक नहीं बैठता । जब एक नीति हमने ग्रहण कर ली कि अंकुश निकालना है तो पीछे सबको ही निकाल देना है और देखना है कि लोग क्या करते है । ऐसा आप नही कह सकते कि बाजारमे पेट्रोल नही है । पेट्रोल का तो चोर-बाजार चलता है और जबतक उसपर अंकुश चलेगा तबतक यह चोर-बाजार चलता रहेगा । चोर-बाजार तो अंधेरेमे चलना चाहिए, लेकिन वह तो साफ-साफ जाहिरमे चलता है । तब उसे ब्लैक मार्केट कहे या सफेद मार्केट कहे या उसको और कोई नाम दें ? पीछे क्या होता है, सुना है उसके पीछे रिश्वत भी बहुत बढ गई है । जो पेट्रोलका अफसर है, थोड़ा पैसा उसके हाथमें रखना ही चाहिए । थोड़ा पैसा कोई रुपया, दो रुपया नहीं, बल्कि सैकड़ोंकी बात चलती है । जब एक चीज बुरी हो जाती है तो और बुराइयां उसके

साथ चलती रहती है। जिन चीजोंपरसे अकुश निकल गया उससे लोग तो मानते है कि उनको राहत मिली है। फिर पेट्रोल तो कोई खानेकी चीज भी नही है और न हरएक आदमीके दरकारीकी चीज है। जो लोग मोटर ट्रासपोर्ट चलाते है उनको पेट्रोल चाहिए। हकूमतको जितना पेट्रोल चाहिए वह उतना अपने लिए रख ले और बाकीको खुले बाजारमे रख दे। अगर माना कि बाजारमे बिलकुल मिलता ही नही और रेले भी सब-की-सब मिट गई तो भी हिदुस्तानका कारोबार पेट्रोलके बिना बंद नही होनेवाला है। सिर्फ इधर-उधर माल ले जानेका तरीका, जो आज है वह बदल जायगा। तब हम पुराने जमानेके तरीकेपर चले जायगे। अगर पेट्रोलका जो अंकुश है वह निकल जाय तो मुझको उससे कुछ डर नही है।

एक बात यह भी है कि हमारे यहां पूरी खुराक तो पैदा नही होती है। तब लोगोंको कहो कि वे जमीनको बो लें, उसमेसे पैदा हो जायगी। बात तो सच्ची है, लेकिन उसके लिए बाहरसे जो बनी-बनाई खाद आती है, जिसको कि रसायन खाद बोलते है, उसमे हम चंद करोड़ रुपये मुफ्त-के दे देते है या ऐसा कहो कि जमीनको बिगाड़नेके लिए वह पैसे देते है। यह मेरा कहना नही है, मैं तो यह जानता ही नही ; लेकिन जो इसका ज्ञान रखते हैं, वे ऐसा कहते है। मीराबेनने ही यह सब किया है और उसने ही इस चीजके जानकार लोगोंको इकट्ठा किया। उसको शौक है और वह सचमुच किसान बन गई है।

और भी बड़े-बड़े आदमी इस काममे उसके साथ थे। राजेंद्र बाबू तो हैं ही, सर दातारसिह है और भी दूसरे अच्छे-अच्छे खेतीका थोड़ा-बहुत जाननेवाले है, वे आ गए थे। वे मिले और जो किया वह अखबारोंमें भी आ गया है। उन्होंने यह निकाला है कि खाद किस तरह बना सकते है। उसको जिंदा खाद कहते है। हमारे यहां गोबर तो काफी होता है और जहां मनुष्य हैं वहां उनका विष्टा भी रहता है, उससे खासा अच्छा खाद बन जाता है। उसको मिश्रण करनेके बाद, यह कोई कह नहीं सकता कि वह कैसे बना है। अगर बननेके बाद उसको हाथमें ले लो तो सुगंधि निकलती है, दुर्गंधि नही। इस तरहसे उसका परिवर्तन हो जाता है। जो भी घास-पत्ता और कूड़ा-कचरा होता है वह सब मिला लिया जाता

है और इस तरह वह मुफ्तमें खाद बन जाता है। कचरेमेंसे करोड़ों रुपए कैसे निकल सकते हैं, यह इल्म लोगोंको बतानेके लिए दो-तीन रोजके लिए ये कुछ लोग बैठ गए थे।

: १८४ :

२० दिसंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

बड़े दुःखकी बात है कि यहां (दिल्लीमें) फिर थोड़ेसे पैमानेपर दंगा शुरू हो गया है। अगर हम चाहते हैं कि सब मुसलमानोंको यहांसे जाना है तो फिर हमको साफ कह देना चाहिए, वह शराफत होगी या हकूमत कहे कि आप लोगोका यहा रहना मुफीद नही है? हम आपको थोड़ा-थोड़ा हलाक करके नही निकालना चाहते, लेकिन सचमुच तो आपको जाना ही है। मुझको तो इसका बड़ा दुःख होता है।

क्या ही अच्छा हो अगर हम सब अच्छे हो जायं, शरीफ बन जायं और बहादुर हो जायं। वह तो एक डरपोकका काम हो जाता है कि जो यह कहे कि मुसलमान मेरे पास नही रह सकता। क्यों नही रह सकता? अगर वह खराब है तो उसको ठीक करना है—शराफतसे, मारपीटकर नहीं। इसलिए मुझको तो यह बड़ा चुभता है कि हम क्यों ऐसे बन गए कि जिससे मुसलमान यहां डरें और हिंदू तथा सिख पाकिस्तानमें डरें। और पीछे बड़ी-बड़ी बातें हम करें कि यहां सब लोग आरामसे रह सकते हैं। कहां आरामसे रह सकते हैं? मैं तो हमारी हकूमतसे भी कहता हूं कि अगर वह सच्ची बनना चाहती है तो ऐसा होना नहीं चाहिए। अपने सारे अफसरोंको साफ-साफ यह कह दे कि हमारे रहते हुए ऐसे नहीं बन सकता है। आखिर आप ही लोगोंके तो हम नुमायंदे हैं, क्योंकि सरकारी अफसर भी तो मतदाता होते हैं। इसलिए अफसरोंको क्या, फौजको क्या और पुलिसको क्या, सबको शराफतसे चलना है। अगर हम लोग शराफतसे चलेंगे तो हमारी गाड़ी आगे चल सकती है, नहीं तो जो लगाम हमारे हाथोंमें आ गई है उसको हम छोड़ रहे हैं, इसका

मुझको दुःख होता है। लेकिन आज तो मैं वह बात नही करना चाहता था। मै तो आपको वह सुनाना चाहता हू जो मैंने छोड़ रखी है।

चरखा-संघ की जो बैठक हुई थी उसमें ग्राम-उद्योगसंघकी बात मैंने अभीतक छोड़ रखी थी। थोड़ा-सा इशारा जरूर कर दिया था। चरखा तो ग्राम-उद्योगका मध्य-बिदु है। अगर सात लाख गांवोंमें चरखा न चले तो अन्य गृह-उद्योग भी नही चल सकते है। चरखा तो सूरज है और दूसरे जो उद्योग है वे ग्रह है, जो सूरजके इर्द-गिर्द फिरते रहते है। अगर सूरज डूब जाय तो दूसरे ग्रह चल नही सकते, क्योंकि वे सब सूरजपर ही आश्रित हैं, ऐसा दुनियामे बन गया है। लेकिन देहातका सूरज किसको कहें? हिंदुस्तानका सूरज तो वह चक्र है कि जो झंडेमें मौजूद है, पीछे चाहे आप उसको सुदर्शन चक्र कहे या अशोक राजाका चक्र कहें। मेरी निगाहमें तो वह चरखेकी निशानी है। अगर वह देहातोंमें चलता रहे तो अन्य ग्राम-उद्योग भी रुक नही सकते, लेकिन उसके चलते रहनेपर भी दूसरोंको देखना तो है। अगर उनको संभालें ही नही और वे सब इर्द-गिर्द चलना छोड़ दें तो फिर जो सूरज है, वह भी बेहाल हो जायगा। जितने हमारे खगोल-शास्त्री कहे जाते हैं उन्होंने यह नहीं देखा है और उन्होंने देखा होगा तो मैं मूर्ख हूं, जानता नही हूं। लेकिन मैं तो मानता हूं कि अगर सब ग्रह डूब जाते हैं तो सूरजको भी डूबना है। यह मैं शास्त्रीय तरीकेसे तो सिद्ध नहीं कर सकता हूं, लेकिन यहां तो मैं सिद्ध कर सकता हूं कि जो दूसरे इर्द-गिर्दके उद्योग न चलें तो चरखा बेचारा अकेला क्या कर सकता है? दिल्लीके इर्द-गिर्द क्या थोड़े ग्राम पड़े हैं। अगर वे सब दिल्लीको आश्रय दें और उनको दिल्लीका आश्रय लेना है तो पीछे वह सब बहुत खूबसूरत काम बन जाता है और आपस-आपस-की लड़ाईका सारा झगड़ा भी मिट जाता है। आखिर देहातोंमेंसे सब चीजें हमको चाहिएं। आज तो वे चीजें आ नहीं सकती हैं। आप अगर न जानते हों तो जानना चाहिए कि दिल्लीमें बहुतसे कारीगर मुसलमान थे। वे चले गए। पानीपतमें देखो, कितने मुसलमान कंबल वगैरा बनाते थे। आज तो वह धंधा अस्त-व्यस्त हो गया। पीछे अगर हिंदू और सिख वहां गए तो देखा जायगा। लेकिन वे क्यों वहां जाएं? वे कोई भूखे थोड़े

ही मरते हैं ! हिंदूके पास जो पेशा है उसमेंसे वह कमा लेता है और मुसलमानके पास जो पेशा है उसमें वह कमा लेता है। अगर तब मुसलमान अपना काम छोड़कर यहांसे चले जाते है तो उसमें हिंदुस्तानका नुकसान ही होता है। इस लिहाजसे तो पाकिस्तान और हिंदुस्तान दोनों डूब रहे है। क्या वजह है कि हम काश्मीरमें लड़ते है ? वहां जो बागी लोग आ गए है वे लड़ें और फिर हम यहासे उसके लिए लश्कर भेज दें, वह तो एक वहशियाना बात मैं समझता हूं।

ग्राम-उद्योगकी बात तो एक बडी बुलद बात है। कल मैने आपको बताया था मीराबेन उस कामको कर रही है और उसमे तो हमारी हकूमतके लोगोंका भी हाथ है। वह खाद हम सब अपने घरोंमे बना सकते है। हम लोग जो मैला करते है वह और गोबर तथा और भी जो कूड़ा-कचरा जमा हो जाता है, वह सब मिला लें। वह इस खूबीसे मिल जाता है कि पीछे एक खूबसूरत और सुगधित खाद बन जाती है।

इसलिए ग्राम-उद्योग और चरखा-संघका जो काम है वह तभी चल सकता है जब करोडों आदमी उसमें मदद दें। अगर वे न दें तो वह काम बिलकुल नहीं चल सकता। चार चीजें, जहां तक मुझको याद हैं, अर्थात् चरखा-संघ, हरिजन-सेवक, ग्राम-उद्योग संघ और तालीमी संघ – जो बनी है, वे चारोंकी चारों धनिकोंके लिए नही, बल्कि गरीबोके लिए हैं। सब लोगोंको इनके काममे हाथ बटाना है। अगर हाथ न बटाएं तो वह काम चल नहीं सकता। अगर हम हिंदुस्तानमे पंचायत राज्य या लोगोंका राज्य चाहते है, तो सब लोगोंको उस काममें मदद देनी है। वह कोई हवामेंसे तो आता नही है और न हिमाचल से चलकर आता है। वह तो यहांकी जनताके द्वारा ही हो सकता है। जनता एक तरहकी नींव है, जिसपर हम एक बहुत ऊंचा मकान बना सकते हैं। अगर उसमें सब हाथ दें, तब तो खैर है और अगर न दें तो ठीक है। हम एक-दूसरेसे लड तो रहे ही है और नतीजा भी उसका वही आकर रहेगा जो यादव लोगोंका हुआ था। यदुवंशी तो कृष्ण भी हुए थे, लेकिन पीछे क्या हुआ कि सब लड़ते थे और दूसरोंको डराते रहते थे। शराब पीना, व्यभिचार करना और आपसमें लड़ना, उनका काम रह गया था। नतीजा यह हुआ कि

वह उस चीजमें जो घासकी थी, खत्म हो गए । यादवस्थल उसको हम कहते हैं । वह नतीजा या तो हिंदुस्तानको आनेवाला है और अगर नहीं आनेवाला है तो केवल इससे कि ये चार चीजें बनी है उनको हम करते रहे । तभी हम सब आरामसे रह सकते है ।

: १८५ :

मौनवार, २२ दिसंबर, १९४७

(लिखित संदेश)

भाइयो और बहनो,

यहासे आठ-दस मीलके फासलेपर महरौलीमें कुतुबुद्दीन बखतियार चिश्तीकी दरगाह है । वह पवित्रतामे अजमेरकी दरगाहसे दूसरे नम्बरपर मानी जाती है । इन दरगाहोपर न सिर्फ मुसलमान जाते थे, बल्कि हजारों हिंदू और दूसरे गैर-मुस्लिम भी वहां पूजाभावसे जाया करते थे । पिछले सितबरमे यह दरगाह हिंदुओके गुस्सेका शिकार बनी । आस-पासमें रहनेवाले मुसलमान अपने ८०० साल पुराने घरोंको छोड़नेपर मजबूर हुए । इस किस्सेका जिक्र करनेका कारण इतना ही है कि दरगाहके प्रति प्रेम और वफादारी रखते हुए भी, वहां आज कोई मुसलमान नही है । हिंदुओ, सिखो, वहांके सरकारी अफसरों और हमारी सरकारका यह फर्ज है कि जल्दी-से-जल्दी पहले की तरह उस दरगाहको खोलकर, यह कलंकका टीका धो डालें । यह चीज दिल्लीमें और दिल्लीके इर्द-गिर्दके मुसलमानोंकी सब धार्मिक जगहोंपर लागू होती है । वक्त आ गया है कि दोनों तरफकी सरकार सख्तीके साथ अपनी-अपनी अक्सरियतके सामने यह साफ कर दे कि अब धार्मिक स्थलोंका अपमान बर्दाश्त नही किया जायगा, चाहे वह स्थल छोटा हो और चाहे बड़ा । इन स्थलोंका जो नुक्सान किया गया है, उसकी मरम्मत होनी चाहिए ।

मुस्लिम लीगकी सभाने कराचीमें जो फैसला किया है उसे देखते हुए

मुसलमान मुझे पूछते है कि जो लीगके मेंबर हैं वे, जो सभा लखनऊमें मौलाना आजाद बुला रहे है, उसमें जावें या न जावें ? क्या मुस्लिम लीगके मेंबरोंकी जो सभा मद्रासमे होनेवाली है उसमें भी जावे ? हर हालतमें यूनियनमे रहनेवाले मुस्लिम लीगके मेबरोंका क्या तरीका होना चाहिए ? मेरे दिलमें कोई शक नही कि अगर उन्हें व्यक्तिगत या जाहिर निमंत्रण मिले, तो उन्हे लखनऊकी मीटिगमें जाना चाहिए, और मद्रासकी मीटिंग-मे भी । दोनों जगह उन्हे अपने विचार निर्भयतासे और खुली तरह जाहिर करने चाहिए । अगर उन्होंने पिछले ३० सालमें हिंदुस्तानकी अहिसाकी लड़ाईका अभ्यास किया है तो उन्हें इस बातसे घबराहट नहीं होनी चाहिए कि यूनियनमें वे अकलियतमे हैं, और पाकिस्तानकी अक्सरियत उनकी कोई मदद नहीं कर सकती । यह चीज समझनेके लिए उन्हें अहिसामें विश्वास रखनेकी जरूरत नही कि अकलियतको, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, अपनी इज्जत और इन्सानको जो भी प्रिय और निकट लगता है, वह सबकुछ, बचानेके लिए डर रखनेका कभी कारण नही रहा। इन्सान ऐसा बना है कि अगर वह अपने बनानेवालेको समझ ले और यह समझ ले कि मै उसी भगवानका प्रतिबिब हू तो दुनियाकी कोई ताकत उसके स्वमानको छीन ही नही सकती । उसके स्वमानका हनन कोई कर सकता है तो वह खुद ही कर सकता है । जिन दिनों मैं ट्रांसवालकी जबर्दस्त हकूमतके साथ लड़ रहा था, मेरे एक प्रिय अग्रेज मित्रने मुझे जोहांसबर्गमें कहा, "मैं हमेशा अकलियतका साथ देना पसंद करता हूँ, क्योंकि अकलियत आम तौरपर कभी गलती नही करती है, और करती है तो उसे सुधारा जा सकता है । मगर अक्सरियतको सत्ताका मद होता है, इसलिए उसे सुधारना कठिन रहता है।" अगर अक्सरियतसे हथियारोंकी एकतरफा ताकतका भी मतलब हो तो इस दोस्तकी बात सही थी। हम अपने कडुवे अनुभवपरसे जानते हैं कि कैसे मुट्ठीभर अंग्रेज यहां हथियारोंकी ताकतसे अक्सरियत बने बैठे थे और सारे हिदुस्तानको दबाये हुए थे । हिंदुस्तानके पास वे हथियार नहीं थे, और रहते भी तो हिंदुस्तानी उनका इस्तेमाल नही जानते थे । यह दुःखकी बात है कि हमारे मुल्कमें अंग्रेजोंकी हकूमतसे हिंदुओं और सिखोंने पाठ नही सीखा । यूनियनके मुसलमानोंको पश्चिममें और पूर्वमें

अपनी अक्सरियतका झूठा घमंड था। आज उस बोझसे मुक्त हो गए हैं। अगर वे अकलियतमे रहनेके गुणोंको समझेगे तो वे अपने तरीकेसे इस्लामकी खूबियोंका प्रदर्शन कर सकेंगे। उन्हे याद रखना चाहिए कि इस्लामका अच्छे-से-अच्छा जमाना हजरत मुहम्मदके मक्केके दिनोंमे था। कान्सटेन-टेनकी शहनशाहीके वक्तसे मिस्री धर्मका अस्त होने लगा। इस दलील-को यहा लबा करना नही चाहता। मेरी सलाहका आधार मेरा पक्का अकीदा है, इसलिए अगर मुस्लिम मित्रोके मनमें इस चीजपर विश्वास नही है तो बेहतर होगा कि वे मेरी सलाहको फेंक दें।

मेरी रायमें उन्हें कांग्रेसमें आनेके लिए तैयार रहना चाहिए। मगर जबतक कांग्रेसमें उनको हार्दिक स्वागत न मिले, और समानताका बर्ताव न मिले, तबतक वे कांग्रेसमें भर्ती होनेकी अर्जी न करें। सिद्धांतके तौर-पर तो कांग्रेसमें अक्सरियत और अकलियतका सवाल उठता ही नही। कांग्रेसका कोई धर्म नही, एकमात्र मानवताका धर्म है। उसमें हरएक स्त्री-पुरुष समान है। कांग्रेस एक शुद्ध राजनैतिक संस्था है, जिसमे सिख, हिदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी, सब बराबर है। कांग्रेस हमेशा अपने कहनेपर अमल नही कर सकी। इससे कभी मुसलमानोंको लगा है कि यह तो मुख्यतः सवर्ण हिदुओकी ही संस्था है। जो भी हो, जहां-तक खेंचतान जारी है मुसलमान बाइज्जत अलग खडे रहे। जब उनकी सेवाओंकी कांग्रेसको जरूरत होगी वे कांग्रेसमे आ जावेगे। उस वक्ततक जिस तरह मै कांग्रेसका हू, वे कांग्रेसके रहें। कांग्रेसका चार आनेका मेंबर न होते हुए भी कांग्रेसमे मेरी हैसियत है, तो उसका कारण यह है कि जबसे १९१५ में मै दक्षिण अफ्रीकासे आया हू, मैने वफादारीसे कांग्रेसकी सेवा की है। हरएक मुसलमान आजसे ऐसा कर सकता तो वे देखेंगे कि उनकी सेवाओंकी भी उतनी ही कदर होती है जितनी कि मेरी सेवा-ओंकी।

आज हरएक मुसलमान लीगवाला और इसलिए कांग्रेसका दुश्मन समझा जाता है। बदकिस्मतीसे लीगका शिक्षण ही ऐसा रहा है। आज तो दुश्मनीका तनिक भी कारण रहा नही। कौमीवादके जहरसे मुक्त होनेके लिए चार महीनेका अर्सा बहुत छोटा अर्सा है। इस दुःखी देशका

दुर्भाग्य देखिए कि हिंदुओं और सिखोंने जहरको अमृत समझ लिया और लीगी मुसलमानोंके दुश्मन बने। ईटका जवाब पत्थरसे देकर उन्होंने कलंकका टीका मोल लिया और मुसलमानोके बराबर हो गए। मेरा मुसलमान अकलियतसे अनुरोध है कि वे इस जहरी वातवारणसे ऊपर उठे, अपने आदर्श बर्तावसे उनके बारेमे जो वहम भर गया है, उसे गलत सिद्ध करें और बता दे कि यूनियनमें इज्जत-आबरूसे रहनेका एक यही तरीका है कि वे मनमें किसी तरहकी चोरी न रखकर हिंदुस्तानके शहरी बनें।

इसमेंसे यह परिणाम निकलता है कि लीग राजनैतिक संस्थाके रूपमें नहीं रह सकती। इसी तरह हिंदू-महासभा, सिख-सभा और पारसी-सभा भी नही रह सकती। धार्मिक सस्थाओंके रूपमे वे भले रहे। तब उनका काम अंदरूनी सुधार होगा, धर्मकी अच्छी चीजे ढूढना और उनपर अमल करना होगा। तब वातावरणमेंसे जहर निकल जाएगा और ये संस्थाएं एक-दूसरेके साथ भलाई करनेमे मुकाबला करेंगी। वे एक दूसरेके प्रति मित्रभाव रखेंगी और हकूमतकी मदद करेंगी। उनकी राजनैतिक महत्त्वाकांक्षाएं तो काग्रेसके ही द्वारा पूर्ण हो सकती हैं, चाहे वे काग्रेसमें हों या न हो। जब कांग्रेस, जो काग्रेसमे है उन्हींका विचार करेगी, तो उसका क्षेत्र बहुत सकुचित हो जायगा। काग्रेसमे तो आज भी बहुत कम लोग है। काग्रेसकी आज कोई बराबरी नही कर सकता तो उसका कारण यह है कि वह सारे हिंदुस्तानकी नुमायंदगीका प्रयत्न कर रही है। वह गरीब-से-गरीब, दलित-से-दलितकी सेवाको अपना ध्येय बनाए हुए है।

: १८६ :

२३ दिसंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज तो मैंने विचार कर लिया है कि तीन चीज कहूंगा। एक

चीज तो यह है कि कल आपने देखा होगा कि यहां बहावलपुरके लोग आ गए थे। बडे परेशान हैं। उन लोगोंने बताया कि वहां जितने हिंदू और सिख है उन सबको बुला लेना चाहिए, नही तो उनकी जान खतरे में है। आज वहासे दो भाई भी आ गए थे। उन लोगोंने भी यही बात बताई। उन लोगोंने कहा कि अगर कुछ ,नही होता है तो गवर्नर-जनरल के घरके सामने जाकर भूख हडताल करेगे। तो मैंने कहा कि वहा भूल-हडताल करनेसे न तो आ सकते है और न बच सकते है और गवर्नर-जनरल तो अब नामके रह गए है। दस्तखत कर देते है, उनके पास तो आज सत्ता है नहीं। वे तो आज जैसे आप है वैसे है। अपने बलसे ऐसा कहो कि हमारे बलसे खड़े है। हमारे प्रधान है, हमारे बलपर खड़े है। तो सोचोगे कि पंडित नेहरू या सरदारके घरके सामने भूख-हड़ताल करें यह भी अज्ञानता है। उनमें एक-दो डाक्टर थे। वे समझ गए, इसलिए हड़ताल नही की। कल तो मेरी खामोशी थी, इसलिए कुछ नही कह सका। बहावलपुरके नवाबको चाहिए कि वे सब हिंदू-सिखको जहा वे जाना चाहते है, भेज दें, नहीं तो उनके धर्मका पतन हो जायगा। नवाब साहबके होते हुए क्या हुआ, वह क्या बताऊ? वह काफी खतरनाक बात है। वहा काफी हिंदू, सिख मारे गए और परेशान भी हुए। सिखोनेतो बहावलपुरको बनाया है—वे बहादुर है, वे लड़ सकते है, किसानका काम कर सकते है और वे वहां किसान बनकर रहते है, खाते-कमाते है। वैसे ही हिंदू भी है। आलसी बनकर बैठे है, ऐसे थोड़े है, उन्होंने कोई गुनाह तो किया नही, गुनाह इतना ही है कि वे हिंदू है या सिख है। बिना गुनाहके काफी हिंदू और सिखोंको मार डाला और बाकी भाग गए। जब हिंदू और सिख वहा आरामसे रह नही सकते तो नवाब साहब कुछ भी कहे तो उससे क्या! मै तो कहूंगा कि नवाब साहब अपने धर्मका पालन करें, इसीमे उनकी शोभा है। अगर वे वहां उन लोगोंको इज्जतसे रख नहीं सकते तो उनको चाहिए कि वे प्रबध कर उन लोगोंको भेज दें, नहीं तो उन्हे ऐलान कर देना चाहिए कि वहां जितने हिंदू, सिख पड़े है उनके बालको भी कोई छूनेवाला नही है। वे आरामसे पड़े रह सकते है और अगर भूखों मरते है तो उनको रोटीका प्रबंध कर

दिया जाय। जो पागलपन हो गया वह हो गया। वैसा पागलपन तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनोंमे हो गया। उस पागलपनको अब छोड़ दें और शराफतसे काम करें।

दूसरी बात जो कहना चाहता हूं वह आजके 'स्टेट्समैन' में है। वह यह कि लाहौरमें जो शिविर पड़े हैं—उसमें तो दु.खी लोग है, वहां तो मुसलमान पड़े है—वे बहुत गदे है, वहां हैजा हो रहा है, सीतला निकल रही है और काफी लोग ऐसे है जिनको कुछ हुआ तो नही है, लेकिन ठडमे पड़े रहते है। कुछ लोग ठडके कारण भी मरते हैं, क्योंकि बाहर पडे रहते है। बाहर रहें तो रहे, लेकिन आकाशके नीचे कैसे रह सकते है? पानीसे बचनेको कुछ रहना चाहिए, तन ढकनेको चाहिए और रोटी भी चाहिए। ये न रहे तो मरनेका चारा हो गया। बाकी मैं नही जानता कि वहां क्या-क्या हो रहा है। हां, ऐसा भी है कि वहां स्यालकोटसे भंगी बुलाए गए है, जो शिविरोंकी सफाईका काम करेंगे, मैला उठाएगे। वहांके अफसर कहते है कि वहां उनसे पूरा-पूरा काम होता नही है—मैं तो जानता नही हू कि क्या है, लेकिन मैं इतना कहूगा कि परेशानीमें पड़े है। वे पाकिस्तानमें है तो क्या हुआ, मुसलमान है तो क्या हुआ, इन्सान ऐसे क्यों बनें, मुझे इसका दु:ख होता है। हमारी ज्यादतीके कारण वे लोग यहासे जान बचाकर भागे, यहांसे घर-बार छोडकर चले गए। वहां उनका घरबार तो है नही तो तकलीफ तो होगी ही; लेकिन यह क्या बात है कि वे अपनी सफ़ाईतक न रख सकें। मै तो हर दु:खीको—वहां पडे है उनको, और यहां पड़े हैं उनको, सबको—कहूंगा कि उन्हे ऐसा कहना नही चाहिए कि हमे खाना बनवानेवाले दो, झाड़ू करनेवाले दो, मैला उठानेवाले दो। जब घर छोड़कर भाग गए तो ऐसी माग क्यों करनी चाहिए। वे तो करोड़पतिके लिए है। वह चाहे तो एक आदमीके बदले दस आदमी रखता सकता है, लेकिन सब कैसे रख सकते है? मैं तो कहूगा कि यह हमारे गिरनेके लक्षण है। उनको दृढतासे, हिम्मतसे कहना चाहिए कि हम स्यालकोटसे भंगी नही बुलाएंगे और अपने शिविरको हमें ही साफ रखना है। पाकिस्तानके अफसर और वहांकी हकूमतको भी कहना चाहिए कि हम आपके लिए स्यालकोटसे

झाड़ देनेवाले नही बुलाएंगे। इन्सानसे जितना हो सकता है उतना तो करें। उसके बाद मरे वह बात दूसरी है, लेकिन नही करते हैं तो गुनाह इन्सान का है और इन्सानपर खूनका बोझ पडनेवाला है। मै पहले भी कह चुका हूं और अब भी कहता हू कि शरणार्थियोको शराफतसे रहना चाहिए। उन्हे चाहिए कि उनसे जितना काम हो सकता है, करें, किसी-पर बोझ नही होना चाहिए। पंजाबका नमूना देकर सबको कहूगा कि सफाईका काम खुद करना चाहिए। काम करनेमें कोई शर्म नही है।

एक बात और कहूगा। वह अच्छी बात है। आपको मैने एक वक्त शायद सुनाया तो था कि प्यारेलाल यहां आ गए है। आप लोग तो जानते ही है कि वे कौन हैं। वे तो मेरा मंत्रीका काम करते हैं—वे बहुत दिनोंसे नोआखालीमें काम करते थे। उनके साथ और लोग भी थे—वे सब-के-सब जानपर खेल रहे थे, उससे वहां जितने हिंदू कष्टमें थे उन सबको सहारा मिल गया और मुसलमान भी समझ गए कि वे हमारे दोस्त हैं, सेवक है, मारने-पीटने नही आए हैं, वे तो दोनोंके बीचमें, अगर हो सके तो मेल कराने आए है। वे कहते है कि वहांकी एक चीज जानने लायक है, ऐसी तो कई चीज हैं; लेकिन यह एक बड़ी चीज है। वहां किसी मंदिरको मुसलमानोंने तोड दिया था और उसपर लोगोंने अधिकार कर लिया था। तो यह तो झगडेकी बात हो गई। पीछे उन मुसलमानोंने कहा कि हम हिंदुओंके साथ मिल-जुलकर रहनेवाले हैं, लेकिन जब हिंदू मदिरको नही जा सकते, पूजा नही कर सकते तो यह जंचनेवाली बात नहीं हुई। वह सब तो दुबारा सुनाऊगा, क्योंकि अब वक्त हो रहा है। पीछे मुसलमानोंने कहा कि वे अपने मंदिरोंमे जा सकते हैं, पूजा कर सकते हैं, हम भी जाकर उनके साथ पूजा करेगे तो प्यारे-लालने कहा कि क्या करोगे, मदिर तो है नहीं, मदिर तो होना चाहिए, तो उन लोगोंने कबूल कर लिया कि ठीक है और मेहनत कर मंदिर बना दिया कि आप लोग आरामसे रह सकते है, पूजा कर सकते है, रामधुन चला सकते हैं। वहां प्रतिष्ठा हो गई। इस तरहसे अब सब बड़े आरामसे रहते हैं। अमलदारोंने भी इसमें हिस्सा लिया। यह अच्छी चीज है। अगर सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तानमें ऐसा हो जाय तो हमारी शक्ल

बदल जाती है। अगर हम अपने धर्मपर कायम रहें और दूसरोंके धर्ममें दखल न दे तो हमारा सब काम हो सकता है।

: १८७ :

२४ दिसबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरे पास हमेशा सिख भाई आते रहते हैं। मैं अखबारोंमेंसे थोड़ा पढ़ लेता हूं, मिलने आनेवाले लोग भी मुझे सुनाते रहते हैं। वे लोग कहते कि मै तो सिखोंका दुश्मन बन गया हूं। उन्होंने इसकी परवा न की होती, अगर मेरी बात हिदुस्तानके बाहर कुछ-न-कुछ वजन न रखती। दुनिया मानती है कि हिंदने अहिंसासे, शातिके जरिये आजादी ली है। अगर ऐसा ही होता तो मुझे बहुत अच्छा लगता। मगर पंगु और नामर्दोंसे अहिंसा चल नही सकती। यह पंगुपन और गूगापन शारीरिक नही। शरीरसे पगु बननेवाले तो ईश्वरकी मददसे अहिंसापर खड़े रह सकते है—जैसे प्रह्लाद। ऐसा हुआ या नही, मैं नही जानता, पर कहानी बन गई है कि प्रह्लादने अपने पिताको साफ कह दिया कि मेरी कलमसे रामके सिवा कुछ निकलेगा ही नही। मेरे सामने १२ बरसका बच्चा प्रह्लाद आज भी खड़ा है। मगर जो आदमी आत्मासे लूला है, पंगु है, अधा है, वह अहिंसाको समझ नही सकता। अहिंसाका पालन कर नही सकता। मैने गलतीसे यह सोच लिया था कि हिदुस्तानकी आजादीकी लड़ाई अहिसक लड़ाई थी। लेकिन पिछली घटनाओंने मेरी आंखें खोल दी हैं कि हमारी अहिसा असलमे कमजोरोका मंद विरोध था। अगर हिंदुस्तानके लोग सचमुच बहादुरीसे अहिंसाका पालन करते, तो वे इतनी हिंसा कभी नहीं करते।

सिख भाइयोंके गुस्सेपर मुझे हँसी आती है। सिखों और हिंदुओंमें फर्क नहीं समझता। गुरु ग्रंथसाहब मैंने पढ़ा है। सिख कहते हैं कि

मैं गुरु गोविंदसिंहके बारेमें क्या समझूं ? अगर मैं इस दिशामें अज्ञान होता, तो उनके बारेमे मैने जो लिखा है वह नही लिख सकता था। मैं किसीका दुश्मन नही हूं। उन्हें समझना चाहिए कि जब मैं सिखोंकी शराबखोरी या जुआ खेलनेकी बात करता हूं, तो वह सारे सिखोंपर लागू नही होती। हिंदुओंमें भी ऐसे बहुतसे लोग पड़े है। मगर जहां सिखोंकी तलवार नही चलनी चाहिए, वहां चलती है यह बुरी बात है। बुरा बरताव करनेवाला कोई भी क्यों न हो, वह ईश्वरके सामने गुनाह करता है।

आज २४ दिसंबर है, कल २५। क्रिस्मस ईसाइयोंके लिए वैसा ही त्योहार है, जैसी हमारे लिए दीवाली। न दीवाली नाच-रंगके लिए हो सकती और न क्रिस्मस। जीसस क्राइस्टके नामसे यह चीज बनी है। इस मौकेपर सारे ईसाई भाइयोंको मैं बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि वे अपने जीवनमें जीसस क्राइस्टके उपदेशोंपर अमल करेंगे। मैं नहीं चाहता कि कोई हिंदू, मुसलमान या सिख यह चाहे कि हिंदुस्तानके थोडेसे ईसाई बरबाद हो जायं या अपना धर्म बदल डालें। 'धर्म-पलटा' शब्द मेरी डिक्शनरी में ही नही है। मैं चाहता हूं कि हर ईसाई अच्छा ईसाई बने। हर हिंदू अच्छा हिंदू बने। वह हिंदू-धर्मकी मर्यादा और संयमका पालन करे और उसमे जो तपश्चर्या बताई गई है, उसे अपने सामने रखकर जीवन व्यतीत करे। उसी तरह मैं चाहता हूं कि एक मुसलमान अच्छा मुसलमान बने और सिख अच्छा सिख बने। पाजी हिंदू अगर मुसलमान बने, तो वह अच्छा मुसलमान हो नहीं सकता। अगर मैं अच्छा हिंदू बनता हूं और ईसाईको अच्छा ईसाई बननेकी प्रेरणा देता हूं, तो मैं अपने धर्मका प्रचार करता हूं।

ईसाई लोग जीससके धर्मपर कायम रहे। दुनियामें धर्मकी वृद्धि हो। मैंने अखबारोंमें देखा है कि चूंकि अब ईसाई धर्म या दूसरे किसी धर्मको राजसे पैसेकी मदद नही मिलनेवाली है, बाहरसे भी बहुत पैसे नहीं आनेवाले हैं, इसलिए हिंदुस्तानके ७५ फी सदी गिरजे बंद हो जायंगे। हमारे यहांके ज्यादातर ईसाई गरीब है। उनके पास पैसे नहीं हैं। मगर पैसेसे धर्म नहीं चलता। ईसाइयोंको खुश होना चाहिए कि पैसेकी यह बला

दूर हुई। हजरत उमरके घर एक बार बहुत-सा इनाम-इकराम आ गया। वह बहुत गंभीर होकर अपनी बीबीसे कहने लगे कि यह बला आ गई है। पता नहीं, अब मै अपने धर्मपर कायम रह सकूंगा या नही। भगवान् तो हमारे पास पडा है, उसे हम पहचानें। सबसे बड़ा गिरजा-घर है ऊपर आकाश और नीचे धरती माता। खुलेमें क्या मै भगवानका नाम नही ले सकता? भगवानकी पूजाके लिए न सोना चाहिए न चांदी। अपने धर्मका पालन हम खुद ही कर सकते है, और खुद ही उसका हनन कर सकते हैं।

: १८८ :

२५ दिसंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

काश्मीरमें जो कुछ हो रहा है, उसके बारेमें थोड़ा बहुत मुझे और आपको मालूम है। एक चीजकी तरफ मैं आपका ध्यान खींचना चाहता हूं। अखबारोंमें आ गया है कि यूनियन और पाकिस्तान काश्मीरके बारेमें फैसला करनेका किसीको निमंत्रण दें। यह पंच नियुक्त करनेकी बात हुई? कहातक ऐसा चलेगा कि पाकिस्तान और यूनियन आपसमें फैसला कर ही नहीं सकते? कहांतक हम आपसमें लड़ते रहेंगे? दोनों काश्मीर और जम्मू एक हैं। वहां मुसलमानोंकी अधिकता है। काश्मीर-के दो टुकड़े करें, तो यह टुकड़े करनेकी बात कहां जाकर रुकेगी? हिंदुस्तानके दो टुकड़े हुए, इतना बस है, बससे ज्यादा है। हिंदुस्तानको ईश्वरने एक बनाया, उसके टुकड़े मनुष्य कैसे कर सकता था? पर वह हुआ। लीग और कांग्रेस अलग-अलग कारणोंसे उसमें राजी हुई। आज काश्मीरके टुकड़े करें तो दूसरी रियासतोंके क्यों नहीं?

काश्मीरमें झगड़ा क्यों हुआ? कहा जाता है कि हमला करनेवाले डाकू हैं, लुटेरे है, ये बाहरसे आते हैं, रेडर्स हैं। मगर जैसे-जैसे वक्त

बीतता है, वैसे-वैसे पता चलता है कि ऐसा नहीं है। उर्दू के कुछ अखबार यहां आ जाते है। मैं थोड़ा-बहुत खुद पढ़ सकता हू। कुछ मुझे आसपासवाले सुना देते है। आज 'जमीदार' नामके अखबारमेंसे मुझे सुनाया गया। 'जमीदार' के एडीटरको मै पहचानता हूं। उनकी जबानपर कभी लगाम नही रही। अब तो उन्होंने खुल्लमखुल्ला निमत्रण दिया है कि सब मुसलमान काश्मीरपर हमला करनेके लिए भर्ती हों। डोगरोंको, सिखोंको, सबको उन्होंने गालिया दी है। काश्मीरकी लड़ाईको जिहाद कहा है। मगर जिहादमें तो मर्यादा होती है—संयम होता है। यहां तो कुछ भी नही है। जो कुछ चल रहा है, वह होना नही चाहिए। क्या वह यह चाहते है कि हिदू, सिख और मुसलमान हमेशा अलग ही रहें? मुसलमान अगर हिदुओं और सिखोंको मारें-काटें, फिर भी हमारा धर्म क्या है? यह मैं आपको रोज बतलाता हूं। हिंदू और सिख कभी बदला न लें।

सीधी बात यह है कि काश्मीरपर पाकिस्तानकी ही चढ़ाई है। हिंदुस्तानका लश्कर वहां गया हुआ है, मगर चढ़ाई करनेको नही। वह महाराजा और शेख अब्दुल्लाके बुलानेपर वहां गया है। काश्मीरके सच्चे महाराजा शेख अब्दुल्ला हैं। हजारों मुसलमान उनपर फिदा है।

अपना गुनाह हरएकको कबूल कर लेना चाहिए। जम्मूके सिखों और हिंदुओंने या बाहरसे आए हुए हिदुओं और सिखोंने वहां मुसलमानोंको काटा। काश्मीरके महाराजा इग्लैंडके राजाकी तरह नही हैं। उनकी रियासतमें जो भी बुरा-भला होता है, उसकी जिम्मेदारी उनके सिरपर है। वहां काफी मुसलमान कतल किये गए, काफी लड़कियां उड़ाई गई। शेख अब्दुल्ला साहबने बचानेकी कोशिश की। जम्मूमें जाकर उन्होंने बहस की, लोगोंको समझाया। काश्मीरके महाराजाने अगर गुनाह किया है तो उन्हें या जिस किसीने गुनाह किया है, उसे हटानेकी बात मैं समझता हूं। पर काश्मीरके मुसलमानोंने क्या गुनाह किया है कि उनपर हमला होता है?

पाकिस्तानकी हकूमतसे मैं अदबसे कहना चाहता हूं कि आप कहते हैं कि इस्लामकी सबसे बड़ी ताकत पाकिस्तान है। मगर आपको उसका

फख तभी हो सकता है, जब आपके यहां एक-एक हिंदू-सिखको इन्साफ मिले। पाकिस्तान और हिंदुस्तानको आपसमे बैठकर फैसला करना चाहिए, लेकिन तीसरी ताकतके मार्फत नही। दोनों तरफके प्रधान बैठकर बातें करें। महाराजा अपने आप समझकर अलग बैठ जायं और लोगोंको फैसला करने दें; शेख अब्दुल्ला तो उसमें होंगे ही। मगर महाराजा समझ लें और कह दें कि यह हकूमत मेरी नहीं, काश्मीरके लोगोंकी है। यहांके लोग जो चाहे, सो करें। काश्मीर, काश्मीरके मुसलमानों, हिंदुओं और सिखोंका है, मेरा नही। महाराजा और उनके प्रधान अलग हो जाते है, तो शेख साहब और उनकी आरजी हकूमत रह जाती है। सब बैठकर आपस-आपसमे फैसला करें उसमें सबका भला है। यूनियन सरकारने काश्मीरकी मदद की तो वहांकी प्रजाके खातिर; महाराजाके खातिर नहीं। कांग्रेस प्रजाके विरुद्ध किसी राजाका पक्ष नहीं ले सकती। राजाओंको प्रजाका ट्रस्टी बनकर रहना है, तभी वे रह सकते हैं।

एक उर्दू मैगजीनमें आज मैने एक शेर देखा। वह मुझे चुभा। उसमें कहा है—'आज तो सबकी जबानपर सोमनाथ है। जूनागढ वगैरा-का बदला लेनेके लिए गजनीसे किसी नए गजनवीको आना होगा।' यह बहुत बुरा है। यूनियनके किसी मुसलमानकी कलमसे ऐसी चीज नहीं निकलनी चाहिए। एक तरफसे मित्रभाव और वफादारीकी बातें और दूसरी तरफसे यह! मै तो यहां यूनियनके मुसलमानोंकी हिफाजतके लिए जीवनकी बाजी लगाकर बैठा हू। मैं तो यही करूंगा, क्योंकि मुझे बुराइका बदला भलाईसे देना है। आप लोगोंको यह सुनाया, ताकि आप ऐसी चीजोंसे बहक न जावें। गजनवीने जो किया था, बहुत बुरा किया था। इस्लाममें जो बुराइया हुई है, उन्हें मुसलमानोंको समझना और कबूल करना चाहिए। काश्मीर, पटियाला वगैराके हिंदू-सिख राजाओं-को उनके यहां जो बुराई हुई हो उसे कबूल कर लेना चाहिए, उसमें कोई शर्म नही। गुनाह कबूल करनेसे वह हलका होता है। यूनियनमें बैठकर मुसलमान अगर अपने लडकोंको सिखावें कि गजनवीको आना है, तो उसका मतलब यह हुआ कि हिंदुस्तानको और हिंदुओंको खा

जाओ। इसे कोई बर्दाश्त करनेवाला नही। दोनों आपसमें मिलकर चाहे कुछ भी कर लें। अगर यह शरारतभरा शेर एक महत्त्वपूर्ण मैग-जीन में न छपा होता, तो मै उसका जिक्र भी न करता।

: १८६ :

२६ दिसबर, १६४७

भाइयो और बहनो,

आज मै आपको यहांके तिबिया कॉलेजके बारेमे एक बात सुनाना चाहता हूं। इस कालेजके जन्मदाता हकीम अजमलखा थे। आज कमनसीबीसे हम मुसलमानोंको दुश्मन मानकर बैठ गए है। मगर जब तिबिया कॉलेज बना था, तब ऐसा नही था। हिंदू राजाओ और मुस-लमान नवाबोंने और हिंदू-मुस्लिम जनताने उसके लिए पैसा दिया था। हकीम साहब बड़े तबीब (डॉक्टर) थे। वह इस कॉलेजको चलाते थे। इसका एक ट्रस्ट भी बना था। ट्रस्टमे हिंदू और मुसलमान दोनों थे। डॉ० अन्सारी भी उसके ट्रस्टियोमे थे। आज कुछ हिंदू सज्जन मेरे पास आए थे। उन्होंने पूछा कि तिबिया कॉलेजका क्या होगा? अगर तिबिया कॉलेज बद हो, तो मै समझता हूं कि हमारे लिए वह बहुत दु:ख और शर्म-की बात होगी। आज तो वह बंद पड़ा है। कॉलेज करोलबागमे है। हमने बहुतसे मुसलमानोंको अपने पाजीपनसे भगा दिया। मगर दिल्लीमें आज मुसलमान कहां रह सकते है और कहां नही रह सकते, यह बड़ा प्रश्न है। दूसरोंको मिटानेकी चेष्टा करनेवालोंको खुद मिटना होगा। यह जीवनका कानून है। यह अपने आपको और अपने धर्मको मिटानेकी बात है।

दूसरी बात जो मैं कहना चाहता हूं, वह पहले कह चुका हूं। मगर वह बार-बार कही जा सकती है। हजारों हिंदू और सिख लड़कियोंको मुसलमान भगा ले गए है। मुसलमान लड़कियोको हिंदुओं और सिखोने

भगाया है वे सब कहां है? उनका पता भी नही है। लाहौरमें सबने मिलकर यह फैसला किया था कि सारी भगाई हुई हिंदू, सिख और मुसलमान औरतोंको निकाला जाय। मेरे पास पटियाला और काश्मीरसे भगाई हुई मुसलमान लड़कियोंकी एक लंबी लिस्ट आई है। उनमेंसे कई अच्छे और मशहूर घरोकी लडकिया है। अगर वे लडकिया मिलें तो उन्हे वापस लेनेमे कोई कठिनाई नही होगी। लेकिन हमारे हिंदू लोग खोई हुई हिंदू और सिख लडकियोको आदरसे वापस लेगे या नही, यह बडा प्रश्न है। अगर उनके साथ किसीने निकाह भी कर लिया, उन्होंने इस्लाम भी कबूल कर लिया, तो भी मेरे विचारमे वे मुसलमान नही हुई। उन्हे मै आदरसे अपने पास रखूगा। उनकी जो सतान होगी उसे भी आदरसे रखूगा। वे दिलसे तो नही बिगडी। अगर वे दुष्टोंके पंजेमे फंस गई तो मेरे मनमे उनके प्रति घृणा नही हो सकती, रहम ही हो सकता है। समाजको उन्हे वापस ग्रहण करना ही चाहिए। अगर उन्हे आदरसे वापस नही लेना हो तो उन्हे लोगोके घरोंसे निकालनेकी चेष्टा ही क्यों की जाय? किसी लपटने उनपर जबरदस्ती की और उन्हे हमल रह गया, तो क्या उन्हे मै ठुकरा दू? नही, उन्हे मैं अपनी गोदमे बिठाऊगा।

ऐसी जो लड़कियां हिंदू थी, वे हिंदू रहेगी, और जो सिख थी वे सिख रहेगी। बच्चोंका धर्म मांका ही धर्म रहेगा, बड़े होकर वे स्वेच्छासे भले किसी धर्ममे चले जाय। मै सुनता हू कि कई लडकिया आज कहती है कि हम वापस नही जाना चाहती। क्योकि उन्हे डर है कि उनके मा-बाप या पति उनकी तौहीन करेगे। जिन लड़कियोके रिश्तेदार है, उन्हे ऐसी लड-कियोको आदरपूर्वक वापस लेना चाहिए। जिनका कोई नही है, उन्हे हम कोई धधा सिखा दें, ताकि अपने पांवोंपर खड़ी रह सकें। मेरे पास ऐसी कोई लडकी आ जायगी तो मै उसे लाकर आपके सामने यहां बिठाऊगा। जैसा इन लड़कियोंका आदर है, वैसा ही उसका भी होगा। वह मेरी गोदमें बैठेगी। अगर मैं बेरहम बन जाऊं, तो मै हिंदू नही रह जाऊंगा। गुडा मुसलमान हो या हिंदू, वह बुरा है। मुसलमान लड़कियोको हमें वापस करना चाहिए और पचके सामने अपने गुनाहका प्रायश्चित्त करना चाहिए। यह लिस्ट देखकर मै कांप उठता हूं। जम्मूमें भी यही हुआ।

मर्दो और बूढी औरतोंको मार डाला और जवान लडकियोंको उठा ले गए। मैं नहीं जानता कि वे कहां है। अगर मेरी आवाज वहांतक पहुंच सकती हो, तो मेरा उन लोगोंसे अनुरोध है कि उन सब लड़कियोंको वे लौटा दें।

कहते है कि काफी हिंदू और सिख लड़कियां किसी पीरके यहां पड़ी है। वे कहते है कि उन्हे किसी तरहका नुकसान नही पहुंचाया जायगा। मगर हम उन्हे तबतक वापस नही करेंगे, जबतक हमारी मुसलमान लडकिया वापस नही आएंगी। लेकिन ऐसी चीजोंमें सौदा क्या? हमें दोनों तरफसे सब लडकिया अपने-आप लौटा देनी चाहिए। वही आराम और शराफतसे रहनेका रास्ता है, नही तो हमारा मुल्क ४० करोड़ गुडों-का मुल्क बन जायगा।

: १६० :

२७ दिसबर, १६४७

भाइयो और बहनो,

मुझे बडा हर्ष होता है कि मै आज इस देहात[1] में प्रार्थना कर रहा हूं। लेकिन आप मुझे प्रार्थनामे यहा धन्यवाद करते है या मानपत्र देते है या हार पहनाते है, ऐसा नही होना चाहिए। प्रार्थना करना तो हमारा धर्म है। प्रार्थना तो जब प्रातःकाल हम उठते है तभी करते है। अगर हम नियमित रूपसे प्रार्थना करें तो फजर और शामको करें। शामको पांच बजे अगर हो सके तो मिलकर करें, लेकिन जाड़के दिनोंमें जितनी जल्दी कर सकें, अच्छा है। सोते है तब, और उठते है तब, ईश्वरकी याद करें। बीचमें जब काम करते है तब ईश्वरका काम करे,

[1] दिल्लीसे बारह मील दूर सिभालका नामक गांवमें।

स्वार्थका काम न करे, सेवा करें। प्रार्थनामें क्या भरा है यह मैं आज नहीं समझा सकता ; क्योंकि मेरे पास इतना समय नहीं है।

मैने जब कह दिया कि मान-पत्र नही चाहिए, हार नहीं चाहिए तो भी आप लोगोंने दिया तो मै इसके लिए आभारी हूं। आपने मान-पत्र में सत्य और अहिंसाका जो उल्लेख किया है वह बहुत भारी चीज है। अगर हमारे आचार-विचार ऐसे नही है तो हम नाम लेनेसे घातक बनते हैं। मै तो ऐसा धोखा दे नही सकता हू। जबसे मैं दक्षिण अफ्रीकासे हिंदुस्तान आया हू तबसे मै हिंदुस्तानका भ्रमण कर रहा हूं। एक दफा नहीं, कई दफा सारे हिंदुस्तानका मैने भ्रमण किया है, हजारों देहातोंको देखा है। लोग ऐसी बात कह तो देते है, लेकिन करते नही। उनको मानते है या नही, उसकी परवाह नही करते। हम ऐसा कभी न करें। खयाल एक चीजका करे, उच्चारण दूसरेका और आचरण तीसरी चीजका करें तो बात बनती नही है। हिंदुस्तानमें आपस-आपसमें हिंदू सिख और मुसलमान एक-दूसरेको काटें, गाली दें, हटा दें तो हमारे लिए शर्मकी बात है। दैवयोगसे आपके यहां झगडा नही है, क्योंकि मुसलमानोंकी ज्यादा आबादी नही है अगर है तो थोडी-सी। वे तो बेचारे क्या करनेवाले है? अगर मै जान लेता कि यहां कितने है तो अच्छा होता और कुछ ज्यादा सुना सकता था। अगर हम आपस-आपस में दुश्मनी करते है तो अहिंसा छोड़ दें। हम कम-से-कम इतने सच्चे तो हो जायं। अगर हम ऐसा नही करते है तो वह दुःखकी बात है। हम आजाद हुए हैं तो एक-दूसरेको काटनेके वास्ते नही। आजादीके माने यह हैं कि हम बिना किसी दबावके धर्मका पालन करें—धर्मकी आजादी मिली है, अधर्मकी नही। ईश्वर से कोई ऐसी प्रार्थना थोड़े करता है कि हमको झूठ बोलने दे। अगर हम ऐसा करते हैं तो हम शैतानकी बंदगी करते हैं, उसके पंजेमें पड़ते है और गुलाम बन जाते है।

आप लोगोंने पंचायत बनाई है तो अच्छा किया, इसके लिए मुबारकबाद देता हूं। लेकिन अगर पंचायतका काम नही किया तो मै कहूंगा कि पंचायतका नाम किया, लेकिन काम नहीं किया। आपकी पंचायत-सच्चे मानेमें पंचायत नहीं है। पहले हिंदुस्तानमें सच्ची पंचायत थी—

आपने तथा मैंने वह देखी नहीं है; लेकिन चीन और यूनानसे जो लोग हिंदुस्तान आए वे सब कहते हैं। उनकी किसीने खुशामद नहीं की, किसीने पैसा नही दिया, उनको किसीने बुलाया भी नही। वे खुद बडी तकलीफ उठाकर आ गए—वे ज्ञान पाने आए, तो वे लिखते है कि हिंदुस्तानमें कही चोरी देखनेमे नही आई, किसी जगह ताला-कुंजी नहीं देखा, यह कोई हजारों वर्षकी बात नही है। हजारों वर्षका इतिहास कहा है? वह तो रामायण-महाभारतसे निकलता है; लेकिन किसीने देखा नही है—वह कहातक ठीक है यह मैं नही कह सकता। एक-दो हजार वर्षकी बात इतिहाससे पता चलती है; लेकिन आज हम उस ढंगसे नहीं रहते, जैसे एक-दो हजार वर्ष पहले रहते थे।

पहले चार वर्ण थे। मैं उनके वर्णनमे नही जाना चाहता हूं। आज तो कितने ही वर्ण हो गए है। उनको वर्ण कहना अनर्थ हो जाता है। आज आपने पचायत कर ली तो आपने कितनी जिम्मेदारी ले ली। गाय आज इतना कम दूध देती है कि कई लोग कहते है कि उनको काट डालो। मुसलमान तो काटते है लेकिन हिंदू जितनी गाएं काटते है उतनी गाएं जगतमे कोई नही काटता। हिंदू अच्छी तरहसे रखते ही नहीं, किस तरहपर गाएं रखनी चाहिएं, यह जानते ही नही। यह तो आहिस्ता-आहिस्ता काटनेकी बात हो गई। इससे अच्छा तो जल्दीसे काट दें तो वे खत्म हो जाएं। हम उनकी पूजा तो करते है, लेकिन कष्ट इतना देते है जितना दुनियामें कही नही दिया जाता। आज अगर एक गाय तीन सेर दूध देती है तो एक वर्षके बाद मैं सुनना चाहता हूं कि वह ६ सेर दूध देती है, तब मै समझूंगा कि आपने कुछ किया।

इसी तरह आप अनाज दुगुना पैदा करें। आप कहेंगे—कैसे? मैं कहूंगा कि आप जमीनको पेटभर खानेको दें। मीराबेन आई थी, उसने सभा बुलाई। उसमें बहुत लोग आए। उन लोगोंने तय किया कि गांवमें जितना कूड़ा-कचरा, गोबर, विष्ठा होता है उनमेसे सुनहरी खाद पैदा कर सकते हैं। इसमें पैसे भी नहीं लगते, हां थोड़ा परिश्रम करना पड़ता है। लेकिन इससे जमीनकी पैदा करनेकी शक्ति बढ़ जाती है।

आज यहां कितनी स्वच्छता है, मै यह नही जानता हूं; लेकिन

आपका परम कर्तव्य है कि आप तगडे हों। आप भीतर भी स्वच्छ रहें और बाहर भी। आपका देहात ऐसा होना चाहिए कि किधर भी जाएं कूडा-कचरा न मिले, गोबर पडा हुआ न मिले और दुर्गंध न आए। आपको स्वच्छताके नियम पूर्णतः पालन करने चाहिए।

मै कहूंगा कि यहां सिनेमा-घर रखकर क्या करोगे ? हमारे जमानेके कितने खेल पडे है, नाटक है ये सब करो। सिनेमा आएगा तो पैसे खर्च करोगे. पीछे जुआ खेलोगे। इससे और भी कई बुराइयां सीखोगे। जब तालीम दी जाएगी तब भले ही कुछ फायदा हो, लेकिन अभी तो मैं ये बुराइया देख रहा हू। अभी तो आपमेसे कई भाई शराब, गांजा, भांग पीते है, लेकिन जब सब भाई ये व्यसन छोड़ दे तब मै समझूगा कि आपने सचमुच पंचायत बनाई। तब दिल्ली के लोग यहां देखने आएंगे। पीछे आप अस्पृश्य बन जायं और छूआछूतको भूल जाय। आप जब यह समझने लगें कि मुसलमान, हिंदू, सिख, क्रिस्टी, पारसी सब भाई हैं तब आप हिंदुस्तानकी आजादी किसको कहते है, यह सिद्ध करके बतानेवाले है तब हिदुस्तान आपके गांवका नमूना देखकर नकल करेगा। ईश्वर आपको शक्ति दे कि आप यह सब काम कर सके।

आप लोग तालियां न बजाएं, क्योंकि मैने जो कहा है वह भी प्रार्थनामें शामिल है और प्रार्थना तो ईश्वरका नाम है। मुझे आप लोगोंका आशीर्वाद चाहिए और मैने जो कहा है वह पूरा कर दिया तो मुझको आपने सब दे दिया, मेरा काम पूरा कर दिया, ऐसा मै माननेवाला हूं।

: १९१ :

२८ दिसंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मैं व्यापारियोंकी सभामें चला गया था। उन लोगोंने भी बताया कि कुछ अन्य चीजोंकी तरह कपड़ेपरसे भी अंकुश हटा लिया

जाय। मुझको इसमें शक नहीं है कि अंकुश छूट जाना चाहिए। उस सभाकी सब चीज तो आप अखबारमें देख ही लेंगे; लेकिन एक चीज कहने लायक है। वह यह कि व्यापारियोंने बताया कि अंकुश हटनेका ऐसा चमत्कार हो गया है कि कपडेपरसे अकुश न हटनेपर भी कपडेके दाम कम होने लगे है। इसका कारण यह बताया जाता है कि लोगोंको ऐसा खयाल हो गया है कि अब चूकि, गांधीजी लोगोंकी आवाजको हकूमततक पहुचा रहे है, इसलिए कपडेपरसे शीघ्र अकुश हट जायगा। इसीसे चोर-बाजारका कपडा बाहर आ गया और दाम कम हो रहा है।

उसी तरह चीनीका हो गया है। मुझको बताते है कि जिधर जाओ उधर चीनीका ढेर पडा है। वहांसे सब लोग ले जाते है। एक रुपया सेरके भावसे लेते है। आज मैंने सुना है कि कुछ लोग कहते है कि हम तो इस भावसे नही ले सकते, तो पद्रह आना सही, चौदह आना सही। यह तो व्यापार है। अंकुश छूट जानेसे लोग आरामसे ले जाते है। इसमें ऐसी खूबी है। हर जगहसे इस तरहसे मेरे पास तार और खत आ रहे है। अकुश छूट जानेसे आराम महसूस करते है। पीछे मुझको लिखते हैं कि करोड़ोंकी दुआ तुमको मिलती है। मै समझता हू कि मुझको दुआ क्यो मिले—करोड़ों-को मिले। मैने तो करोडोंकी आवाज उठाई—न उठाऊ तो मेरी आवाजको क्यों सुने ? जब मैं अपनी आवाज उठाता हू तब कौन सुनता है ? मै कहता हूं कि मुसलमानोंको दुश्मन मत मानो तब लोग मुह मोड लेते है। लोग कहते है कि यह क्या पागलपन करता है। मेरी ऐसी आवाज कोई नही सुनता। हा, मै इतना तो जरूर कहूंगा कि अगर करोडों लोग मेरी आवाज नहीं सुनते है तो अपने धर्मको हानि पहुंचाते है। लोगों को समझना चाहिए कि मै जब हमेशा अच्छी बात कहता हूं तो अभी बुरी बात क्यों कहूंगा ? मैं गलत बात कहता ही नही। इसमे गलत बात क्या कहनी थी ! मैं जो कहता हू कि धर्मकी जड दया है वह तो तुलसीदासका है। उससे कहो कि तू दीवाना है। लेकिन उसकी रामायण जितनी चलती है उतनी सारे हिंदुस्तानमे दूसरी कोई पुस्तक नही चलती—शायद ही दुनियामें इतनी कोई दूसरी पुस्तक चलती होगी। वह पुस्तक सिर्फ बिहारमें चलती है या युक्तप्रांतमें चलती है, ऐसी बात नही है। वह सब जगह चलती है। मैंने

तो उनका काम किया, उनकी आवाज उठाई। इसमें मुझको पागल कहनेकी क्या बात है। लकडीपर क्या अंकुश रखना था! वह खानेकी चीज तो है नही कि न मिले। मानो कि मिलने लग जाय तो सब खा जायंगे यानी जला डालेंगे? लेकिन उतनी ही जलाएंगे जितनी जरूरत होगी। कोई फालतू तो जलाएगा नही। तब उसपर अकुश क्यों? मुझको तबतक संतोष नहीं जबतक लकडीपरसे अंकुश व हट जाय। आज उसका मिलना इतना मुश्किल हो गया है कि गरीबोंकी हानि होती है।

पीछे मुझको सुनाते है कि आपने इतना तो किया तो पेट्रोलपरसे अकुश हटानेके लिए आवाज उठाओ। मै तो कहूंगा कि पेट्रोलपरसे भी अंकुश हट जाना चाहिए और कर्ल हट जाना चाहिए तभी हमारी भलाई होनेवाली हे। पेट्रोलपरसे अंकुश हट जायगा तव ज्यादा मोटरें चलेंगी। इससे गरीबोंको नुकसान नही होगा—फायदा होगा। अगर रेलगाड़ियां ज्यादा चले तो पेट्रोलकी ज्यादा जरूरत नही, लेकिन ज्यादा रेल बनाएं तो करोडो रुपया खर्च होगा। जितना है उतना तो हजम होने दो। ज्यादा क्या करोगे? रेलके लायक बनें तो सही। हमको जितना चाहिए उतना है। जल्दीसे एक जगहसे दूसरी जगह जानेके रास्ते तो है, लेकिन पेट्रोल नही है। एक जगहसे दूसरी जगह हम जितनी चीज भेजना चाहें भेज सकते है। इसके लिए हमे रेल-यातायात नही, सड़क-यातायातके साधनोंकी जरूरत है। मैं समझता हू कि अगर पेट्रोलपरसे अकुश उठ गया तब यह हो सकता है। अंकुश हटानेसे सब दाम कम हो रहे है। किसी चीजका दाम बढ़ नही रहा है। अगर कोई ऐसा कहे तो वह गलत बात है। अगर दाम बढ़ते तो मेरे पास इतने तार कहांसे आते! क्योंकि दाम गिर रहे है, लोग कहते है कि अच्छा हुआ। पेट्रोलपरसे अकुश हट जाय तो सड़क-यातायात बढ़ जायगा। इसके बढ़नेसे सब जगह अनाज और कपड़ा जा सकेगा। नमकका आना-जाना बढ जायगा।

सबसे ज्यादा तो नमकका दाम कम होना चाहिए, लेकिन वह सबसे ज्यादा है। नमकपर कर बंद हो गया, इसलिए दाम बढ़ गया, यह गलत बात है। हां, लेकिन नमकका दाम बढ़ गया है। हमारी आदत नहीं हुई है कि नमक पैदा कर लें। नमक बनाना हमने सीखा नहीं है। हिंदुस्तान-

के पास दरियाका किनारा इतना पडा है कि नमककी कमी हो नही सकती। दरियाके पानीसे बच्चा भी नमक बना सकता है। नमक बड़े आरामसे बनाया जा सकता है। एक बहन बना सकती है। बंगालसे नमकका पानी लाऊ तो बडे आरामसे नमक बन सकता है। इसके लिए इतना पैसा देना पड़ता है, इतने झंझटमें पड़ते है। इसका सबब यह है कि जिस जगह नमक बनता है वहांसे वह आ नही रहा है—वहासे शीघ्रता-से हमे ला नही सकते। मै मानता हू कि उसमें एक गलती हो गई है। वह यह कि किसीको ठेका दे दिया है कि तुम लाओ। वे बदमाशी करना सीख गए है, जिससे बहुत पैसा कमाते हैं। वहासे दूसरे ला नही सकते। इस ठेकेकी तवदीली होनी चाहिए। अगर नमकको सस्ता करना है तो अंकुश हटाकर चमत्कार देखो। हां, दो चीजें जरूरी है, एक यह कि ठेका-प्रणालीमे तवदीली हो और दूसरी सड़क-यातायातकी व्यवस्था हो। बस आज मैं इतना ही कहना चाहता हूं।

: १९२ :

२९ दिसंबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

कल हकीम अजमल खां साहबकी वार्षिक तिथि थी। वह हिंदुस्तानके हिंदू, मुसलमान, सिख, क्रिस्टी, पारसी, यहूदी सबके प्रिय थे। वह पक्के मुसलमान थे, मगर वह इस खूबसूरत देशके रहनेवाले सब लोगोंकी समान सेवा करते थे। उनकी मेहनतकी सबसे बढ़िया यादगार दिल्लीका मशहूर तिबिया कालेज और अस्पताल था। वहांपर हर श्रेणी-के विद्यार्थी पढ़ते थे और वहां यूनानी, आयुर्वेदिक और पश्चिमी डाक्टरी सब सिखाई जाती थी। साप्रदायिकताके जहरके कारण यह संस्था भी, जिसमें किसी तरह सांप्रदायिकताको स्थान न था, बंद हो गई है। मेरी

समझमे इसका कारण इतना ही हो सकता है कि इस कॉलेजको बनानेवाले हकीम साहब मुसलमान थे, फिर वे चाहे कितने ही महान् और भले क्यों न रहे हो, और भले ही उन्होंने सबका मान संपादन क्यो न किया हो। उस स्वर्गवासी देशभक्तकी स्मृति, अगर वह हिंदू-मुस्लिम फिसादको दफन नही कर सकती, तो कम-से-कम इस कालेजको तो नया जीवन दे सके।

कल मैंने जिक्र किया था कि हमारी सभाए वगैरा खुलेमे, आकाशके मंडपके नीचे हो। यह बहुत इष्ट चीज है। अगर यह आम रिवाज हो जावे तो इस कामके लिए विचारपूर्वक जगह वगैराका प्रबध करना होगा। छोटे-बडे शहरोंमें इस कामके लिएं मैदान रखने होगे; अपनी आदतें हमें बदलनी होगी; शोरकी जगह शाति और बेतरतीबीकी जगह करीनेसे बैठना सीखना होगा। हमारी आदते सुधरेंगी तो हम तभी बोलेंगे जब हमें बोलना ही चाहिए और जब बोलेगे तब हमारी आवाज उतनी ही ऊची होगी, जितनी कि उस मौकेके लिए जरूरी होगी, उससे ज्यादा कभी नही। हम अपने पडोसीके हकका मान रखेंगे, आर व्यक्तिगत रूपसे या सामूहिक रूपसे कभी दूसरोंके रास्तेमे नही आएंगे; दूसरोंके कामोंमें दखल नही देगे। ऐसा करनेके लिए कई बार अमने आपपर बहुत संयम रखना पडेगा। ऐसी सामाजिक व्यवस्थामे दिल्लीके सबसे ज्यादा कारोबारवाले हिस्सेमें जो शोर और गंदगी आज देखनेमे आती है, वह नही मिलेगी, चाहे कितने ही बड़े हजूम क्यो न हों, धक्कम-धक्का या फिसाद नही होगा। हम ऐसा न सोचें कि इस लक्ष्यको तो हम पहुंच ही नही सकते। किसी-न-किसी तबके को इस सुधारके लिए दिली कोशिश करनी होगी। जरा विचार कीजिए इस किस्मके जीवनमे कितना समय, शक्ति और खर्च बच जायगा।

मैने काश्मीर और वहांके महाराजा साहबके बारेमे जो कुछ कहा है उसके लिए मुझे काफी डांट खानी पड़ी है। जिन्हें मेरा कहना चुभा हैं उन्होंने मेरा निवेदन ध्यानपूर्वक पढ़ा नही लगता। मैंने तो वह सलाह दी है जो मेरी समझमें एक मामूली-से-मामूली आदमी दे सकता है। कभी-कभी ऐसी सलाह देना फर्ज हो जाता है और वही मैने किया है।

ऐसा किया इसलिए कि मेरी सलाह अगर मानी जाती तो महाराजा साहब अपनी और जगतकी आंखोमे बहुत ऊंचे चले जाते; उनकी और उनकी रियासतकी हालत आज ईर्ष्याके लायक नही। काश्मीर एक हिंदू राज है और उनकी प्रजामें बहुत बडी अक्सरियत मुसलमानोकी है। हमलावर अपने हमलेको 'जिहाद' कहते है। वे कहते है कि काश्मीरके मुसलमान हिंदू राजके जुल्मके नीचे कुचले जा रहे थे और वे उनकी रक्षा करनेको आए हैं।

शेख अब्दुल्ला साहबको महाराजाने ठीक वक्तपर बुलाया है। शेख साहबके लिए यह काम नया है। अगर महाराजा उन्हे इस लायक समझते है तो उन्हें हरएक तरहका प्रोत्साहन मिलना चाहिए। मुझे यह स्पष्ट है और बाहरके लोगोंके सामने भी स्पष्ट होना चाहिए कि अगर शेख साहब अक्सरियत और अकलियत दोनोंको अपने साथ न रख सके तो काश्मीरको सिर्फ फौजी ताकतसे हमलावरोसे बचाया नही जा सकता। महाराजा साहब और शेख साहब दोनो ने हमलावरोंका सामना करनेके लिए यूनियनसे फौजी मदद मांगी थी।

महाराजाको मेरे यह सलाह देनेमे कि वे इंगलैडके राजाकी तरह वैधानिक राजा रहे, और अपनी हकूमत और डोगरा फौजको शेख साहब और उनके संकटकालीन मंत्रिमंडलके कहनेके मुताबिक चलावें, आश्चर्य-की बात क्या है ? रियासतोंके यूनियनके साथ जुड़नेका शर्तनामा तो पहले ही जैसा है। वह राजाको अमुक-अमुक हक देता है। मैंने एक सामान्य व्यक्तिकी हैसियतसे महाराजाको यह सलाह देनेका साहस किया है कि वे अपने आप अपने हकोको छोड़ दें या कम कर दें और एक हिंदू राजा-की हैसियतसे वैधानिक कर्तव्यका पालन करें।

अगर मुझे जो खबरें मिली है उनमें कोई गलती है तो उसे सुधारना चाहिए। अगर हिंदू-धर्मके बारेमें और हिंदू-राजाके फर्जके बारेमें मेरे ख्यालात भूलभरे है तो मेरी सलाहको वजन देनेकी बात नहीं रहती। अगर शेख साहब मंत्रिमंडलके मुखियाकी हैसियतसे या एक सच्चे मुसल-मानकी हैसियतसे अपना फर्ज पूरा करनेमें गलती करते है तो उन्हें एक तरफ बैठ जाना चाहिए, और बागडोर अपनेसे बेहतर आदमीके हाथोंमें

सौंप देनी चाहिए।

आज कश्मीरकी भूमिपर हिंदू-धर्म और इस्लामकी परीक्षा हो रही है। अगर दोनों सही तरीकेसे और एक ही दिशामें काम करें तो मुख्य कार्यकर्त्ताओंको यश मिलेगा और कोई उनका यश और नाम और इज्जत छीन नही सकेगा। मेरी तो एक ही प्रार्थना है कि इस अंधकार-मय देशमें काश्मीर रोशनी दिखानेवाला सितारा बने।

यह तो हुआ महाराजा साहब और शेख साहबके बारेमें। क्या पाकिस्तान सरकार और यूनियन सरकार साथ बैठकर तटस्थ हिंदुस्तानियोकी मददसे दोस्ताना तौरपर अपना फैसला नही कर लेंगी? क्या हिंदुस्तानमे निष्पक्ष लोग रहे ही नही? मुझे यकीन है कि हमारा ऐसा दिवाला नही निकाला।

मुझे मथुरासे एक बहनने ५०) का मनीआर्डर शरणार्थियोंके लिए कंबल खरीदनेको भेजा है, वह अपना नाम मुझे भी बताना नही चाहतीं और लिखती है कि प्रार्थना-सभामे अपने भाषणमें मै उन्हें पहुंच दे दूं; मै आभारके साथ उनके ५०)की पहुंच देता हूं।

आश्चर्यकी बात है कि जिन रियासतोंके राजाओंने यूनियनमें जुड जानेका इरादा जाहिर किया है वहांकी प्रजाकी तरफसे मुझे शिकायतके तार आ रहे हैं। अगर किसी राजा या जागीरदारको यह लगे कि वह अकेला रहकर अपने आप अच्छी तरहसे अपना राज नहीं चला सकता तो उसे अलग रहनेपर कौन मजबूर कर सकता है? जो लोग तारोंपर इस तरहसे रुपया खर्च करते है उन्हें मेरी सलाह है कि वे ऐसा न करें। मुझे लगता है कि ऐसे तार भेजनेवालोंके बारेमें कुछ दालमें काला है। वे गृह-मत्रीके पास सलाह लेने आवें।

कई मुसलमान; खासतौर पर डाक और तारके महकमेवाले कहते हैं कि उन्होने प्रचारकी खातिर यूनियनमे रहनेकी वात की थी, अब वे अपना विचार बदलना चाहते है। ऐसे भी मुसलमान हैं जिन्हें नौकरीसे बरखास्त किया गया है। उसका कारण तो मेरे खयालमें यही होगा कि उनपर शक किया जाता है कि वे हिंदुओंके विरोधी हैं। मेरी उन लोगोंके प्रति पूरी सहानुभूति है। मगर मैं महसूस करता हूं कि सही तरीका यह

है कि व्यक्तिगत किस्सोंमे यह शक कितना ही बेजा क्यों न हो, उसको क्षम्य समझा जाय और गुस्सा न करे। मैं तो अपना पुराना आजमाया हुआ नुस्खा ही बता सकता हूं। सरकारी नौकरियोंमें बहुत थोड़े लोग जा सकते है। जिंदगीका मकसद सरकारी नौकरी पाना कभी नही होना चाहिए। जीवनके इस क्षेत्रमे ईमानदारीकी जिदगी बसर करना ही एकमात्र ध्येय हो सकता है। अगर आदमी हर तरहकी मेहनत-मजदूरी करनेको तैयार रहे तो ईमानदारीसे रोटी कमानेका जरिया तो मिल ही जाता है। मेरी सलाह यह है कि आज जो सांप्रदायिक जहर हमपर सवार है जबतक वह दूर न हो तब तक मुक्ति नही। मै समझता हू, मुसलमानोके लिए अपना स्वाभिमान रखनेके लिए यह जरूरी है कि वे सरकारी नौकरियोमे हिस्सा पानेके पीछे न दौड़ें। सत्ता सच्ची सेवामें-से ही मिलती है। सत्ता पाकर बहुत बार इन्सान गिर जाता है। सत्ता पानेके लिए झगड़ा शोभा नही देता। उसके साथ-ही-साथ सरकारका यह फर्ज है कि जिन स्त्री-पुरुषोके पास कोई काम न हो, चाहे उनकी संख्या कितनी ही क्यों न हो, उनके लिए वह रोजी कमानेका साधन पैदा करे। अगर अक्लसे यह काम किया जाय तो सरकारपर बोझ पडनेके बदले इससे सरकारको फायदा होगा। मै इतना मान लेता हूं कि जिनके लिए काम ढूढना है वे शरीरसे स्वस्थ होंगे, और काम-चोर नही, बल्कि खुशी-से काम करनेवाले होगे।

: १६३ :

३० दिसंबर, १६४७

भाइयो और बहनो,

मैंने कलके भाषणमें कहा है कि हमारी सभ्यता कहांतक जानी चाहिए। हमें कब बोलना, कैसे चलना चाहिए कि करोड़ो आदमी साथ चलें, तो भी पूरी शान्ति रहे। ऐसी लश्करी तालीम हमें मिली नहीं। मैं

यहांसे जानेके बाद घूमता हू, तब लोग मुझे इधर-उधरसे देखनेकी कोशिश करते है। वे ऐसा न करे। प्रार्थना में देख लिया, वह बस हुआ। वहां जो लाभदायक बाते सुनीं, उनका वे मनन करें और अपने-अपने घर चले जाएं।

बहावलपुरके बारेमें एक भाई लिखते हैं कि मैं बहावलपुरके लिए एक बार कुछ और कहू। वहाके नवाब साहबने तो कहा है कि उनके नजदीक उनकी सारी रैयत बराबर है। तो मै क्यों कहू कि यह सच्चा नही है? अगर सचमुच उनके लिए सारी रैयत एक-सी है तो उनको चाहिए कि अगर वे हिदू-सिखोकी संभाल नही कर सकते तो उन्हे अपनी गाड़ीमे बिठाकर यहा भेज दे और आरामसे आने दें। जबतक उनको वहासे लानेका प्रबध नही होता तबतक उनकी खानेकी, कपड़ेकी, ओढनेकी व्यवस्था उन्हे अच्छी तरह कर देनी चाहिए। मुझे उम्मीद है कि वे ऐसा करेगे।

मै तो कायदे आजमसे कहना चाहता हू कि सिधमें हिदुओंका रहना दुश्वार हो गया है। वहा हरिजन परेशान है। उनको भी वहासे आने देना चाहिए। सिध जैसा पहले था वैसा आज नही है। इस यूनियनसे जो मुसलमान वहा गए है वे लोग वहाके हिदुओको घर छोड़नेपर मजबूर करते है, उनके घरोमे घुस जाते है। अगर वे ऐसा करे तो कौन हिंदू वहा रह सकता है? तब क्या पाकिस्तान इस्लामिस्तान हो जायगा? क्या इसीलिए पाकिस्तान बना है? कोई हिदू वहां चैनसे रह ही नहीं सकता, यह दुःखकी बात है।

पंढरपुरमें विठोबाका मंदिर है। महाराष्ट्रमे इससे बडा मंदिर कोई नही है। वह मंदिर हरिजनोंके लिए वहांके ट्रस्टियोंने खुशीसे खोल दिया है, ऐसा तार आया था। अब वे लिखते है कि बडे-बडे ब्राह्मण पुजारी इसपर नाखुश है और अनशन कर रहे है। यह सुनकर मुझको बहुत बुरा लगा। मै वहां जा तो नही सकता, मगर यहांसे दृढतासे कहना चाहता हूं कि पुजारी लोग अपने आपको ईश्वरके पुजारी मानते हैं; लेकिन वे सच्चे तरीकेसे पूजा नहीं करते। आज तो वे लोगोंके लूटते हैं। विष्णु भगवान ऐसे नहीं है कि कोई भी उनके पास जावे और वे दर्शन न दें।

ईश्वरके लिए सब एक है। सो उन पुजारी लोगोंको अनशन छोड़ना चाहिए और कहना चाहिए कि हम सब हरिजनोंके लिए मंदिर खोलनेमें राजी है। हमारी धर्मकी आंख खुल गई है। मंदिरमें जानेसे पापका नाश होता है, यह माना जाता है। अगर सच्चे दिलसे पूजा करें तो पापका नाश होगा ही। ऐसा थोड़े ही है कि पापी मंदिरमें नहीं जा सकते और पुण्य-शाली ही जा सकते हैं। तब वहां पाप धुलेंगे किसके? जिन हरिजनों-को हमने ही अछूत बनाया है वे क्या पापी हो गए? मुझे आशा है कि अनशन करनेवाले समझ जाएंगे कि यह बात कितनी असंगत है।

बंबईमें चावल बहुत कम मिलते है। एक हफ्तामे एक रतलसे ज्यादा नहीं मिलते। सो लोग काले बाजारसे चावल लेते है। अंकुश छूटनेपर भी उस शहरमें अभी राहत नही मिली। अगर शहरी लोग ईमानदार बन जायं, तो ये तकलीफें मिटनी ही हैं। लोगोंका पेट भर जाय तो चोरीका कारण ही क्यो रहे।

: १९४ :

३१ दिसबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरे पास कई खत आए है। सबका जवाब अभी नही दे सकूंगा। जिनका दे सकता हू, देता हू।

एक भाईने लिखा है कि सिंधमे जब हिंदुओंपर सख्ती होती है और वहां हिंदू और सिख नही रह सकते, तो पंजाबमें या पाकिस्तानके और हिस्सोंमें फिरसे जाकर वे कैसे बस सकते है? खत लिखनेवाले भाईने मेरी इस बाबतकी सब बातोंपर ध्यान नही दिया। कुछ मुसलमान भाई पाकिस्तान होकर मेरे पास आए थे। उन्होंने उम्मीद दिलाई थी कि जो हिंदू और सिख पाकिस्तानसे आ गए हैं, वे वहा वापिस जा सकेंगे, ऐसी

आशा होती है। मैंने वही आपसे कह दिया था। पर मैं यह भी कह चुका हूं कि अभी वह वक्त नही आया। अभी मै किसीको वापस जानेकी सलाह नहीं दे सकता। जब वक्त आवेगा तब मै कहूंगा। अभी तो सुनता हूं कि सिंधमें भी हिंदू नही रह सकते। यह ठीक है। चितरालसे एक भाई मेरे पास आए थे। उन्होंने बताया कि वहां ढाई सौके करीब हिंदू-सिख अभी पडे है, जो निकलना चाहते है। सिंधमें तो अभी बहुत है, हजारों है, जो वहांसे निकलना चाहते है। वे सब जबतक नही आ जायगे, हिंद सरकार चुप नही बैठेगी। वह कोशिश कर रही है।

पर आखिरमें तो मै उसी बातपर जमा हू। जबतक सब हिंदू और सिख भाई, जो पाकिस्तानसे आए है पाकिस्तान न लौट जावें और सब मुसलमान भाई, जो यहासे गए है, यहां न लौट आवे, तबतक हम शाति-से नही बैठ सकते है। मै तो तबतक शांतिसे बैठ ही नही सकता। हो सकता है कि कोई शरणार्थी भाई यहां खुश हो, पैसा भी कमाने लगे, फिर भी, उसके दिलसे खटक कभी नही जायगी। उसे अपना घर तो याद आवेगा ही, दिलमे गुस्सा और नफरत भी रहेगी। हमने-दोनोने—बुरा किया है। दोनों बिगडे है। इसलिए दोनों भोग रहे है। किसने पहले किया, किसने पीछे; किसने कम, किसने ज्यादा, यह सोचनेसे काम नही चलेगा। हम सब अपने-अपने बिगाडको नही सुधारेंगे तो हम दोनों मिट जायंगे। जबतक हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे दिलका समझौता नही होता हमारा दोनोंका दुःख नही मिट सकता। दोनों अपना-अपना बिगाड़ सुधार ले तो हमारी बिगड़ी बाजी फिर सुधर जाय।

उन्हीं भाईने लिखा है कि शरणार्थियोके कैंपोंमें कुछ घरेलू धंधे सिखाए जावे तो अच्छा है, जिससे वे कमाकर अपना खर्च निकाल सकें। मुझे यह बात बहुत अच्छी लगी। सब चाहेगे तो मैं सरकारसे कहूंगा और सरकार बड़ी खुशीसे इसका इंतजाम कर देगी। सरकारके तो इससे करोड़ों रुपये बचेंगे। मैं चाहता हूं कि जिस भाई ने खत लिखा है, वह इसके लिए आंदोलन करे, सब शरणार्थियोंको राजी करे। शरणार्थी खुद यह कहें कि मुफ्तकी मिली खीरसे अपनी मेहनतका रूखा-सूखा टुकड़ा कहीं अच्छा है। इससे उनका नाम बढ़ेगा, मर्यादा भी बचेगी।

अभी तो एक हिंदू बहन मेरे पास आई थी। कहती थी कि वह अपने घरका ताला बंद करके कही गई तो पांच-छः सिखोंने आकर ताला तोड़ लिया और घरमे रहना शुरू कर दिया। बहनने आकर देखा तो पुलिसमें रिपोर्ट लिखाई। सुना है, कुछ सिख पकड़े भी गए। एक भाग गया। हिंदुओं और दूसरोने भी ऐसी गंदी बातें की हैं। इससे हमारे धर्मपर बड़ा कलक लगता है। ऐसी बातें बंद होनी चाहिए। उस बहनने मुझसे पूछा, क्या मै घर छोड दू? मैने कहा, कभी नही। सिख भाई अपना मान रखे, अपनी मर्यादामे रहे। हम सब अपनी मान-मर्यादासे रहे तो सारा झगडा खत्म हो जावेगा।

एक और खत आया है उससे में और भी खुश हुआ। एक भाई लिखते है कि आपका रोजका भाषण तो सब रेडियोपर सुनते है, लेकिन प्रार्थना और भजन रेडियोपर सबको नही मिलते। वह भी सब सुन ले तो अच्छा हो। रेडियो क्या कर सकता है, मै नही जानता। रेडियो अगर भजन भी ले ले तो मुझे अच्छा लगेगा। वह भाई अपना नाम भी नही देना चाहते। पर मै एक बात यह भी कहना चाहता हूं कि मै रोज बोलता हूं, जो बहस करता हूं, वह भी प्रार्थना ही है, उसीका हिस्सा है। मेरा यह सब भी भगवानके लिए है। लड़कियां जो भजन गाती है, वह भगवानके लिए गाती है। फिर उसमें सुरकी मिठास हो या न हो, भक्ति तो है। जिन्हे सुरकी मिठास चाहिए, उनके लिए रेडियोपर बहुतेरे गाने होते है। जिन्हे भक्तिकी मिठास चाहिए, उनके लिए रेडियोपर ये भजन जा सकें तो लाभ ही होगा।

कुछ भाइयोंने जूनागढ़ और अजमेरकी बाबत मुझे तार भेजे है। जूनागढ़में, जो काठियावाडमें है, तो मै पला हू। वहाका हाल मैं कह चुका हूं। अजमेरमें तो बहुत बुरी बातें हुई है, इसमें शक नही। वहां जलाया भी है, लूट भी हुई, खून भी हुआ। पर बुरी बातको भी ज्यादा बढ़ाकर कहनेसे हम अपना मामला कमजोर कर लेते है। इन तारोंमे बात बढ़ाकर कही गई है। अजमेरमें दरगाह शरीफ तो ठीक है। जितना है, उतना कहिए। सरकार अमन कायम करनेकी कोशिश कर रही है। हम उसपर भरोसा करें। भगवानपर भरोसा करे। सब अपनी-अपना

गलतियोको ठीक नही करेगे तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों मिट जावेगे।

: १६५ :

१ जनवरी, १६४८

भाइयो और बहनो,

आज अंग्रेजी सालका पहला दिन है। आज इतने ज्यादा आदमियों-को यहा जमा देखकर मै खुश हू। पर मुझे दुःख है कि बहनोंको बैठने-की जगह देनेमे सात मिनट लग गए। सभामे एक मिनट भा बेकार जानेका मतलब है कि करोडों जनताके बहुतसे मिनट बेकार गए। फिर तो हमारा खात्मा है न? भाइयोंको चाहिए कि बहनोंको पहले जगह देना सीखे। जिस देशमें औरतोंकी इज्जत नही, वह सभ्य नही। दोनोको अपनी मर्यादा सीखनी चाहिए। यही मनु महाराजने बताया है। आजादी मिल जानेके बाद, हम सबको और भी मर्यादाके साथ बरतना चाहिए। मै उम्मीद करता हू कि आगे इससे भी ज्यादा लोग आवेंगे। पर जितने लोग आवे, वे प्रार्थनाकी भावना लेकर आवें; क्योकि प्रार्थना ही आत्माकी खुराक है। भगवानके पाससे हमें जो खुराक मिल सकती है, वह और जगह नही मिल सकती। मैं उम्मीद करता हूं कि जो लोग आए है, वे सब यहां भी शाति रखेंगे और जाते वक्त घरोंको भी अपने साथ शाति ले जावेंगे।

यू० पी० में हालमें एक हरिजन-कान्फरेंस हुई थी। कहते है, उसमें एक वजीरने हरिजनोंको उपदेश दिया कि आप गंदे रहना, गंदे कपड़े पहनना और शराब पीना छोड़ दे। इसपर कोई हरिजन बोल पड़ा कि जैसे सरकार ताड़ीके दरख्तोंको उखाड़कर फिंकवा सकती है और शराबकी सब दुकाने बंद करा सकती है, वैसे ही वह गंदे कपड़े भी फुकवा दे, हम नंगे रहेंगे, पर गंदे नहीं। मैं उस हरिजन भाईकी हिम्मतको सराहता हूं।

मैं तो ताड़ीका गुड बना लेता हूं। पर मैं हरिजन भाइयोंसे कहूंगा कि असली इलाज उनके अपने हाथोंमें है। शराब अगर दुकानपर बिकती भी हो तब भी उन्हें जहरकी तरह उससे बचना चाहिए। सच यह है कि शराब जहरसे भी ज्यादा बुरी है। मजदूर लोग घरमें आकर जो दुःख देखने हैं उसे भुलानेके लिए शराब पीते हैं। जहरसे शरीर ही मरता है, शराबसे तो आत्मा सो जाती है। खुद अपने ऊपर काबू पानेका गुण ही मिट जाता है। मैं सरकारको सलाह दूंगा कि शराबकी दुकानोंको बंद करके उनकी जगह इस तरहके भोजनालय खोल दे जहां लोगोंको शुद्ध और हल्का खाना मिल सके, जहां इस तरहकी किताबें मिलें जिनसे लोग कुछ सीखें और जहां दूसरा दिल बहलानेका सामान हो। लेकिन सिनेमाको कोई स्थान न हो। इससे लोगोंकी शराब छूट सकेगी। मेरा यह कई देशोंका तजुरबा है। यही मैंने हिंदुस्तानमें भी देखा और दक्षिण अफ्रीकामें भी देखा था। मुझे इसका पूरा यकीन है कि शराब छोड़ देनेसे काम करनेवालोंका शारीरिक बल और नैतिक बल दोनों बहुत बढ़ जाते हैं और उनकी कमानेकी ताकत भी बढ़ जाती है। इसलिए सन् १९२० से शराबबंदी कांग्रेसके कार्यक्रममें शामिल है। अब, जब हम आजाद हो गए है सरकारको अपना वादा पूरा करना चाहिए और आबकारीकी नापाक आमदनीको छोड़नेके लिए तैयार हो जाना चाहिए। आखिरमें सचमुचमें आमदनीका भी नुकसान नहीं होगा और लोगोंका तो बहुत बड़ा लाभ होगा ही। हमारे लिए तरक्कीका यही रास्ता है। यह हमें अपने आप अपने पुरुषार्थसे करना है।

: १९६ :

२ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

नोआखालीमे किसान लोग धूपसे बचनेके लिए यह टोप ओढ़ते हैं।[१] मै दो बातोकी वजहसे इसकी बड़ी कदर करता हूं। एक तो मुझे यह एक मुसलमान किसानने भेट किया है। दूसरे यह छतरीका अच्छा काम देता है और उससे सस्ता है क्योंकि सब गांवकी ही चीजोसे बना है।

प्रार्थनामे जो भजन गाया गया है, आपने सुना कितना मीठा है। पर यह भजन असलमे सुबहका है। इसमे भगवानसे प्रार्थना की गई है कि उठकर इतजारमे खड़ भक्तोको दर्शन दो। यह सत्य है कि ईश्वर कभी सोता नही है। भजनमें तो भक्तके दिलकी भावना है।

हालमे इलाहाबादसे मेरे पास एक खत आया है। भेजनेवाले भाईने लिखा है कि थोड़ेसे भले लोगोको छोड़कर किसी मुसलमानपर यह एतबार नहीं किया जा सकता कि वह हिंद सरकारका वफादार रहेगा—खासकर अगर हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे लडाई हुई। इसलिए थोड़ेसे नेशनलिस्ट मुसलमानोंको छोडकर और सब मुसलमानोको निकाल देना चाहिए। मै कहता हू कि हर आदमीको यही चाहिए कि जबतक कोई बात इसके खिलाफ साबित न हो, वह मुसलमानोकी बातका एतबार करे। अभी पिछले हफ्ते करीब एक लाख मुसलमान लखनऊमें जमा हुए थे। उन्होंने साफ शब्दोमें अपनी राष्ट्रभक्तिका ऐलान किया। अगर किसीकी बेवफाई या बेईमानी साबित हो जावे तो उसे गोलीसे मारा भी जा सकता है, गोकि यह मेरा तरीका नही है। पर फिजूलकी बे-एतबारी जहालत और बुजदिलीकी निशानी है। इसीसे सांप्रदायिक नफरते फैली है, खून बहे हैं

[१] पानी बरसने के कारण गांधीजी नोआखालीका टोप पहनकर आए थे जिसे देखकर लोग हँसने लगे। इसलिए गांधीजीने टोपसे ही शुरू किया।

और लाखों बेघरबार किए गए है। यह अविश्वास जारी रहा तो देशके अलग-अलग टुकड़े हमेशाके लिए बने रहेगे और आखिरमे दोनों डोमिनियन नष्ट हो जावेगी। भगवान न करे, अगर दोनोमें लड़ाई छिड़ गई तो मै जिदा रहना पसद न करूंगा। पर जो मेरी तरह लोगोंमे भी अहिसामे विश्वास होगा, तो लडाई नही होगी और सब ठीक ही होगा।

: १९७ :

३ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

मुझे खुशी है कि आज मै अपना बहुत दिनोंका वादा पूरा कर सका और इस कैंप[1]के शरणार्थियोंसे बाते कर सका। मुझे बडी खुशी है कि यहां जितने भाई है, उतनी ही बहने है। मै चाहता हू आप सब मेरे पास इस प्रार्थनामे शामिल हो कि हमारे मुल्कमे और दुनियामें फिरसे शांति और प्रेम कायम हो। शांति बाहरकी किसी चीजसे, जैसे दौलतसे या महलोसे, नहीं मिलती। शाति अपने अंदरकी चीज है। सब धर्मोंने इस सचाईका ऐलान किया है कि जब आदमीको इस तरहकी शांति मिल जाती है तो उसकी आखो, उसके शब्दों और उसके कामों—सबसे वह शांति टपकने लगती है। इस तरहका आदमी झोंपडीमें रहकर भी संतुष्ट रहता है और कलकी चिता नही करता। कल क्या होगा, यह भगवान ही जानते है। श्रीरामचद्रको, जो हमारी तरह आदमी थे यह पता नहीं था कि ठीक उस वक्त जब उनके गद्दीपर बैठनेकी आशा थी उन्हें बनवास दे दिया जायगा। पर वह जानते थे कि सच्ची शाति बाहरकी चीजोंपर निर्भर नही है। इसीलिए वनवासके खयालका उनपर कुछ भी असर न हुआ। अगर हिंदू और सिख इस सचाईको जानते होते तो

[1] वेवल कैंटीन।

यह पागलपनकी लहर उनपरसे फिर जाती,' और मुसलमान चाहे कुछ भी करते, वे खुद शांत रहते। अगर ये शब्द हिंदुओं और सिखोंके दिलोंमें घर कर ले तो मुसलमानोंपर तो अपने आप उसका असर जरूर होगा ही।

मैंने सुना है कि यह कैंप कुछ अच्छी तरह चल रहा है। मैं यह बात तबतक पूरी तरह नहीं मान सकता, जबतक सब शरणार्थी मिलकर इस कैंपमें उससे ज्यादा सफाई और तरतीबी न रखें जितनी दिल्ली शहरमें दिखाई देती है। आपको जो मुसीबतें भोगनी पडी हैं वह मैं जानता हूं। आपमेंसे कुछ बड़े-बड़े घरोंके लोग थे। पर आपके लिए उतने ही आरामकी उम्मीद यहां करना फिजूल है। आप सबको सीखना चाहिए कि नई जरूरतोंके मुताबिक अपनेको कैसे ढाला जाय और जहांतक बन पड़े इस हालतको ज्यादा अच्छा बनाना चाहिए। मुझे याद है कि सन् १८९९की बोअर वारमें ठीक पहले अंग्रेज लोग ट्रांसवालको छोडकर वहांसे नेटाल गए थे। वे जानते थे कि मुसीबतका कैसे सामना किया जावे। वे सब-के-सब बराबरकी हैसियतसे रहते थे। उनमेंसे एक इंजीनियर था और मेरे साथ बढईका काम करता था। हम सदियोंसे विदेशियोंके गुलाम रहे हैं, इसलिए हमने यह बात नहीं सीखी। अब जब हम आजाद हुए हैं—और आजादी कैसी अनमोल बरकत है—मैं उम्मीद करता हूं कि शरणार्थी भाई-बहन अपनी इस मुसीबतसे भी पूरा फायदा उठाएंगे। वे अपने इस कैंपको एक ऐसा आदर्श कैंप बना देंगे कि अगर सारी दुनियासे नहीं तो सारे हिंदुस्तानसे लोग आ-आकर इसपर फख्र करें। प्रार्थनामें जो मंत्र पढ़ा गया है उसका मतलब यह है कि हमारे पास जो कुछ है, हम सब भगवानके अर्पण कर दें और फिर जितनेकी हमें सचमुच जरूरत हो, उतना ही उसमेंसे ले लें। अगर हम इस मंत्रके अनुसार रहें तो इस कैंपमें ही नहीं, सारी दिल्लीमें, जो हालमें बदनाम हो गई है, फिरसे नई जान आ जावेगी और हमारे सबके जीवन अंदरके सुखसे भर जावेंगे।

: १६८ :

४ जनवरी, १६४८

भाइयो और बहनो,

आज यहां तो हर जगह लडाईकी ही बात हो रही है। कहते है कि पाकिस्तान और हिंदुस्तानके बीच शायद लडाई छिड जायगी। अगर लडाई छिड जाती है तो हम दोनोका बडा दुर्दिन है, ऐसा मैं मानता हू। और बस हम दोनों आपस-आपसमे सुलहसे नही बैठ सकते है। अभी मै हैरान हुआ कि हिंदुस्तानकी यूनियनने, जो सारी प्रजाका या समग्र प्रजाका मडल बन गया है, पाकिस्तानको लिखा है। ऐसी जब कोई बात हो जाती तो इस मंडलको इंसाफ करने और लडाई रोकनेके लिए कहा जाता है। इसलिए उनको इडियन यूनियनने लिखा है कि यह जो कुछ भी है, चाहे मामूली चीज ही हो, लेकिन इसमेसे लडाई छिड सकती है। अच्छा लबा-चौडा लिखकर भेजा है और चूकि वह तारसे जा सकता था इसलिए उसमे भेज दिया। उसपर पीछे पाकिस्तान-से एक तो जफरुल्ला साहब और दूसरा लियाकतअली साहबने एक बहुत लंबा बयान निकाला है। वे दोनो भाई मुझको कहने देंगे कि वह मुझ-को कोई अच्छी बात नही लगी। तब कहो कि यूनियनके जो सचिव है, उन्होंने जो चीज भेजी वह अच्छी लगी क्या? मै कहूंगा कि मुझको अच्छी भी लगी और बुरी भी। अच्छी तो यों लगी कि आखिर वे करें क्या? उन्होंने मान लिया है कि हम जो कह रहे है वह सही कर रहे हैं। अगर काश्मीरकी सरहदके बाहरसे लडाई होती रहे तो जाहिर है कि उनके दिलमें यही होगा कि उसमें पाकिस्तानका कुछ-न-कुछ हिस्सा तो है ही। वह नही है, ऐसा वह कहते है। लेकिन उनके कहनेसे तो काम नही निपट सकता। काश्मीर हमारे पास आ गया है। एक शर्तसे हमने उसको यूनियनमें ले लिया है। अगर पाकिस्तान उसको नाराज करे और काश्मीरके नेता शेख अब्दुल्ला यह मागे कि हमको मदद दे दो, तो यूनियन तो मदद देनेके लिए मजबूर हो जाता है। इसलिए मदद तो दी, लेकिन यहा तो इस तरह हो रहा है कि पाकिस्तानसे मिन्नत करते हैं कि

जो हमलावर है उनको वहांसे निकल जाना चाहिए और कोई आपसी निपटारा हो जाना चाहिए। अगर यह निपटारा नही होता है तो फिर तो लड़ाईमें ही फंस जाना पड़ेगा। इस लड़ाईमे न फंसनेके लिए ही उन्होंने ऐसा कर लिया है। यह सब ठीक है या नही, यह तो ईश्वर ही जानता है। न मै जानता हू, न कोई और जानता है।

पाकिस्तानमें चाहे कुछ भी था, लेकिन मै तो ऐसे करता कि उनको यहां आनेके लिए कहता। वे यहा आ सकते थे या किसीको भेज सकते थे। इस बारेमे कोई समझौता करनेके लिए हम मिल तो लें। सारी दुनियाको जाहिर तो यह करते है कि हम मिलना चाहते है, लेकिन मिलनेका सामान पैदा नही करते, ऐसा मुझको लगता है। इसलिए पाकिस्तानके जो जिम्मेदार आदमी है उनसे मै तो मिन्नत करूंगा कि हमारे दो टुकडे तो हो गए, हालांकि मुझको तो अच्छा नही लगा कि दो टुकडे हो गए; लेकिन हो गए, क्योंकि आप लोग चाहते थे। तो टुकडे होनेके बाद अब ऐसा इकरार तो होना ही चाहिए था कि हम आपसमे सुलहसे रहेंगे। मान लिया कि हिंदुस्तानमें तो सब बुरे आदमी रहते है, लेकिन पाकिस्तान तो एक नई पैदाइश है और वह भी धर्मके नामपर या इस्लामके नामपर। तब उसको तो साफ ही रहना चाहिए था। लेकिन वह नही है, ऐसा वे खुद भी तो कबूल करते है। पाकिस्तानमे मुसलमानोंने ज्यादतिया नही की, ऐसा वे खुद भी नही कहते है। की है, इसलिए मैं तो उनसे मिन्नत करूंगा कि आपका तो परम धर्म हो जाता है कि जहांतक हो सकता है हिंदुस्तानके साथ मिल जाना चाहिए और दोनोंको साथ-साथ काम चलाना चाहिए। गलतिया हो गई है दोनोंसे, इसमें मुझे कोई शक नही है। लेकिन इसका यह मतलब नही है कि हम गलतियां करते ही रहें। आखिरमें नतीजा तो यही होगा कि हम दोनों आपसमें लड़ें और मरे। तब तो सारा हिंदुस्तान एक तीसरी ताकतके हाथ चला जाता है। इससे बुरी बात हिंदुस्तानके लिए, या किसी भी हिंदुस्तानीके लिए, कोई और हो क्या सकती है, यह मेरे जहनसे तो बाहरकी बात है। इसलिए दोनों ताकतोंको ईश्वरको दरमियान रखकर आपस-आपसमें मिल जाना चाहिए। आखिर यू० एन० ओ० में तो यह मामला चला ही गया है। उससे तो कौन छीन सकता है। लेकिन एक ताकत तो उनसे भी

यह मामला छीन सकती है और वह यह कि अगर हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनों मिल जाते हैं तब यू० एन० ओ० मे जो बड़े-बड़े लोग पड़े हैं वे तो राजी होनेवाले है। वे कोई नाराज थोडे ही होगे। आखिर उनके हाथमें तो कलम पडी है। वे तो यही कहेगे कि हमारे पास जो चीज आती है उनके लिए हम भी कोशिश करेंगे कि दोनों आपसमे मिल जाएं, ताकि हमें कुछ करना ही न पडे। ऐसी अगर वे कोई कोशिश न करे तो वे भी आखिर खिलौना थोड़े ही है कि कोई हरएक बात उसमें ले जाई जाय। जब दोनों मजबूर हो जाएं कि आपसमे उनका कोई फैसला हो ही नहीं सकता है तब वे उसको यू० एन० ओ० मे ले जाते हैं। एक तो मैं यह बात आपको कहना चाहता था। इसलिए हम ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं और जो प्रार्थना यहा करे, वही हम हमेशा अपने घरमें भी करें कि किसी-न-किसी तरह भगवान दोनों हकूमतोंको लडनेसे बचा ले। लेकिन हर तरहसे लड़नेसे बचा ले, वह प्रार्थना भी हम न करें। मैं तो कहता हूं कि हे ईश्वर! या तो दोनोंको आदर और मुहब्बतके साथ रख या अगर भीतरसे दुश्मन ही रहते है तो बेहतर यही है कि हमको पेटभरके लडने दे। हम भले ही मूर्ख हो, लेकिन लड़ने तो दो। पीछे कभी-न-कभी तो शुद्ध हो ही जाएंगे। आप भी यही प्रार्थना करें।

अब कुछ दिल्लीके बारेमें भी कहना मै मुनासिब समझता हूं। यहां क्या हो गया, इसका मुझको रातको ही पता चल गया था। मुझको बृजकिशनजीने बता दिया था मै भी कल उस तरफ प्रार्थना करने चला गया था। मै तो आ गया था, लेकिन वह कैंप देखने और लोगोंसे बात करनेके लिए वही ठहर गए थे। वहाके कुछ फासलेपर ही चार-पांच सौ आश्रित दुःखी स्त्रियां, थोड़े बच्चे और बाकी पुरुष गए। उन लोगोंने क्या किया? किसीने मारपीट तो नही की, ऐसा मै सुनता हूं। कुछ मुसलमानोंके घर थे, थोडे उनमें खाली भी थे, मगर जो भी खाली हों, उन्हीमें वे जाकर बैठ जायं, ऐसा थोड़े ही है। लेकिन जिन घरोंमे लोग रहते थे उनपर भी जबर्दस्ती कब्जा करनेकी उन्होने कोशिश की। पुलिस तो नजदीक ही थी। सुनते ही वह वहां पहुंच गई और सात या साढ़े-सात बजेसे यह शुरू हुआ और ९ बजेके बाद वह तो अखबारोंमें है। मैंने सुना

है, ११ बजेके बाद मामला शांत हुआ। पुलिस वही रही और जो एक नया शस्त्र निकला है न, अश्रु-गैस, वह भी चलाया गया। उससे लोग परेशान हो जाते है, मरते तो नही है, लेकिन परेशानी तो बहुत होती है। पीछे ये लोग वहासे गए और सुना है कि आज दिनमे भी कुछ हो रहा था। वे वहासे चले नही गए थे।

मै तो कहूगा कि इससे हमको लज्जित होना चाहिए। जो आश्रित लोग है वे दुःखमेसे भी इतना नही सीखे कि हम मर्यादित है। यह कोई मर्यादा नही है कि हम किसीके घरमे जाकर बैठ जायं। उनके लिए घर या कुछ भी चाहिए वह हकूमत का काम है। आज तो हकूमत भी हमारी हो गई है; लेकिन उस हकूमतको भी वे बेकार करें और जो पुलिस है उसकी भी कोई परवा न करे और किसीके घरमे घुसकर बैठ जाय तो इस तरह तो हमारी हकूमत चलनेवाली नही है। और पीछे दिल्लीमे अर्थात् हिंदुस्तानके पाया-तख्त[1] में ऐसा हो, जहा इतने लोग पडे है, बाहरसे बडे-बडे एलची यहा आए हुए है! क्या उनको यह देखनेको मिले कि लोग जहा चाहे वहां कब्जा करके बैठ जाते है। पुलिस अगर मिन्नत करे कि मेहरबानी करके जाइए तो कोई मेहरबानी करनेका ही नही। इसपर भी औरतो और बच्चोको आगे रखना तो कोई इन्सानियत नहीं है। मै तो उसको हैवानियत मानता हूं। हम कोई जगली थोडे ही हैं! पुरुष स्त्रियोको आगे रखे वह तो ऐसे ही हुआ जैसा कि मुसलमान बादशाहोके वक्तमे गायोको फौजके आगे रखते थे, ताकि हिंदू लडे ही नही। मै तो उसको भी सभ्यता नही, असभ्यता मानता हू। लेकिन उससे भी बड़ी असभ्यता मैं यह मानूगा कि औरतों और बच्चोको आगे रखे ताकि पुलिस उनपर गैस या डंडा न चला सके। वह तो औरतका बहुत बडा दुरुपयोग किया है, ऐसा मै मानूगा। इसलिए जितने दुःखी लोग, औरत-बच्चे, सब पड़े है, उन सबको मै कहूगा और बहुत विनयके साथ कि वे ऐसा न करें। वे सब शातिसे बैठ जाए। अगर नहीं बैठते है तो दो हकूमतोंका लड़ना तो दरकिनार रहा, हम आपस-आपसमें ही लड़कर ख्वार हो जाएंगे।

---

१ राजधानी।

हम दिल्लीको गंवा बैठेगे और सारी दुनिया हमपर हँसेगी कि ये लोग हकूमतको नही चला सकते है। इनका लोगोपर कोई काबू नही है। हिंदुस्तान आजाद रहे, ऐसा अगर हम चाहते है तो जो चीजे आज हिंदुस्तानमे हो रही है उनसे हम बच जायं। यहा किसी किस्मका उपद्रव न हो, इसके लिए कोई और दूसरा चारा हमारे पास नही है।

: १९९ :

५ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

अंकुश निकल जानेके कारण बाजारमे बेतहाशा ऊनी और रेशमी कपडा आ गया है। ऊनी और रेशमी कपडेकी कीमत कमसे-कम ५० फी सदी गिर गई है। काफी जगह ६६ प्रतिशत गिरी है।

इस आशासे कि सूती कपड़े और सूतपरसे भी अंकुश जल्दी ही निकल जायगा, कीमते धीरे-धीरे गिर रही है। अगर सूती कपडेपरसे पूरी तरह अंकुश उठा लिया जाय तो कीमत कम-से-कम ६० प्रतिशत गिर जायगी और कपड़ा भी ज्यादा अच्छा मिलने लगेगा। मिल-मालिकोंको एक-दूसरे के साथ मुकाबला करना पडेगा। रेशमी और ऊनी कपडेकी तरह, अंकुश हट जानेसे सूती कपडा भी ढेरों मिलने लगेगा। सूती कपडेपरसे अगर अंकुश उठाया गया तो उसे सफल बनानेके लिए कम-से-कम तीन सालतक हिंदुस्तानसे बाहर कपडा भेजनेकी मनाही होनी चाहिए।

सरकारी दफ्तरोंके आंकडे तो जादूका खेल-सा रहते हैं। वे खुराक और कपडेपरसे अंकुश उठानेके रास्तेमें नही आने चाहिएं।

पेट्रोलपर अंकुश तो युद्धके कारण लगाया गया था, अब उसकी जरूरत नहीं है। सच्ची बात तो यह है कि इस कंट्रोलसे थोड़ी-सी ट्रांसपोर्ट कंपनियोंको फायदा पहुंच रहा है और वे इसे रखना चाहती है। करोड़ों जनताका तो इसके साथ कोई संबंध ही नही है। यह कहनेकी जरूरत

नही कि एक भी बस या ट्रामका मालिक, जिसके पास एक ही रास्तेका लाइसेंस है, आज दस-पंद्रह हजार रुपया हर महीने कमा रहा है। अगर पेट्रोलपर अंकुश न रहे, और गाड़ियां चलानेमें भी किसी एकके इजारे (स्वत्व) का रिवाज न रहे, तो एक गाड़ीका मालिक महीनेमें ३०० रु० से ज्यादा नही कमा सकता। आज तो पेट्रोलकी चिट्ठियों[१] की तिजारत होती है। एक लारीकी पेट्रोलकी चिट्ठी आज किसी ट्रांसपोर्ट डीलरके पास दस हजारमे बेची जा सकती है। अगर पेट्रोलपरसे अंकुश हटा दिया जाए तो खुराक, कपड़े और मकानोंका प्रश्न और कई दूसरे प्रश्न, जो आज देशके सामने हैं, अपने आप हल हो जाएंगे। पेट्रोलके राशनिगसे ट्रांसपोर्ट कंपनिया पैसे कमा रही है, और करोड़ों लोगोंका जीवन बर्बाद हो रहा है। अंकुश निकलवाकर आप दुःखी जनताकी सहायता करें तब यह देश खुशकिस्मतोंके रहने लायक ही नही, पर करोड़ों बदकिस्मतोंके रहने लायक भी बनेगा। अंकुश लडाईके जमानेके लिए थे। आजाद हिंद-मे उनका कोई स्थान नही होना चाहिए।

मुझे लगता है कि इन आकडोंके[२] सामने कुछ कहा नही जा सकता। हो सकता है यह बात मेरा अज्ञान मुझसे कहला रहा है। अगर ऐसा है तो ज्यादा जानकार लोग दूसरे आंकड़े बताकर मेरा अज्ञान दूर करनेकी

---

[१] कूपन।

[२] गांधीजीने नीचेके भाव बताते हुए कहा कि देखिए, चीनी इत्यादि का भाव सौ प्रतिशत गिर गया है :

आजकलका भाव नवंबरमें अंकुश उठानेसे पहले का भाव

आजकलका भाव	नवंबरमें अंकुश उठानेसे पहलेका भाव
चीनी ३७॥) मन	... . ८०)से ८५) मन
गुड़ १३)से १५) मन	......३०) ३२) मन
शक्कर १४)से १८) मन	.. ...३७)से ४५) मन
चीनी के क्यूब ॥≡) फी पैकेट	......१॥)से १॥।) फी पैकेट
चीनी देशी ३०)से ३५) मन	... ..७५)से ८०) मन

कृपा करें। मैंने ये बातें मान ली है, क्योंकि जानकार लोगोंका मत भी इसी तरफ है।

जब जनता किसी बातको मानती है और कोई चीज चाहती है तब लोकतंत्रमे झिझकको स्थान नहीं रहता। जनताके प्रतिनिधियोंको जनताकी माग ठीक स्वरूपमें रखनी चाहिए, 'ताकि वह पूरी हो सके।' जनताका मानसिक सहकार तो बड़ी-बड़ी लड़ाइया जीतनेमें बहुत मदद दे चुका है।

कहते है कि दुनियामें जितना पेट्रोल निकलता है, उसका एक प्रतिशत ही हिंदको मिलता है। निरुत्साह या निराश होनेका कारण नही। हमारी मोटरे तो चलती ही है। क्या इसका यह मतलब है कि क्योंकि हम युद्ध करनेवाले लोग नही, इसलिए हमें ज्यादा पेट्रोलकी जरूरत ही नही, और अगर हमे ज्यादा जरूरत पडे और दुनियामें जितना पेट्रोल निकलता है, उतना ही निकले तो दुनियाके लिए पेट्रोल कम पड़ेगा ?

अनाज	
गेहूं १८)से २०) मन	......४०)से ५०) मन
चावल बासमती २५) मन	... ..४०)से ४५) मन
मकई १५)से १७) मन	......३०)से ३२) मन
चना १६)से ८) मन	......३८)से ४०) मन
मूंग २३) मन	......३५)से ३८) मन
उड़द २३) मन	......३४)से ३७) मन
अरहर १८)से १९) मन	......३०)से ३२) मन
दालें और तेल	
चनेकी दाल २०) मन	......३०)से ३२) मन
मूंगकी दाल २६) मन	......३९) मन
उड़दकी दाल २६) मन	......३७) मन
अरहरकी दाल २२) मन	... ३२) मन
सरसोंका तेल ६५) मन	......७५) मन

टीकाकार मेरे घोर अज्ञानकी हँसी न करें। मैं तो प्रकाश चाहता हूं। अगर मैं अपना अंधेरा छिपाऊं तो प्रकाश पा नही सकता। सवाल यह उठता है कि अगर हमारे हिस्सेमे बहुत कम पेट्रोल आता है, तो काले बाजारमे पेट्रोलका अटूट जखीरा कहासे आता है, और गाडियोंका अनावश्यक आना-जाना, बिना किसी तरहकी रुकावटके कैसे चलता है?

पत्र लिखनेवाले भाईने जो हकीकत बयान की है वह सच्ची हो तो चौकानेवाली चीज है। अंकुश अमीरके लिए आशीर्वाद रूप और गरीबके लिए शापरूप, और अंकुश रखा जाता है गरीबोकी खातिर। अगर इजारेका रिवाज इसी तरह काम करता है तो उसे एक क्षण भी विचार किए बिना निकाल देना चाहिए।

कपडेके बारेमें तो, अगर खादीको, जिसे आजादीकी वर्दी कहा गया है, हम भूल नही गए तो कपडेपर अंकुश रखनेके पक्षमें तो एक भी दलील नही है। हमारे पास काफी रुई है और काफी हाथ हैं जो देहातोंमें चर्खा और कर्घा चला सकते है। हम आरामसे अपने लिए कपडा तैयार कर सकते है। न उनके लिए शोरगुलकी जरूरत है, न मोटर-लारियोंकी। पुराने जमानेमें हमारी रेलवेका पहला काम फौजकी सेवा था, दूसरे नंबरपर बंदरगाहोपर रुई ले जाना और बाहरसे बना कपड़ा भीतर ले आना। जब हमारी कैलिको, जिसे खादी कहते हैं, देहातोंमें बनती है, और वही खपती है, तब इस केंद्रीकरणकी कोई जरूरत नही रहती। अपने आलस्य या अज्ञान अथवा दोनोंको छिपानेके लिए हम अपने देहातोंको गाली न दे।

: २०० :

६ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

आज भी मैंने सुना है कि कई आदमी मुसलमानोंके घरमें जानेकी कोशिश कर रहे हैं। तो पुलिस अपना फर्ज अदा करती है और रोकने-

की कोशिश करती है। पुलिस आखिर क्या करे? वह अश्रु-गैस चलाती है। आज मैंने सुना कि पुलिसकी तरफसे ऐसी कोशिश हुई। यहा काफी जगह है। दिल्लीमें तो जगह नही है ऐसा तो नही है। हा, यह है कि दुःखी लोग परेशानीमे पड़े है। वे लोग आकाशके ही नीचे रहे, यह तो ठीक नही है। पानी पड जाता है उस समय उनके और आकाशके बीच सिर्फ कपडा रहे तो वह काफी नही है। इसलिए परेशानीमे वे लोग सब कुछ कर लेते हैं। अगर सचमुच इतनी ही बात है तब तो उन्ही घरोमें जाय, मुसलमानोंके ही मकानोका कब्जा लें, यह जमता नही है। तब मैंने एक भाई को कह दिया कि यह बडा मकान है। इसमें तो काफी लोग आ सकते है, मुझको निकाल दो, एक बीमार औरत है उसको भी निकाल दो, पीछे मालिकको निकाल दो, इसको मैं समझ सकता हूं। तो वह भाई कहता है कि तुमको तो मिल जायगा, लेकिन हमको कहां मिलेगा! मै तो कहता हूं कि वे ऐसा करें, लेकिन कब? जब उनके पास जितना इलाज है, वह न चले और दिल्लीवाले कुछ न करे तब। इसको मै समझ सकता हूं। तब मैं उनमें कुछ शराफत पाऊंगा, लेकिन जिनको हमने डरा रक्खा है या जो भाग गए है, उनके घरोपर कब्जा कर लें या जिनके नजदीकके घर खाली हो गए है, उनके घरोपर कब्जा कर ले या उनके घरोंमें बैठना चाहे तो वह अच्छी बात नही है। उससे हमारी भलाई नही हो सकती, शरणार्थियोकी भी भलाई नही हो सकती। हिंदू, मुसलमान, सिख या हिंदुस्तान, किसीकी भलाई नही हो सकती।

आज तो पुलिसने ऐसा किया कि किसी-न-किसी तरहसे उन लोगोको कुछ मकान दे दिए, लेकिन उन लोगोंने कहा कि ये मकान नही चाहिए, हमें तो वे ही मकान चाहिए। तो मैं यों कहता हूं कि साफ कह दो कि हमें वहां मुसलमान नही चाहिए। यह शराफत तो नही है, लेकिन इतना तो होगा कि टेढ़ी तरहसे निकालनेके बदले सीधे तौर से निकाल दें। साफ-साफ कह दो कि हम पाकिस्तानमें हलाक हो गए है तो हम तुमको भी हलाक करेंगे। हमको तुम्हारा एतबार नहीं है। इसको तो मैं समझ सकता हूं, लेकिन आज जैसा हो रहा वह पागलपन है।

हमारे मुल्कमें बदकिस्मतीसे ऐसा हो गया है कि बिना सोचे-विचारे

कई काम इधर-उधर ऊटपटांग कर बैठते हैं। लोग कुछ ऐसा समझते हैं कि हमारा मुल्क आजाद हो गया है, हमारा राज हो गया है तो हम जैसा चाहें वैसा करें। बंबईसे खबर आई है कि वहां सल्तनत बडी मुसीबतमें पडी है। बंदरगाहके मजदूरोंने हडताल कर दी है। इस तरह-की हड़तालसे हम मरनेवाले है। इससे जो मजदूर हडताल करते हैं उन-का भी कोई भला नही होनेवाला है। उसमें चाहे किसी दलका हाथ हो, चाहे कांग्रेसका हो या समाजवादी दलका हो, या कम्यूनिस्टका हो या और किसी दलका हो, मुझे इसकी परवाह नही है। मै तो सबके लिए कहूंगा कि इस तरहसे कारोबार नहीं चलेगा। ऐसा करनेसे हम मरनेकी कोशिश कर रहे है। आज हमारे देशकी स्थिति नाजुक है, इसलिए हमे तो ऐसी कोशिश करनी चाहिए, जिससे हम बच जाय।

मुझको औंधसे वहांके महाराजा साहबने लिखा है। औंध महाराष्ट्र-में एक छोटी-सी रियासत है। उन्होंने तो जब अंग्रेजी सल्तनत थी तभी-से अपनी रियासतका सब काम वहाके लोगोंके हाथ सौप दिया था। उन-के और उनके पुत्रके दिलमें हुआ कि प्रजाकी सेवा करनी चाहिए तो उन्होंने वहांके लिए खासा निजाम बना लिया, पंचायत राज बना दिया और सत्ता उसके सुपुर्द कर दी। तो महाराजा साहब लिखते है कि सब ऐसा कहते हैं कि आप अकेले ऐसा नही कर सकते, सब करे तब आप करें। उन्होंने हिंदुस्तानमें अपनी रियासतको मिलानेका तय तो करीब-करीब कर ही लिया है, तो भी राजा तो रह जाते है, लेकिन लोगोंका दास होकर रहते हैं, लोग उन्हें जितना दें उतना ही वे ले सकते है। खालसा हो गया है, उसके माने यह हैं कि जैसी रैयत है वैसा ही राजा है। उन्होंने ऐसा कर दिया है। सरदार साहबने उड़ीसासे शुरू किया कि राजा लोगोंको भी कुछ पेंशन दे दी जाय, काम करें चाहे न करें। औंधके राजा साहबको भी पेंशन दे दी जाय और बैठ जायं तो इसे मैं अच्छा नहीं समझता। हां, वे दखल न दें। वे कहते है कि पंचायत राज दे दिया है तो उसके मुताबिक रियासतमे काम चल सकता है या नहीं; क्योंकि उनसे कहा गया है कि हिंदुस्तानसे जसी अन्य मिली हुई रियासतोंमें काम चलेगा वैसे ही वहां चलेगा. अलग

कानून नही हो सकता। मैं तो कहूंगा कि उसमें कानूनकी जरूरत नहीं। क्यों? क्योंकि राजा तो है नही, तो कानून कौन बनाए। मै तो कहूंगा कि जब हमारी हकूमत है—वह खालसा तो है ही, पंचायत है—उनका हक तो कोई एक आदमी छीन नही सकता, तब उसमे डरनेकी क्या बात है! सच्चा हक तो वही है जो छीना नही जा सके। वह तो धर्मके अमलसे पैदा होता है। उनका यह धर्म हो जाता है कि वे अपना फर्ज अदा करे। अगर कुछ लोग मिल जाते है और कोई गिरोह बना लेते हैं तो भी क्या? पूछना क्या था? पंचके मार्फतसे न्याय करेंगे। जो अदालतें बनी है उनमे नहीं जायंगे। अपने आप सब कर लेगे। वहा ज्यादा लोग गुनाह नही करते है—थोडे आदमी करते है। जो करते है वे भी पचायत के बाहर जानेवाले नही है। सभी लोग ऐसा ही चाहते हैं। इसका नाम सचमुच प्रजासत्ता या प्रजाराज है। प्रजासत्ता बन गई इसका मतलब यह नही हैं कि राज दिल्लीसे चले। अगर वैसी सत्ता बन जाती है तब तो वह प्रजाके मार्फत ही बनेगी और उसमे देहातके लोग रहेगे। ऐसी जो पचायत है वह काम चलाए। उसमे दखल देनेकी गुजाइश नहीं। उसमे कोई दखल दे नही सकता। दखल देनेका कानून भी नही बनाया जा सकता; नही तो वह लौकिक राज या पंचायत राज नही होगा। तलवारके जरिए पंचायत राज नही हो सकता।

तीसरी बात मै और अभी कह देना चाहता हूं। एक भाई लिखते हैं—वह खासा खत है, हिंदुस्तानीमें है—कि सच्ची चीज तो ऐसी है कि जो मुल्क हमेशा सुखी है वही राम-राज्य हो सकता है। बाहरके मुल्कसे कोई माल लेता नही है, ऐसा नही है, लेकिन उतना ही लेना चाहिए जितनी कीमतका माल हम भी भेज सकें। तब हिसाब सीधा हो जाता है। अगर हम बाहरसे माल खरीदनेसे पचास रुपए खर्चे तो उतना बाहरसे भी आना चाहिए, तब तो ठीक है। वह कहते हैं कि हमारा मुल्क हमेशा ऐसा रहा नहीं है। हमेशा हम कर्जदार रहे है। अभी ऐसा हो गया है कि हम लेन-दार हो गए है, लेकिन कबतक रहेगे अगर हम अभी खर्च ही करते रहें? कहनेका मतलब यह है कि हम बाहरसे उतना माल मंगाते नहीं रहें जितना हम भेजते नहीं। अगर भेजते है तब ठीक हो जाता है, लेकिन

नकद भेजकर मगाते है तो ठीक नहीं। आज तो हमें ऐसा करना चाहिए कि बाहरसे जो माल मंगाते है वह ज्यादा होना ही नही चाहिए—हम बाहरसे कम माल मंगाएं और ज्यादा भेजे तब तो हमारा देश लेन-दार देश हो सकता है, तव हमारी जमा बढ जाती है, यानी हमारे पास ज्यादा पैसे हो जाते है। अगर हम ऐसा कर सकेंगे तब हम जो काम करना चाहते हैं कर सकते है, नही तो नही।

एक बात यह है कि हम बाहरसे जो मगवाते है वह हमारे कच्चे मालका पक्का माल बनकर आता है। इससे हमारा सिलमिला बदल जाता है। हमे तो अपने देशको ऐसा बना लेना चाहिए कि बाहरसे मग-वानेकी जरूरत ही न रहे। मगर मगवाते है तो दूसरोकी सहायता करनेके लिए। कोई कहे कि हमको कुछ पैसेकी दरकार है तो भेज दो। वह ठीक कहते हैं कि ऐसे ही अमरीका बना है। हमे अमरीका-जैसे नही बनना है; लेकिन हम इतना तो कर लें कि हम बाहर ज्यादा भेजे नही तो बाहरसे मंगवाएं भी नहीं। तभी हमारी खैर है।

: २०१ :

७ जनवरी, १६४८

भाइयो और वहनो,

अभी सुना है कि विद्यार्थी लोग हडताल करनेवाले है—वह ६ तारीखसे शुरू होनेवाली है। मुझको इसके बारेमे इतना ही कहना है कि यह बहुत गलत बात है। इस तरहसे हडताल करना और उससे अपना काम निकालना कोई बेहतर चीज नहीं है—यह अहिंसक चीज तो है ही नही, इसके बारेमें मेरे दिलमें कोई संदेह ही नही। मैने बहुत अहिंसक हड़ताल कराई हैं। हरएक हड़ताल अहिंसक है या हरएक हड़ताल उचित है, यह नही कहा जा सकता। विद्यार्थी जब विद्याभ्यास करते है तब उनको हड़ताल क्या करना था और इस तरहसे तो हमारा काम बिगड़ता है। अगर वे लोग मेरी प्रार्शना मानें तो अच्छी बात है। इसके बारेमें भी कहूंगा कि अनुभव लेते हुए मुझे करीब पचास वर्ष हो

गए। यह अनुभव हिंदुस्तानमें नही, दक्षिण अफ्रीकासे शुरू किया और कामयाब हुआ। मुझे ऐसा कोई ख्याल नही है कि जिसमे पड़ा उसमे कामयाव नही हुआ। ऐसा हो ही नही सकता। अगर वह सचमुच न्याय है और उसके सिवा कोई दूसरा चारा नही है तो कामयावी मिलती ही है।

मेरे पास आज पजाब, सिध, सरहदी-सूवा और कहा-कहा के नही थे—सब जगहके भाई आ गए थे, लेकिन सब पाकिस्तानवाले थे। प्रतिनिधि मिलने आए। सब थोडे आ सकते थे। वे अपने दुःख की कहानी सुना रहे थे। कहते थे कि आप इसके बारेमें दिलचस्पी क्यों नही लेते है। बात तो यह है कि वे बेचारे कहांसे जान सकते है कि मै क्या कर रहा हूं। मै तो यहा इसी काम मे बैठा हू कि किसीके पाससे करवा सकता हूं तो करवाऊं। आज तो मेरी दीन हालत हो गई है। एक जमाना था, जब कि मैंने कहा कि ऐसा होना चाहिए तो हो जाता था। आज ऐसी बात नही रही। मैं तब भी एक अहिसक सेनापति था—अब जब कोई मानता नही है तो सेनापति कैसा? वह जमाना चला गया। लेकिन उस जमानेमे भी मैंने ऐसा कभी दावा नही किया कि मै जो कहता था उसको सब मानते थे, लेकिन लोग मानते थे. जगत मानता था। आज मेरी बात कौन मानते है, मैं नही जानता हूं। मै जो आज कहता हूं वह अरण्यरोदन है; लेकिन धर्मराजने तो ऐसा कहा है कि अकेले रहनेपर भी क्या हुआ; धर्मकी बात तो करनी ही चाहिए। लोग कहते है कि हकूमत है, उसमें तो तुम्हारे दोस्त है, तो तुम जो कहोगे उसको तो वे लोग माननेवाले हैं। उसके मुताबिक उनको चलना ही चाहिए। बात सच्ची है—वे मेरे दोस्त हैं; लेकिन मेरे कहनेके मुताबिक वे क्यों चले? आप सब मेरे दोस्त है। है, इसका मतलब ऐसा थोडा है कि मै जैसा कहू वैसा करें। दिलमें घुसता है, जमता है तब करे और न करे तो आलसी है। हकूमतमें मेरे दोस्त हैं तो उनसे बहस करूंगा और कहूंगा। मान जाएंगे तो अच्छा है, नही तो मै लाचार हू। वे लोग मुझसे कह सकते है कि हकूमत चलानेमे कई मुश्किलोंका सामना करना पड़ता है, तुम भी हकूमत चलाओगे तब भी वैसा नही कर सकोगे। हकूमतमें आज जो मेरे दोस्त हैं वे करे, पीछे उनके सेक्रेटरी हैं वे भी मेरे दोस्त है, क्योंकि वे लोग जानते है कि मैं

किसीका शत्रु नही है, वे माने, पुलिस है वे भी मानें तो पीछे क्या चाहिए ? अगर इस तरहसे हो तो आज जो हिंदुस्तानमें हो रहा है वह होनेवाला नही था। हकूमत कह सकती है कि हमारे पास ऐसे सिपाही, कारकून, कहां है ? जो अंग्रेजोंके जमानेमें थे वे ही है। निकल जाएं तो भी काम नही चलता है। ऐसा उन्हें कहनेका अधिकार है। चाहे कुछ भी हो, मै आज जो चाहता हू वैसा करवा नही सकता हू। मैं तो आप लोगो-जैसे मिस्कीन हू। मै परमेश्वर तो हूं नही। मेरी जितनी ताकत है उतना करता हूं।

तो भी वे लोग कहते है—ठीक कहते है—कि इसके बारेमे हम क्या करें। रहनेके लिए कुछ तो होना चाहिए, पहननेको चाहिए और खानेके बारेमें होना चाहिए—तीनों चीजे चाहिए। मेरे पास हैं तब उनके पास क्यों नही होनी चाहिए—सबके पास क्यो नही होनी चाहिए। उन लोगोंने कोई गुनाह किया है, ऐसी बात नहीं है। शरणार्थियोंने कोई गुनाह नही किया है, उन लोगोंने मारा नही है, पीटा नही है, हकीकतमे उन्हें डराकर, मार-पीटकर, भगा दिया है। वे इस तरहसे है, बेगुनाह है। मेरे भाई है, बहन हैं, उनपर ऐसा दबाव डाला जाय, अन्याय हो और यहां आनेपर भी आरामसे नही रह सके तो उन्हे ऐसा कहनेका हक है है कि तुमको तो सब मिलता है, हमको नही मिलता है, यह कहांका न्याय है ? मुझको यह कबूल करना होगा कि यह अन्याय है। तो वे क्या करें ? यह तो मैने बता दिया है। किसीके मकानमें जाकर बैठ जायें, यह कहांका तरीका है ? हमला करनेका तरीका मैने बता दिया है, अहिंसक हमला करें। किस घरपर हमला करें, यह भी बता दिया है।

मैं तो कहता हूं कि आप सीधी बात करें और कह दें कि जो काम हमको दिया जायगा उसको करेंगे—आगे न चले तो बात दूसरी है। जैसे एक आदमीको लिखनेका काम दिया, लेकिन लिख नही सकता था तो क्या करे ! एकको कुदाली दी वह कहे मुझसे कलम चलती है, इसलिए मुझको वही दो। ऐसा मैं नहीं सुन सकता हूं। जो काम दिया जाय उसको करना चाहिए। इसी तरहसे जिस जगह मकान दिया जाय, तंबू दिया जाय, उसमें रहें। घास-फूसके जो मकान दें उनमें भी रहना

चाहिए। हां, मकान होना चाहिए—ऊपर छत होनी चाहिए। मैं उसमें रहा हूं, इसलिए कहता हूं। चारपाईकी कोई दरकार नही। मै तो बताता हूं कि घासमें—हरी घासमें नहीं, सूखी घासमें—भी कोई भी आदमी आरामसे सो सकता है। उसमें हर्ज नही होता है। रुईवाले गद्देमें सोनेसे जितनी गर्मी मिलती है, उतनी गर्मी सूखी घासमें भी मिलती है, यह मैं तजुर्बेकी बात कहता हूं। किसी एकके पास गद्दा है तो मुझको भी गद्दा चाहिए, नही तो वैसे ही पडा रहूंगा, ऐसा कहना नादानी है। जो मिलता है उसको ईश्वरका अनुग्रह मानकर ले लें, तब तो सब काम हो सकता है। ऐसा करे तो आज जो हमारे साथ चंद लाख शरणार्थी पडे है, उतना ही नही, अगर करोड भी हों तब भी काम अच्छी तरह चल सकता है। यहां काफी जगह पडी है। सीधी वात यह है कि उनका दिल साफ होना चाहिए। लेकिन होता है उल्टा।

आपने देखा होगा कि कराचीमे क्या हो गया। लोग कहते थे कि सिंधमें ऐसा नही हुआ है, हो नही सकता है। मै तो कहता था कि सिंध-मे हिंदू आरामसे रह नही सकते, हिंदूके सिवा दूसरे भी नही रह सकते, उनका भी रहना दुश्वार है—हिंदू और सिख वहां रह नही सकते। वे वहांसे निकलनेके लिए गुरुद्वारा आए थे। तो गुरुद्वारापर हमला शुरु कर दिया, उनपर हमला हुआ, चंद आदमी मारे गए, चंद जख्मी हुए। इस तरहसे सिंधमें हुआ। हकूमत कहती है कि हालत जितनी जल्दी काबू-में की जा सकती थी, कर ली गई। ठीक है; लेकिन मैं इस चीजको इसलिए कहता हूं कि ऐसा होना ही नही चाहिए था। मै पाकिस्तानकी हकूमतको कहूंगा कि या तो ऐसा होने नही देना चाहिए, नहीं तो हकूमत छोड देनी चाहिए। हां, ऐसा करनेसे कुछ दिन लुटेरोंका राज कायम हो जाएगा; लेकिन पीछे हालत सुधरने लगेगी। जो मै वहांकी हकूमतको कहता हूं वही बात यहांकी हकूमतको भी कहता हूं। मैं हकूमतकी ऐसी बात नही सुनना चाहता कि लोग नहीं मानते हैं। मैं कहूंगा कि लोग नहीं मानते हैं तो आप हकूमत मत चलाइए। हकूमत अगर कहे कि मजबूरी है तो मैं कहूंगा कि मजबूर होनेकी क्या जरूरत है। थोड़ा यहां किया, थोड़ा वहां किया, मनको फुसला लिया कि सब

चलता है। तो इससे काम बनता नही है, ऐसा मेरा तजुरबा है। हां, मै ऐसा मान सकता हूं कि गाडी हमारी चल तो रही है चाहे वह एक ही कदम आगे गई हो। लेकिन आज तो यह पीछे जा रही है, वह खराब है। पाकिस्तान-की हकूमतको कहता हू तो यहाकी हकूमतको न कहू, यह बात नही हो सकती। मेरे लिए तो दोनों बराबर है।

अगर पाकिस्तानकी हकूमत इस तरह लोगोको मरने देगी तो उससे बेहतर है कि हकूमत चलाना छोड दे। सो नही होता तो हकूमतको भी मरना है। मै आप लोगोंको भी बता देना चाहता हू कि इसके कारण आप दीवाने न बने। दु:खी है तो गुस्सेसे भरे है—गुस्सेके सिवा ऐसा बन नही सकते। इस गुस्सेको पीना इन्सानियत है। गुस्सेका जवाब गुस्से-से दे और कहे कि कराचीके गुरुद्वाराने ऐसा हुआ तो हम भी मस्जिदों-को ढा डाले, उनपर कब्जा कर ले, पीछे मुसलमानोको मार डाले, यह न्याय नही है। इस तरहसे बदला लेनेसे हकूमत रहती कहा है! हकूमतका काम इस तरहसे चलता नही है। ऐसा करनेसे आखिरमें हमे बिगडना होगा। हा, शरणार्थियोके लिए इन्सान जितनी सहूलियतें पैदा कर सकता है, करना चाहिए, नही तो शर्मकी बात है। कराचीमे ऐसा हो गया, उससे न डरना है, न घबराहटमे पडना है और न गुस्सा करना है। उसका बदला हम ऐसे ले सकते है कि हम अच्छी तरहसे रहें, मुसलमानोंको रखे और शरणार्थी सभ्यतासे रहे तो आज जो दर्द पैदा हो गया है उसको हम मिटा देने वाले है, इसमे मुझे कोई शक नही है।

: २०२ :

८ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

अभी एक भाई लिखते है कि मैंने हरिजनों को शराबके बारेमें लिखा था। मैने तो हरिजनोके लिए ही नही, सबके लिए लिखा था। वे लिखते है कि क्या हरिजनोंको शराब छोड़ देनी चाहिए और पीछे

फौजी पड़े हैं, धनिक पड़े हैं उनको क्या छोडनेकी जरूरत नही है ? सच्ची बात यह है कि यह प्रश्न पूछने लायक नही है। धनिक न छोड़ें, फौजी न छोड़ें तो क्या दूसरे भी न छोड़ें ! कानून भी न हो कि शराब न पीए तो वह धर्म थोडे हो जाता है। दूसरे पाप करे तो क्या हम भी पाप करे; ऐसा बन नहीं सकता है। वे पूछते है तो मैं कहूगा कि इस तरहसे जो शराब पीते है उनको तो छोडनी ही चाहिए। हरिजन हैं, मजदूर है वे इसे समझ नही सकते तो कानून बताता है कि मत पीओ। उनके पास आरामकी चीजे नही रहती है तो शराब पीकर दर्द दूर करना चाहते है। कगालपन है उसको भी वे इसीसे भुलाना चाहते है। इस तरहसे उनके ऐसा करनेका कुछ सबब हो सकता है; लेकिन धनिक है, फौजी है उनको पीनेकी क्या जरूरत है ? मै धनिकोंको क्या समझा सकता हूं ? फौजी कहें कि इसके बिना काम कैसे चल सकता है; लेकिन मै तो फौजको मानता ही नहीं हू तो फिर इसको क्या माननेवाला हूं ! मेरे दोस्त भी पडे हैं जो शराब नही पीते है। हमारे यहा सब पीते है, ऐसा नही है। सब फौजी पीते है ऐसा भी नही है। अंग्रेजोंमें भी ऐसे पडे है जो शराब नही पीते। ऐसे थोड़ा है कि मै चाहता हू कि हरिजन ही छोड दे। मैं तो कहता हूं कि सबको छोडना चाहिए। कानूनकी बात तो सबके वास्ते है। कानून थोड़े कहता है कि धनिक पी सकते हैं और हरिजन नही।

अभी विद्यार्थियोंकी हडतालकी बात करना चाहता हूं। सुनता हूं कि कांग्रेसके विद्यार्थी हड़तालमें शामिल नही होंगे। यह तो कम्यूनिस्ट विद्यार्थियोंकी हडताल है। विद्यार्थियोंमे सब होते है—कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट, कांग्रेसी—इससे मेरा वास्ता नही है। मै तो सबके लिए कहता हूं। कांग्रेसके विद्यार्थी हड़ताल नही करते है तो वे धन्यवादके पात्र हैं। कम्यूनिस्ट हडताल कर सकते है, ऐसा थोड़ा है। जैसे शराबके बारेमें कहा है, वैसा यह भी है। कांग्रेस क्या, मै तो सबको कहूगा कि उन लोगोंको ऐसा नही करना चाहिए। मुझको दर्द होता है कि कम्यूनिस्ट भाई ऐसा कर रहे हैं। कम्यूनिस्ट भाई होशियार होते है, वे देशकी सेवा करना चाहते हैं, लेकिन इस तरहसे देशकी सेवा नही हो सकती। फिर

विद्यार्थी किसी दलका पक्ष क्यों लें—'विद्यार्थियोंका पक्ष एक है। विद्यार्थी तो विद्याभ्यास करते हैं सारे मुल्कके लिए—अपने कामके लिए नहीं, अपना पेट भरनेके लिए नही। अपना काम निकालनेका तो दूसरी तरहसे हो सकता है—पहले ऐसा होता था, आजतक ऐसा होता था, लेकिन अब तो बागडोर हमारे हाथमें आ गई है तो विद्यार्थी ज्यादा चाहिए और सच्चे विद्यार्थी चाहिए। उनको सबकी सेवा करनी चाहिए, विद्याभ्यास करना चाहिए, उनको उसको हजम करना चाहिए, उसपर अमल करना चाहिए। विद्यार्थियोंके लिए समाजवाद है नही; कम्यू-निज्म है नही, कांग्रेस है नही—उसका एक काम है विद्याभ्यास करना, जिससे ज्ञानकी वृद्धि हो। हडताल उनके लिए निकम्मी है—यह सबके लिए घातक है।

एक प्रश्न आ गया है, अच्छा हैं। वे लिखते है कि आप तो बुरी वस्तुका त्याग करवाना चाहते हैं, आप भी करते है, यह अच्छी चीज है। तो वे कहते है कि आप पाकिस्तानमें जाकर क्यों नही करते? वहां सत्या-ग्रह क्यों नही चलाते? यहा तो काफी कह दिया, अब वहा तो जाओ। मैंने तो इसका जवाब दे दिया है। हां, सत्याग्रह करनेका जवाब नही दिया है। मैने तो कह दिया है कि मैं किस मुहसे पाकिस्तान जा सकता हूं। यहां हम पाकिस्तानकी चाल चलें तो कैसे बन सकता है!

ऐसा आप पूछते हैं तब जवाब देता हूं। मैं पाकिस्तान तभी जा सकूंगा जब हिंदुस्तानमें साफ हो, कहने लायक कुछ चीज नही हो। मुझे तो यहां करना या मरना है। दिल्लीके हिंदू, सिख पागल हो गए है। वे चाहते है कि यहांसे सब मुसलमानों को हटा दिया जाय, काफीको हटा भी दिया है। बाकी बचे हैं वे भी हटा दिए जाएं। ऐसेमें मेरा जाना फजूल है। वहां पाकिस्तानमें जितने हिंदू, सिख पड़े है वे आना चाहते है तो सत्याग्रह कौन करे? आज सत्याग्रह कहा रहा? सत्याग्रह नहीं तो अहिंसा नही। अहिंसाको आज कौन मानता है? सब हिंसाको मानते हैं। सब फौज मांगते है और जब यह मिले तो तब राजी हो सकते हैं, चैनसे बैठ सकते हैं, नही तो चैनसे नही बैठ सकते। आज ऐसा हो गया है कि ईश्वरका स्थान फौजको मिल गया है। इसका मतलब यह है कि लोग

हिंसाके पुजारी हो गए हैं। तो हिंसाके पुजारी होते हुए सत्याग्रह कैसे चलाएं ? मेरी सुनें तो अखबारोंकी शकल बदल जाय। आज हमारे अखबार भी काफी गंदगी फैला रहे हैं। आज तो हम सत्याग्रहको भूल गए हैं। वह हमेशा चलनेवाली चीज है, लेकिन चलानेवाले सत्याग्रही नही हैं।

फिर वह भाई कहते है कि जब पाकिस्तानसे इतने हिंदुओं और सिखोंको यहां हटा लिया तब मुसलमानोके लिए जगह कहां है ? जबतक उतने मुसलमानोको यहासे हटा नही देते तबतक उनको कहा रखोगे ? तो जितने हिंदू और सिख पाकिस्तानसे आए है उतने मुसलमान तो यहासे वहां जायं। मै ऐसा मानता हूं कि करीब-करीब उतने मुसलमान तो चले गए। बाकी पड़े है। पाकिस्तानसे सब हिंदू और सिखोंको हटानेकी चेष्टा हो रही है, इसलिए यहांसे सब मुसलमानोंको हटाया जाय, यह पागलपन है। यहां मुसलमानोंकी काफी तादाद रह जाती है। इसलिए मौलाना साहबने लखनऊमें सम्मेलन बुलाया। वहां, कहते हैं, कम-से-कम सत्तर हजार लोग आ गए थे—काफी तादाद हो गई। इस जमानेमे मुसलमानोंकी इतनी बडी सभा नहीं हुई। उसके बारेमे भली-बुरी बातें निकलती है। उनको मै छोड देता हूं। यहां जो मुसलमान पड़े है उनके प्रतिनिधि उसमे गए। क्या हम इन मुसलमानोंको मार डालें या पाकिस्तान भेज दें ? भेजे तो किस वास्ते ? यह समझने लायक चीज है। आज मै यही कहूंगा कि ऐसा कहना कि मुसलमानोंको यहासे हटा दें, मुझको लज्जास्पद बात लगती है। मेरी जबानसे ऐसी चीज निकलनेवाली नही है। इसमें कोई बहादुरी नही है। तो हिंदुस्तानमें सांप्रदायिकता फैल गई ऐसा कहना पडेगा। ऐसा दुनियामें कहां नही है ? है, तो भी मुझको परवाह नही है। दुनियाकी बुराइयोंकी नकल थोड़ी करनी है, हमें नेकियोंकी नकल करनी है।

आज मेरे पास बहावलपुरके काफी लोग आ गए थे। मीरपुर कश्मीरके लोग भी आ गए थे। वे परेशान है। वे अदबसे बातें करते थे। वे बैठे थे, इतनेमें पंडितजी आ गए। तो मैने पंडितजीको कहा कि इनकी बातें सुन लें। मीरपुरवाले पंडितजीसे बातचीत कर गए। मेरी

उम्मीद है कि कुछ-न-कुछ हो जायगा। पूरा हो जायगा, ऐसा मैं नही समझता हूं। आज लड़ाई छिड तो नही गई है, लेकिन एक किस्मकी चल रही है। तब ऐसा रास्ता निकालना और सबको एकाएक लाना हो नहीं सकता। जितना हो सकेगा, करेंगे, ऐसा मैं मानता हूं। इतना करनेपर भी अगर कोई न बच सका, ना लाया जा सका तो क्या करे। हमारे पास, जितना चाहिए, उतनी गाडियां नही है। आज तो काश्मीरका रास्ता इतना नही खुला है कि लाखों आ-जा सके। है, थोडा-सा रास्ता है, उस रास्तेसे इतनी तादादमें लाना मुश्किल है।

बहावलपुरकी बात सुनने लायक है। वहाके जो लोग आज मुझसे मिले, उन्होंने बताया तो मैंने कहा कि मेरेसे जितना हो सकेगा कोशिश करूंगा। वे लोग कहते हैं और ठीक कहते है कि जो सूबेसे आए वे भी शरणार्थी और बहावलपुर रियासतसे आए वे भी शरणार्थी, लेकिन सूबेसे आए वे तो नौकरीके लिए दरखास्त कर सकते हैं—ऐसा सिलसिला हो गया है कि नौकरी वगैरा दिलानेके लिए नाम रजिस्ट्री करवाते है—तो हमारा नाम क्यों न उसके लिए दर्ज किया जाय? इतनी तकलीफ हम क्यों गवारा करें? मै समझता हू कि ऐसा है नही और होना नहीं चाहिए। लेकिन वे लोग कहते है—अच्छे आदमी है तो मैने कहा कि पता लगाऊंगा। हकूमतमे ऐसे पडे है, उनके पास सब पहुच नहीं सकते है। मेरे पास तो सब आ सकते है। मै तो इसी कामके लिए पड़ा हू। मेरा दूसरा काम नही है। तो वे सब आ गए थे, सब अदबसे बातचीत करते थे, वहशियाना बात नहीं करते थे। वे कहते थे कि ऐसा नहीं है तो ठीक है, लेकिन हम इसको बर्दाश्त नही करेंगे। हम कुछ नही है; क्योंकि हम रियासतसे आए और खालसासे आते तो बात दूसरी थी। यह कहांका न्याय है? सरहदी सूबा, पंजाब, सिंधसे आते है उनकी दरखास्त ली जाती है, नही तो नही। मैंने कहा कि ऐसा हो नही सकता। अगर हुआ है तो गलतीसे हुआ है। सरदारने कहा कि ऐसा हो नही सकता और हुक्म भी यह निकाला तब भी नही होता है। है कि नही, मैं पता लगाऊंगा; लेकिन मुझको लगा कि इतना भी कह दूं तो इतमीनान हो जायगा कि चलो, हमारा काम भी चलता है।

: २०३ :

९ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

आज बहावलपुरके मदिरके मुखिया मुझसे मिलने आए थे। उन्होंने मुझसे बताया कि वहां उस मदिरमे शरणार्थियोको किस तरह मारा गया। उन्होंने कहा कि अब वहाके बचे हिदुओंको लानेके लिए कुछ प्रबध होना चाहिए। तो मैने कहा कि एक इन्सानसे जितना हो सकता है कर रहा हूं। आज हकूमत दो हो गई तो दो राजा हो गए है, इसलिए इस राज्यको उस राज्यमे दखल देनेका ऐसा कोई हक नही है। आजका समय इतना नाजुक है कि लोगोमे धैर्य होना चाहिए और लोगोको मरनेसे डरना नही चाहिए; क्योकि आज नही तो कल आखिर मरना ही है तो बहादुरीके साथ क्यो न मरे ? (सत्याग्रहीकी तरह क्यों न मरे ?)

एक भाईका पत्र आया है। वे कहते है कि आप बिड़ला-भवनमें है तो भी प्रार्थना तो होती ही है; लेकिन गरीब वहा नही जा सकते। पहले भंगी बस्ती या वाल्मीकि-बस्तीमें रहते थे, उसमे गरीब भी जाते थे; लेकिन अब उनको बिड़ला-भवनमें जानेका मौका नही मिलता। मेरा तो खयाल है कि मै जब यहां आया था तभी इसके बारेमें कह दिया था, लेकिन आज दुबारा कहनेकी आवश्यकता है। मैं अबकी बार जब यहां आया उस समय मार-पीट हो रही थी। दिल्ली स्मशान-सी लगती थी। उस समय भगी-बस्तीमें शरणार्थी भी पड़े थे। फिर उस समय कहांपर क्या होगा कोई नही जानता था। तो सरदारने कहा कि हम तुमको वहां नहीं रखेंगे, बिड़ला-भवनमें रखेंगे, तो मैं यहां आ गया। मैने कहा कि मैंने ऐसी कोई शपथ थोड़ी ले ली है कि मैं हर हालतमे वही रहूंगा। मुझको किसी जगह एक कमरा देते तो उससे गुजर हो नही सकती; क्योंकि मेरे साथ दफ्तर रहता है, रसोई-घर रहता है, और भी लोग रहते हैं। भंगी-बस्तीमें गरीबोंके मकान है, फिर उसमें स्कूल है, उसमें एक कमरा मिले तो काम चल नहीं सकता। इसलिए वहां कैसे जाऊं ? मैं यह भी नहीं जानता

कि आज वह खाली है या नहीं। लेकिन मैं समझता हूं कि वहां रहनेका मेरा धर्म नही है। मैं चला जाऊं पीछे शरणार्थी आएं तो उनको कहां रखोगे—रखना तो है ही। मैं रहूंगा तो कोई निकलेगा नही, निकाले तो अच्छा है। वे कह सकते हैं कि तुम भाग जाओ, यहां रहनेका तुम्हारा क्या अधिकार है, हम बाहरसे आए हैं। इसलिए मुझको अपनी मर्यादा समझनी चाहिए। मुझे वहां रहनेका शौक है, लेकिन शौक छोड़कर यहा पड़ा हूं। फिर ऐसा नहीं है कि गरीब यहां नहीं आ सकते। ऐसी मनाही नहीं है, लेकिन मैं मानता हूं कि इतनी दूरसे नहीं आ सकते। वे अगर आना चाहते हैं तो पैदल ही आ सकते हैं, मोटरसे तो गरीब आ नही सकते। अमीर मोटरसे आ सकते है।

फिर आज मैं यहां पडा हूं तो मुसलमानोंको तो कुछ मदद पहुंचा सकता हूं—उस कामके लिए मेरा यहां रहना बड़ा मुफीद है। मैं यहां रहता हूं तो हकूमतके लोगोसे जल्दी मिल सकता हूं, क्योंकि वे पासमें रहते हैं—वे मुझको नही बुलाते है, खुद आ जाते है, यह उनकी मेहरबानी है। वे लोग यहां दो मिनटमें आ जाते हैं। भंगी-बस्ती जानेमें दस-पंद्रह मिनट लगते हैं। इसलिए यहां पड़ा हूं। मुसलमान भाइयोंको भी यहा आनेमे सुविधा है, वहां जानेमे डर रहता है। आज जो रह गए है उनको बचा लें तो अच्छा है। आज तो जिधर सुनता हूं उधर ऐसा हो रहा है कि एकाएक लुटेरे निकल आते हैं और कोई आदमी बाइसिकलमें बैठा हो तो उसको उतार देते हैं और उनके पास जो कुछ पैसा, रुपया, घड़ी रहती है उसको ले लेते हैं। कोई मोटरमें रहता है उसको भी रोककर उसके पाससे सब छीन लेते हैं। हम आज ऐसे बन गए हैं। यह हमारे हिंदुस्तानके लिए शर्मकी बात है।

: २०४ :

१० जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

यह देखने लायक बात है कि आज हम कहांतक गिर गए हैं। साधु होनेका, संयमका, गीता आदि पढनेका जो दावा करते है, वे इतना संयम क्यों न रखें ? उन्हें एक बार कहनेसे ही बैठ जाना चाहिए। इतनी दलील भी क्यों ? आजकल प्रार्थना-सभामें आमतौरसे सब लोग इतनी शांति रखते है वह अच्छा लगता है।

बहावलपुरके भाइयोंकी भी ऐसी ही बात है। अपने दुःखकी बात कहिए, फिर प्रार्थनामें शांत रहिए। मुझसे किसीने कहा था कि बहावलपुरवाले भाई आज हमला करनेवाले हैं। प्रार्थनामें चीखते ही रहेंगे। मैंने कहा, ऐसा हो नहीं सकता। उनका नमूना सबके सामने रखता हूं। उनके दुःखका मैं साक्षी हूं। वे इतमीनान रखें कि वहांके सब हिंदू-सिख आ जाएंगे। नवाब साहबका वचन है—अगरचे मैं नहीं जानता कि राजा लोगोंके वचनपर कितना भरोसा रखा जा सकता है—पर नवाब साहब कहते हैं, "जो हो चुका सो हो चुका। अब यहांपर हिंदुओं और सिखोंको कोई दिक नहीं करेगा। जो जाना ही चाहेंगे उन्हें भेजनेका इतजाम होगा। जो रहेंगे, उन्हें कोई इस्लाम कबूल करनेकी बात नहीं कहेगा।" हो सकता है, वहां सब-सही सलामत हों। यहांकी हकूमत भी बेफिकर नहीं है। मैं आशा रखता हूं कि अभी वहां सबलोग आरामसे हैं। आप कहेंगे, वे आज ही क्यों नहीं आते ? आपको समझना चाहिए कि पहले मुल्क एक था। अब हम दो हो गए है। वह भी एक-दूसरेके दुश्मन। अपने देशमें परदेशी-से बन गए है। सो जो हो सकता है सो करते हैं। वहां तो सत्तर हजार हिंदू-सिख पड़े है। सिंधमें और भी ज्यादा हैं। वे वहां सुरक्षित नहीं। कराचीसे एक तार आया है। वह मैंने यहां आनेसे पहले पढ़ा। उसमें लिखते है कि अखबारोंमें जो आया है, उससे बहुत ज्यादा नुकसान वहां हुआ है। आज ऐसा जमाना है कि हमें शांति और धीरज रखना है। हम धीरज खो दें, तो हम हार जाएंगे। हार शब्द हमारे कोषमें होना ही

नही चाहिए। उसके लिए यह जरूरी है कि गुस्सेमे न आवें। गुस्सेसे काम बिगडता है। ऐसे मौकेपर क्या करना चाहिए सो हमे सोचना है। मै तो आपको वह बताता ही रहता हूं।

मेरे पास आज ईरानके एलची आए थे। वह यहाकी हकूमतके मेहमान है। वे मिलने आए और कहने लगे, "कि एक काम है। ईरान और हिंदमे बडी पुरानी दोस्ती रही। ईरानी और हिंदी दोनो आर्य है। हम तो एक ही है।" यह भी ठीक ही है। जेदावस्ताको देखे, उसमे बहुत संस्कृत शब्द है। हमारा व्यवहार भी साथ-साथ रहा है। वे कहते हैं, "एशियामे आप सबसे बड़े है। आपकी बदौलत हम भी चमक सकते है। हम दिलसे एक होना चाहते है।" गुरुदेव वहां गए थे। वे ईरानको देखकर खुश हो गए। उन्होंने कहा—हमारे ही लोग वहा रहते है।

ईरानके एलचीने कहा, ईरान और हिंदका संबंध नही बिगडना चाहिए। मैने कहा, कैसे बिगड़ सकता है? उन्होने बंबईका एक किस्सा सुनाया। वहा काफी ईरानी है। चायकी दूकान रखते है। वहा काफी हिंदू, मुसलमान, पारसी, ईसाई जाते है। उनकी चायमें कुछ खूबी है। वहां कुछ फसाद हुआ होगा। मैं नही जानता। सुनता हू, कुछ ईरानी मारे गए। ईरानी मुसलमान तो है ही। ईरानी टोपी पहनते है। आज दीवाने बन गए है। किसीके दिलमें हुआ होगा कि वे मुसलमान है तो काटो उनको। अगर ऐसा हुआ है तो बुरी बात है। मैने पूछा वहाकी हकूमतके बारेमे क्या कुछ कहना है? उन्होने कहा, वहाकी हकूमत तो शरीफ है। उन्होंने जल्दीसे सब ठीक कर लिया। यहांकी हकूमत भी बड़ी शरीफ है, ऐसा वे कहते थे। यहां जो मुसलमान भाई हैं, उनके लिए गार्ड रखे गए है। उन्हे आदरसे रखते है। हकूमतसे हमे कोई शिकायत नही है। उन्होंने कहा कि ईरानमे भी हिंदू, सिख, मुसलमान सौदागर सब मिल-जुलकर रहते हैं। हिंदसे बढ़ा-चढाकर खबरें जाती हैं। उससे आगे क्या होगा, सो पता नहीं। मगर हम इस बारेमे होशियार हैं।

एक भाई लिखते हैं—"अनाज वगैराका अंकुश हटवा दिया और हटवानेकी कोशिश करते हैं। कई लोग कहते है, यह अच्छा है। पर दरअसल ऐसा नहीं। मैं आपको जताए देता हूं।" मैं इन भाईको जानता

हूं। मैने उन्हें लिखा है—आपने कहा तो अच्छा किया ; पर मुझतक लिखकर ही मौकूफ रखेंगे तो हारेंगे। एक तरफसे मुझे इतने मुबारक-बादीके तार आते है, उनको मै फेंक नही सकता। मै भविष्यवेत्ता नही और न मेरे दिव्यचक्षु है। जितना इन आंखोंसे देख सकूं, कान से सुन सकूं, वही मेरे पास है। मेरे हाथ, पांव, कान, आंख, सब जनता है। आप अपने विचार सबसे कहें। धन्यवाद देनेवाले बहुत है, मगर मै दूसरा पहलू भी जानना चाहता हूं। मै कहूं इसलिए आप कोई बात न माने। अपनी आंखोंसे देखे सो करें ; मेरे कहनेसे नही। २० महात्मा कहे तो भी नहीं। तजुरबेसे गलती करके आप सीखेंगे। जो ठीक लगे सो करें। ऐसा करेंगे तभी आप आजादीको रख सकेंगे और उसके लायक बन सकेंगे।

: २०५ :

११ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

अभी एक चीज आई है—वह करुणाजनक है। आंध्रसे दो खत आए है। एक तो बूढे बुजुर्गका है, मैं उनको पहचानता हू। वह हमेशा कहांसे खत लिखें, लेकिन इस वक्त लिखा। दूसरा खत एक नौजवान भाईका है, उनको मै नही पहचानता हूं। मेरे पास नाम दोनोंके है ; लेकिन नामको आप जानते नही है तब देनेसे क्या फायदा। दोनोंका मतलब यह है कि जबसे पद्रह अगस्त आया है तबसे लोगोंके दिलमें ऐसा आ गया है कि अभी हमारा क्या है, अंग्रेजोंका डर था वह रहा नही, सजाका डर नही है, अब किसीका डर नही है। भगवानका डर कौन पहचानता है। आंध्रमें तो लोग तगड़े रहते हैं। जब ऐसे रहते हैं और आजाद हो जाते हैं तब काबूके बाहर चले जाते है। तो अब ऐसे बाहर चले गए है कि पेट भरनेका काम करते हैं, दूसरा नही करते। एक भाई लिखते हैं कि कांग्रेसमें ऐसे-ऐसे लोग थे, जिनका कोई स्वार्थ नहीं था—हिंदुस्तानको आजाद करनेके लिए बलिदान कर दिया तो क्या

इस कारण किया ? आज काग्रेस गिरती जा रही है । कांग्रेसमें जितने है वे सब असेम्बलीके सदस्य बनते है । सदस्य बनकर देशका काम नही करते, अपना करते है । सदस्य बनते है तो कम पैसे नही मिलते—मै भूल गया हूं कि कितना मिलता है, लेकिन काफी मिलता है जिससे सदस्य बननेवालेका पेट भर जाता है । तो वे लिखते है कि इस तरहसे पैसा खाते है । इतना ही नही, सिविल कर्मचारियोंको डराते है । कहते है कि नही मानोगे तो तुम्हारा ऐसा हो जायगा । बेचारे पेट भरनेके लिए तो काम करते है, क्या करे । इस तरहसे दोनों तरफसे बिगड़ते है—हमारे दफ्तरमे पडे है वे बिगडते है और प्रतिनिधि कहलाते है वे बिगड़ते है । लोगोंको समझना चाहिए कि किसको अपना मत दें, लेकिन आज तो ऐसा है नही । वे दुःखसे यह बात लिखते है—दोनों ऐसा लिखते है । बुजुर्ग आदमीको बुरा लगता है तो वे कहते है कि यहा तुम रहो कुछ दिन और देखो—यह अच्छा लगता है । मै आध्र क्या, सबके बीच रहा हू, मैं नही जानता हूं कि ऐसा नही है । यह आध्रका है, या मद्रासका है या किसी भी प्रातका है, मुझसे छिपा नही है । मेरे लिए तो सब हिंदुस्तानके है । हिंदुस्तानमें पड़े है, फिर अलग-अलग भाषा है तो उसमें क्या । कोई कहे कि मैं तो आंध्रका हू, देशसे मेरा वास्ता नही हो सकता है । तो मुझको भी उनसे वास्ता नहीं हो सकता । तो मैंने सोचा कि इतना कह तो दू । मेरी आवाज वहांतक पहुचे तो अच्छा है, जिससे वे समझ जायं कि किस तरहसे काम करें ।

वे लिखते हैं कि इस तरहसे हमारा दुःख है और यह गंदगी हमारेमें फैल गई है । इसको मिटानेके लिए ज्यादा भेजें तो ज्यादा गंदगी होती है । दूसरा वे कहते एक जगह एक हजार भेजते हैं तो हजारमें गंदगी फैलती है, यह मेरी निगाहमें ऐसा है कि एक ही आदमीको गंदा करने दो, उसको हटानेमें दुश्वारी नही होती है, लेकिन अगर एकके बदलेमें एक हजार भेजें तो ज्यादा बिगड़ता है । तो वे लिखते है कि जितने सदस्य है उन्हें कम तो करो, इससे कम गंदगी होगी—पीछे ज़्यादा गंदे आदमी जा नही सकते—वे सच्चे प्रतिनिधि तो बनते नही है, वे पेट भरते है, यह बुरी बात है । पीछे काग्रेसपर कब्जा करनेकी कोशिश

करते हैं। फिर और दूसरी बाते पडी है, कम्यूनिस्ट है, समाज-वादी, ऐसे लोग पडे है। वे भी आपसमे ऐसा कहते है कि हम बड़े हो गए, हम सारे हिदुस्तानपर कब्जा कर लेगे। तो हिदुस्तान किस-पर कब्जा करेगा। काग्रेसमे भी यही है, समाजवादियोंमें भी यही है, कम्यूनिस्टमें भी यही है, तो मै सबसे कहूंगा कि हम हिंदुस्तानके बने; हिदुस्तान हमारा न बने। हिदुस्तान एक-एकका बने तो हिंदुस्तान कहा जाय। इसलिए हिदुस्तानको अपनाते है तो अपना पेट भरनेके लिए नही, अपने रिश्तेदारोको पैसा देनेके लिए नही, अपने रिश्तेदारोको नौकरिया देनेके लिए नही। मैं तो कहूगा कि यह काम हमारा पहले दर्जेका होना चाहिए, नही तो हमारा काम बिगड जाता है।

बहने बाते कर रही है, यह बुरी बात है। ऐसा करना है तो यहा आकर भाषण दे। मै जो यह कह रहा हूं उसे शायद सुनती ही नही हैं—सुननेके लिए यहां थोड़े आती है। इतवार है तो गुनाह हो गया। सब आ जाते है, सुननेको नही, जिसको कुछ काम नही यहां आकर बैठ जाते हैं।

: २०६ :

मौनवार, १२ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

सेहत सुधारनेके लिए लोग सेहतके कानूनोंके मुताबिक उपवास करते है। जब कभी कुछ दोष हो जाता है और इन्सान अपनी गलती महसूस करता है तो प्रायश्चित्तके रूपमे भी उपवास किया जाता है। इन उपवासोंमे उपवास करनेवालेको अहिंसामें विश्वास रखनेकी जरूरत नही, मगर ऐसा मौका भी आता है जब अहिसाका पुजारी समाजके किसी अन्यायके सामने विरोध प्रकट करनेके लिए उपवास करनेपर मज-बूर हो जाता है। वह ऐसा तब ही करता है, जब अहिंसाके पुजारीकी हैसियतसे उसके सामने दूसरा कोई रास्ता खुला नही रह जाता। ऐसा

मौका मेरे लिए आ गया है।

जब ६ सितंबरको मै कलकत्तेसे दिल्ली आया था तब मै पश्चिमी पंजाब जा रहा था। मगर वहां जाना नसीबमे नही था। खूबसूरत रौनकसे भरी दिल्ली उस दिन मुर्दोके शहरके समान दीखती थी। जैसे ही मै ट्रेनमे उतरा, मैंने देखा कि हरएकके चेहरेपर उदासी थी। सरदार जो हमेशा हॅसी-मजाक करके खुश रहते है, वे उस उदासीसे बचे नही थे। मुझे उस समय इसका कारण मालूम नही था। वे स्टेशनपर मुझे लेनेके लिए आए थे। उन्होंने सबसे पहली खबर मुझे यह दी कि यूनियनकी राजधानीमे झगड़ा फूट निकला है। मै फौरन समझ गया कि मुझे दिल्लीमें ही करना या मरना होगा। मिलिटरी या पुलिसके कारण आज दिल्लीमे ऊपरसे शाति है, मगर दिलके भीतर तूफान उछल रहा है। वह किसी भी समय फूटकर बाहर आ सकता है। इसे मैं अपनी करनेकी प्रतिज्ञाकी पूर्ति नही समझता, जो ही मुझे मृत्युसे बचा सकती है—मृत्युसे, जिसके समान दूसरा मित्र नही। मुझे बचानेके लिए पुलिस और मिलिटरीके द्वारा रखी हुई शाति ही बस नही। मैं हिंदू, सिख और मुसलमानोंमें दिली-दोस्ती रखनेके लिए तरस रहा हूं। कल तो ऐसी दोस्ती थी। आज उसका अस्तित्व नही है। यह ऐसी बात है कि जिसको कोई हिंदुस्तानी देशभक्त, जो इस नामके लायक है, शांतिसे सहन नहीं कर सकता।

मेरे अंदरसे आवाज तो कई दिनों से आ रही थी, मगर मैं अपने कान बंद कर रहा था। मुझे लगता था कि कही यह शैतानकी यानी मेरी कमजोरीकी आवाज तो नहीं है। मैं कभी लाचारी महसूस करना पसंद नही करता। किसी सत्याग्रहीको नही करना चाहिए। उपवास तो आखिरी हथियार है। वह अपनी या दूसरोंको तलवारकी जगह लेता है।

जो मुसलमान भाई मुझसे मिलते रहते हैं उनके इस सवालका कि 'वे अब क्या करें' मेरे पास कोई जवाब नहीं। कुछ समयसे मेरी यह लाचारी मुझे खाए जा रही है। उपवास शुरू होते ही यह मिट जाएगी। मैं पिछले तीन दिनसे इस बारेमें विचार कर रहा हू। आखिरी निर्णय बिजलीकी तरह मेरे सामने चमक गया है और मैं खुश हूं। कोई भी

इन्सान, जो पवित्र है, अपनी जानसे ज्यादा कीमती चीज कुरबान नहीं कर सकता। मैं आशा रखता हूं और प्रार्थना करता हूं कि मुझमें उपवास करनेके लायक पवित्रता हो। नमक, सोडा और खट्टे नीबूके साथ या इन चीजोंके बगैर पानी पीनेकी मै छूट रखूंगा। उपवास कल सुबह पहले खानेके बाद शुरू होगा।

उपवासका अर्सा अनिश्चित है और जब मुझे यकीन हो जाएगा कि सब कौमोंके दिल मिल गए है, और वह बाहरके दबावके कारण नहीं; मगर अपना-अपना धर्म समझनेके कारण, तब मेरा उपवास छूटेगा।

आज हिंदुस्तानका मान सब जगह कम हो रहा है। एशियाके हृदय-पर और उसके द्वारा सारी दुनियाके हृदयपर हिंदुस्तानका रामराज्य आज तेजीसे गायब हो रहा है। अगर इस उपवासके निमित्त हमारी आंखें खुल जायं तो यह सब वापस आ जायगा। मै यह विश्वास रखनेका साहस करता हूं कि अगर हिंदुस्तानकी आत्मा खो गई तो तूफानोंसे दुःखी और भूखी दुनियाकी आशाकी आखकी किरणका लोप हो जायगा।

कोई मित्र या दुश्मन—अगर ऐसे कोई हैं तो—मुझपर गुस्सा न करें। कई ऐसे मित्र है, जो मनुष्य-हृदयको सुधारनेके लिए उपवासका तरीका ठीक नही समझते। वे मेरी बर्दाश्त करेंगे और जो आजादी अपने लिए चाहते है, वह मुझे भी देंगे। मेरा सलाहकार एकमात्र ईश्वर है। मुझे किसी औरकी सलाहके बिना यह निर्णय करना चाहिए। अगर मैंने भूल की है और मुझे उस भूलका पता चल जाता है तो मैं सबके सामने अपनी भूल स्वीकार करूंगा और अपना कदम वापस लूंगा। मगर ऐसी संभावना बहुत कम है। अगर मेरी अंतरात्माकी आवाज स्पष्ट है, और मैं दावा करता हूं कि ऐसा है, तो उसे रद नहीं किया जा सकता। मेरी प्रार्थना है कि मेरे साथ इस बारेमें दलील न की जाय और जिस निर्णय-को बदला नही जा सकता, उसमें मेरा साथ दिया जाय। अगर सारे हिंदुस्तानपर या कम-से-कम दिल्लीपर, ठीक असर हुआ तो उपवास जल्दी भी छूट सकता है। मगर जल्दी छूटे या देरसे छूटे या कभी भी न छूटे, ऐसे नाजुक मौकेपर किसीको कमजोरी नहीं दिखानी चाहिए।

मेरे जीवनमें कई उपवास आए हैं। मेरे पहले उपवासोंके वक्त

टीकाकारोंने कहा है कि उपवासने लोगोंपर दबाव डाला कि और अगर मै उपवास न करता तो जिस मकसदके लिए मैंने उपवास किया, उसके स्वतंत्र गुण-दोषके विचारसे निर्णय विरुद्ध जानेवाला था। अगर यह साबित किया जा सके कि मकसद अच्छा है तो विरुद्ध निर्णयकी क्या कीमत है। शुद्ध उपवास भी शुद्ध धर्मपालनकी तरह है। उसका फल अपने आप मिल जाता है। मै कोई परिणाम लानेके लिए उपवास नही करना चाहता। मै उपवास करता हूं, क्योंकि मुझे करना ही चाहिए।

मेरी सबसे यह प्रार्थना है कि वे शांत चित्तसे इस उपवासका तटस्थ वृत्तिसे विचार करें और यदि मुझे मरना ही है तो मुझे शांतिसे मरने दें। मैं आशा रखता हूं कि शाति तो मुझे मिलने ही वाली है। हिंदुस्तानका, हिंदू-धर्मका, सिखधर्मका और इस्लामका बेबस बनकर नाश होते देखना इसकी निस्वत मृत्यु मेरे लिए सुंदर रिहाई होगी। अगर पाकिस्तानमे दुनियाके सब धर्मोंके लोगोंको समान हक न मिलें, उनकी जान और माल सुरक्षित न रहे और यूनियन भी पाकिस्तानकी नकल करे तो दोनोंका नाश निश्चित है। उस हालतमें इस्लामका तो हिंदुस्तान और पाकिस्तानमें ही नाश होगा—बाकी दुनियामें नही—मगर हिंदू-धर्म और सिख-धर्म तो हिंदुस्तानके बाहर है ही नही।

जो लोग दूसरे विचार रखते है, वे मेरा जितना भी कड़ा विरोध करेंगे, उतनी मैं उनकी इज्जत करूंगा। मेरा उपवास लोगोंकी आत्माको जाग्रत करनेके लिए है, उसे मार डालनेको नही। जरा सोचिए तो सही, आज हमारे प्यारे हिंदुस्तानमें कितनी गंदगी पैदा हो गई है! तब आप खुश होंगे कि हिंदुस्तानका एक नम्र पूत, जिसमे इतनी ताकत है, और शायद इतनी पवित्रता भी है, इस गंदगीको मिटानेके लिए ऐसा कदम उठा रहा है, और अगर उसमें ताकत और पवित्रता नही है तब वह पृथ्वीपर बोझरूप है। जितनी जल्दी वह उठ जाए और हिंदुस्तानको इस बोझसे मुक्त करे, उतना ही उसके लिए और सबके लिए अच्छा है। मेरे उपवासकी खबर सुनकर लोग दौड़ते हुए मेरे पास न आवें। सब अपने आसपासका वातावरण सुधारनेका प्रयत्न करें तो बस है।

: २०७ :

१३ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

मेरी उम्मीद है कि मैं पंद्रह मिनटमें जो कहना है, कह सकूंगा। बहुत कहना है, इसलिए शायद कुछ ज्यादा समय भी लगे।

आज तो मैं यहां (प्रार्थना-सभामे) आ सका, क्योंकि जब कोई फाका करता है तब पहले दिन—चौबीस घंटेतक—तो किसीको कुछ लगना न चाहिए। मैंने तो आज साढ़े नौ बजे खाना शुरू किया। उसी समय लोग आते रहे, बात करते रहे तो खाना ग्यारह बजे पूरा कर सका। सो आजके दिनकी तो कीमत नही। इसलिए आज प्रार्थना-सभामें आ सका हूं तो किसीको आश्चर्य नही होना चाहिए। आज तो आ-जा सकता हूं, बैठ सकता हूं और सब काम भी किया है। कलसे डर है। मैं यहां आऊं और फिर न बोलूँ, इससे अच्छा तो वही पड़ा रहकर विचार कर सकता हूं। आखिर भगवानका नाम लेना है तो वही लूँगा। कलसे आपके सामने प्रार्थनामे आना मेरे लिए मुश्किल मालूम होता है। मैं आना चाहूं और न आ सकूं; लेकिन प्रार्थना आप सुनना चाहते है तो आप आ सकते है। लडकिया तो प्रार्थना करने आएगी— सब नही तो एक आ जायगी। आप प्रार्थना तो कर सकते है। मेरे यहां आनेकी आशासे तो आपको निराशा हो सकती है।

मैंने उपवास किया तो है, लेकिन कई पूछते है कि आप क्या कर रहे है ? मुसलमानने गुनाह किया, हिंदूने गुनाह किया या सिखने गुनाह किया ? किसने गुनाह किया ? फाका कबतक चलनेवाला है ? ठीक है, जो पूछते हैं कि क्या इल्जाम हम पर है ? मैं कहता हूं कि इल्जाम किसीपर नहीं है। मै इल्जाम लगानेवाला कौन हू ? हां, मैंने सुनाया तो कि हम गुनहगार बन गए है, लेकिन कोई एक आदमी गुनहगार थोड़ा है ! हिंदू मुसलमानको हटाते हैं तो अपने धर्मका पालन नही करते और आज तो हिंदू और सिख दोनों साथ करते हैं। लेकिन मैं सब हिंदुओं या सब सिखोंपर भी इल्जाम नही लगाता हू; क्योंकि सबने थोड़े किया।

वह समझने लायक बात है। न समझे तो मेरा काम नही होगा और फाका भी बंद नही होगा। अगर मै अपनेको जिदा नही रख सका तो इसका इल्जाम किसीपर नही है। मैं नालायक सिद्ध होता हू तो ईश्वर उठा लेगा। मुझको उठा ले तो कौन-सी बात है? तो मुझसे पूछते है कि इसका मतलब यह हुआ कि तुम मुसलमान भाईके लिए करते हो? ठीक कहते हैं। मै कबूल करता हूं कि मैने उनके लिए किया। क्यों? क्योंकि आज मुसलमान यहां तेजी खो बैठे है—हकूमतका एक किस्मका सहारा था कि इतनी जगह मुसलमानोंकी है, मुस्लिम लीगकी भी यहां चलती है, वह अब रही नही। आज मुस्लिम लीग नही रही, मुस्लिम लीगका सहारा सच्चा नही है—पीछे लड़ाई करते हैं, यह बात दूसरी है—बाकी उनकी हकूमत नही रही। लीगने दो टुकड़े करवा दिए। इसीलिए दो हिस्से बन गए। इसके बाद भी मुसलमान यहां रहते है। मेरा तो हमेशा ऐसा मत रहा है कि जो थोड़े रहते है, उनकी मदद की जाय। ऐसा करना मनुष्यमात्रका धर्म है।

यह आत्म-शुद्धिका उपवास है तो सबको शुद्ध होना चाहिए। सबको शुद्ध होना ही नही है तो मामला बिगड़ जाता है। सबको शुद्ध होना है तो मुसलमानको भी होना है। सबको साफ-सुथरा और शुद्ध बन जाना है। और मुसलमान कुछ भी करें, उनका कोई दोष नही निकालना है। आत्म-शुद्धिका उपवास इस तरहसे नही हो सकता। अगर मै कहू कि मैने किसीके सामने गुनाह किया तो वह प्रायश्चित्त है। जिसके सामने हम गुनाह कबूल करते है वह प्रायश्चित्त है।

मैं जब कहता हू तब मुसलमानको खुशामद करने या किसी और दूसरेकी खुशामद करनेके लिए नही कहता हू। मै तो अपनेको राजी रखना चाहता हू। इसका मतलब यह है कि मै ईश्वरको राजी रखना चाहता हूं। मैं ईश्वरका गुनहगार नहीं बनना चाहता। मैं तो कहूंगा कि मुसलमानको भी शुद्ध बनना है और यहां रहना है। बात ऐसी है कि चुनाव में—सही हो या गलत—हिंदू-सिखने मुस्लिम लीगको मान लिया, उसके पहले भी मानते थे और कहते भी थे। मैं उसके इतिहासमें नही जाऊंगा। इसके बाद देशके हिस्से हो गए—उसके पहले दिलके हिस्से हो गए। उसमें

मुसलमानोंने भी गलती की। सब गलती उन्हीकी थी, ऐसी बात नही है। हिंदू, सिख, मुसलमान—तीनों गुनहगार थे। अब तीनों गुनहगारोंको दोस्त बनना है। इन तीनोंके बीचमे एक चीज पड़ी है। वह है ईश्वरको सब माने, शैतानको नही, तो यह काम बन सकता है। मुसलमान भी काफी पड़े हैं, जो शैतानकी पूजा करते है, खुदाकी नही। काफी हिंदू भी शैतान राक्षसकी पूजा करते हैं, सिखभी गुरु नानक और दूसरे गुरुओंकी पूजा नही करते—ऐसे हम बन गए है। हम तो धर्मके नामपर अधर्मी बन गए। अगर हम तीनों धर्म-पथपर चले तो किसी एकको डरनेकी आवश्यकता नही है।

मैने मुसलमानोके नामसे उपवास शुरू किया है, इसलिए उनके सिर-पर जबरदस्त जिम्मेदारी आती है।' क्या जिम्मेदारी आती है? उनको यह समझना है कि हम हिदू-सिखके साथ भाई-भाई बनकर रहना चाहते है, इसी यूनियनके है—पाकिस्तानके नही सही—हम वफादार बनकर रहना चाहते है। मै यह नहीं पूछता हूं कि आप वफादार है या नही? पूछकर क्या करना है! मै तो कामोंसे देखता हूं।

पीछे सरदारका नाम आ जाता है। वे कहते है कि सरदारको हटा दो, तुम अच्छे हो। पीछे सुनाते है कि जवाहर भी अच्छा है। तुम हकूमतमे आ जाओ तो हकूमत अच्छी चले। सब अच्छे है, सरदार अच्छे नही हैं। तो मै मुसलमानोंसे कहूंगा कि मुसलमान ऐसा कहेगे तो कोई बात चलनी नही है। क्यों नही? क्योंकि आपका हाकिम वह मंत्रिमंडल है। हकूमत न अकेला सरदार है और न जवाहर है। वे आपके नौकर हैं। उनको आप हटा सकते है। हा, ऐसा है कि सिर्फ मुसलमान तो हटा नही सकते है, लेकिन इतना तो करें कि सरदार जितनी गलती करते हैं—लोगोंमें आपस-आपसमें बात करनेसे निपटता नहीं है—उनको बताओ। ऐसा नही कि उन्होंने यह बात कही, वह बात कही; लेकिन उन्होंने किया क्या, यह बताओ। मुझको बता दो। उनसे मैंभी मिलता रहता हूं और सुनता भी हूं तो मैं कह दूगा। वही जवाहर, वही सरदार दोनों हकूमत चलाते हैं। जवाहर तो उनको निकाल सकते है, लेकिन ऐसा नही करते हैं तो कुछ है। वे उनकी तारीफ करते हैं। फिर मंत्रि-मडल है,' वह हकूमत है। सरदार

जो कुछ करता है उसके लिए सारी हुकूमत जवाबदार है। आप भी जवाबदार हैं; क्योंकि वे आपके नुमायदे है। इस तरहसे हमारा काम चलता है। इसलिए मै कहूंगा कि मुसलमानोंको बहादुर, निर्भय बनना है। उसीके साथ खुदा-परस्त बनना है। वे ऐसा समझें कि हमारे लिए लीग नही है। कांग्रेस नही है, गांधी नहीं है, जवाहर नही है, कोई नही है, खुदा है। उसके नामपर हम यहां पड़े है। मै चाहता हूं कि हरएक मुसलमान इस तरहका बने। हिंदू, सिख चाहे कुछ भी करते है, आप बुरा न मानें। मै आपके साथ पड़ा हूं। मै आपके साथ मरना या जिंदा रहना चाहता हूं। मै मरनेकी क्या कोशिश करनेवाला हूं? मै करूंगा या मरूंगा। अगर आप लोगोंको साथ नही रख सकता हूं तो मेरा जीना निकम्मा बन जाता है। इसलिए मुसलमानपर बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है। इसे आप भूलें नही। ऐसी बात नही करता कि मै मुसलमानकी गलती न निकालूं। क्यों न निकालूं?

सरदार सीधी बात बोलनेवाले है। वे बोलते हैं तो कडवी लगती है। वह सरदारकी जीभमे है। मैने उनसे कहा कि आपकी जीभसे कोई बात निकली कि कांटा हो गई। तो उनकी जीभ ही ऐसी है कि कांटा है, दिल वैसा नही है। उसका मै गवाह हू। उन्होंने कलकत्तेमे कह दिया, लखनऊमे कह दिया कि सब मुसलमानोंको यहां रहना है, रह सकते हैं। साथ ही मुझको यह भी कहा कि उन मुसलमानोंका एतबार नही करता हूं, जो कलतक लीगवाले थे और अपनेको हिंदू-सिखका दुश्मन मानते थे—वे जब कलतक ऐसे थे तब आज एक रातमें दोस्त कैसे बन सकते है? पीछे ऐसा है कि लीग रहेगी तो वे लोग किसकी मानेंगे—हमारी हकूमतकी या पाकिस्तानकी? लीग अभी भी वैसा ही कहती है तो उनको शक होता है। उनको शक करनेका अधिकार है। सबको शक करनेका अधिकार है। सरदारने जो कहा है उसका सीधा अर्थ निकाल लें तो काम बन जाता है। जैसे कोई मेरा भाई है, लेकिन उसपर शक है तो क्या करूं? शक साबित हो तब काटूं, यही मै कर सकता हूं। लेकिन मैं पहलेसे ही भाईकी बुराई करूं, ऐसा कैसे हो सकता है? वे कहते हैं कि हमारे दिलमें आज मुस्लिम लीगके मुसलमानोंके बारेमें एतबार नही है,

उनपर कसे भरोसा रखें ? मुसलमान मबूत दें कि वे ऐसे नहीं हैं। ऐसा करें तो सब अंजाम पहुच जाता है। पीछे मुझे यह कहनेका हक मिल जाता है कि हिंदू, सिख क्या करें। इस यूनियनमें सरदार क्या करें, जवाहर क्या करें, उसमे कोई भी क्या करें, मैं क्या करूं ?

इन लड़कियोंने अभी जो गीत सुनाया है वह गुरुदेवका प्रसिद्ध गीत है। नोआखालीमें पैदल चलते थे तब इस गीत[1]को गाते थे। उसमें

[1]यदि तोर डाक सुने केउ न आसे तबे एक्ला चलो रे,
एक्ला चलो, एक्ला चलो, एक्ला चलो रे ॥
यदि केउ, कथा न कय ओरे, ओरे, ओ अभागा !
यदि सबाई थाके मुख फिराये, सबाई करे भय—
तबे परान खुले
ओ तूई मुख फूटे तोर मनेर कथा, एक्ला बोलो रे।
यदि सबाई फिरे जाय, ओरे, ओरे, ओ अभागा !
यदि गहन पथे जाबार काले, केउ फिरे ना चाय—
तबे पथेर कांटा
ओ तूई रक्तमाखा चरनतले एक्ला दलो रे।
यदि आलो ना धरे, ओरे, ओरे, ओ अभागा !
यदि झड़ बादले आँधार राते दुआर देय घरे—
तबे वज्रानले
आपन बुकेर पांजर ज्वालिये निये एक्ला जलो रे।
अर्थात्—
यदि तेरी पुकार सुनकर कोई नहीं आता तो तू अकेला ही चल।
अकेला चल, अकेला चल, अकेला ही चल।
यदि कोई बात नहीं करता, अरे, अरे, ओ अभागे !
यदि सभी मुँह मोड़े रहते है, सभी डरते हैं,
तो दिल खोल कर तू अपने मनकी बात अकेला ही कह।
यदि तेरे सभी लौट जायं, अरे, अरे, ओ अभागे !
यदि गहन पथमें जाते समय कोई तेरी ओर फिर कर न देखें।

एक बात है । अकेला जब कोई आदमी चलता है तो किसीको कैसे बुलाते है : आओ ऐ भाई, आओ ऐ भाई, मदद तो दे दो । कोई नही आता है, अंधेरा है तो गुरुदेव कहते थे कि अकेला चले तो भी क्या, क्योंकि उसका एक साथी—ईश्वर तो साथ है ही । मैंने आज लड़कियोंसे इस गीतको गानेको कहा तो गा दिया, नही तो यहां बंगाली गीत क्या गाना था ! हिंदुस्तानी चलता था । उसमें बड़ा गुण पड़ा है ।

तो मैने कहा कि आज इसे गाओ । गुरुदेवका यह प्रिय भजन है । ता मै कहूंगा कि अगर हिंदू-सिख ऐसा नही बनते है तो सच्चे नही हैं । उनमे इतनी बहादुरी नही होती कि थोड़ेवालोको भी नही रहने दोगे—क्या मारोगे-पीटोगे—मारोगे नही, पीटोगे नही, लेकिन ऐसी हवा पैदा कर दो कि सब मुसलमान जानेको मजबूर हो पाकिस्तान जायं, तो काम कैसे बन सकता है ? इसलिए कहता हूं कि हिंदू-सिखको यहांतक बहादुर बनना है कि पाकिस्तानमें मुसलमान चाहे कुछ भी करें, चाहे सभी हिंदू और सिखोंको मार डालें तो भी यहां ऐसा न हो । मैं वहातक जिदा रहना नही चाहता कि पाकिस्तानकी नकल हो । मै जिदा रहूगा तो सब हिंदू सिखको कहूंगा कि एक भी मुसलमानको न छूवें, एक भी मुसलमानको मारना बुजदिली है । हमें तो यहा बहादुर बनना है, बुजदिल नही ।

फाका छूटनेकी शर्त यह है कि दिल्ली बुलंद हो जाय । अगर दिल्ली बुलंद हो जाती है तो सारे हिंदुस्तान ही क्या, पाकिस्तानपर भी असर पड़ेगा । अगर दिल्ली ठीक हो जाती है और यहां कोई मुसलमान भी अकेला घूम सकता है तो मेरा फाका छूट जाता है । इसका मतलब यह है कि दिल्ली पायातख्त है । सब दिन यह हिंदुस्तानका पायातख्त रही

तो राहके कांटोंको
'लोहू लुहान पैरोंसे अकेले ही दल,
यदि कोई रोशनी नहीं दिखाता
यदि आंधी, पानी और अंधकार-भरी रातमें कोई घरका दरवाजा
बंद कर देता है तो वज्राग्नि से अपने हृदय-पंजरको प्रज्वलित
करके तू अकेला ही जल ।

है। दिल्लीमें सब ठीक नही होता है तो सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तानमें ठीक नही हो सकता। यहां कहे कि हम भाई-भाई बन गए है, यहां हिंदू, मुस्लिम, सिख सब एक-दूसरेसे मिलते-जुलते है। पीछे चाहे सुहरावर्दी साहब हों—गुडोंके सरदार माने जाते हैं तो उससे मुझको क्या—अब वह गुडा बनें तो गोलीसे उडा दें। सुहरावर्दीको मै यहां क्यों नही लाता हूं? क्योंकि डर है कि उनका कोई अपमान न कर दे। अगर कोई उनका अपमान करता है तो मेरा भी अपमान होगा। आज ऐसा थोड़ा है कि वे दिल्लीकी गलियोंमे घूम सकते है। घूमेंगे तो काट डाले जायंगे। मै तो कहूंगा कि उन्हें अधेरेमे भी घूमनेकी आजादी रहनी चाहिए। ठीक है कि कलकत्ते-में मुसलमानोंपर आ पडी तो किया, लेकिन बिगाडना चाहते तो बिगाड़ सकते थे—वे बिगाडना नही चाहते थे। कलकत्तेमें जिस चीजपर मुसलमान कब्जा लेकर बैठ गए थे उनको उन्होंने खीच-खीचकर निकाला और कहा कि मै प्रधान-मंत्री था, ऐसा कर सकता हूं। मुसलमानोंने जिन-पर कब्जा किया था वह हिंदुओं और सिखोका था, तो भी उन्होंने किया। तो मै कहूंगा कि यहा असली शातिके लिए एक दिनके बदले एक महीना लगे तो क्या, मेरा उपवास बीचमें ही छुडवानेके लिए कोई ऐसा काम न करें। इससे सारा हिंदुस्तान तो बच जाता है। आज तो गिरा हुआ है। ऐसा करें तो हिंदुस्तान ऊंचा जानेवाला है।

तो मै यही चाहता हूं कि हिंदू, सिख, पारसी, ईसाई, मुसलमान जो हिंदुस्तानमें पड़े हैं, यही रहें। हिंदुस्तान ऐसा बने कि किसीके जान-मालको नुकसान न पहुंचे। तब हिंदुस्तान ऊंचा होगा।

: २०८ :

१४ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

कल तो मैंने आपको बताया था कि आज मैं यहां आ सकूंगा या नहीं,

इसमें शक है। हो सका तो आज आ गया। कल-परसों ऐसे दिन आनेवाले हैं कि मैं घूम नही सकूंगा। डाक्टर तो ऐसे है कि आजसे ही मनाही करते हैं। लेकिन मैं तो डाक्टरोंके हाथमें नहीं हूं, ईश्वरके हाथमें पड़ा हूं। मुझे ऐसा मोह नहीं है कि जिंदा रहूं तो ठीक है। जिंदा रखेगा तो वही रखेगा और मारेगा तो वही मारेगा। मेरी प्रार्थना है कि मेरी अटल श्रद्धा कायम रहे और उम्मीद करता हूं कि उस श्रद्धामें कोई विघ्न न डाले। आज ऐसा हो गया है कि आदमी दुर्बल पड़ा है। कहता है कि ईश्वर कहां है? ऐसे दुर्बल आदमी पड़े हैं। तो मै कहता हूं कि सब सबल बनें, इर्द-गिर्द सबल बनें। तभी आदमी आपत्तिसे निकल सकता है तो मैंने अपनी रामकहानी कह दी।

मैं तो आज आपको दो-चार चीज कह देना चाहता हूं। सचमुच मैंने अंग्रेजी में लिख डाला है या लिखा दिया है। पीछे ऐसा था कि दिल कैसे चलेगा। नही जानता था। ताकत नही हो तो तर्जुमा करके सुना देंगे। ऐसा हो सकता था। पीछे मैंने सोचा कि मै सुना दू तो अच्छा है। यह आपके लिए ही नही है। इसे रेडियोके जरिये सारे हिंदुस्तानके लाखों आदमी सुन लेते है। वे सुनना चाहते है कि मैं क्या कहता हूं, मेरी आवाज कैसी है। मै तो प्रेमके बसमे हूं। तो मुझको लगा कि आज भी मेरी आवाज सुन लें तो अच्छा है। मै ऐसा मानता हूं कि ३६ घंटेका उपवास तो कामकी चीज है—शरीरको स्वच्छ करता है। इतनेसे हानि किसीको नही पहुंचती है। हां, यह ठीक है कि भविष्यके लिए ताकतको इकट्ठा रखना है, लेकिन वह तो भगवान करा लेगा।

मेरे पास काफी तार आए है, मुसलमानोंके भी काफी तार आए है हर जगहसे। हिंदुस्तानके बाहरके भी काफी तार आए हैं। तो मैंने प्यारेलालको कह दिया कि उनमेंसे कामके निकालो। सबको छपवाना थोड़े है! उनसे फायदा क्या? कितने ही ऐसे तार आए है। एक किस्मके तार तो ऐसे हैं कि जिनमेसे लोगोंको शिक्षा मिलेगी। ऐसे भी तार हैं कि हम सब कर लेंगे, उपवास छोड़ दो। उपवास ऐसे कोई छुट सकता है? ईश्वरने करवाया है, ईश्वर ही छुड़वा सकता है। दूसरी कोई ताकत नहीं। वह ताकत तो वही है जो मैंने लिखा है।

मृदुलाबेनका टेलीफोन आया। वह लाहौरमें पड़ी है। उसके काफी मुसलमान दोस्त हैं। वह हिंदू लड़की है। वह तो व्याकुल बन गई है। हर जगह घूमती है—अकेली। तो कहती है कि सब मुसलमान मुझसे पूछते है, अफसर भी पूछते हैं—गांधी जो कर रहे है वह हमारे लिए कर रहे है तो पूछो—क्या हमको बता देंगे कि हमसे क्या उम्मीद रखते है? मुझको यह अच्छा लगा। तो उत्तर देनेके लिए कहे देता हूं। टेलीफोन वहां पहुचा या नहीं, एक रातमें क्या होगा, कल तो वहा यह पहुंच ही जायगा। और जो तार भेजते है उनको कहूंगा कि यह कौन-सी बडी बात है कि आप मेरे बारेमें पूछते है? पूछनेकी क्या जरूरत है? यह दिल्लीका यज्ञ ता है, लेकिन सारे देशके लिए भी है। यह यज्ञ अकेलेके लिए है या सबके लिए, ऐसा सवाल ही नहीं है।

यह उपवास आत्म-शुद्धि करनेके लिए है। जहां आज शैतान बठा है वहां ईश्वरको बैठा दो कि शैतान उसे हटा न सके। तो उसकी कुछ निशानी होनी चाहिए। इसके लिए सब तो फाका कर नहीं सकते। यह मेरे शुभ नसीबमें है। सबको ऐसा नसीब मिले तो सब प्रेमसे चलें। हिंदू कहता है कि मुसलमानको मारो, मुसलमान हिंदूको मारनेके लिए तैयार होता है, और सिख कहता है कि मुसलमानको मार डालो। इस तरह सिख, हिंदू, मुसलमान झगड़ा करें तो बुरी बात है। यज्ञमें हिस्सा लेना है, लेना चाहते है तो सब भाई-भाई बन जायं, वैर-भावके बदले प्रेम-भाव करें। हिंदू, मुस्लिम, सिख—सब ऐसा बनें तो उस जगह शराब नही देखूंगा, अफीम नही देखूंगा, व्यभिचारी लोगोंको नही देखूंगा, व्यभिचारिणी औरतोंको नही देखूंगा। सब ऐसा समझेंगे कि यह मेरी बहन है या मां है या पत्नी है या लडकी है। सब परहेजसे रहें, साफ-सुथरे रहें तो भी अगर मैं समझूं कि मैं पाकिस्तानका दुश्मन हूं, पाकिस्तान पापसे भरा है तो मुझे प्रायश्चित्त करना होगा और कहना होगा कि पाकिस्तान पाप-भूमि नहीं, पाक-भूमि है। ऐसा बनना है तो अच्छा है। कहनेसे नहीं बने, करनेसे बने। पाकिस्तानमें जितने मुसलमान पड़े हैं वे ऐसे रहें तो इसका असर इधर भी होगा। पाकिस्तानने हिंदुओंके साथ गुनाह किया है यह मैंने कभी छिपाया नहीं है।

अभी कराचीमे क्या हो गया ? बेगुनाह सिख मार डाले गए, जायदाद लूट ली गई। अब सुनता हूं गुजरातमें भी हो गया। वे बेचारे बन्नू या कहांसे, मुझको पता नही, आ रहे थे। सब शरणार्थी थे। वहांसे जान बचानेके लिए भाग रहे थे यहा आनेके लिए। रास्तेमें काट डाले गए। मै सब किस्सा नही कहना चाहता हूं। मैं मुसलमानोंको कहता हूं कि आपके नामसे पाकिस्तानमें ऐसा बनता रहे तो पीछे हिंदुस्तानके लोग कहातक बर्दाश्त करेंगे ? मेरी तरह सौ आदमी भी फाका करें तो भी नही रुक सकता है। मेरे-जैसे मिस्कीनके फाका करनेसे क्या होगा ? तो आप ऐसा करे कि सब अच्छे बन जायं। कोई मुसलमान हो, कबीलेवाले हों तो उनको भी अच्छा बनना है। और कहे कि हम सब सिख, हिंदूको यहां लानेवाले हैं।

कविने कहा—मैंने यह पढ़ा है—कि अगर आपको जन्नत देखना है तो यहां है, बाहर नही है। वह तो एक बगीचेके लिए कहा है। लिखनेवाले उस्ताद रहते है। क्या खूबसूरत चीज है, यह उर्दू में लिखा है। मैंने इसे वर्षो पहले—बचपनमे पढ़ा था। जन्नत ऐसे आता नही है। अगर हिंदू, मुस्लिम, सिख—सब ऐसे शरीफ बनें, सब-के-सब भाई-भाई बने तो कहूंगा कि वही शेर सब दरवाजेमें लगाए जाय। पीछे कहूंगा कि वही नही, यहा भी लगाए जायं। लेकिन कब लगाया जायगा, जब पाकिस्तान पाक हो जायगा। कहना एक और करना दूसरा तो दोजख हो जायगा। दिलको साफ कर लो, उसमें शैतान नही, खुदाको विराजमान करो। ऐसा करोगे तो जन्नत यही है। जन्नत देखना हो तो वहां देखो। अगर वहां ऐसा हो जाय तो हम यहां मुकाबला करेंगे और उससे भी आगे बढ़नेकी कोशिश करेंगे। हिंदुस्तानके दो टुकड़े हैं तो क्या, दिल तो एक हो गया है। भूगोलमें टुकड़े रहें तो क्या हुआ, हकूमत अलग है तो उससे क्या ? सारी दुनियामें हकूमत अलग-अलग हैं। हकूमत पचास रहें, पांच-सौ रहें तो क्या ? मैं तो कहूंगा कि सात लाख गांव हैं तो सात लाख हकूमत बनी ऐसा मानो, तो छोटी वह होगी, अच्छी रहेगी। पीछे देहातोंका काम, बहनें पड़ी है उनके हाथ छोड़ सकते हैं। यह ऐसी खूबसूरत चीज है।

मुझसे कहते है—कहते-कहते घूट पी लेते हैं—कि यह पागल है। एक छोटी-सी चीजको लेकर फाका कर लेता है; लेकिन मै क्या करूं ? मैं बचपनसे ऐसा बना हूं। जब छोटा था तब अखबार भी नहीं पढ़ता था। मैं सच कहता हूं कि अखबार नहीं पढ़ता था। मैं अंग्रेजी मुश्किलसे पढ़ सकता था, गुजराती भट्टी जानता था तो मैं अखबार कैसे पढ़ सकता था ? तबसे मेरा खयाल रहा है कि सारे हिंदुस्तानमें—राजकोटमें ही नहीं—हिंदू, सिख, पारसी, ईसाई, मुसलमान एक बनकर रहे तो पीछे हम यहां आरामसे रह सकते है। मेरा ऐसा ख्वाब रहा है। अभी जो स्वराज आया है वह निकम्मा है। जवानीमें मैने जो ख्वाब देखा है वह अगर सच्चा होता है—मैं तो बूढा हो गया हूं, मरनेके किनारे हू—तो मेरा दिल नाचेगा, बच्चे नाचेगे और देखेगे कि हिंदुस्तानमे सब खैर हो गया, लडते-भिड़ते नही, साथ रहते है। आप सब इस काममे मदद करें। पाकिस्तानके लोग सुनेगे तो वे भी नाच उठेगे। सिख, हिंदू, मुस्लिम, पारसी, ईसाई, सब भूल जायं कि हम दुश्मन थे, अलग-अलग थे। अगर हम अपने-अपने धर्ममें कायम रहें और अच्छे बनें तो सब धर्म एक साथ चल सकते है। पीछे धर्म नहीं देखेंगे, शरीफ रहेंगे। इस तरहसे दोनों हिंदुस्तान और पाकिस्तान बन जायं तो मैं नाचूंगा। आपको भी नाचना पड़ेगा। वह तो एक नशा है—ईश्वर ऐसा नशा देगा और हमें किसीका डर नही रहेगा। हम ऐसे नहीं डरनेवाले हैं कि यह सिख है या ऊंचा पठान है। हमें तो सिर्फ ईश्वरसे डरना है। मैं ऐसा देखना चाहता हूं।

आप अपनेको ऐसा बना सकते हैं। समाज क्या है ? आप सबसे समाज बना है। हम उसमें हैं तो समाज बनता है। समाज हमको नहीं बनाता है। हम उसको वनाते हैं। हम सोए हुए पड़े हैं। इसलिए कहते है कि समाज ऐसा है और हम समाजसे लाचार हैं। उसी तरह हकूमत है। हकूमत तो हम हैं। एक आदमी ऐसा कर सकता है। एक है तो अनेक बनेगा, एक नही तो शून्य है।

आपको पता नहीं था कि मैं आज बोलूंगा। कल आनेमें शक है; लेकिन प्रार्थना होगी और लड़कियां भजन सुनाएंगी।

: २०६ :

१५ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

मेरे लिए यह एक नया-अनुभव है। मुझको इस तरहसे लोगोंको सुनानेका कभी अवसर नही आया है, न मै चाहता था। मैं इस वक्त जिस जगह प्रार्थना हो रही है वहा नही जा सकता हूं। इसलिए प्रार्थनामे जो लोग आए है वहां तक मेरी आवाज यहांसे नहीं पहुच सकती है। फिर भी मैंने सोचा कि आप लोगोतक, जिधर आप बैठे हैं, मेरी आवाज पहुंच सके तो आपको आश्वासन मिलेगा और मुझको बड़ा आनद होगा। जो मैंने लोगोके सामने कहनेको तैयार किया है, वह तो लिखवा दिया था। ऐसी हालत कल रहेगी कि नही, मै नहीं जानता।

आप लोगोंसे मेरी इतनी प्रार्थना है कि हरएक आदमी दूसरे क्या करते है उसे न देखें, बल्कि अपनी ओर देखें और जितनी आत्म-शुद्धि कर सकते है, करें। मुझे विश्वास है कि जनता बहुत परिमाणमे आत्म-शुद्धि कर लेगी तो उसका हित होगा और मेरा भी हित होगा। हिदुस्तानका कल्याण होगा और संभव है कि मै जल्दीसे जो उपवास चल रहा है उसे छोड़ सकूं। मेरी फिक्र किसीको नही करनी है, फिक्र अपने लिए की जाय। हम कहांतक आगे बढ़ रहे है और देशका कल्याण कहांतक हो सकता है इसका ध्यान रखे। आखिरमें सब इन्सानोंको मरना है। जिसका जन्म हुआ है उसे मृत्युसे मुक्ति मिल नही सकती। ऐसी मृत्युका भय ? शोक भी क्या करना ? मैं समझता हू कि हम सबके लिए मृत्यु एक आनंद-दायक मित्र है, हमेशा धन्यवादके लायक है, क्योंकि मृत्युसे अनेक प्रकार-के दुखोंमेंसे हम एक समय तो निकल जाते है।

(लिखित संदेश)

कल शामकी प्रार्थनाके दो घंटे बाद अखबारवालोंने मुझे संदेश भेजा कि उन्हें मेरे भाषणके बारेमें कुछ बाते पूछनी हैं। वह मुझसे मिलना चाहते थे। मगर मैंने दिनभर काम किया था, प्रार्थनाके बाद भी काममें फंसा रहा। इसलिए थकान और कमजोरीके कारण उन्हें मिलने-

की मेरी इच्छा नही हुई । इसलिए मैंने प्यारेलालसे कहा कि उनसे कहो कि मुझे माफ करें और जो सवाल पूछने हों वह लिखकर कल सुबह नौ बजे बाद मुझे दे दें । उन्होंने ऐसा ही किया है ।

पहला सवाल यह है—"आपने उपवास ऐसे वक्त शुरू किया है जब कि यूनियनके किसी हिस्सेमें कुछ झगड़ा हो ही नही रहा ।" लोग जबरदस्ती मुसलमानोंके घरोंका कब्जा लेनेकी बाकायदा, निश्चयपूर्वक कोशिश करें, यह क्या झगड़ा नही कहा जायगा ? यह झगड़ा तो यहा-तक बढ़ा कि फौजको इच्छा न रहते हुए भी अश्रुगैस इस्तेमाल करनी पड़ी और, भले ही हवामें हो, मगर कुछ गोलियां भी चलानी पड़ीं । तब कही लोग हटे । मेरे लिए यह सरासर बेवकूफी होती कि मै मुसलमानों-का ऐसे टेढ़ी तरहसे निकाला जाना आखिरतक देखता रहता । इसे मै रुला-रुलाकर मारना कहता हूं ।

दूसरा प्रश्न यह है—"आपने कहा है कि मुसलमान भाई अपने डरकी और अपनी असुरक्षितताकी कहानी लेकर आपके पास आते है, तो आप उन्हें कोई जवाब नही दे सकते । उनकी शिकायत है कि सरदार जिनके हाथोंमें गृह-विभाग है मुसलमानोंके खिलाफ हैं । आपने यह भी कहा है कि सरदार पटेल पहले आपकी 'हां-में-हां' मिलाया करते थे, 'जी-हजूर' कहलाते थे, मगर अब ऐसी हालत नही रही । इससे लोगोंके मन-पर यह असर होता है कि आप सरदारका हृदय पलटनेके लिए उपवास कर रहे हैं । आपका उपवास गृह-विभागकी नीतिकी निंदा करता है । अगर आप इस चीजको साफ करेंगे तो अच्छा होगा ।"

मैं समझता हूं कि मैं इस बातका साफ-साफ जवाब दे चुका हूं । मैंने जो कहा है, उसका एक ही अर्थ हो सकता है । जो अर्थ लगाया गया है, वह मेरी कल्पनामें भी नहीं आया । अगर मुझे पता होता कि ऐसा अर्थ किया जा सकता है तो मैं पहलेसे इस चीजको साफ कर देता ।

कई मुसलमान दोस्तोंने शिकायत की थी कि सरदारका रुख मुसल-मानोंके खिलाफ है । मैंने कुछ दुःखसे उनकी बात सुनी मगर कोई सफाई पेश न की । उपवास शुरू होनेके बाद मैंने अपने ऊपर जो रोक-थाम लगाई हुई थी वह चली गई । इसलिए मैंने टीकाकारोंको कहा कि

सरदारको मुझसे और पडित नेहरूसे अलग करके और मुझे और पंडित नेहरूको खामख्वाह आसमानपर चढ़ाकर वे गलती करते है।

इससे उनको फायदा नही पहुंच सकता। सरदारके बात करनेके ढंगमे एक तरहका अक्खडपन है, जिससे कभी-कभी लोगोंका दिल दु:ख जाता है, अगरचे सरदारका इरादा किसीको दु:खी बनानेका नही होता। उनका दिल बहुत बडा है। उसमें सबके लिए जगह है। सो मैने जो कहा उसका मतलब यह था कि अपने जीवनभरके वफादार साथीको एक बेजा इलजामसे बरी कर दू। मुझे यह भी डर था कि सुननेवाले कही यह न समझ बैठे कि मै सरदारको अपना 'जी हजूर' मानता हूं। सरदारको प्रेमसे मेरा 'जी हजूर' कहा जाता था इसलिए मैंने सरदारको तारीफ करते समय कह दिया कि वे इतने शक्तिशाली और मनके मजबूत है कि वे किसीके 'जी हुजूर' हो ही नही सकते। जब वे मेरे 'जी हुजूर' कहलाते थे तब वे ऐसा कहने देते थे; क्योंकि जो कुछ मैं कहता था वह अपने आप उनके गले उतर जाता था। वे अपने क्षेत्रमें बहुत बड़े थे। अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटीमें उन्होंने शासन चलानेमें बहुत काबलियत बताई थी। मगर वह इतने नम्र थे कि उन्होंने अपनी राजनैतिक तालीम मेरे नीचे शुरू की। उन्होंने उसका कारण मुझे बताया था कि जब मै हिंदुस्तानमें आया था उन दिनों जिस तरहका राज-काज हिदुस्तानमें चलता था, उसमें हिस्सा लेनेका उन्हें मन नही होता था। मगर अब जब सत्ता उनके गले आ पड़ी तब उन्होने देखा कि जिस अहिंसाको वे आजतक सफलतापूर्वक चला सके अब वही नही चला सकते। मैने कहा कि मै समझ गया हूं कि जिस चीजको मै और मेरे साथी अहिंसा कहा करते थे वह सच्ची अहिंसा न थी। वह तो नकली चीज थी और उसका नाम है निष्क्रिय प्रतिरोध। हां, किनके हाथोंमें निष्क्रिय प्रतिरोध किसी कामकी चीज है? जरा सोचिए तो सही कि एक कमजोर आदमी जनताका प्रतिनिधि बने तो वह अपने मालिकोंकी हँसी और बेइज्जती ही करवा सकता है। मैं जानता हू कि सरदार कभी उन्हे सौंपी हुई जिम्मेदारीको दगा नहीं दे सकते। वे उसका पतन बर्दाश्त नहीं कर सकते। मै उम्मीद करता करता हूं कि यह सब सुननेके बाद कोई ऐसा खयाल नहीं करेंगे कि

मेरा उपवास गृह-विभागकी निंदा करनेवाला है। अगर कोई ऐसा खयाल करनेवाला है तो मैं उसको कहना चाहता हूं कि वह अपने-आपको नीचे गिराता है और अपने-आपको नुकसान पहुंचाता है, मुझे या सरदारको नहीं। मै जोरदार लफ्जोंमें कह चुका हूं कि कोई बाहरी ताकत इन्सानको नीचे नही गिरा सकती। इन्सानको गिरानेवाला इन्सान खुद ही बन सकता है। मैं जानता हूं कि मेरे जवाबके साथ इस वाक्यका कोई ताल्लुक नही है। मगर यह एक ऐसा सत्य है कि उसे हर मौकेपर दोहराया जा सकता है।

मैं साफ लफ्जोंमें कह चुका हूं कि मेरा उपवास यूनियनके मुसलमानोंकी खातिर है। इसलिए वह यूनियनके हिंदू और सिखों और पाकिस्तानके मुसलमानोंके सामने है। इस तरहसे यह उपवास पाकिस्तानकी अकलियतकी खातिर भी है। जो विचार मैं पहले समझा चुका हूं उसीको मैं यहां थोड़ेमें दोहरानेकी कोशिश कर रहा हूं।

मैं यह आशा नहीं रख सकता कि मेरे जैसे अपूर्ण और कमजोर इन्सानका फाका दोनों तरफकी अकलियतोंको सब तरहके खतरोंसे पूरी तरह बचानेकी ताकत रखे। फाका सबकी आत्म-शुद्धिके लिए है। उसकी पवित्रताके बारेमें किसी तरहका शक जाना गलती होगी।

तीसरा सवाल यह है, "आपका उपवास ऐसे वक्तपर शुरू हुआ है जब सयुक्त राष्ट्र-संघकी सुरक्षा-समिति बैठनेवाली है। साथ ही अभी ही कराचीमें फिसाद हुआ है और गुजरात (पंजाब) में कत्लेआम हुआ है। हम नहीं जानते कि विदेशके अखबारोंमें इन वाकयातकी तरफ कहांतक ध्यान दिया गया है। इसमें शक नही कि आपके उपवासके सामने यह वाकयात छोटे लगने लगे हैं। पाकिस्तानके प्रतिनिधियोंके पिछले कारनामोंसे हम समझ सकते है कि वे जरूर इस चीजका फायदा उठाएंगे और दुनियाको कहेंगे कि गांधीजी अपने हिंदू अनुयायियोंसे, जिन्होंने हिंदुस्तानमें मुसलमानोंकी जिंदगी आफतमें डाल रखी है, पागलपन छुड़ानेके लिए उपवास कर रहे हैं। सारी दुनियाभरमें सच्ची बात पहुंचनेमें देर लगेगी। इस दरमियान आपके उपवासका यह नतीजा आ सकता है कि संयुक्त राष्ट्र-संघपर हमारे विरुद्ध प्रभाव पड़े।" इस सवालका लंबा-चौड़ा जवाब देनेकी जरूरत थी। दुनियाकी हकूमतों और दुनियाके लोगोंको जहांतक

मैं जानता हूं मैं यह कहनेकी हिम्मत करता हूं कि उपवासका असर अच्छा ही हुआ है। बाहरके लोग, जो हिंदुस्तानके वाकयातको निष्पक्षतासे देख सकते हैं, मेरे फाकेका उल्टा अर्थ नही लगाएंगे। फाका यूनियनके और पाकिस्तानके रहनेवालोंसे पागलपनको छुड़ानेके लिए है।

अगर पाकिस्तानमें मुसलमानोंकी अकसरियत सीधी तरहसे न चले, वहांके मर्द और औरतें शरीफ न बनें तो यूनियनके मुसलमानोंको बचाया नही जा सकता। मगर मुझे खुशी है कि मृदुलाबेनके कलके सवालपर ऐसा लगता है कि पाकिस्तानके मुसलमानोंकी आंखें खुल गई हैं और वे अपना फर्ज समझने लगे है।

संयुक्त राष्ट्र-संघ यह जानता है कि मेरा फाका उसे ठीक निर्णय करनेमें मदद देनेवाला है, ताकि वह पाकिस्तान और हिंदुस्तानका उचित पथ-प्रदर्शन कर सके।

: २१० :

१६ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

मुझे आशा नही थी कि आज भी मैं बोल सकूंगा, लेकिन यह सुनकर आप खुश होंगे कि कल मेरी आवाजमें जितनी शक्ति थी उससे आज ज्यादा महसूस करता हूं। इसका मतलब तो यही किया जाय कि ईश्वरकी बड़ी कृपा है। चौथे रोज मुझमें (पहले) जब मैंने फाका किया, तब इतनी शक्ति नहीं रहती; लेकिन आज तो है। मेरी उम्मीद तो ऐसी है कि अगर आप सब लोग आत्म-शुद्धि करनेका यज्ञ करते रहेंगे तो बोलनेकी मेरी शक्ति आखिरतक रह सकती है। मैं इतना तो कहूंगा कि मुझे किसी प्रकारकी जल्दी नहीं है। जल्दी करनेसे हमारा काम नहीं बनता है। मैं परम शांतिमें हूं। मैं नहीं चाहता कि कोई अधूरा काम करे और मुझे सुना दे कि ठीक हो गया है। सारा-का-सारा जब यहां ठीक होगा तो सारे हिंदुस्तानमें ठीक होगा। इसलिए मैं समझता हूं कि जब इर्द-

गिर्दमें, सारे हिंदुस्तानमें और सारे पाकिस्तानमें, शांति नहीं हुई है तो मुझे जिंदा रहनेमें दिलचस्पी नहीं है। यह इस यज्ञके माने है।

(लिखित सदेश)

किसी जिम्मेदार हकूमतके लिए सोच-समझकर किए हुए अपने किसी फैसलेको बदलना आसान नही होता। मगर तो भी हमारी हकूमतने, जो हर मानेमें[1] जिम्मेदार हकूमत है, सोच-समझकर और तेजीसे अपना तय किया हुआ फैसला बदल डाला है।

उनको काश्मीरसे लेकर कन्याकुमारीतक और कराचीसे लेकर डिबरूगढ़तक सारे मुल्कको मुबारकबाद देना चाहिए। मैं जानता हूं कि दुनियाके सब लोग भी कहेंगे कि ऐसा बड़ा काम हमारी हकूमतके जैसी बडे दिलवाली हकूमत ही कर सकती थी। इसमें मुसलमानोंको संतुष्ट करनेकी बात नही है। यह तो अपने आपको सतुष्ट करनेकी बात है। कोई भी हकूमत, जो बहुत बड़ी जनताकी प्रतिनिधि है, बेसमझ जनतासे तालियां पिटवानेके लिए कोई कदम नहीं उठा सकती है। जहां चारों तरफ पागलपन फैला हुआ है, वहां आकर बड़े-से-बड़े नेता बहादुरीसे अपना दिमाग ठंडा रखकर जो जहाज चला रहे हैं क्या उसको डूबनेसे न बचावें?

हमारी हकूमतने क्यों यह कदम उठाया? इसका कारण मेरा उपवास था। उपवाससे उनकी विचारधारा ही बदल गई। उपवासके बिना वे, कानून जितना उनसे करवाता, उतना ही करनेवाले थे। मगर हिंदुस्तानकी हकूमतका यह कदम सच्चे मानेमें दोस्ती बढ़ाने और मिठास पैदा करनेवाली चीज है। इससे पाकिस्तानकी भी परीक्षा हो जायगी। नतीजा यह होना चाहिए कि न सिर्फ काश्मीरका, बल्कि हिंदुस्तान और पाकिस्तानमें जितने मतभेद हैं सबका सम्मानजनक आपस-आपसमें फैसला हो जावे। आजकी दुश्मनीकी जगह दोस्ती ले। न्याय कानूनसे

---

[1]पाकिस्तानका जो पचपन करोड़ रुपया निकलता था उसे भारत-सरकारने काश्मीरका मामला तय हो जानेपर दिलानेका निश्चय किया था। गांधीजीके उपवास प्रारंभ करते ही भारत सरकारने उसे देनेका फैसला कर लिया।

बढ़ जाता है। अंग्रेजीमें एक घरेलू कहावत है, जो सदियोंसे चली आई है। उसमें कहा है कि जहां मामूली कानून काम नही देता, वहां न्याय हमारी मदद करता है। बहुत वक्त नही हुआ जब कानूनके लिए और न्यायके लिए वहां अलग-अलग कचहरियां हुआ करती थीं। इस तरहसे देखा जाय तो इसमे कोई शक नही कि हिंदुस्तानकी हकूमतने जो किया है वह सब तरहसे ठीक है। अगर मिसालकी जरूरत है तो मेकडॉनल्ड एवार्ड (निर्णय) हमारे सामने है। वह सिर्फ मेकडॉनल्डका निर्णय न था, बल्कि सारे ब्रिटिश मंत्रिमंडलका और दूसरी गोलमेज परिषद्के अधिकतर सदस्योंका भी निर्णय था। मगर यरवदाके उपवासने तो रातों-रात वह निर्णय बदल दिया। मुझे कहा गया कि यूनियनकी हकूमतके इस बड़े कामके कारण तो अब मैं अपने उपवासको छोड़ दूं। काश कि मैं अपने दिलको ऐसा करनेके लिए समझा सकता!

मैं जानता हूं कि उन डाक्टर लोगोंकी चिंता जो अपनी इच्छासे काफी त्याग करके मेरी देख-भाल कर रहे हैं, जैसे-जैसे उपवास लंबा होता जाता है, बढ़ती जाती है। गुरदे ठीक तरहसे काम नही करते। उन्हें इस चीजका इतना खतरा नही कि आज मर जाऊंगा, मगर उपवास लंबा चला तो हमेशाके लिए शरीरकी मशीनको जो नुकसान पहुंचेगा, उससे वे डरते है। मगर डाक्टर लोग कितने ही होशियार क्यों न हो, मैंने उनकी सलाहसे उपवास शुरू नहीं किया। मेरा रहनुमा और मेरा हकीम एकमात्र ईश्वर रहा है, वह कभी गलती नहीं करता। वह सर्वशक्तिमान है। अगर उसे मेरे इस कमजोर शरीरसे कुछ और काम लेना होगा तो डाक्टर लोग कुछ भी कहें वह मुझे बचा लेगा। मैं ईश्वरके हाथोंमें हूं। इसलिए मैं आशा करता हूं कि आप विश्वास रखेंगे कि मुझे न मौतका डर है, न अपंग होकर जिंदा रहनेका। मगर मुझे लगता है कि अगर देशको मेरा कुछ भी उपयोग है तो डाक्टरोंकी इस चेतावनीके परिणाम-स्वरूप लोगोंको तेजीके साथ मिलकर काम करना चाहिए। इतनी मेहनत-से आजादी पानेके बाद हमें बहादुर तो होना ही चाहिए। बहादुर लोग, जिनपर दुश्मनीका शक होता है, उनपर भी विश्वास रखते हैं। बहादुर लोग अविश्वासको अपनी शानके खिलाफ समझते हैं। अगर दिल्लीके

हिंदू, मुसलमान और सिखोमें ऐसी एकता स्थापित हो जाय कि हिंदुस्तान और पाकिस्तानके बाकी हिस्सोंमें आग भड़के तो भी दिल्ली शांत रहे तब मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो जायगी। खुशकिस्मतीसे हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनो तरफके लोग अपने-आप समझ गए लगते है कि उपवासका अच्छे-से-अच्छा जवाब यही है कि दोनों उपनिवेशोंमें ऐसी दोस्ती पैदा हो कि हर धर्मके लोग दोनों तरफ बिना किसी खतरेके आ-जा सकें और रह सके। आत्म-शुद्धि के लिए इतना तो कम-से-कम होना ही चाहिए।

हिंदुस्तान और पाकिस्तानके लिए दिल्लीपर बहुत ज्यादा बोझ डालना ठीक न होगा। यूनियनके रहनेवाले भी आखिर तो इन्सान हैं। हमारी हकूमतने लोगोंके नामसे एक बहुत बड़ा उदार कदम उठाया है और उसको उठाते समय उसकी कीमतका खयालतक नहीं किया। इसका जवाब पाकिस्तान क्या देगा? इरादा हो तो रास्ते तो बहुत हैं। मगर क्या इरादा है?

: २११ :

१७ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

ईश्वरकी ही कृपा है कि आज पांचवां दिन है तो भी मैं बगैर परिश्रमके आपको दो शब्द कह सकता हूं। जो मुझको कहना है वह तो मैंने लिखवा दिया है, जिसे प्रार्थना-सभामें सुशीला बहन सुना देगी।

इतना है कि जो कुछ भी आप करें, उसमें परिपूर्ण शक्ति होनी चाहिए। अगर यह नही है तो कुछ भी नही है। अगर आप मेरा खयाल रखें कि इसे कैसे जिंदा रखा जाय, तो बड़ी भारी गलती करनेवाले हैं। मुझको जिंदा रखना या मारना किसीके हाथमें नही है। वह ईश्वरके हाथमें है। इसमें मुझे कोई शक नही है। किसीको भी शक नहीं होना चाहिए।

इस उपवासका मतलब यह है कि अंतःकरण स्वच्छ हो और जाग्रत हो। ऐसा करें तभी सबकी भलाई है। मुझपर दयाकर आप कुछ न

कीजिए। जितना दिन उपवासका काट सकता हूं काटूंगा। ईश्वरकी इच्छा होगी तो मर जाऊंगा।

मैं जानता हूं कि मेरे काफी मित्र दुःखी हैं, और सब कहते हैं कि आज ही उपवास क्यों नहीं छोड़ा जाय। आज मेरे पास ऐसा सामान नही है। ऐसा मिल जाय तो नही छोड़नेका आग्रह नही करूंगा। अहिंसाका नियम है कि मर्यादापर कायम रहना चाहिए, अभिमान नही करना चाहिए। नम्र होना चाहिए। मै जो कह रहा हू उसमें अभिमान नही है। शुद्ध प्यारसे कह रहा हूं। ऐसा जो जानता है वही रहनेवाला है।

(लिखित संदेश)

मै पहले भी कह चुका हू और फिरसे दोहराता हूं कि फाकेके दबाव के नीचे कुछ भी न किया जाय। मैंने देखा है कि फाकेके दबावके नीचे कई बाते कर ली जाती है और फाका खत्म होनेके बाद मिट जाती है। अगर ऐसा कुछ हुआ तो बहुत बुरी बात होगी। ऐसा कभी होना ही नही चाहिए। आध्यात्मिक उपवास एक ही आशा रखता है, वह है दिलकी सफाई। अगर दिलकी सफाई ईमानदारीसे की जाय तो जिस कारणसे सफाई की गयी थी वह कारण मिट जानेपर भी सफाई नही मिटती। किसी प्रियजनके आनेके कारण कमरेमें सफेदी की जाती है तो जब वह आकर चला जाता है तो सफेदी मिट नही जाती। यह तो जड़ वस्तुकी बात है। कुछ अर्सेकेबाद सफेदी मिटने लगती है और फिरसे करवानी पड़ती है। दिलकी सफाई तो एक दफा हो गई तो मरनेतक कायम रहती है। फाकेका दूसरा कोई योग्य मकसद नहीं हो सकता।

राजा, महाराजा और आम लोगोंके तारोंका ढेर बढ़ रहा है। पाकिस्तानसे भी तार आ रहे हैं। वे अच्छे है, मगर पाकिस्तानके दोस्त और शुभचिंतककी हैसियतसे मै पाकिस्तानके रहनेवालों और जिनको पाकिस्तानका भविष्य बनाना है उनको कहना चाहता हूं कि अगर उनका जमीर जाग्रत न हुआ और अगर वह पाकिस्तानके गुनाहको कबूल नहीं करते तो पाकिस्तानको कभी कायम नही रख सकेंगे। इसका यह मतलब नहीं कि मै यह नही चाहता कि हिंदुस्तानके दोनों टुकड़े अपनी खुशीसे फिरसे एक हों। मगर मै वह साफ कर देना चाहता हूं कि जबरदस्तीसे

मिटानेका मुझे खयालतक नही आ सकता। मैं उम्मीद रखता हूं कि मृत्यु-शय्या पर पड़े मेरे यह वचन किसीको चुभेगे नही। मै उम्मीद रखता हूं कि सब पाकिस्तानी यह समझ जायंगे कि अगर कमजोरीकी वजहसे या उनका दिल दुखानेके डरसे मैं उसके सामने अपने दिलकी सच्ची बात न रखूं तो मै अपने प्रति और उनके प्रति झूठा साबित होऊंगा। अगर मेरे हिसाबमें कुछ गलती रही हो तो मुझे बताना चाहिए। मैं वायदा करता हूं कि अगर मै गलती समझ गया तो अपना वचन वापस ले लूंगा। मगर जहांतक मै जानता हूं, पाकिस्तानके गुनाहके बारेमे दो विचार हो ही नही सकते।

मेरे उपवासको किसी तरहसे भी राजनैतिक न समझा जाय। यह तो अतरात्माकी जबरदस्त आवाजके जवाबमें धर्म समझकर किया गया है। महायातना भुगतनेके बाद मैंने फाका करनेका फैसला किया। दिल्लीके मुसलमान भाई इस बातके साक्षी है। उनके प्रतिनिधि करीब-करीब रोज मुझे दिनभरकी रिपोर्ट देने आते हैं। इस पवित्र मौकेपर मेरा उपवास छुडवानेके हेतु मुझको धोखा देकर राजा, महाराजा, हिंदू, सिख और दूसरे लोग न अपनी खिदमत करेगे, न हिंदुस्तानकी। वे सब समझ ले कि मैं कभी इतना खुश नही रहता, जितना कि आत्माकी खातिर उपवास करते वक्त। इस फाकेसे मुझे हमेशासे ज्यादा खुशी हासिल हुई है। किसीको इसमें विघ्न डालनेकी जरूरत नही है। विघ्न इसी शर्तपर डाला जा सकता है कि ईमानदारीसे आप यह कह सकें कि आपने सोच-समझकर शैतानकी तरफसे मुह फेर लिया है और ईश्वरकी तरफ चल पड़े है।

: २१२ :

१८ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

मैंने थोड़ा तो लिखवा दिया है। वह सुशीला बहन आप लोगोंको

सुना देंगी।

आजका दिन मेरे लिए तो है, आपके लिए भी मंगल-दिन माना जाय। कैसा अच्छा है कि आज ही गुरु गोविंदसिहकी जन्म-तिथि है। उसी शुभ तिथिपर मै आप लोगोंकी दयासे फाका छोड़ सका हूं। जो दया आप लोगोंसे--दिल्लीके निवासियोंसे, दिल्लीमें जो दु:खी शरणार्थी पड़े हैं, उनसे, यहांकी हकूमतके सब कारोबारसे—मुझे मिली है उसे, मुझे लगता है, कि मै जिंदगीभर भूल नही सकूगा। कलकत्तेमें ऐसे ही प्रेमका अनुभव मैंने किया। यहांपर मै कैसे भूल सकता हूं कि शहीद साहबने कलकत्तेमें बड़ा काम किया। अगर वह नही करते तो मैं ठहरनेवाला नहीं था। शहीद साहबके लिए हम लोगोंके दिलमे बहुत शकूक थे। अभी भी हैं। उससे हमको क्या ? आज हम सीखें कि कोई भी इन्सान हो, कैसा भी हो, उससे हमको दोस्ताना तौरसे काम करना है। हम किसीके साथ किसी हालतमें दुश्मनी नही करेंगे, दोस्ती ही करेंगे। शहीद साहब और दूसरे चार करोड़ मुसलमान पड़े हैं। वे सब-के-सब फरिश्ते तो हैं ही नही। ऐसे ही सब हिंदू और सिख भी फरिश्ते थोड़े ही है ! अच्छे और बुरे हममे है; लेकिन बुरे कम है। हमारे यहां जिसको हम जरायम पेशा जातियां कहते है, वे भी पड़ी हैं। हमारे यहां जिनको जंगली जातियां कहते है, वे भी पड़ी है। उन सबके साथ मिल-जुलकर रहना है।

मुसलमान बड़ी कौम है, छोटी कौम नही है। यही नहीं है, सारी दुनिया-मे पड़ी है। अगर हम ऐसी उम्मीद करें कि सारी दुनियाके साथ हम मित्र-भावसे रहेंगे, दोस्ताना तौरसे रहेगे तो क्या वजह है कि हम यहांके जो मुसलमान है उनसे दुश्मनी रखें ?

मैं भविष्यवेत्ता नही हूं। फिर भी मुझे ईश्वरने अक्ल दी है, मुझको ईश्वरने दिल दिया है। उन दोनोको टटोलता हूं और आपको भविष्य सुनाता हूं कि अगर हम किसी-न-किसी कारणसे एक दूसरेसे दोस्ती न कर सके, वह भी यहांके ही नहीं, पाकिस्तानके और सारी दुनियाके मुसलमानोंसे दोस्ती न कर सके, तो समझ लें, इसमें मुझे कोई शक नहीं है कि हिंदुस्तान हमारा नहीं होगा, पराया हो जायगा, गुलाम हो जायगा। पाकिस्तान गुलाम होगा, यूनियन भी गुलाम होगा और जो आजादी

हमने पाई है उसे हम खो बैठेंगे।

आज इतने लोगोंने आशीर्वाद दिए है। सुनाया है कि हम सब हिंदू, सिख, मुसलमान भाई-भाई बनकर रहेंगे और किसी भी हालतमें, कोई भी कुछ कहे, दिल्लीके हिंदू, सिख, मुसलमान, पारसी, ईसाई सब जो यहांके बाशिंदे है और सब शरणार्थी है वे भी दुश्मनी नही करनेवाले है। यह थोड़ी बात नही है। इसके माने यह है कि अबसे हमारी कोशिश यह रहेगी कि सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तानमें जितने लोग पड़े हैं वे सब एक मिलकर रहेंगे। हमारी कमजोरीके कारण भले ही हिंदुस्तानके दो टुकड़े हो गए, लेकिन वे भी दिलसे मिलाने है। अगर इस फाकेके छूटनेका यह अर्थ नहीं है तो बड़ी नम्रतासे कहूंगा कि यह फाका छुड़वाकर आपने कोई अच्छा काम नहीं किया है, कोई काम ही नहीं किया। अभी फाकेकी आत्माका भलीभांति पालन होना चाहिए। भेद क्यों हो? जो दिल्लीमें हो, वही सारे यूनियनमें हो और जो सारे यूनियनमें होगा तो पाकिस्तानमें होना ही है, इसमे आप शक न रखें। आप न डरें, एक बच्चेको भी डरनेका काम नही। आजतक हम, मेरी निगाहमें, शैतानकी ओर जाते थे। आजसे मैं उम्मीद करता हूं कि हम ईश्वरकी ओर जाना शुरू करते हैं। लेकिन हम तय करें कि एक वक्त हमने अपना चेहरा, मुंह ईश्वरकी ओर रखा तो वहांसे कभी नहीं हटेंगे। ऐसा हुआ तो सारे हिंदुस्तान, पाकिस्तान, दोनों मिलकर इस सारी दुनियाको ढाक सकेंगे, सारी दुनियाकी सेवा कर सकेंगे और सारी दुनियाको ऊंची ले जा सकेंगे। मैं और किसी कारणसे जिंदा रहना नही चाहता हूं। इन्सान जिंदा रहता है तो इन्सानियतको ऊंचा उठानेके लिए। ईश्वर और खुदाकी तरफ जाना ही इन्सानका फर्ज है। जबानसे ईश्वर, खुदा, सतश्री अकाल कुछ भी नाम लो, वह झूठा है अगर उनके दिल मे वह नाम नही है। सब एक ही हस्ती है तो फिर कोई कारण नही है कि हम उस चीजको भूल जायं और एक-दूसरेको दुश्मन मानें।

आज तो मैं आपसे ज्यादा कुछ कहनेवाला नही हूं, लेकिन आजके दिनसे हिंदू निर्णय कर लें कि लड़ेंगे नही। मैं चाहूंगा कि हिंदू कुरान पढ़ें, जैसे वे भगवद्गीता पढ़ते हैं। सिख भी वही करें। और मैं चाहूंगा

कि मुस्लिम भाई-बहन भी अपने घरोंमें ग्रंथ साहब पढ़ें, उनके माने समझें। जैसे हम अपने धर्मको मानते है, वैसे दूसरेके धर्मको भी मानें। उर्दू-फारसी किसी जबानमें भी बात लिखी हो, अच्छी बात तो अच्छी बात है। जैसे कुरान शरीफ वैसे गीता और ग्रंथ साहब हैं। मेरा मकसद यही है। चाहे आप मानें या न मानें, अभीतक मैं ऐसा करता रहा हूं। मैं आपको कहूंगा और दावेसे कहूंगा कि मैं पत्थरकी पूजा नहीं करता हूं। मगर मैं सनातनी हिंदू हूं। पत्थरकी पूजा करनेवालोंसे मैं नफरत नही करता। खुदा पत्थरमें भी पड़ा है। जो पत्थरकी पूजा करता है वह उसमें पत्थर नहीं, खुदा देखता है। पत्थरमें ईश्वर न माने तो कुरान शरीफ खुदाई किताब है, यह क्यों माना जायगा ? तो यह क्या बुतपरस्ती नही है ? दिलोंमें भेद न रखें तो हम सब यह सीख सकते हैं। ऐसा हो तो फिर यह नही होगा कि यह हिंदू है, यह सिख है, यह मुसलमान है। सब भाई-भाई है, मिल-जुलकर रहनेवाले हैं। ऐसा होना चाहिए। फिर ट्रेनमें आज जो अनेक किस्मकी परेशानी होती है—लड़का, फेंक दिया जाता है, आदमी फेंक दिया जाता है, औरते फेंक दी जाती है वह सब मिट जायगा, हर कोई आसानीसे हर जगह रह सकेंगे, कही किसीको डर न होगा। यूनियन ऐसा बने। पाकिस्तान भी ऐसा होना चाहिए। मुझको तबतक परम शांति नही होनेवाली है जबतक यहांके शरणार्थी, जो पाकिस्तानसे दुःखी होकर आए है, अपने घरोंको वापस न जा सकें और जो मुसलमान यहांसे हमारे डरसे, मार-पीटसे भागे हैं और जो वापस आना चाहते है वे आरामसे यहां न रह सकें।

बस इतना ही कहूंगा। ईश्वर हम सबको, सारी दुनियाको अच्छी अक्ल दे, सन्मति दे, होशियार करे और अपनी ओर खींच ले, जिससे हिंदुस्तान और सारी दुनिया सुखी हो।

(लिखित संदेश)

मैंने यह उपवास सत्यके, जिसका परिचित नाम ईश्वर है, नामपर किया था। जीते-जागते सत्यके बिना ईश्वर कही नहीं है। ईश्वरके नामपर हम झूठ बोले हैं, हमने बेरहमीसे लोगोंकी हत्याएं की हैं और इसकी भी परवाह नही की कि वे अपराधी हैं या निर्दोष; मर्द हैं या औरतें;

बच्चे हैं या बूढ़े ! हमने अपहरण व बलात् धर्म-परिवर्तन किए है और हमने यह सब बेहयाईसे किया है । मैं नही समझता कि किसीने यह काम सत्यके नामपर किए हों । इसी नामका उच्चारण करते हुए मैने उपवास तोड़ा है । हमारे लोगोंका दुःख असह्य था । राष्ट्रपति राजेंद्र बाबू हिंदुओं, मुसलमानों व सिखों, हिंदू महासभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व शरणार्थियोके सौसे अधिक प्रतिनिधियोंको लेकर मेरे पास आए । इन प्रतिनिधियोंके दलमें पाकिस्तानके हाई कमिश्नर जाहिदहुसैन साहब, दिल्लीके कमिश्नर व डिप्टी कमिश्नर और आजाद हिंद फौजके जनरल शाहनवाज भी शामिल थे । नेहरूजी भी एक मूर्तिकी तरह चुपचाप मेरे पास बैठे हुए थे और ऐसे ही मौलाना आजाद। राजेंद्र बाबूने एक दस्तावेज[1] पढ़-

[1] वह शांति-प्रतिज्ञा, जिसपर हिंदुओं, सिखों व मुसलमानोंके सौसे अधिक प्रतिनिधियोंने हस्ताक्षर किए और जिसपर गांधीजीने उपवास समाप्त किया, इस प्रकार है—

हम यह घोषित करना चाहते हैं कि हमारी दिली ख्वाहिश है कि हिंदू, मुसलमान और सिख और दूसरे धर्मके सब माननेवाले फिरसे आपसमें मिलकर भाई-भाईकी तरह दिल्लीमें रहें और हम उनसे यह प्रतिज्ञा करते हैं कि मुसलमानोंकी जान, धन और धर्मकी हम रक्षा करेंगे और जिस तरहकी घटनाएं यहां पहले हो गई है, उनको फिर न होने देंगे ।

१. गांधीजीको हम इत्मीनान दिलाना चाहते हैं कि जिस तरह ख्वाजा कुतुबुद्दीनके उर्सका मेला पहले हुआ करता था, वैसे ही अब भी होगा ।

२. जिस तरह मुसलमान दिल्लीके सभी मुहल्लोंमें और खास तौरपर सब्जीमंडी, करौलबाग और पहाड़गंजमें आया-जाया करते थे, वैसे ही बेखटके और बेखतरे फिरसे आ-जा सकेंगे ।

३. उन मस्जिदोंको, जिनको मुसलमान छोड़कर चले गए हैं, या जो हिंदुओं और सिखोंके कब्जेमें हैं, वापिस दे देंगे । जिन जगहोंको खास मुसलमानोंके बसनेके लिए गवर्नमेंटने रख छोड़ा है, उनपर जोर-

कर सुनाया, जिसपर आगत प्रतिनिधियोंके हस्ताक्षर थे। इस दस्तावेज-द्वारा मुझसे कहा गया कि उनपर अधिक चिंताका दबाव न डाला जाय और मैं अपना उपवास तोडकर उनके दु:खका अंत कर दूं। पाकिस्तान व भारतीय यूनियनसे भी मेरे पास तार-पर-तार आए थे कि मै उपवास तोड़ दूं। मैं इन सब मित्रोंकी सलाहका विरोध न कर सका। मैं उनकी इस प्रतिज्ञापर अविश्वास नही कर सका कि हर हालतमें हिंदुओं, मुसलमानों, सिखों, ईसाइयों या पारसियों व यहूदियों सबमें मित्रता रहेगी और इस मित्रताको कभी भंग नही किया जायगा। इस दोस्तीको तोड़नेका मतलब राष्ट्रको तोड़ना होगा।

जब मैं यह लिख रहा हूं, मेरे पास सेहत और दीर्घ जीवनकी कामनावाले तारोंका तांता लगा हुआ है। ईश्वर मुझे काफी सेहत और विवेक दें जिससे मैं मानव-जातिकी सेवा कर सकूं। यदि यह आश्वासन, जो आज मुझे दिया गया है, पूरा हो जाता है तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं चौगुनी शक्तिसे प्रार्थना करूंगा कि वह मुझे अपनी पूरी जिंदगी जीने दे और मैं अततक मानव-जातिकी सेवा करूं। विद्वानोंका मत है कि पूरी उम्र कम-से-कम १२५ वर्ष है और कुछ लोग १३३ वर्ष कहते है। मेरी प्रतिज्ञा पूरी होनेमें जितना समय लगनेकी आशा थी वह दिल्लीके नागरिकोंकी, जिनमें हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक

जबर्दस्तीसे कब्जा करनेकी कोशिश नहीं की जायगी।

४. जो मुसलसान दिल्लीसे बाहर चले गए हैं, वे अगर वापिस आना चाहें तो हमारी तरफसे कोई बाधा न दी जायगी और मुसलमान अपने कारबार जिस तरहसे करते थे, करने पाएंगे। हम यह इत्मीनान दिलाना चाहते हैं कि ये सब चीजें अपनी कोशिशसे पूरी करेंगे और सरकारी पुलिस या फौजकी ताकत इसकी खातिर इस्तेमाल करनेकी जरूरत नहीं पड़ेगी।

५. "महात्माजीसे हमारा अनुरोध है कि वे हमारी बातोंपर विश्वास करके अपना उपवास छोड़ दें और जिस तरह आजतक देशके रहनुमा रहे हैं, बने रहें।

संघके नेता भी सम्मिलित है,' सद्भावनाके कारण उससे पहले पूरी हो गई। मुझे पता चला है कि कलसे हजारों शरणार्थी और दूसरे लोग भी मेरी सहानुभूतिमें उपवास कर रहे है। तो ऐसी हालतमें इसका परिणाम दूसरा निकल ही नहीं सकता था। हजारों व्यक्तियोंने मेरे पास लिखित आश्वासन भेजे है कि लोगोंके दिलोंमें परिवर्तन हो गया है और वे सबको भाई मानते हैं। सारी दुनियासे मेरे पास आशीर्वादके तार आए हैं। क्या इस बातका इससे अच्छा कोई सबूत हो सकता है कि मेरे इस उपवासमें ईश्वरका हाथ था? लेकिन मेरी प्रतिज्ञाके शब्दोंके पालनेके बाद उसकी आत्मा भी है, जिसके पालनके बिना शब्दोंका पालन बेकार हो जाता है। मेरी प्रतिज्ञाका उद्देश्य यूनियन तथा पाकिस्तानमें हिंदू, मुस्लिम, सिखमें मित्रता स्थापित करना है। यदि यूनियन (हिंदुस्तान)मे ऐसा हो जाता है तो जैसे रातके बाद दिन होता है वैसे ही पाकिस्तानमें भी ऐसा होना ही चाहिए; यदि यूनियनमें अंधेरा हो तो पाकिस्तानमें उजालेकी आशा करना मूर्खता है, किंतु यदि यूनियनमें रात मिट जानेका कोई शक नहीं रह जाता तो पाकिस्तानमें भी रात मिटकर ही रहेगी। पाकिस्तानसे बहुत-से संदेश आए हैं। उनमेंसे एकमें भी इस बातका विरोध नहीं किया गया है। ईश्वरसे मेरी प्रार्थना है कि जिस तरहसे इन छः दिनोंतक हमारा पथ-प्रदर्शन किया है उसी तरह आगे भी हमारा पथ-प्रदर्शन करता रहे।

: २१३ :

१९ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

सारी दुनियासे हिदुस्तानियों और दूसरे लोगोंने मेरी सेहतके बारेमें चिंता और शुभेच्छा बतानेवाले अनेक तार भेजे हैं। उनके लिए मैं उन सब भाई-बहनोंका आभार मानता हूं। ये तार जाहिर करते हैं कि मेरा कदम ठीक था। मेरे मनमें तो इस बारेमें कोई शक था ही नहीं।

जिस तरहसे मेरे मनमें कोई शक नहीं कि ईश्वर है और उसका सबसे तादृश्य नाम सत्य है, उसी तरहसे मेरे दिलमें कोई शक नहीं है कि मेरा फाका सही था। अब मुबारकबादके तारोंका तांता लगा है। चिंताका बोझ हल्का होनेसे लोग आरामकी सांस लेने लगे है। मित्रगण मुझे क्षमा करेंगे कि मैं सबको अलग-अलग पहुंच नही भेज सकता, ऐसा करना नामुमकिन है। मैं यह भी आशा रखता हूं कि तार भेजनेवाले पहुंचकी आशा भी नहीं रखते होंगे।

तारोंके ढेरमेंसे मैं दो तार यहा देता हूं। एक पश्चिमी पंजाबके प्रधान मंत्रीका है और दूसरा भोपालके नवाब साहबका। उन लोगोंका आज लोग काफी अविश्वास करते है। तार तो आप सुनेंगे ही। उस बारेमें मैं कुछ कहना नहीं चाहता। अगर ये तार उनके दिलोंके सच्चे भावको जाहिर करनेवाले न होते तो क्यों वे उपवास जैसे पवित्र और गंभीर मौकेपर मुझे तार भेजनेकी तकलीफ उठाते ?

भोपालके नवाब साहब अपने तारमे लिखते हैं :

"सब कौमोंके दिली मेलके लिए आपकी अपीलको हिंदुस्तानके दोनों हिस्सोंके सब शांतिप्रिय लोग जरूर मानेंगे। इसी तरहसे, हिंदुस्तानके दोनों हिस्सोंमें दोस्ती और समझौता होनेकी इस अपीलको भी सब लोग जरूर मानेंगे। खुशकिस्मतीसे इस रियासतमें, पिछले सालमें हमारी कठिनाइयोंका सामना हम सब कौमोंके समझौते, प्रेम और मेलके उसूलपर कर सके हैं। नतीजा यह है कि इस रियासतमें शांति-भंग करनेवाला एक भी किस्सा नही बना। हम आपको यकीन दिलाते है कि हम अपनी पूरी ताकतसे इस मेल-जोल और मित्र-भावको बढ़ानेकी कोशिश करेंगे।"

पश्चिमी पंजाबके प्रधान मंत्रीका तार भी मैं पूरा-पूरा देता हूं। वे लिखते हैं :

"आपने एक भले कामको बढ़ानेके लिए जो कदम उठाया है, पश्चिमी पंजाबकी वजारत उसकी तहेदिलसे तारीफ करती है और सच्चे हृदयसे उसकी कदर करती है। इस वजारतने अकलियतोंकी जान-माल और इज्जत बचानेके लिए, जो भी हो सके वह करनेका उसूल हमेशा अपने सामने रखा है। यह वजारत मानती है कि अकलियतोंको अन्य

नागरिकोंके बराबर हक मिलने चाहिए। हम आपको यकीन दिलाते है कि यह वजारत इस नीतिपर अब और दुगने जोरसे अमल करेगी। हमें यही फिकर है कि हिंदुस्तानके भूखण्डमें एक जगह फौरन हालत सुधरे, ताकि आप अपना उपवास छोड़ सके। आपके-जैसी कीमती जिंदगीको बचानेके लिए इस सूबेमे हमारी कोशिशमें कोई कसर नही रहेगी।"

आजकल लोग बिना सोचे-समझे नकल करने लगते है। इसलिए मुझे चेतावनी देनी होगी कि कोई इतने ही समयमें इस तरहके परिणाम-की आशा रखकर इस तरहका उपवास शुरू न करे। अगर कोई करेगा तो उसे निराश होना पड़ेगा और ऐसे अचूक और शाश्वत उपायकी बदनामी होगी। उपवासकी शर्तें कड़ी है। अगर ईश्वरमें जीता-जागता विश्वास नही है और अंतरात्मासे आवाज, ईश्वरीय हुकम नही निकलता है तो उपवास करना फिजूल है। तीसरी शर्त भी लगानेकी इच्छा होती है, मगर इसकी जरूरत नही है। ईश्वरका हुकम तभी मिल सकता है जब उपवासका मकसद सच्चा हो, सही हो और बा-मौका हो। इसमेंसे यह भी निकलता है कि ऐसे कदमके लिए पहलेसे लंबी तैयारी करनी पड़ती है, इसलिए कोई झटसे उपवास करने न बैठे।

दिल्लीके शहरियोंके सामने और पाकिस्तानसे आए हुए दुःखी लोगोंके सामने बहुत बड़ा काम है। उनको चाहिए कि पूरे विश्वासके साथ आपस-आपसमें मिलनेके मौके ढूंढ़ें।

कल बहुत-सी मुसलमान बहनोंसे मिलकर मुझे निहायत खुशी हुई। मेरे साथकी लड़कियोंने मुझे बताया कि वे बिरला हाउसमें बैठी हुई हैं, मगर जानती नही कि अंदर आएं या न आएं। उनमेसे अधिकतर पर्देमें थी। मैंने उन्हें लानेके लिए कहा और वे आई। मैंने उनसे कहा कि वे अपने पिता और भाईके सामने पर्दा नही रखती तो मेरे सामने क्यों? फौरन हरएकने पर्दा निकाल दिया। यह पहला मौका नहीं है कि मेरे सामने पर्दा निकाला गया है। मैं इस बातका जिकर यह बतानेके लिए करता हूं कि सच्चा प्रेम—और मैं दावा करता हूं कि मेरा प्रेम सच्चा है—क्या कर सकता है।

हिंदू और सिख बहनोंको मुसलमान बहनोंके पास जाना चाहिए

और उनसे दोस्ती करनी चाहिए। खास-खास मौकोंपर, त्योहारोंपर, उनको निमंत्रण देना चाहिए और उनका निमंत्रण स्वीकार करना चाहिए। मुसलमान लड़के-लड़कियां ग्राम स्कूलोकी तरफ खिचें, साम्प्रदायिक स्कूलोंकी तरफ नही, वे स्कूलोंकी खेलोंमें हिस्सा लें।

मुसलमानोंका बहिष्कार नहीं होना चाहिए। इतना ही नही, बल्कि उन्हें अनुरोध करना चाहिए कि वे जो धंधे करते थे उन्हें फिरसे करने लगें। मुसलमान कारीगरको खोकर दिल्लीने नुक्सान उठाया है। हिंदू और सिखोंके लिए यह ख्वाहिश रखना कि वे मुसलमानोंसे उनकी रोटी कमानेका जरिया छीन ले, बहुत बुरी कंजूसी होगी। एक तरफसे तो कोई चीज या कामपर किसी एकका इजारा नही होना चाहिए, दूसरी तरफसे किसीको बाहर करनेकी कोशिश नही होनी चाहिए। हमारा देश बड़ा है, उसमे सबके लिए जगह है।

जो शांति-कमेटियां बनी है वे सो न जायं। सब मुल्कोंमें बहुत-सी कमेटियां दुर्भाग्यसे सो जाया करती हैं। आप लोगोंके बीच मुझे जिंदा रखनेकी शर्त यह है कि हिंदुस्तानकी सब कौमें शांतिसे साथ-साथ रहें। और वह शांति तलवारके जोरसे नही, मगर मुहब्बतके जोरसे हो। मुहब्बतसे बढकर जोड़नेवाली चीज दुनियामें दूसरी कोई नही है।

: २१४ :

२० जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

पहली बात तो मै आपसे कह दू कि जिन लोगोंने दस्तखत किए उन्होंने, मेरी उम्मीद है, सत्यरूपी-ईश्वरको साक्षी रखकर दस्तखत किए हैं, तो भी कलकत्तेसे ऐसी आवाज आ रही है कि यहां जो काम हुआ है उसमें भी कुछ घोटाला न हो। अगर दिल्लीके निवासी और दिल्लीमें जो दु:खी आ गए है, वे सब साबित कदम रहेंगे चाहे बाहरमें कुछ भी हो—हिंदुस्तानके और हिस्सेमें कुछ भी हो, पाकिस्तानमें कुछ भी हो—तो

मेरा दृढ मत है कि आप हिंदुस्तानको बचा लेंगे और पाकिस्तानको भी बचानेवाले है। आखिर दिल्ली आजकलका नहीं, पुराना शहर है। आज दिल्लीमें जो काम हो गया है — इतना बड़ा काम, जो सत्यमय और अहिंसामय है — उसका प्रभाव सारे हिंदुस्तानमें, सारे पाकिस्तानमे और सारी दुनियामें पड़ेगा।

सरदारने बंबईमें क्या कहा, उसे गौरसे पढ़ें तो पता चल जायगा कि सरदार और पंडित नेहरू दूर नही हैं, अलग-अलग नहीं है। कहनेका तरीका अलग हो सकता है, लेकिन करते एक ही चीज है। वे हिंदुस्तान या मुसलमानके दुश्मन नही हो सकते। जो मुसलमानका दुश्मन है वह हिंदुस्तानका भी दुश्मन है, इसमे मुझे कोई शक नही। इसलिए मै कहूंगा कि हम कम-से-कम इतना तो सीख लें। सारी दुनियामें लोग सीख चुके है। हां, अमरीका एक ऐसा मुल्क है, जहां हब्शी लोगोंको मार डाला जाता है। वहां काफी ऐसे गोरे लोग है जो बुरा नही मानते, उनके लिए दिलमें शर्म नही है, लेकिन दुनियाके दूसरे लोग इसे पसंद नहीं करते। उसको हम वहशियाना मानते है। हमारे ही अखबारोंने लिखा है कि वे लोग कितने वहशियाना काम करते हैं। अमरीकाके लोग इतने सुधारक हैं, तो भी ऐसा करते है। हम ऊंचे हैं, हम ऐसा कर नहीं सकते। वह तो है लेकिन आज क्या होता है। तो मै कहूंगा कि आप सब बता दें कि गैर-इन्साफ, बाहर हो या यहां उसका बदला हम न लेंगे, हकूमतपर छोड़ देंगे। कम-से-कम इतना करें, तब लोग आरामसे आ-जा सकते है।

मैंने कहा कि मुमकिन है, मैं यहांसे पाकिस्तान जाऊं, लेकिन पाकिस्तानको तब जाऊंगा जब हकूमत बुलाएगी और कहेगी कि तू तो भला आदमी है, ख्वाबमें भी मुसलमानोंका बुरा नही कर सकता, हिंदुओंका भी बुरा नही करता, सिखोंका भी बुरा नहीं करता। हर हालतमे तेरी हाजिरी पाकिस्तानमें चाहते है। या तो एक-एक हकूमत कहे—तीन हकूमतें है, बलूचिस्तानको छोड़ दो—या पाकिस्तानकी मरकजी हकूमत है वह कहे तो जा सकता हूं। तब आप समझें कि मैं चला गया। हां, डाक्टर कहते हैं कि फाकेसे जिस्मको इतना नुक्सान पहुंचा है कि पन्द्रह दिन कही नहीं जा सकता—सूखी चीज भी नहीं खा सकता—तुमको तो पानी ही पीना है।

पीछे पानीमें दूध आ जाता है, फलका रस आ जाता है। दूधसे तो आदमी जिंदगीभर रह सकता है।

दूसरी बात यह है। यहां जितने दुःखी लोग है, उनके लिए तो पंडित-जी—उनको मै बहुत पहचानता हूं—ऐसे है कि दूसरोंको सुलाकर सोने-वाले है। मानो एक ही बिछौना है, जो सूखा है, बाकी गीला है, तो वह सूखेमे दुःखीको सुलाएंगे खुद चाहे घूमते रहे। मै यह पढकर बहुत खुश हुआ। वे कहते हैं कि उनके घरमे जगह नही है, दूसरे आदमी भी चले आते है, इसलिए जगह नही रहती है। वह तो मुख्य प्रधान है। तो मिलनेवाले जाते है, दोस्त है, अंग्रेज भी जाते है तो क्या वहासे उनको निकाल दे? तो भी कहते है कि मेरी तरफसे एक कमरा या दो कमरा, जितना निकल सकता है निकालूंगा और दुःखी लोगोको रखूंगा। फिर दूसरे मुख्य प्रधान भी करे, फिर फौजके अफसर है वे भी ऐसा करे। इस तरहसे सब अपने धर्मका पालन करें तो कोई दुःखी नही रहेगा। ऐसा जो जवाहरने किया, उसे देखा तो मै उनको और आपको धन्यवाद देता हूं कि हमारे यहा एक रत्न है। पीछे कहते है कि दूसरे धनिक लोग जैसे बिडला या दूसरे है, उनको भी यही करना है। जब प्रधान ऐसा करता है तो और भी क्यों न ऐसा करे? बडी तेजीसे दुःखी लोगोंके दुःखको दूर करनेकी कोशिश हो रही है। इससे हम सीखे कि हम मुसल-मानोंसे दुश्मनी नही करेगे।

एक खत आया है। मेरा फाका चलता था तब १५ जनवरीको आया था। लोगोमे बदमाश भी पड़े है। उन्होंने सोचा कि व्यापार करो। उन्होंने बड़े-बडे नोट निकाल दिए और गरीबोंको बेचने लगे। सस्ते मिलते है, इसलिए गरीब बेचारे ले लेते है। लेकिन इन नोटोंकी तो कोई कीमत नही, आखिर मामूली कागजके ही होते है। ऐसे नोट निकालनेवालोंसे मैं हाथ जोड़कर कहूंगा कि ऐसा मत करो। क्या सच्चा मार्ग नही मिलता है, जिससे अपना काम चला सके? मै गरीबोंको भी, जो भोले है, कहूंगा कि कहातक ऐसे भोले रहोगे! करोड़ों भोले रहेगे तो काम नहीं चलेगा।

मुझको एक तार लाहौरसे आया है। वे भाई काश्मीर स्वातंत्र्य लीग-

के अध्यक्ष है। वे लिखते है कि आप जो कर रहे है वह बहुत बुलंद काम है, लेकिन उसमें कामयाबी नही मिल सकती, जबतक काश्मीरका जो मसला है उसका फैसला नही हो जाता। इसके लिए तुमको ऐसा करना चाहिए कि भारत-सरकारने वहां जो फौज भेजी है उसको हटा लें; क्योंकि उस फौजने काश्मीरमें हमला किया है। और काश्मीर जिसका है उसको दे दो तब फैसला होगा। इससे मुझको दुःख होता है। क्या काश्मीरका फैसला नही होता है तो आज ऐसा ही रहेगा—क्या मुसलमान हिंदू-सिखके, दुश्मन रहेगे और हिंदू-सिख मुसलमानके दुश्मन रहेगे, सिर्फ काश्मीरके लिए ? पीछे लिखा क्या है उसे समझना चाहिए। मै तो ऐसा नही मानता हूं कि हमारी हकूमतने जो फौज भेजी है वह हमला करनेके लिए है। काश्मीरकी संकटकालीन सरकारके प्रधान शेख अब्दुल्लाने लिखा और महाराजाने लिखा कि हमको इमदाद भेजो, नही तो काश्मीर गया—वह तो उनकी निगाहसे है, लिखनेवालेकी निगाहसे नही सही। तो मै उस भाईको और ऐसे जितने है उन सबको कहूंगा कि वे ऐसा न करे। हां यह ठीक है कि जिसका है उसको दे दो। तो जितने बाहरसे आए हैं—अफरीदी हों या कोई भी हों—हट जायं। पुछके लोग बागी बने हैं तो मुझको शिकायत नही है, वे रहे तो भी बागी बनकर समूचे काश्मीरको ले ले, यह अच्छा नही है। वहांसे बाहरके सब लोग निकल जायं, बाहरसे कोई गोलमाल न करें, शिकायत न करें और बाहरसे भीतरवालोंको मदद न करे तो मै समझ सकता हूं; लेकिन कहें कि हम रहेगे और उनको निकाल दो तो बात बनती नही है। पीछे यह कहना कि काश्मीर जिसका है उसको दे दो, तो किसका है ? मैं कहूंगा कि अभी तो काश्मीर महाराजाका है, क्योंकि महाराजा तो वहां हैं। आज हमारी निगाहमे, हकूमतकी निगाहमे, महाराजाको निकाल नही सकते। हां, ऐसा समझे कि महाराजा बदमाश है, रैयतके लिए कुछ करता नही है तो मेरा खयाल है कि हकूमतका हक है कि उसे निकाल दें, लेकिन अभी ऐसी बात तो है नही। वहां जो मुसलमान है वे कहें कि हमें महाराजा नही चाहिए, हम सीधा-सीधा पाकिस्तान या हिंदुस्तानमें जाना चाहते हैं तो इसमें कोई शिकायत नही हो सकती। मैं तो फाका करके उठा

हूं। मैं किसीका दुश्मन नहीं हूं तो मुसलमानोंका दुश्मन कैसे हो सकता हूं। मेरे पास आएं और समझाएं कि मेरी क्या गलती है। समझा सको तो मैं मान जाऊंगा।

पीछे एक भाई ग्वालियरसे लिखते हैं—तार रतलामसे आया है, मुसलमान भाईका है। सही क्या है, मैं नहीं जानता हूं। तो वे लिखते हैं कि हमारे वहां ग्वालियर रियासतमें कोई देहात है —हम वहां मजबूर हो गए तब हिंदुओंने हमें ले तो लिया; लेकिन मारना शुरू कर दिया—एक-दो मारे गए, अनाज वगैरा लूट लिया। मकानोंको जला दिया। पंद्रह-सोलह जनवरीको लिखा। उन दिनों मेरा फाका चलता था। फाकासे उसको क्या मतलब हो सकता है? अगर यह सही है तो मैं ग्वालियरके हिंदुओंसे कहूंगा कि दिल्लीमें जो बन गया है उसको आप लोग बिगाड़नेवाले है। वे कहते हैं कि जो हकूमत चलानेवाले हैं वे भी इमदाद नहीं देते है। ऐसा कैसे हो सकता है? हिंदुस्तानके एक कोनेमें भी ऐसा हो तो मैं कहूंगा कि हकूमतको शर्मिंदा होना है और हमको भी शर्मिंदा होना है। मेरी उम्मीद है ऐसा हो तो आखिरमें उसको ठीक कर दिया जायगा।

मैंने सुना है, अखबारोंमें पढ़ा है कि काठियावाड़के जितने राजा हैं—काफी हैं, दो सौसे ज्यादा है—उन सबने मिलकर इकरार कर लिया है कि हम सब एक रियासत बनाएंगे और असेम्बली बना लेंगे, प्रजाका भी काम करेंगे और अपना भी काम करेंगे। अगर अखबारोंमें जो बात आई है वह सही है तो बड़ी चीज है। इसके लिए काठियावाड़के सब राजाओं-को और वहांके लोगोंको मैं धन्यवाद देता हूं। भावनगरमें सब सत्ता प्रजाके हाथ सौंप दी और राजा प्रजाका सेवक बन गया। इस बड़े कामके लिए मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हू।

: २१५ :

२१ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

पहले तो मैं माफी मांग लूं कि मैं १० मिनिट देरसे आया हूं। बीमार हूं, इसलिए समयपर नहीं आ सका।

कलके बम फूटनेकी बात कर लू। लोग मेरी तारीफ करते हैं और तार भी भेजते हैं। पर मैंने कोई बहादुरी नही दिखाई। मैंने तो यही समझा था कि फौजवाले कही प्रैक्टिस करते हैं। बादमें सुना कि बम था। मुझसे कहा गया कि आप मरनेवाले थे, पर ईश्वरकी कृपासे बच गए। अगर सामने बम फटे और मै न डरूं, तो आप देखेंगे और कहेंगे कि वह बमसे मर गया, तो भी हँसता ही रहा। आज तो मैं तारीफके काबिल नहीं हूं। जिस भाईने यह काम किया, उसमे आपको या किसीको नफरत नहीं करनी चाहिए। उसने तो यह मान लिया कि मै हिंदू-धर्मका दुश्मन हू। क्या गीताके चौथे अध्यायमें यह नही कहा गया है कि जहां कही दुष्ट-धर्मको नुकसान पहुंचाते हैं, वहा उन्हें मारनेके लिए भगवान किसीको भेज देता है। उसने बहादुरीसे जवाब दिया। हम सब ईश्वरसे प्रार्थना करे कि वह उसे सन्मति दे। जिसे हम दुष्ट मानते है और वह दुष्ट है, तो उसकी खबर ईश्वर लेगा।

वह नौजवान शायद किसी मस्जिदमें बैठ गया था। जगह नहीं थी, तो वह हकूमतको दोषी ठहरावे, पर पुलिसका या किसीका कहना न माने, यह तो ठीक नही।

इस तरह हिदू-धर्म नही बच सकता। मैने बचपनसे हिंदू धर्मको पढ़ा और सीखा है। मैं छोटा-सा था और डरता था, तो मेरी दाई कहती थी कि डरता क्यों है, राम-नाम ले। फिर मुझे ईसाई, मुसलमान, पारसी सब मिले, मगर मै जैसा छोटी उमरमें था, वैसा ही आज भी हूं। अगर मुझे हिंदू-धर्मका रक्षक बनना है तो ईश्वर मुझे बचावेगा।

कुछ सिखों ने आकर मुझसे कहा कि हम नही मानते कि इस काममें कोई सिख शामिल था। सिख होता तो भी क्या? हिंदू या मुसलमान

होता, तो भी क्या ? ईश्वर उसका भला करे। मैने इसपेक्टर-जनरल से कहा है कि उस आदमीको सताया न जाय। उसका मन जीतनेकी कोशिश की जाय। उसे छोड़ने को मैं नही कह सकता। अगर वह इस बातको समझ ले कि उसने हिंदू-धर्म, हिदुस्तान, मुसलमानों और सारे जगतके सामने अपराध किया है तो उसपर गुस्सा न करें, रहम करें। अगर सबके मनमें यही है कि बूढ़ेका फाका निकम्मा था, पर इसे मरने कैसे दें, कौन उसका इलजाम ले, तो आप गुनहगार है न कि बम फेंकनेवाला नौजवान। अगर ऐसा नहीं है, तो उस आदमीका दिल अपने आप बदलेगा ही; क्योंकि इस जगतमें पाप कभी अपने आप रह नही सकता। वह किसीके सहारे ही टिक सकता है। सिर्फ भगवान और भगवानके भक्त ही अपने सहारे रह सकते हैं। इसी में से हमारा असहयोग निकला। अहिंसात्मक असहयोग यहा भी ठीक है।

आप भी भगवान का नाम लेते है। हमला हो, कोई पुलिस भी मदद पर न आवे, गोलियां भी चले और तब भी मै स्थिर रहूं और राम-नाम लेता और आपसे लिवाता रहू, ऐसी शक्ति ईश्वर मुझे दे, तब मैं धन्यवाद के लायक हूं।

कल एक अनपढ़ बहनने इतनी हिम्मत दिखाई कि बम फेकने वाले को पकड़वा दिया। यह मुझे अच्छा लगा। मै मानता हूं कि कोई मिस्कीन हो, अनपढ़ हो, या पढ़ा-लिखा हो, मन है तो सब कुछ है। मन चंगा तो भीतरमें गंगा। मुझपर तो सबने प्रेम ही बरसाया है।

बहावलपुरवालोंने लिखा है कि हमें जल्दी निकालो, नही तो सब मरनेवाले है। मैं कहता हूं कि वे घबराएं नही। वहांके नवाब साहबने आज भी मुझे तार दिया है कि वे सब कोशिश करेगे। मै उस चीज को भूल नही गया हू।

बंबईके सिधी सिख भाइयोंकी तरफसे एक तार आया है। वे कहते हैं कि सिंधमें १५००० सिख हैं। कुछको तो मार डाला है। ये १५००० इधर-उधर पड़े हैं। उनकी जान और उनका ईमान खतरे में है। उन्हें वहांसे निकालनेकी तजवीज कीजिए—हवाई जहाजसे ही कोशिश कीजिए। मैं यहां जो कहता हूं, वह बात उनतक जल्दी से पहुंचेगी। तार देरसे

पहुंचते है। मुझसे यह बरदाश्त नही होगा कि १५००० सिख काटे जायं, या उनके ईमान-इज्जतपर हमला हो। तो मैं एक इन्सान जो कर सकता है वह करूंगा। दूसरे, पंडितजी तो सबका ध्यान रखते ही हैं। सिंध और पाकिस्तानकी हकूमतको मैं कहूंगा कि वे सिखों को इतमीनान दिला दें कि जबतक वे वहां हैं, उनको किसी तरहका खतरा नहीं। अगर वे यह नहीं कर सकते, तो सबको एक जगह रखें या हिफाजतके साथ भेज दें। सिख बहादुर हैं। उनके ईमानपर हमला कौन करनेवाला है। तो सिख भाई इतमीनान रखें। मैंने कुछ पारसी भाई वहां देखनेको भेजे हैं।

एक भाई लिखते हैं कि जब आप १९४२में जेलमें थे तब हमने हिंसाका भी काम कर लिया था। उपवासमें अगर कहीं आपका अंत हो गया तो देशमें ऐसी हिंसा फूटेगी कि आपका ईश्वर भी रो उठेगा। इसलिए आपका उपवास हिंसक होगा। आप उपवास छोड दीजिए। यह बात प्रेमसे लिखी है और अज्ञानसे भी। यह सही है कि मेरे जेल जानेके बाद हिंसा हुई। उसीका यह नतीजा है। उस वक्त सारा हिंद अहिंसक रहता तो उसका आजका हाल कभी न होता। मेरे मरनेसे सब आपस-आपस में लड़ेंगे, इस बारेमें भी मैंने सोच लिया है। ईश्वरको बचाना होगा तो बचावेगा। अहिंसासे भरा आदमी मरता है तो उसका नतीजा अच्छा ही होगा। पर कृष्ण भगवानके मरनेके बाद यादव ज्यादा भले या पवित्र नहीं हुए। सब कट-कटकर मर गए। तो मैं उसपर रोनेवाला नहीं; भगवानने इरादा कर लिया है कि इन्हें मरने दो, तो ऐसा होगा। लेकिन मैं दीन, मिस्कीन आदमी हूं। मेरे मरने से क्या लड़ना मारना? पर भगवान मिस्कीनको भी निमित्त बनाकर न मालूम क्या-क्या कर सकता है? कहते हैं, अब यहांके हिंदू-मुसलमान नहीं लड़ेंगे। मुसलमान औरतें भी दिल्ली में घरसे बाहर आने लगी है। मुझे खुशी है। मैं सबसे कहता हूं कि अपने-अपने दिलको भगवानका मंदिर बना लो।

: २१६ :

२२ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

आप देखते हैं कि आहिस्ता-आहिस्ता ईश्वरकी तरफसे मुझमें ताकत आ रही है। उम्मीद है कि जल्दी पहले-जैसा हो जाऊंगा। पर यह ईश्वरके हाथोंमे है।

एक भाई लिखते हैं कि जवाहरलालजी, दूसरे वजीर और फौजी अफसर वगैरा सब अपने-अपने घरोंमेंसे कुछ जगह शरणार्थियोंके लिए निकालें तो भी उनमें कितने लोग बस सकेंगे ? कहनेवाले ज्यादा हैं, करने वाले कम।

ठीक है, कुछ हजार ही उनमे रह सकेंगे। काम इतना बड़ा नहीं, पर करनेवाले एक मिसाल कायम करेंगे। इंगलैंडके राजा कुछ भी त्याग करें, एक प्याली शराब भी छोडें, तो भी उनकी कद्र होती है। सब सभ्य देशोंमें ऐसा होता है। सब दुःखी लोगोंपर अच्छा असर होता है। अगर दूसरे लोग भी उनकी तरह करेंगे, तो उनके लिए मकान वगैरा बनानेवालोंको तसल्ली मिलेगी। अगर नतीजा यह होगा कि दूसरी जगह से भी लोग दिल्ली आने लगें, तो काम बिगड़ेगा। लोगोंने समझा कि दिल्लीमे हमारी पूछ-ताछ ज्यादा होगी।

दूसरी कठिनाई यह है—लोग कहते है कि पहले कांग्रेसको एक लाख रुपये जमा करनेमें भी मुसीबत होती थी। लोग देते तो थे, पर हम भिखारी थे। आज करोड़ों रुपये हमारे हाथमें आ गए हैं। करोड़ों लेनेकी ताकत भले आई, पर खर्च तो वही अंग्रेजी जमानेवाला है। जितना रुपया उड़ाना है, उड़ावें। शानसे न रहें, तब उसका असर देशसे बाहर भी पड़ेगा। उन्हें समझना चाहिए कि पैसा शौकके लिए खर्चना चाहिए या देशके कामके लिए ? यदि यह बात ठीक है कि हम इंगलैंडके साथ मुकाबला करें तो कर सकते हैं, पर वहां एक आदमीकी जो आमदनी है, उससे यहां बहुत कम है। ऐसा गरीब मुल्क दूसरे मुल्कोंके साथ पैसेका मुकाबला करे तो वह मर जावेगा। दूसरे देशोंमें हमारे प्रतिनिधि भी

यह बात समझें। अमेरिकाका मुकाबला रहने दो। खानेमें, पीनेमें और पार्टियां देनेमें वे जो दावा करते थे कि हमारी हकूमत आवेगी तो हमारा भी रंग-ढंग बदल जायगा वह उन्हें झुठला देना चाहिए। हमारे त्यागी कांग्रेसवाले भी ऐसी गलती करें तो यह सोचनेकी बात है।

फिर लोग कहते हैं कि ये इतने पैसे लेते हैं, तब हम हकूमतकी नौकरी करें, तो हमें भी ज्यादा पैसे मिलने चाहिएं। सरदार पटेलको अगर १५०० रुपए मिलें, तो हमें ५०० तो मिलने ही चाहिएं। यह हिंदुस्तानमें रहनेका तरीका नहीं है। जब हरएक आत्म-शुद्धिका प्रयत्न करता हो, तब यह सब सोचना कैसा? पैसेसे किसीकी कीमत नहीं होती।

ग्वालियर रियासतके एक गावमें मुसलमानोंपर जो गुजरी है उसे बतानेवाले तारकी बात मैंने की थी। उस बारेमें मुझे वहांके एक कार्यकर्ताने सुनाया कि आपको मैं एक खुशखबरी देने आया हूं। ग्वालियरके महाराजाने सब सत्ता प्रजाको दे दी है। थोड़ी जो रखी है उसमें भी हमारा बहुमत होगा। उन्होंने मुझसे कहा कि लोगोंको जो सत्ता मिलनी चाहिए वह मिली, यह सुनकर आप खुश होंगे। हां, मगर प्रजा-मंडलवालोंमें भेद-भाव आ जाय और वे मुसलमानोंको निकालें, तो मुझे क्या खुशी? अगर आप कहें कि भेदभाव नहीं होगा, क्या हिंदू, क्या मुसलमान, क्या पारसी, क्या ईसाई, किसीके साथ बैर नहीं करेंगे, तब तो वह मेरा ही काम हुआ। उसमें मेरा धन्यवाद और आशीर्वाद मिलेगा ही। महाराजाको लोगोंका सेवक बनना है। इस आत्म-शुद्धिके यज्ञमें राजा-प्रजा सबको अच्छी तरह भाग लेना है। तब तो हम सारी दुनिया के सामने खड़े रह सकते हैं। अगर हमें दुनियाकी चालको ठीक रखना है और उसके रक्षक बनना है तो इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

: २१७ :

२३ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो

आज मेरे पास काफी चीज़ें पड़ी है। जितना हो सकेगा उतना कहूंगा।

आज सुभाषबाबूकी जन्म-तिथि है। मैंने कह दिया है कि मैं तो किसीकी जन्म-तिथि या मृत्यु-तिथि याद नही रखता। वह आदत मेरी नही है। सुभाषबाबूकी तिथिकी मुझे याद दिलाई गई। उससे मै राजी हुआ। उसका भी एक खास कारण है। वे हिंसाके पुजारी थे। मैं अहिंसाका पुजारी हूं। पर इसमे क्या? मेरे पास गुणकी ही कीमत है। तुलसीदासजीने कहा है न:

"जड़-चेतन गुन-दोषमय विश्व कीन्ह करतार।
संत-हंस गुन गहहि पय परिहरि बारि बिकार॥

हंस जैसे पानीको छोडकर दूध ले लेता है, वैसे ही हमें भी करना चाहिए। मनुष्यमात्रमे गुण और दोष दोनों भरे पड़े है। हमे गुणोंको ग्रहण करना चाहिए। दोषोंको भूल जाना चाहिए। सुभाषबाबू बड़े देश-प्रेमी थे। उन्होंने देशके लिए अपनी जानकी बाजी लगा दी और वह करके भी बता दिया। वह सेनापति बने। उनकी फौजमें हिंदू, मुसलमान, पारसी, सिख सब थे। सब बंगाली ही थे, ऐसा भी नहीं था। उनमे न प्रांतीयता थी, न रंगभेद, न जातिभेद। वे सेनापति थे, इसलिए उन्हें ज्यादा सहूलियत लेनी या देनी चाहिए, ऐसा भी नही था।

एक बार एक सज्जन, जो बड़े वकील थे, उन्होंने मुझसे पूछा कि हिंदू-धर्मकी व्याख्या क्या है? मैंने कहा, मै हिंदू-धर्मकी व्याख्या नहीं जानता। मैं आप-जैसा वकील कहां हूं? मेरे हिंदू-धर्मकी व्याख्या मैं दे सकता हूं। वह यह है कि जो सब धर्मोको समान माने वही हिंदू-धर्म है। सुभाषबाबूने सबका मन हरण करके अपना काम किया। इस चीजको हम याद रखें।

दूसरी चीज—ग्वालियर से खबर आई है कि रतलामसे जो आपको

एक गावके झगड़ेके बारेमें खबर मिली थी, वह सर्वथा ठीक नही है। वहा कुछ दंगा हुआ तो नही; लेकिन आपस-आपसमे उसमे हिंदू-मुसलमानकी कोई वात न थी। मुझे इससे बडी खुशी होती है। उसपरसे मै मुसलमान भाइयोंको जाग्रत करना चाहता हूं। मै तो, जो चीज मेरे सामने आती है, उसे जनताके सामने रख देता हू। अगर ऐसी बनी-बनाई बात कहते रहेंगे, तो सबके दिलमे गलतफहमी हो जायगी। कोई भी चीज बढ़ाकर न बतावे। अपनी गलती बढ़ाकर बता दें, दूसरोकी कम करके। तब यह माना जायगा कि हम आत्मशुद्धिके नियमका पालन करते है।

मैसूरसे तार आया है कि आपने जो व्रत लिया उसका मैसूरकी जनतापर असर नही पडा। वहा झगडा हो गया है। मै मैसूरके हिंदू-मुसलमानोंको जानता हूं। जिनके हाथमें हकूमत है उनको भी जानता हूं। मैंने मैसूर सरकारको लिखा है कि वे, जो कुछ हुआ है, उसे साफ-साफ दुनियाको बता दें।

जूनागढ़से मुसलमान भाइयोका तार आया है। वे लिखते है कि जबसे कमिश्नर और सरदारने हकूमत ले ली है, तबसे यहां हमें न्याय ही मिल रहा है। अब कोई भी हममें फूट नही डाल सकेगा। यह मुझे बड़ा अच्छा लगता है।

मेरठसे एक तार आया है। उसमे लिखा है कि आपके उपवासका नतीजा ठीक आ रहा है। यहांपर जो नेशनलिस्ट मुसलमान है, उनसे हमे कोई नफरत नही है। पर लीगी मुसलमान सीधे हो गए है या हो जाएंगे, ऐसा मानोगे तो आपको पछताना पड़ेगा। आपकी अहिंसा अच्छी है, मगर राजनीतिमे नहीं चल सकती। फिर भी हम आपको कहना चाहते कि आपकी जो हकूमत है वह अच्छी है, इसमें किसी तरहकी तबदीली नहीं होनी चाहिए।

मैं तो नही समझता कि तवदीलीका सवाल उठता कहां है। मगर तबदीलीकी गुंजाइश हो तो जिनके हाथमें हकूमत है, उन्हें निकालना आपके हाथोंमें है। मैं तो इतना जानता हूं कि उनके बिना आज आप काम नही चला सकेंगे।

आज यह कहना कि राजनीतिमें अहिंसा चल नही सकती, निकम्मी बात है। आज जो काम कर रहे हैं, वह हिंसाका है ; मगर वह चल नहीं सकता। मेरठके मुसलमानोंने आजादीकी लड़ाईमें काफी हिस्सा लिया है। आजकलकी राजनीति अविशवससे चल ही नहीं सकती। इसलिए हमें मुसलमानोंपर विश्वास रखना ही होगा। यदि हमने तय कर लिया है कि भाई भाई बनकर रहना है, तो फिर हम किसी मुसलमानपर खामखाह अविश्वास न करेंगे; फिर भले वह लीगी हो। मुसलमान कहें कि हिंदू-सिख बदमाश हैं, तो यह निकम्मी बात है। ऐसे ही हरएक लीगीके लिए यह मान लेना भी बुरा है। अगर कोई लीगी या दूसरा कोई भी बुरी बात करता है, तो आप उसकी खबर सरकारको दें। हमारा परम धर्म मैंने सबको बता दिया है कि न्याय हकूमतके हाथोंमें रहने दें, अपने हाथमें न ले लें। वह वहशियाना काम होगा। मेरे पास बहुतसे तार आ रहे है। सबका जवाब नही दे सकता, इसलिए सभाके मारफत मै आप सबका अहसान मानता हूं। आपकी दुआ सफल हो।

: २१८ :

२४ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

मैंने आपसे प्रार्थना की है कि सब लोगोंको प्रार्थना-सभामें शांत रहना चाहिए। आज तो मैंने प्रार्थनाके आरंभमे भी कहा था कि सब शांत हो जाएं। तब तो आप शांत हो गए, लेकिन बादमें जब प्रार्थना चलती थी तब कुछ बहनें आपसमें बातें भी करती थी और बच्चे चीखते रहते थे। वह कोई अच्छा नही लगता था। मैं बार-बार यही कहता हूं कि सबको जब बच्चे चीखते हों या रोते हों, तो उनको बाहर ले जाना चाहिए। उन्हें भीतर लेकर बैठनेकी हिम्मत नही होनी चाहिए, अगर वे सभ्यता सीखना चाहती हैं तो।

आज एक तार मेरे पास है। इसकी बात तो मैं कल ही करना

चाहता था, लेकिन नहीं कर सका। बहुत लंबा तार है; लेकिन उसमें इतना लिखा है कि दोनों हकूमतोंमें यह समझौता तो हो गया है कि जो कैदी एक हकूमतमे हो गए थे, उनको दूसरी हकूमतमें भेज देना। जैसा कि अगर पश्चिमी पजाबमे या कहो पाकिस्तानके पंजाबमें, जो आदमी कैदमें है, वे तो हिंदू और सिख ही हो सकते है, कोई अन्य और तरहसे हों, वह दूसरी बात है। इसी तरहसे जो पूर्वी पंजाबमें हैं, वे मुसलमान कैदी है। उनमें वे लड़किया भी हैं जिन्हे लोग भगा ले गए थे। तारमें जो कहते है कि ऐसा समझौता हो तो गया, लेकिन थोडे अर्सेतक चला। अभी वह टूट गया है और कहा यह जाता है कि जो टूटा उसका कारण यह है कि पश्चिमी पंजाबकी जो हकूमत है उसने कैदियोंको रख लिया और कहा कि यह तभी हो सकता है जब कि पूर्वी पंजाबमें जितनी रियासतें है, या राजा हैं और जहांतक उनका कार-बार चलता है, वहां भी जो कैदी है, वे वापिस आने चाहिए और वहां जो लड़कियां हैं उनको भी वापिस करना चाहिए।

मुझे तो इसमें कोई दिक्कत नहीं हो सकती है। ऐसे ही पश्चिमी पंजाबकी जो रियासतें है, वहासे होना चाहिए। वहां कम रियासतें हैं और यहां ज्यादा है, उससे क्या हुआ? कही भी हो, इस बारेमें समझौता हो जाना चाहिए। इसमें दिक्कत आती है, यह तो सही है। पूर्वी पंजाबसे जब यह समझौता कर लिया था तब तो यह नही था, ऐसा मैं अखबारोंसे समझता हूं। नही था, तो भी क्या? जितनी लड़कियां उठा ले गए हैं, इधर या उधर, वे सब वापिस होनी चाहिएं। मेरी निगाहमें तो यह नहीं होता कि पश्चिमी पजाबसे दस लड़की आती है तो पूर्वी पंजाबसे भी दस ही जानी चाहिएं, ग्यारहवीं नही जा सकती। जितनी लड़कियां पूर्वी पंजाबमें पड़ी हैं, औरतें हैं, पुरुष है या दूसरे कैदी हैं, उन सबको वापस कर देना चाहिए और यह सब बिना शर्त होना चाहिए। लेकिन आज ऐसा नही होता है, क्योंकि वैमनस्य भरा हुआ है। वे ऐसा करनेमें कठिनाई महसूस करते हैं। लेकिन यह तो होना ही चाहिए कि पूर्वी पंजाबसे तो सबको वापस करदें। उसमें क्या होगा? माना कि कुछ ज्यादा तादादमें पश्चिमी पजाबमें और थोड़ी तादादमें पूर्वी पंजाबमें हैं। मैंने कहा है कि मुझको तो इसकी परवा नहीं

है। सब गलती ही है, एकको ले गए वह गलती है और सौको ले गए वह भी गलती है। ज्यादा नही ले सके, उसका कोई दूसरा सबब नहीं है। दिलमें तो ऐसा नही था कि एक ही लड़कीको ले जाएं या इतने पुरुष ही कैद रखें। जब सब बिगड़ा तो उसमें पीछे मुकाबला क्या करना था ! जो चलता रास्ता है उसमें तो रुकावट नही होनी चाहिए। मै तो कहता हूं कि दूसरी चीजे भी करें, समझौता करके। अगर दोनों हकूमत दोस्ताना तरीकेसे करे और यह समझें कि लड़ाई हम आपस-आपसमें नही करना चाहते हैं, तो फिर रास्ता सीधा और साफ हो जाता है। इसीलिए मै दोनों हकूमतोंसे बडे अदबसे कहूंगा कि जो कुछ भी हो गया है उसे भूलकर अब भी दुरुस्त हो जाएं। दिलको दुरुस्त करना है और अगर दिल दुरुस्त हो गया तो ठीक है और नही हुआ तो फिर हमे तो अपने धर्मका पालन करना ही है, लेकिन झगड़ेका सबब तो रह ही जाता है, फिर चाहे मुझको आप तार भेजते रहे कि हमारे झगड़ोंका कारण कोई रहता ही नही। ये सारी चीजें आत्मशुद्धिमें आ जाती हैं। आत्म-शुद्धिके माने यही है कि हम अपने दिलोंको साफ करें।

लेकिन मेरे पास इल्जाम तो यह आ रहा है कि पश्चिमी पंजाबमें जो औरतोंको उठा ले गए है उनको वे उतनी तादादमें वापस नही करते। ऐसी शिकायत पूर्वी पंजाबके बारेमें भी करते हैं। मैंने तहकीकात तो नहीं की है कि कौन झूठा है और कौन नहीं। मैं तो जानता नही हू, लेकिन पश्चिमी पंजाबके बारेमें अगर यह शिकायत सही है तो शर्मकी बात है, पूर्वी पंजाबके बारेमें भी ऐसा ही है। लेकिन पश्चिमी पंजाबके बारेमें तो यह शिकायत भी है कि वे कहते है एक चीज, और करते है दूसरी। मैं इस बारेमें इतना ही कह सकता हूं कि यह सब दुरुस्त होना चाहिए। नहीं होता है तो बड़े शर्मकी बात है। और पीछे मैं तो यही कहूं कि मैंने जो फाका किया उसके अक्षरोंपर तो दिल्लीमें अमल हो भी गया, लेकिन उसमें जो भेद या रहस्य है, उसका पालन नहीं हुआ।

: २१६ :

२५ जनवरी, १६४८

भाइयो और बहनो,

अभी हमारेमे दिलका समझौता हो गया है, ऐसा लोग कहते हैं। मैं मुसलमानोंसे पूछता हू और हिंदुओंसे भी। सब यही कहते है कि हम सब समझ गए हैं कि अगर आपस-आपसमें लड़ते रहेगे तो काम हो नहीं सकेगा। इसलिए आप सब बेफिक्र रहें। मै यह पूछना तो नही चाहता हूं कि इस सभामे कितने मुसलमान है। मगर मै सबको भाई-भाई बनने-को कहूंगा। किसी भी मुसलमानको अपना दोस्त बनाले, या यह मानो कि जो मुसलमान हमारे सामने आता है वह हमारा दोस्त है और उससे कहो कि चलो, वहां आरामसे बैठो। यहां किसीसे नफरत तो है ही नही। दो दिनसे तो यहा काफी आदमी आ रहे है। अगर सब अपने साथ एक-एक मुसलमान लाते है तो बहुत बड़ा काम हो जाता है। इससे हम यही बना सकते है हम भाई-भाई है।

महरौलीमे जो दरगाह है, वहा कलसे मुसलमानोंका उर्सका मेला शुरू होगा। वैसे तो वह हर वर्ष होता है, लेकिन इस वर्ष तो हमने उसको ढहा दिया था या बिगाड दिया था। जो पत्थरकी चित्रकारीका काम था वह भी ढहा दिया था। अब कुछ ठीक कर लिया है, इसलिए उर्स जैसा पहले मनता था ऐसा ही अब मनेगा। वहां कितने मुसलमान आते हैं इसका मुझको कुछ पता नही है। लेकिन इतना ती मुझे मालूम है कि वहा दरगाहमे मुसलमान भी काफी जाते थे और हिदू भी। मेरी तो उम्मीद है सब हिंदू इस बार भी शातिसे और पक्की भावनासे जाएं तो बड़ा अच्छा है। मुझको पता तो लग जायगा कि कितने हिंदू गए थे और कितने नहीं। लेकिन वे जो मुसलमान वहां जाते हैं उनका मजाक न करें और किसी तरहकी निंदा न करें। पुलिसके लोग वहां होंगे तो सही, लेकिन कम-से-कम रहने चाहिएं। आप सब पुलिस बन जाएं और सब काम ऐसी खूबीसे हो कि यह चीज सारी दुनियामें चली जाए। इतना तो हो गया कि आप बड़े मशहूर हो गए है। अखबारोंमें भी आता है

और मेरे पास तो तार और खत दुनियाके हर हिस्सेसे आ रहे हैं। चीनसे तथा एशियाके सब हिस्सोंसे आ रहे हैं और अमरीका तथा यूरोप-से भी। दुनियाका कोई भी देश बाकी नही बचा है और सब यही कहते है कि यह तो बहुत बुलंद काम हो गया है। हम तो ऐसा मानते थे कि अंग्रेज तो वहां से आ गए, अब वे तो जाहिल आदमी है और जानते नहीं है कि अपना राज कैसे चलाना चाहिए और आपस-आपसमें लडते-भिडते थे। १५ अगस्तको यह सारी चीज तो हो गई और हम तारीफ भी कर रहे थे कि हम तलवारके जोरसे नही लडे। हमने शांतिसे लडाई की या ठंडी ताकतकी लड़ाईकी, और उसका नतीजा यह हुआ कि हमारी गोदमें आकर आजादी देवीने रमण करना शुरू कर दिया। ऐसी घटना १५ अगस्तको हो गई।

मै २ फरवरीको वर्धा चला जाऊंगा। राजेन्द्र बाबू भी मेरे साथ जाएंगे; लेकिन मैं वहासे जल्दी ही लौटनेकी कोशिश करूंगा। अखबारों में प्रकाशित यह समाचार गलत है कि मैं वहां एक महीनेतक ठहरूंगा। लेकिन मैं वर्धा तभी जा सकता हूं जब आप लोग आशीर्वाद देंगे और यह कहेगे कि अब आप आरामसे जा सकते हैं, हम यहां आपसमें लड़नेवाले नही हैं।

उसके बादमें मैं पाकिस्तान भी जाऊंगा, लेकिन उसके लिए पाकिस्तान सरकारको कहना है कि तू आ सकता और अपना काम कर सकता है। अगर पाकिस्तानकी एक भी सूबेकी हकूमत बुलाएगी तो भी मैं वहां चला जाऊंगा।

जब-जब कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठक मेरी उपस्थितिमें होती है, तब-तब मैं आपको उसके बारेमें कुछ-न-कुछ बता देता हूं। आज कार्य-समितिकी दूसरी बैठक हुई और उसमे काफी बातें हुई। सब बातोंमें तो आपकी दिलचस्पी भी नही होगी, लेकिन एक बात तो आपके बताने लायक है। कांग्रेसने २० सालसे यह तय कर लिया था कि देशमें जितनी बड़ी-बड़ी भाषाएं है उतने प्रांत होने चाहिएं। कांग्रेस ने यह भी कहा था कि हकूमत हमारे हाथमें आते ही ऐसे प्रांत बनाए जायंगे। वैसे तो आज भी ६ या १० प्रांत बने हुए हैं और वे एक मरकजके मातहत हैं। इसी

तरहसे अगर नए प्रांत बनें और सब दिल्लीके मातहत रहें तबतक कोई हर्जकी बात नही। लेकिन अगर वे सब अलग-अलग होकर आजाद हो जाएं और एक मरकजके मातहत न रहें तो फिर वह एक निकम्मी बात हो जाती है। अलग-अलग प्रांत बननेके बाद वे यह न समझ लें कि बंबई-का महाराष्ट्रसे कोई संबंध नहीं। महाराष्ट्रका कर्नाटकसे और कर्नाटकका आंध्रसे कोई संबंध नही। तब तो हमारा काम बिगड़ जाता है। इसलिए सब आपसमें भाई-भाई समझें। इसके अलावा अगर भाषावार प्रांत बन जाते है तो प्रांतीय भाषाओंकी भी तरक्की होती है। वहांके लोगोंको हिंदुस्तानीमें तालीम देना तो वाहियात है और अंग्रेजीमें देना तो और भी वाहियात है।

: २२० :

२६ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

आज २६ जनवरी स्वतंत्रताका दिन है। जबतक हमारी आजादी-की लड़ाई जारी थी और आजादी हमारे हाथमें नहीं आई थी, तबतक इसका उत्सव मनाना जरूर मानी रखता था। किंतु अब आजादी हमारे हाथमें आ गई है और हमने इसका स्वाद चखा है तो हमें लगता है कि आजादीका हमारा स्वप्न एक भ्रम ही था जो कि अब गलत साबित हुआ है। कम-से-कम मुझे तो ऐसा लगा है।

आज हम किस चीज का उत्सव मनाने बैठे हैं? हमारा भ्रम गलत साबित हुआ, इसका नही। मगर अपनी इस आशाका उत्सव हमें मनानेका जरूर हक है कि काली-से-काली घटा अब टल गई है और हम उस रास्तेपर हैं कि जिसपर आते-जाते हुए तुच्छ-से-तुच्छ ग्रामवासीकी गुलामीका अंत आएगा और वह हिंदुस्तानके शहरोंका दास बनकर नहीं रहेगा; बल्कि देहातोंके विचारमय उद्योगोंके मालकी विज्ञप्ति और बिक्रीके लिए

शहरके लोगों का उपयोग करेगा वह यह सिद्ध करेगा कि वह सचमुच हिंदुस्तानकी भूमि का जायका है।

इस रास्तेपर आगे जाते हुए अंतमें सब वर्ग और संप्रदाय एक समान होंगे। यह हर्गिज न होगा कि बहुसंख्या अल्पसंख्यापर—चाहे वह कितनी ही कम या तुच्छ क्यों न हो—अपना प्रभुत्व जमाए या उसके प्रति ऊंच-नीचका भाव रखे। हमे चाहिए कि इस आशाके फलीभूत होनेमें हम ज्यादा देरी न होने दें कि जिससे लोगोंके दिल खट्टे हो जाएं।

दिन-प्रतिदिनकी हड़तालों और तरह-तरहकी बदअमनी जो देशमें चल रही है वह क्या इसी चीजकी निशानी नही कि आशाए पूरी होनेमें बहुत देर लग रही है? यह हमारी कमजोरी और रोगकी सूचक है। मजदूर-वर्गको अपनी शक्ति और गौरवको पहचानना चाहिए। उनके मुकाबिलेमें वह शक्ति या गौरव पूंजीपतियोंमें कहां है, जो कि हमारे श्रामवर्गमें भरा है! सुव्यवस्थित समाजमें हड़तालोंका बदअमनीके लिए अवसर या अवकाश ही नही होना चाहिए। ऐसे समाज मे न्याय हासिल करनेके लिए काफी कानूनी रास्ते होंगे। खुली या छुपी जोरावरीके लिए स्थान ही न होगा। कानपुर या कोयलेकी खानोंमें या और कहीं भी हड़तालें होनेसे सारे समाज और खुद हड़तालियोंको आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। मुझे यह याद दिलाना निकम्मा होगा कि यह लंबा लेक्चर मेरे मुंहमें शोभा नही देता, जब कि मैने खुद इतनी सफल हड़तालें करवाई हैं। अगर कोई ऐसे टीकाकार है तो उन्हें याद रखना चाहिए कि उस वक्त न तो आजादी थी और न इस किस्मके कानूनी जाब्ते थे जो कि आजकल हैं। कई बार तो मुझे ताज्जुब होता है कि क्या हम सचमुच ताकतकी सियासी शतरंज और सत्तापर चुंगल मारनेकी वबा (बीमारी) से, जो कि पूर्व और पाश्चात्य के सब देशोंमें फैल रही है, बच सकते हैं। इससे पहले कि मैं इस विषयको यहां छोड़ूं, मैं यह आशा प्रकट किए बिना नहीं रह सकता कि यद्यपि भौगोलिक व राजनैतिक दृष्टिसे हिंदुस्तान दो भागों में बंट गया, पर हमारे दिल जुदा नही हुए और हम हमेशाके दोस्त बनकर भाइयोंकी तरह एक दूसरेकी मदद करते रहेंगे और एक दूसरेको इज्जतकी निगाहसे देखेंगे। जहांतक दुनियाका ताल्लुक है हम एक ही रहेंगे।

कपड़ेपरसे अंकुश उठानेके फैसलेका सब तरफ से स्वागत किया गया है। कपड़ेकी कमी कभी थी ही नही, और हो भी कैसे सकती है, जब कि देशमें इतनी रुई, और कातनेवाले और बुननेवाले मौजूद है। कोयले और जलानेकी लकडीपरसे अकुश उठनेपर भी इतना ही सतोष प्रकट किया गया है। यह बडी देखनेकी चीज है कि अब बाजारमे गुड़ जरूरत से ज्यादा आकर जमा हो रहा है, और गुड ही गरीब आदमीकी खुराकमे गर्मी देनेवाली चीजके अशको पूरा कर सकता है। गुड़के इन जमा हुए ढेरोंको घटाने या जहां गुड बनता है वहांसे गुड़ पहुचानेकी कोई सूरत नही, अगर तेजीसे सामान ढोनेका बंदोबस्त न हो। एक मित्र, जो इस विषयको खूब समझते है, एक पत्रमें लिखते हैं, वह ध्यान देने लायक है:

"यह कहनेकी जरूरत नही कि अंकुश उठानेकी नीतिकी सफलताका ज्यादा आधार इस चीजपर ही है कि रेलगाड़ी या सड़कसे सामानकी नकली हरकतका ठीक-ठीक बंदोबस्त किया जाए। अगर रेलसे माल इधर-उधर ले जानेके तत्रमें सुधार न हुआ तो देशभरमें कहत फैलने और अंकुश उठानेकी सब योजना अस्त-व्यस्त हो जानेका डर है। आज जिस तरहसे माल ले जानेका हमारा तंत्र चल रहा है उससे दोनों, अंकुश चलाने और उठानेकी नीति, सख्त खतरेमें है। हिंदुस्तानके जुदा-जुदा हिस्सोंमें, भावोंमें इतना भयंकर फर्क होनेकी वजह भी माल उठानेके साधनोकी यह कमी ही है। अगर गुड़ रोहतकमें आठ रुपए मन और बंबईमें पचास रुपए मनके हिसाब बिकता है तो यह साफ बताता है कि रेलवे तंत्रमें कहीं सख्त गड़बड है। महीनोंतक मालगाडीके डिब्बोंमेसे सामान नही उतारा जाता, डिब्बों और कोयलेकी कमी और तरह-तरहके मालको तरजीह देनेके बहाने, मालगाडीके डिब्बोंपर माल लादनेमें सख्त बेईमानी और घूसका बाजार गर्म है। एक डिब्बेको किरायेपर हासिल करनेके लिए सैकड़ों रुपए खर्च करने पड़ते है और कई-कई दिनोंतक स्टेशनोंपर झक मारनी पड़ती है। डिब्बोंकी मांग पूरी करने और डिब्बोंको चलते रखनेमें ट्रांस-पोर्टके मंत्रीकी भी अभीतक कुछ चली नही। अगर अंकुश उठानेकी नीतिको सफल बनाना है तो ट्रांसपोर्टके मंत्रीको रेल और सड़ककी सारी ट्रांसपोर्ट-व्यवस्थाकी फिरसे जाच-पड़ताल करनी होगी। तभी यह नीति

जिन गरीब लोगोंको राहत देनेके लिए चलाई जा रही है, उनको फायदा पहुंचा सकेगी। आज इस ट्रांसपोर्टके कमूरसे लाखों और करोड़ों देहातियों-को सख्त तकलीफ उठानी पड़ती है और उनका माल मंडीतक पहुंचने ही नही पाता।"

जैसा मैं पहले लिख चुका हूं, पेट्रोलका राशनिंग बंद करना ही चाहिए और सडकसे सामान ढोनेके साधनोंका इजारा और परमिटका तरीका बिलकुल बंद होना चाहिए। इजारेमें थोड़ी ट्रांसपोर्ट कंपनियोंका ही लाभ होता है और करोडों गरीबोंका जीवन दूभर हो रहा है। अकुश उठानेकी नीतिकी ६५ फी सदी सफलता उपरोक्त शर्तोंपर ही निर्भर है। जो सूचनाएं ऊपर दी गई है उनपर अमल हुआ तो परिणामस्वरूप देहातों-से लाखों टन खाद्य पदार्थ और दूसरा माल देशभरमें आने लगेगा। बेईमानी और घूसखोरोका विषय कोई नया नहीं है, केवल अब वह पहले-से बहुत ज्यादा वढ़ गया है। बाहरका अंकुश तो कुछ रहा ही नही है। इसलिए यह घूसखोरी तबतक बंद न होगी जबतक जो लोग इसमे पड़े है वे समझ न लें कि वे देशके लिए है, न कि देश उनके लिए। इसके लिए जरूरत होगी एक ऊंचे दर्जेके नैतिक शासनकी। उन लोगोंकी तरफसे, जो खुद घूसखोरीके इस मर्जसे बचे हुए हैं और घूसखोर अमलदारोंपर जिनका प्रभाव है, ऐसे मामलोंमें उदासीनता दिखाना गुनाह है। अगर हमारी संध्याकालकी प्रार्थनामे कुछ भी सचाई है तो घूसखोरी-के इस दौरको खत्म करनेमें उससे काफी मदद मिलनी चाहिए।

: २२१

२७ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

(आज गांधीजीकी प्रार्थना-सभामें एक ही मुसलमान उपस्थित था। गांधीजी ने कहा कि मैं इतनेसे ही संतुष्ट नहीं हूं। प्रार्थनामें आनेवाले सब हिंदू और सिख भाई-बहन अपने साथ एक-एक मुसलमान लाएं।

इसके बाद गांधीजीने महरौलीकी 'दरगाह शरीफमें मुसलमानोंके उर्स-के मेलेका जिक्र किया जिसे वे स्वयं आज सवेरे देखने गए थे। उन्होंने कहा :)

किसीको वहां आने-जानेमें झिझक नहीं थी। मैंने जान-बूझकर मुसलमानोंसे पूछा कि हमेशा जितने आते थे उतने तो नहीं आ सके होंगे, तो उन्होंने कहा कि कुछ डर तो रहा होगा ही। हमारेमें ऐसे लोग भी हैं न, कि जो डर-सा बता देते हैं। वे कहते हैं कि इलाहाबादमें भी कुछ हो गया है, वही यहां हुआ तो हिंदू क्या करेंगे। इन्सान इन्सानसे डरे, यह तो हमारे लिए शर्मकी बात है। लेकिन कम-से-कम इतना तो मैंने पाया कि जितनी तादाद मुसलमानोंकी थी उतनी ही तादाद हिंदुओंकी थी और सिख भी काफी थे। पीछे एक दुःखद बात भी मैंने देखी। वह दरगाह तो बादशाही जमानेकी है, कोई आजकी थोड़े ही है। बहुत पुराने जमानेकी है। अजमेरकी दरगाह शरीफसे दूसरे नंबरपर है, तो जो मुख्य वस्तु है वह तो वहां नक्काशीका काम ही था और बड़ा खूबसूरत था। वह सब तो नहीं, लेकिन काफी ढहा दिया है और जो नक्काशीकी जालियां थीं वे भी काफी तोड़ डालीं। मुझको तो यह देखकर बहुत दुःख हुआ। मैं तो उसे वहशियाना चीज ही कह सकता हूं। क्या हम इतने गिर गए हैं कि एक जगहपर किसी औलियाकी कब्र बनाई गई है और कब्र भी बहुत आलीशान, हजारों रुपया उसपर खर्च किया है—उसको हम इस तरह नुक्सान पहुंचाएं, माना कि इससे भी बदतर पाकि-स्तानमें हुआ है। यहां एक गुना हुआ और वहां दस गुना हुआ, इसका हिसाब मैं नहीं कर रहा। मेरे नजदीक तो चाहे थोडा गुनाह करो या ज्यादा, इसकी कोई तुलना मैं नहीं करता। वह शर्मनाक बात है। अगर सारी दुनिया शर्मनाक बात करती है तो क्या हम भी करें ? नहीं करना चाहिए, ऐसा आप भी मानेंगे।

मुझको पता चला कि दरगाहमें हिंदू और मुसलमान दोनों काफी तादादमें आते हैं और मिन्नत भी करते हैं। उसका बड़ा दर्जा वे रखते हैं और जो औलिया हो गए हैं, यहां या अजमेर शरीफमें, उनके दिलमें भी हिंदू, मुसलमानका कोई भेदभाव नहीं था। यह तो एक ऐतिहासिक बात

थी और सच तो है ही। झूठ बतानेमें तो उनका कोई फायदा नहीं होता। ऐसे जो औलिया हो गए उनका आदर होना ही चाहिए। पाकिस्तानमें क्या होता है, उस तरफ हम न देखें।

आज ही मैने अखबारोंमें देखा है कि पाकिस्तानमें एक जगह १३० हिंदू और सिख कत्ल हो गए हैं। और पीछे वहां लूटमार भी हुई। किसने उनको कत्ल किया? सरहदी सूबेके ऊपर जो छोटी-छोटी कौमें मुसलमानोंकी रही है, उन्होंने बम उनपर हमला किया और उन्हें मार डाला। कोई गुनाह उन्होंने किया था ऐसा कोई नही कहता। पाकिस्तान-की हकूमतने जो कुछ लिखा है उसमें यह भी है कि हकूमतने कई हमला-वरोंको मार डाला। मार डाला या नही मार डाला, लेकिन जब वे कहते है तो हमें मान ही लेना चाहिए। इसपर हम गुस्सा करें और हम भी यहा मारना शुरू कर दें तो वह एक वहशियाना चीज होगी। आज तो आप भाई-भाई होकर मिलते है, लेकिन दिलमें अगर गदगी रखते हैं और वैर या द्वेष करते है तो फिर आपने जो यह प्रतिज्ञा की थी कि हम दिलमें भी ऐसा नही रखेंगे, उसे आप झुठला देते है। पीछे हम सबका खाना खराब होनेवाला है। यह वहा सबने महसूस किया। किसीसे मैंने पूछा तो नही, लेकिन आखोंसे मैं समझ गया। पाकिस्तानमें जो कुछ हुआ, उसका हिसाब लेना तो हमारी हकूमतका काम है, वह जाने। हमारा काम तो यही है कि एक दूसरेका दिल साफ करनेकी जो कसम हमने खाई है, उसे कायम रखें और वही चीज हम करें।

अभी अजमेरमें राजकुमारी बहन चली गई थी। उन्होंने वहांकी एक बडी खतरनाक और हमारे लिए तो शर्मकी बात सुनाई। वहां जो हरिजन रहते है, उनसे वहांवाले काम लेते हैं और वे करते भी हैं। लेकिन जिस जगहमें वे रहते है वह बहुत गंदी और मैली हे। वहां तो हमारी ही हकूमत है और अच्छी खासी हकूमत है। जो हिंदू और सिख वहां अमल-दार हैं, वे इसी हकूमतके मातहत काम करते है। क्या उन्हें खयाल नहीं आता कि ऐसा शर्मका काम हम कैसे करते है? वहां सफेद पोशाक पहनने-वाले बहुत हिंदू हैं। पैसा खासा कमाते हैं और खुश हालतमें रहते हैं। वे क्यों नहीं वहां एक दिनके लिए भी हरिजनोंकी बस्तीमें जाकर रहें?

वे अगर जाएं तो कै कर लेंगे और कोई तो शायद उनमेंसे मर भी जाएं। ऐसी जगह इन्सानोंको रखना—क्योंकि उनका यह गुनाह है कि वे हरिजन पैदा हुए है—बहुत बुरी बात है। यहां दिल्लीमें भी मै हरिजनोंकी बस्तीमे गया हूं। वह भी खराब तो बहुत है, लेकिन अजमेर तो इसमे भी बदतर है। यह तो बडी शर्मनाक बात है। क्या ऐसी शर्मनाक बातें ही हम लोग करते रहेगे ? हमने आजादी तो पाई, लेकिन उस आजादीकी कोई कीमत नही, जबतक हम इस तरहका काम भी नही बद कर सकते, यह तो एक दिनमें हो सकता है। क्या हम इन हरिजनोंको सूखी जगहमे नही रख सकते ? उनको मैला उठानेका काम करना है, वह तो करे, लेकिन मैलेमे ही पड़े रहे, ऐसा तो नही हो सकता। हमारी तो आज अक्ल चली गई है, हमारा हृदय नही रहा है और ईश्वरको हम भूल गए हैं। इसीलिए तो गुनाहके काम हम करते जाते है। और पीछे हम दूसरोका ऐब निकालें, दूसरेको दोष दें और खुद निर्दोष बनें, यह बड़ी खतरनाक बात है।

अंतमे एक और बात मै कहना चाहता हूं और वह है मीरपुरके बारेमें। एक दफा तो थोड़ा-सा मैने कह भी दिया था। मीरपुर काश्मीरमें है। अब वह हमलावरोंके हाथमें चला गया है। वहां हमारी काफी बहनें थीं। उनको वे उठा ले गए है। उनमें बुड्ढी भी हैं और नौजवान भी। वे उनके कब्जेमें पडी है और उनको वे बेआबरू भी कर लेते हैं, इसमें मेरे दिलमें कोई शक नही है। खाना भी उनको बुरा दिया जाता है। चद बहनें तो पाकिस्तानके इलाकेमें हैं। गुजरात जिलेमें झेलम तक तो शायद पहुची होंगी ही।

मैं तो कहूंगा कि जो हमलावर हमला कर रहे हैं, उसमें कुछ भी तो मर्यादा या कुछ हद तो होनी ही चाहिए। मैं इन हमलावरोंसे कहता हूं कि आप इस्लामको बिगाड़नेके लिए यह काम कर रहे है और कहते ये है कि आजाद काश्मीरके लिए करते हैं।

कोई खाने के लिए लूटपाट करे वह मैं समझ सकता हूं, लेकिन जो छोटी लड़कियां हैं उनको बेइज्जत करना, उनको खाने और पहननेको न देना, वह भी क्या आपको कुरान शरीफने सिखाया है ? और जो पीछे पाकिस्तानमें लड़कियोंको उठाकर चले गए हैं, उसके बारेमें मैं

पाकिस्तान हकूमतसे मिन्नत करूंगा कि इस तरहसे जो भी कोई लड़कियां है, उनको वापस करो और उन्हे अपने घरोंपर जाने दो।

बेचारे मीरपुरके लोग मेरे पास आए है। काफी तगडे है और शर्मिदा होते है। मुझको वे सुनाते भी है कि क्या वजह है कि हमारी इतनी बड़ी भारी हकूमत पडी है, वह इतना काम भी नही कर सकती। मैंने समझानेकी कोशिश तो की। जवाहरलालजी खुद कोशिश कर रहे है और बहुत दुःखी है। लेकिन उनके दुःखी होनेसे और उनके कोशिश करनेसे भी क्या है! जो लोग लुट गए है, बरबाद हो गए हें और जिन्होंने अपने रिश्तेदारोंको गंवा दिया है, उनको कैसे संतोष दिलाया जाय? आज जो आदमी आया उसके पंद्रह आदमी वहा कत्ल हो गए। उमने कहा कि अभी जो वहां बाकी पड़े है उनका क्या हाल होनेवाला है? मैने सोचा कि दुनियाके नाममे और ईश्वरके नामसे वे जो हमलावर पड़े हैं, उनको और पीछे पाकिस्तानको भी मै यह कहूं कि आपको बगैर मागे हुए और शोहरतके साथ उन बहनोंको वापिस कर देना चाहिए। यह उनका धर्म है। मैं इस्लामको काफी जानता हूं और काफी पढ़ा भी है। वह कभी नही सिखाता कि औरतोंको उठाकर ले जाओ और उनको इस तरहसे रखो। वह धर्म नही, अधर्म है। वह शैतानकी पूजा है, ईश्वरकी पूजा नही।

: २२२ :

२८ जनवरी, १९४८

(आरंभमें गांधीजीने बहावलपुरसे आए हुए कुछ लोगोंकी शिकायतका जिक्र किया कि उन्हें उनसे मिलनेका समय नही दिया गया। गांधीजीने उनके लिए कुछ समय निकालनेका वचन दिया और उन्हें विश्वास दिलाते हुए कहा :) उनके लिए जो भी किया जा सकता है वह हो रहा है। डा० सुशीला नायर और श्री लेसली क्रास बहावलपुर चले गए हैं और नवाब साहबने उनकी पूरी सहायता करनेके लिए कहा है।

भगवानकी कृपासे यूनियनकी राजधानी दिल्लीमे तीनों जातियोंमें फिर-से शांति कायम हो गई है। इससे सारे हिंदुस्तानमें हालत जरूर सुधरेगी।

आप जानते है कि दक्षिण अफ्रीकामे हमारे लोग अपने हकोंके लिए लड़ रहे है। यहां तो कोई ऐसे हक छीनते नहीं है कि लोग कही जमीन न रख सकें या कही भी रहना चाहते है, वहा न रह सकें। हरिजनोंका तो हमने जरूर ऐसा हाल कर दिया है, बाकी हिंदुस्तानमें ऐसा कुछ है ही नही। लेकिन दक्षिण अफ्रीकामे तो ऐसा है, इसका मैं गवाह हूं। इसलिए वे वहा हिंदुस्तानका मान रखनेके कारण और हिंदुस्तानके हक-के लिए लड़ रहे है। बहुत तरीकोंसे वे लड सकते है, लेकिन वे तो सत्याग्रही होनेका दावा करते है। इसलिए सत्याग्रहकी लड़ाई लड़ रहे है। उनके तार भी आ जाते है। वे बिना परवानेके कही जा भी नहीं सकते—जैसे नेटाल, ट्रासवाल, हिल स्टेट, केप कोलोनी वगैरा, ऐसा सिलसिला वहा रहा है। दक्षिण अफ्रीका एक खंड जैसा है, कोई छोटा-मोटा मुल्क नही है। बहुत बड़ा है। नेटालसे अगर परवाना मिले तो वे ट्रासवाल जाए, नही तो नही। तो उन सबने कहा कि यह हमारा भी मुल्क है, तब क्यों हमारे इधर-उधर आनेमें किसी तरहकी रुकावट हो ? बहुत-से तो वहा चले भी गए और मुझको यह तो कहना ही पड़ेगा कि वहांकी हकूमतने इस वक्त तो कुछ शराफत बताई है। उनको अभीतक पकड़ा नही। ट्रांसवालका जो पहला शहर आता है फाकसेस, वहां वे चले गए है। पीछे कही उनको पकड़ सकते है, लेकिन अभीतक पकडा नही है। हकूमतके सिपाही तो वहा मौजूद थे, लेकिन वे सब देखते रहे और उनको कुछ नही कहा। वहां तो उन्हे मोटर भी खड़ी मिली और उसमें बैठकर वे आगे चले गए और वहांपर उनका जलसा हुआ, जिसमें उनका स्वागत-सत्कार किया गया। वह सब हुआ। मैंने सोचा कि आपको इतनी खबर तो दे दू। यह एक बड़ी बहादुरीका काम है। वहां हिंदुस्तानी छोटी तादादमें हैं, लेकिन छोटी तादादमें रहते हुए भी अगर सब हिंदी सत्याग्रही बन जाएं तो उनकी जय ही है। कोई रुकावट उनके आगे नही ठहर सकती। लेकिन ऐसा तो नही बना है। हर किस्म-

के लोग वहां रहते हैं जैसे यहां भी रहते है। वहा थोड़े हिंदू भी है और मुसलमान भी है। वे सब मिल-जुलकर यह काम करते है। वे जानते है कि इसमें कोई गमानेकी बात नही है। और अकेले आदमियोंसे तो यह लडाई लडी भी नही जाती। इसलिए वे जोहान्सवर्गमे पहुच तो गए है, लेकिन आखिर तक तो अलग नही रह सकते, ऐसा मेरा खयाल है। उनको चलते ही जाना है, आखिरतक भी जाना है, जबतक कि पकडे न जाएं। पकडनेका वहाकी हकूमतको हक है, क्योंकि सत्याग्रहमे यह चीज तो पडी है कि जब कानून भग किया है तो उनको पकडें और जेलके भीतर जाकर भी वे कानूनकी पाबदी करते हैं। मै तो इतना ही कहूंगा कि हमारी तरफसे धन्यवाद तो उनको मिलना ही चाहिए और वह है ही; क्योंकि मै जानता हू कि इसमे कोई दूसरी आवाज निकल ही नहीं सकती। वहांकी हकूमतसे भी मैं कहता हूं कि जो लोग ऐसे लड़ते हैं और इतनी शराफतसे लडते हैं उनको हलाक क्या करना है! उनकी चीजको समझ ले और फिर आपसमे समझौता क्यो न कर लें? ऐसा क्यों हो कि जिसकी सफेद चमड़ी है वह काली चमड़ीवालेके साथ कुछ बहस नहीं कर सकता? या हिंदुस्तानियोंको जो सतोष देना है या इन्साफ करना है तो उसके लिए उनको लडना क्यो पड़े? अगर हिंदुस्तानी भी उसी जगहमे रहें तो उन्हे (गोरोंको) कौन-सा कष्ट हो सकता है? उन्हें कोई कष्ट नही होना चाहिए। दक्षिण अफ्रीकाकी हकूमतको उनके साथ सलाह-मशवरा करके सलूकसे रहना चाहिए और उनको सतोष दिलाना चाहिए। आज हम भी आजाद है और वे भी आजाद हैं और एक ही हकूमतमें हिस्सेदारकी हैसियतसे रहते है। अर्थात् दक्षिण अफ्रीका भी एक डोमीनियन है, इडियन यूनियन भी डोमीनियन है और पाकिस्तान भी डोमीनियन है। तब सब भाई-भाई जैसे बनकर रहें, यह सब उनके गर्भमें पड़ा है। इसके विपरीत वे आपस-आपसमें लड़ें और हिंदुस्तानको अपना दुश्मन मानें—हिंदुस्तानियोंको जब वहां शहरी हक भी न मिलें तो फिर वे दुश्मन नहीं हैं तो और क्या हुए? तो यह समझमें न आ सके, ऐसी चीज है। क्यों ऐसा माना जाय कि जो काली चमड़ीवाले है वे निकम्मे हैं या वे जो उद्यम कर सकते हैं और थोड़े पैसेमें रह सकते हैं, तो क्या

यह कोई गुनाह है ? लेकिन यह गुनाह बन गया है। इसलिए इस सभा-की मार्फत मै दक्षिण अफ्रीकाकी हकूमतको कहता हूं कि वह सही रास्ते-पर चले। मै भी वहां २० वर्षतक रहा हूं। इसलिए मेरा भी वह मुल्क बन गया है, ऐसा मै कह सकता हूं। यह सब कहना तो मुझको कल ही चाहिए था, लेकिन कह नहीं पाया।

मैसूरके मुसलमानोंने कुछ दिन पहले एक पत्र भेजा था कि तुम्हारे उपवासका वहां कोई असर नही पडा और मुसलमानोंको हलाक किया जा रहा है। इसके बारेमें मैने कुछ कहा भी था। उसके उत्तरमें मैसूरसे गृह-मंत्रीकी ओरसे एक तार मिला जिसमे पहले तारका खडन किया गया और यह बताया गया है कि वहा मुसलमानोके साथ इन्साफ करनेकी पूरी कोशिश की जा रही है। जैसे मैं सबसे कहता हूं वैसे मैं मैसूरके उन मुसलमान भाइयोंसे कहूंगा कि वे किसी बातमे भी अतिशयोक्ति न करें। ऐसा कहनेसे मेरे हाथ-पैर बंध जाते हैं और मै कुछ काम नहीं कर सकता। मै पहले भी कह चुका हूं और फिर मुसलमान भाइयोंसे कहता हूं कि वे किसी चीज को ज्यादा बढ़ाकर न बताएं। अगर कर सकते हैं तो कम करे। यही रास्ता है हिंदू, मुसलमान और सिखोंके मिल-जुलकर तथा भाई-भाई बनकर रहनेका। मै तो इतना बूढा होगया हूं, तो भी सारी दुनियामें दूसरा कोई रास्ता मैने नही पाया।

हमारे लोग इतने भोले है कि डाकमें ही पैसा भेज देते हैं। मुझे अपने बापके समयसे तजुर्बा है। उनके पास कुछ जेवर था। एक छोटा-सा मोती था। लेकिन था कीमती। उसे उन्होंने डाकसे भेज दिया। तबसे मैं जानता हूं कि ऐसा करना नही चाहिए। उसमें कोई चोरी तो नही थी, लेकिन खतरा तो लेना पड़ता ही है। कोई डाकमें देख ले और खोल ले तो फिर मोती कोई छुपा थोड़े ही रह सकता है। और पैसे तो फिर भी देने ही पड़े, क्योंकि उसकी पहुंचका तार मंगवाया। तो मेरे पिताको इस चीजका दु:ख हुआ। लेकिन आज भी मेरे पिताके जैसे भोले आदमी हैं। समझ लेते है कि पैसेको भेजना है, तो कौन बीचमें उसको छुएगा ? आजतक तो खैर ऐसे ही पैसे आते रहे। एक भाईने तो एक हजारसे ऊपरके नोट बंद करके भेज दिए। उसकी रजिस्टरी भी नहीं

कराई और न बीमा। जो लिफाफेपर मामूली टिकट लगते है वे लगाकर भेज दिया। आजकल तो सब लोग बहुत बिगड गए है, पैसे खा जाते है और रिश्वत भी लेते है। तब यह तो अच्छी बात है और हमारे पोस्ट-आफिसके लिए यह कोई छोटी बात नही है कि इस तरहसे इतने सुरक्षित पैसे भी आ जाते है। उसे वे देखना भी नही चाहते कि उसमें क्या भेजा है। ऐसे जब वे मुझको सब कुछ सुरक्षित भेज देते है तो दूसरोंको भी इसी तरहसे भेज देते होंगे। लेकिन जो लोग पैसा भेजते है वे चाहे इतना पैसा कम करके भेजें, लेकिन तो भी इस तरहसे खतरेमें नही पड़ना चाहिए; क्योंकि कोई बदमाश भी तो रहते है। डाकको खोल लें तब मेरे और जिन हरिजनोंके लिए पैसा भेजा है उनके क्या हाल होनेवाले हैं और जो दान देनेवाले है उनका क्या हाल होगा ? लेकिन डाकखानेमे जो आदमी काम करते हैं उनको तो मैं मुबारकबाद देता हू कि इस तरहसे काम करते हैं कि कोई घूस नही लेते। बाकी जो सब महकमे है वे भी सब ऐसा ही करें कि जो लोगोंका पैसा हो उसकी हिफाजत करें, किसीसे रिश्वतका पैसा न ले, तो हम बहुत आगे बढ़ जाते है। ऐसा लालच किसीको होना ही नही चाहिए। इसलिए मै इन दानियोंसे कहूंगा कि आप मनिआर्डर भेज दें। उसमे कितना पैसा लगता है ? ऐसा भी न करें तो रजिस्टरी करा दें। इसमे कुछ थोडा-सा पैसा ज्यादा भी लगता है तो वह खैरियतसे तो पहुंच जाता है। ऐसा आप न करें कि मामूली डाकसे हजारों रुपएके नोट भेज दिए।

: २२३ :

२९ जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

मेरे सामने कहनेको चीज तो काफी पड़ी हैं, उनमेंसे जो आजके लिए चुननी चाहिए, वे चुन ली हैं। छः चीजें हैं। पंद्र मिनट में जितना कह सकूंगा, कहूंगा।

एक बात तो देख रहा हूं कि थोड़ी देर हो गई है—यह होनी नहीं चाहिए थी। सुशीला बहन बहावलपुर चली गई है। बहावलपुरमें दुःखी आदमी है उनको देखने के लिए चली गई हैं—दूसरा अधिकार तो कोई है नहीं और न हो सकता था। फ्रेंड्स सर्विसके लेसली क्रॉसके साथ चली गई है। फ्रेंड्स यूनिटमेंसे किसीको भेजनेका मैंने इरादा किया था, ताकि वह वहां लोगोंको देखें, मिलें और मुझको वहांके हाल बता दें। उस वक्त सुशीला बहनके जानेकी बात नहीं थी, लेकिन जब सुशीला बहनने सुन लिया तो उसने मुझसे कहा कि इजाजत दे दो मैं क्रॉस साहबके साथ चली जाऊं। वह जब नोआखाली मे काम करती थी तबसे वह उनको जानती थी। वह आखिर कुशल डाक्टर है और पंजाबके गुजरातकी है, उसने भी काफी गवाया है; क्योंकि उसकी तो वहां काफी जायदाद है, फिर भी दिलमें कोई जहर पैदा नहीं हुआ है। तो उसने बताया कि मैं वहां क्यों जाना चाहती हूं; क्योंकि मैं पंजाबी बोली जानती हूं, हिंदुस्तानी जानती हू, उर्दू और अंग्रेजी भी जानती हूं तो वहां मैं क्रास साहबको मदद दे सकूंगी। तो मै यह सुनकर खुश हो गया। वहां खतरा तो है; लेकिन उसने कहा कि मुझको क्या खतरा है, ऐसा डरती तो नोआखाली क्यों जाती? पंजाबमें बहुत लोग मर गए हैं, बिलकुल मटियामेट हो गए है; लेकिन मेरा तो ऐसा नहीं है, खाना-पीना सब मिल जाता है, ईश्वर सब करता है। अगर आप भेज दें और क्रास साहब मेरेको ले जायं तो मैं वहांके लोगोंको देख लूंगी। तो मैंने क्रास साहबसे पूछा कि क्या आपके साथ सुशीला बहनको भेजूं? तो वे खुश हो गए और कहा कि यह तो बड़ी अच्छी बात है। मै उनके मार-फत दूसरोंसे अच्छी तरह बातचीत कर सकूंगा। मित्रवर्गमें हिंदुस्तानी जाननेवाला कोई रहे तो वह बड़ी भारी चीज हो जाती है। इससे बेहतर क्या हो सकता है? वे रेडक्रासके हैं। रेडक्रासके माने यह हैं कि लड़ाईमें जो मरीज हो जाते है उनको दवा देनेके काम करना। अब तो दूसरा तीसरा भी काम करते है। तो डाक्टर सुशीला क्रास साहबके साथ गई हैं या डाक्टर सुशीलाके साथ क्रास साहब गए हैं यह पेचीदा प्रश्न हो जाता है। लेकिन कोई पेचीदा है नहीं, क्योंकि दोनों एक-दूसरेके दोस्त हैं और दोनों

एक-दूसरेको चाहते है, मोहब्बत करते है। वे सेवा-भावसे गए है, पैसा कमाना तो है नहीं। वे जो देखेंगे मुझे बताएगे और सुशीला बहन भी बताएगी। मै नही चाहता कि कोई ऐसा गुमान रखे कि वह तो डाक्टर हैं और क्रास साहब दूसरे है। कौन ऊचा है कौन नीचा है, ऐसा कोई भेदभाव न करे; लेकिन क्रास साहब, उनके साथ औरत हैं तो औरतको आगे कर देते है और अपनेको पीछे रखते है। आखिर वे उनके दोस्त है। मैं एक बात और कह देना चाहता हूं कि नवाब साहब तो मुझको लिखते रहते हैं। मुझको कई लोग झूठ बात भी लिखते हैं तो उसे माननेका मेरा क्या अधिकार है। मैने सोचा कि मुझको क्या करना चाहिए। तो बहा-बलपुरके जो आए है उनको बता दूं कि वे वहांसे आएगे तो मुझको सब बात बता देंगे।

अभी बन्नूके भाई लोग मेरे पास आ गए थे—शायद चालीस आदमी थे। वे परेशान तो है, लेकिन ऐसे नही है कि चल नही सकते थे। हां, किसीकी अगुलीमें घाव लगे थे, कही कुछ था, कही कुछ था, ऐसे थे। मैंने तो उनका दर्शन ही किया और कहा कि जो कुछ कहना है बृज-किशनजीसे कह दें, लेकिन इतना समझ लें कि मैं उन्हे भूला नही हूं। वे सब भले आदमी थे। गुस्सेसे भरे होना चाहिए था, लेकिन फिर भी वे मेरी बात मान गए। एक भाई थे, वे शरणार्थी थे या कौन थे, मैने पूछा नहीं। उसने कहा कि तुमने बहुत खराबी तो कर ली है, क्या और करते जाओगे? इससे बेहतर है कि जाओ। बड़े हैं महात्मा है तो क्या, हमारा काम तो बिगाड़ते ही हो। तुम हमको छोड दो, भूल जाओ, भागो। मैने पूछा, कहां, जाऊं? उन्होने कहा, तुम हिमालय जाओ। तो मैने डांटा। वे मेरे-जितने बुजुर्ग नही हैं—वैसे बुजुर्ग है, तगड़े है, मेरे-जैसे पांच-सात आदमीको चट कर सकते है। मै तो महात्मा रहा, घबराहटमें पड़ जाऊं तो मेरा क्या हाल होगा। तो मैंने हॅसकर कहा कि क्या मैं आपके कहनेसे जाऊं, किसकी बात सुनूं? क्योंकि कोई कहता है कि यही रहो, कोई तारीफ करता है, कोई डांटता है, कोई गाली देता है। तो मैं क्या करूं? ईश्वर जो हुक्म करता है वही मैं करता हूं। आप ईश्वरको नही मानते है तो इतना तो करें कि मुझे अपने दिलके अनुसार

करने दें। आप कह सकते है कि ईश्वर तो हम हैं। मैंने कहा तो परमेश्वर कहा जायगा? ईश्वर तो एक है। हां, यह ठीक है कि पंच परमेश्वर है; लेकिन यह पंचका सवाल नहीं है। दुःखीका बेली परमेश्वर है; लेकिन दु.खी खुद परमात्मा नही। जब मैं दावा करता हूं कि जो हरएक स्त्री है, मेरी सगी बहन है, लड़की है तो उसका दुःख मेरा दुःख है। आप ऐसा क्यों मानते हैं कि मैं दु:खको नही जानता, आपके दु:खोंमें मैं हिस्सा नहीं लेता, मैं हिंदुओं और सिखोंका दुश्मन हूं और मुसलमानोंका दोस्त हूं। उसने साफ-साफ कह दिया। कोई गाली देकर लिखता है, कोई विवेकसे लिखता है कि हमको छोड दो, चाहे हम दोजखमें जायं तो क्या? तुमको क्या पड़ी है, तुम भागो? मै किसीके कहनेसे कैसे भाग सकता हूं? किसीके कहनेसे मै खिदमतगार नही बना हू, किसीके कहनेसे मैं मिट नही सकता हूं, ईश्वरके चाहनेसे मै जो हूं बना हूं। ईश्वरको जो करना है सो करेगा। ईश्वर चाहे तो मुझको मार सकता है। मैं समझता हूं कि मै ईश्वरकी बात मानता हू। एक डाटता है, दूसरे लोग मेरी तारीफ करते है तो मै क्या करू। मै हिमालय क्यों नही जाता? वहां रहना तो मुझको पसद पडेगा। ऐसा नही है कि मुझको वहां खाने-पीने-ओढने-को नही मिलेगा—वहा जाकर शांति मिलेगी, लेकिन मैं अशातिमेंसे शांति चाहता हूं, नहीं तो उस अशांतिमें मर जाना चाहता हूं। मेरा हिमालय यही है। आप सग हिमालय चलें तो मुझको भी आप लेते चलें।

मेरे पास शिकायतें आती है—सही शिकायतें है—कि यहा शरणार्थी पडे हैं, उनको खाना देते है, पीना देते हैं, पहननेको देते है, जो हो सकता है सब करते है, लेकिन वे मेहनत नही करना चाहते है, काम नहीं करना चाहते है। जो उनकी खिदमत करते हैं उन लोगोंने लंबा-चौड़ा लिख-कर दिया है, उसमेंसे मैं इतना ही कह देता हूं। मैंने तो कह दिया है कि अगर दु.ख मिटाना चाहते है, दु:खमेंसे सुख निकालना चाहते है, दुःखमें भी हिंदुस्तानकी सेवा करना चाहते है, साथमें अपनी भी सेवा हो जाती है, तो दुःखियोंको काम तो करना ही चाहिए। दुःखीको ऐसा हक नहीं है कि वह काम न करे और मौज-शौक करे। गीतामें तो कहा है, 'यज्ञ करो और खाओ'—यज्ञ करो और शेष रह जाता है उसको खाओ।

यह मेरे लिए है और आपके लिए नही है ऐसा नहीं है—सबके लिए है। जो दु:खी हैं उनके लिए भी है। एक आदमी कुछ करे नहीं, बैठा रहे और खाय तो ऐसा हो नहीं सकता। करोड़पति भी काम न करे और खावे, तो वह निकम्मा है, पृथ्वीपर भार है। जिस आदमीके घर पैसा भी है वह भी मेहनत करके खाए तब बनता है। हा कोई लाचारी है—पैर नही चल सकता या अंधा है, या वृद्ध हो गया है तो बात दूसरी है; लेकिन जो तगडा है, वह क्यों न काम करे? जो काम कर सकता है वह काम करे। शिविरमें जो तगड़े पडे है वे पाखाना भी उठाएं। चर्खा चलाएं। जो काम बन सकता है करें। जो काम नही जानते है वे काम लड़कोंको सिखाएं, इस तरहसे काम लें। लेकिन कोई कहे कि केम्ब्रिजमें जैसे सिखाते हैं वैसे सिखाएं। मैं, मेरा बाबा तो केम्ब्रिजमें सीखा था तो लड़कोंको भी वहां भेजें, तो यह कैसे हो सकता है? मैं तो इतना ही कहूंगा कि जितने शरणार्थी है वे काम करके खाएं। उन्हे काम करना ही चाहिए।

आज एक सज्जन आए थे। उनका नाम तो मैं भूल गया। उन्होंने किसानोंकी बात की। मैंने कहा, मेरी चले तो हमारा गवर्नर-जनरल किसान होगा, हमारा बड़ा वजीर किसान होगा, सब कुछ किसान होगा, क्योंकि यहांका राजा किसान है। मुझे बचपनसे सिखाया था—एक कविता है, "हे किसान, तू बादशाह है।" किसान जमीनसे पैदा न करे तो हम क्या खाएंगे? हिंदुस्तानका सचमुच राजा तो वही है। लेकिन आज हम उसे गुलाम बनाकर बैठे है। आज किसान क्या करें? एम० ए० बनें? बी० ए० बनें?—ऐसा किया, तो किसान मिट जायगा। पीछे वह कुदाली नहीं चलाएगा। जो आदमी अपनी जमीनमेंसे पैदा करता है और खाता है, सो जनरल बने, प्रधान बने, तो हिंदुस्तानकी शकल बदल जाएगी। आज जो सड़ा पड़ा है, वह नहीं रहेगा।

मद्रासमें खुराककी तंगी है। मद्रास सरकारकी तरफसे दूत यह कहनेके लिए श्रीजयरामदासके पास आए थे कि वे उस सूबेके लिए अन्न देनेका बंदोबस्त करें। मुझे मद्रासवालोंके इस रुखसे दु:ख होता है। मैं मद्रासके लोगोंको यह समझाना चाहता हूं कि वे अपने ही सूबेमें मूंगफली,

नारियल और दूसरे खाद्य पदार्थोंके रूपमें काफी खुराक पा सकते हैं। उनके यहां मछली भी काफी है, जिन्हें उनमेंसे ज्यादातर लोग खाते हैं। तब उन्हे भीख मागनेके लिए बाहर निकलनेकी क्या जरूरत है? उनका चावलका आग्रह रखना—वह भी पालिश किया हुआ चावल, जिसके सारे पोषक तत्त्व मर जाते है—या चावल न मिलनेपर मजबूरीसे गेहूं मंजूर करना ठीक नही है। चावलके आटेमे वे मूंगफली या नारियलका आटा मिला सकते है और इस तरह अकालके भेडियेको आनेसे रोक सकते है। उन्हे जरूरत है आत्म-विश्वास और श्रद्धाकी। मद्रासियोंको मैं अच्छी तरहसे जानता हू और दक्षिण अफ्रीकामें उस प्रातके सभी भाषा-वाले हिस्सोंके लोग मेरे साथ थे। सत्याग्रह-कूचके वक्त उन्हे रोजानाके राशनमें सिर्फ डेढ़ पौड रोटी और एक औंस शक्कर दी जाती थी। मगर जहां कही उन्होंने रातको डेरा डाला, वहा जंगलकी घासमेंसे खाने लायक चीजें चुनकर और मजेसे गाते हुए उन्हे पकाकर उन्होंने मुझे अचरजमें डाल दिया। ऐसे सूझ-बूझवाले लोग कभी लाचारी कैसे महसूस कर सकते है? यह सच है कि हम सब मजदूर थे। और, ईमानदारीसे काम करनेमें ही हमारी मुक्ति और हमारी सभी आवश्यक जरूरतोंकी पूर्ति भरी है।

: २२४ :

पुण्यदिवस, ३० जनवरी, १९४८

आज सायंकाल ५ बजकर १० मिनटपर प्रार्थनाके लिए आते समय प्रार्थना-स्थलपर एक व्यक्तिने पिस्तौलसे गांधीजीके तीन गोलियां मारीं और वहीं उनका स्वर्गवास हो गया। गिरनेसे पहले उन्होंने नमस्कार करनेके लिए हाथ उठाये और उनके मुंहसे निकला :

"हे राम"

गांधी-साहित्य (गांधीजी द्वारा लिखित)

प्रार्थना-प्रवचन भाग १		३.००
,, भाग २		२.५०
गीतामाता		४.००
पंद्रह अगस्त के बाद		२.००
धर्मनीति		२.००
मेरे समकालीन		५.००
दक्षिण अफ्रीका का सत्याग्रह		३.५०
आत्म-कथा (सम्पूर्ण)	अजिल्द २.५०, सजिल्द	४.००
आत्म-कथा संक्षिप्त		१.००
आत्म-संयम		३.००
अनासक्तियोग		०.७५
अनीति की राह पर		१.००
आज का विचार (दो भाग)		०.८०
आश्रमवासियों से		०.४०
एक सत्यवीर की कथा		०.२५
गांधी-शिक्षा (तीन भाग)		०.६२
गीताबोध		०.५०
ग्रामसेवा		०.३७
नीति धर्म		०.३७
ब्रह्मचर्य भाग १		१.००
,, ,, २		०.७५
बापू की सीख		०.५०
मंगल प्रभात		०.३७
सर्वोदय		०.३७
हमारी मांग		१.००
हिन्द-स्वराज्य		०.७५
हृदयमंथन के पांच दिन		०.२५
देशसेवकों के संस्मरण		१.२५
गांधीजी ने कहा था (६ भाग)		२.७०

सस्ता साहित्य मण्डल, प्रकाशन